गीता प्रकाश

श्रीमद्भगवद् गीता
गीता व्याकरण
गीता कोश

कृष्ण किशोर

गीता व्याकरण

१. प्रस्तावना

गीता कोश में शब्द का अर्थ, पद व्याख्या और उन श्लोकों का निर्देश भी है, जहां-जहां शब्द का प्रयोग हुआ है। यहां हम पाठकों का साधारण सा परिचय संस्कृत भाषा के व्याकरण के कुछ नियमों से करा देना चाहते हैं जिससे उन्हें गीता के श्लोक समझने में सहायता मिले। संस्कृत भाषा के व्याकरण की विशेषताओं को तालिकाबद्ध रूप से समझाने का प्रयास किया गया है जो सरल और सहज प्रतीत होता है। जिस प्रकार मानचित्रों के देखने से भूगोल ज्ञान के अध्ययन में सहायता मिलती है वैसे ही ये तालिकाएं संस्कृत व्याकरण की विशेषताओंको बोधगम्य कराने में सहायक होनी चाहिए। हमारा ध्येय पाठकों को संस्कृत शब्दों की साधारण व्याकरणिक जानकारी कराना भर है, न कि उनकी व्युत्पत्ति का वर्णन करना।

हम यह मान कर चल रहे हैं कि हमारे पाठकों को हिन्दी भाषा के व्याकरण का साधारण ज्ञान है। उन्हें यह बतलाने की आवश्यकता नहीं कि संस्कृत देवनागरी लिपि में लिखी जाती है; स्वर क्या हैं ? व्यंजन क्या हैं ? इसके अतिरिक्त, संज्ञा, विषेशण सर्वनाम, क्रिया, क्रिया विशेषण, अव्ययों और प्रत्ययों के भेद भी क्या-क्या हैं ? हम केवल उन बातों का ही उल्लेख करेंगे जो संस्कृत भाषा के व्याकरण की विशेषताएं दर्शाती हैं, जिससे पाठक गीता के मूलरूप श्लोकों को और भली प्रकार समझ कर, आनन्द ले सकें।

२. विभक्ति

संस्कृत भाषा में सम्बन्ध-बोधक चिन्ह अलग से नहीं हैं, जैसे हिन्दी में जो नीचे चार्ट में दिखाए गए हैं। सम्बन्ध दर्शाने के लिए संस्कृत भाषा में शब्द के साथ विभक्ति लगा दी जाती है। यह शब्द के अन्त में लगा हुआ वह प्रत्यय या चिन्ह है जो यह बतलाता है कि उस शब्द का दूसरे शब्द से या क्रिया पद से क्या सम्बध है। विभक्तियाँ आठ प्रकार की हैं।

विभक्तियाँ		कारक	हिन्दी-भाषा के सम्बन्ध बोधक चिन्ह	उदाहरण एकवचन
१.	प्रथमा	कर्ता	ने	रामः
२.	द्वितीया	कर्म	को	रामम्
३.	तृतीया	करण	से, के द्वारा,	रामेण
४.	चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिए, को	रामाय
५.	पंचमी	अपादान	से (पृथक होना), की अपेक्षा	रामात्
६.	षष्ठी*	सम्बन्ध	का, की, के; रा, री, रे	रामस्य
७.	सप्तमी	अधिकरण	में, पर	रामे
८.	सम्बोधन*	सम्बोधन	हे, ओ, अरे	(हे) राम

*क्रिया पद के साथ प्रत्यक्ष सम्बध न दिखाने के कारण सम्बन्ध और सम्बोधन कारकों को कारक नहीं माना जाता।

(क) अव्यय और नियत लिंग के शब्दों को छोड़कर, विभक्ति द्वारा शब्द का

वचन और लिंग भी दर्शाया जाता है, जैसे

शब्द	वचन			लिंग
	एक	द्वि	बहु	
राम	रामः	रामौ	रामाः	पुंल्लिंग
मति	मतिः	मती	मतयः	स्त्रीलिंग
फल	फलम्	फले	फलानि	नपुंसकलिंग

(ख) विभक्तियों के अन्य उपयोगों के लिए आगे देखिए प्रकरण (७) के अन्तर्गत।

३. *लिंग*

हिन्दी में केवल दो लिंग हैं – स्त्रीलिंग और पुंल्लिंग। संस्कृत में इन दो लिंगो के अतिरिक्त एक और लिंग है जिसे नपुंसकलिंग कहते हैं। एक ही वस्तु का बोध कराने वाला कोई शब्द पुंल्लिंग, कोई स्त्रीलिंग, कोई नपुंसकलिंग में भी होता है। जैसे तनु (स्त्रीलिंग) देह (पुंल्लिंग) और शरीरम् (नपुंसकलिंग)। सब का एक ही अर्थ है– शरीर। "दाराः" शब्द पुंल्लिंग में है, "कलत्र" नपुंसकलिंगी शब्द है जबकि दोनों का अर्थ है "स्त्री"। "देवता" शब्द स्त्रीलिंग में होते हुए भी देव (पुरुष) का अर्थ बताता है। और "मित्र" (दोस्त) नपुंसकलिंग में है। और फिर कई शब्द उभयलिंगी होते हैं जैसे 'देह'। इसका पुंल्लिंग और नपुंसकलिंग में प्रयोग होता है और भिन्न-भिन्न अर्थों में। इसी कारण संस्कृत में संज्ञाओं का लिंग जानना बड़ा कठिन हो जाता है। इसके जानने के लिए कोश और व्याकरण के अध्ययन की आवश्यकता पड़ती है।

लिंगों की जानकारी के लिए गीता-कोश में "शब्द" के सामने हम एक संकेत-सूचक शब्द दे रहे हैं। जैसे "गुरु" "धेनु" "बहु" यद्यपि तीनों शब्द उकारान्त हैं पर "गुरु" पुंल्लिंग, "धेनु" "स्त्रीलिंग", और "बहु" नपुंसकलिंग में है। ऐसे प्रत्येक सूचक-शब्द के लिए जो गीता में प्रयुक्त है, एक तालिका है जिसे देखने से यह पता चल जायेगा कि शब्द का लिंग क्या है। देखिए तालिका पृष्ठ ४१२ पर ।

४. वचन

हिन्दी मे केवल दो वचन हैं; एक वचन और बहुवचन। इनके अतिरिक्त संस्कृत में "द्विवचन" भी है। इससे दो का बोध होता है। प्रत्येक वचन के अनुसार विभक्ति का रूप बदल जाता है। यद्यपि हम तालिकाओं में "द्विवचन" के विभक्ति रूप दे रहें हैं, पर हमारे पाठक इन पर अभी कोई विशेष ध्यान न दें। गीता में द्विवचन का प्रयोग नहीं के बराबर है।

५. संज्ञा शब्द

शब्द स्वरान्त और व्यंजनान्त होते हैं। और इस प्रकार के हर शब्द का विभक्ति रूप अलग-अलग है जो तालिकाओं को देखने से सहज समझ में आ जायेगा, रटने की आवश्यकता नहीं। श्रीमद्भगवद्गीता में जो संज्ञा शब्द प्रयुक्त हैं, उनके संकेत- सूचक शब्द के लिए देखिए तालिका, पृष्ठ ४१२ पर। ये शब्द किस प्रकार चलाए जाते हैं, इसके लिए निम्न नम्बर की तालिकाएं देखें:-

तालिका नम्बर

शब्द	पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
स्वरान्त	१	२	३
व्यंजनान्त	४ (१-४)	५	६ (१-२)

इनके अतिरिक्त कतिपय प्रयोग वाले निम्नलिखित शब्द भी हैं,
स्वरांत- ऊष्मपा (पु) चमू (स्त्री) पितृ (पु) सुधी (पु) भ्रू (स्त्री.)
व्यंजनांत- उशनस् (पु.) कामधुक् (पु) ऋत्विज् (पु) शर्मन् (पु)
भास् (स्त्री) सम्पद् (स्त्री) नामन् (नपुं) महत् (नपुं)। ऐसे शब्दों को चलाए जाने की तालिकाएं हम अलग से नहीं दे रहे हैं।

तालिका-संकेत सूचक शब्द

	लिंग		
	पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
१. *स्वरान्त*			
अकारान्त	राम		फल
आकारान्त		विद्या	
इकारान्त	हरि, सखि	मति	वारि, पूर्व
ईकारान्त		नदी, स्त्री	
उकारान्त	गुरु	धेनु	बहु
ऋकारान्त	धातृ	मातृ	कर्तृ
ओकारान्त	गो		
२. *व्यंजनान्त*			
चकारान्त		वॉच् (वाणी)	
तकारान्त	मरुत्		जगत्
	धीमत्		नश्यत्
	ध्यायत्		
	महत्		
दकारान्त	तत्त्वविद्		
धकारान्त	युध्		
नकारान्त	अर्यमन्		अहन्
	आत्मन्		जन्मन्
	राजन्		कर्मन्
	पथिन्		
	श्वन्		
	शशिन्		
पकारान्त		अप् (नित्य बहुवचन)	
रकारान्त		गिर् (वाणी)	
वकारान्त		दिव्	
शकारान्त	ईदृश् , विश्	दिश् ,	
सकारान्त	चन्द्रमस्		मनस्
	गरीयस्		धनुस्
	पुमस्		हविस्
	विद्वस्		

विशेषण

हिन्दी में कभी तो विशेष्य के लिंग के अनुसार विशेषण बदलता है जैसे – भूरी गाय, भूरा घोड़ा, कभी नहीं जैसे लाल गाय, लाल घोड़ा। इसी प्रकार वचन के अनुसार भी परिवर्तन होता है – जैसे काला कुत्ता, काले कुत्ते। हिन्दी में विभक्ति चिन्ह का, (अलग से होने के कारण) कोई प्रभाव विशेषण-विशेष्य पर नहीं पड़ता, परन्तु, संस्कृत में विशेष्य के लिंग, वचन और विभक्ति के अनुसार ही, विशेषण भी उसी लिंग, वचन और विभक्ति में होता है – जैसे समान लिंग (पुं) श्वेतः अश्वः (स्त्री.) श्वेता वाटिका।
(नपुं) श्वेतं पुष्पम्।

समान वचन (१ वचन) चतुरा बालिका (२ वचन) चतुरे बालिके
(बहु वचन) चतुराः बालिकाः

समान विभक्ति (१) चतुरः बालः,
(२) चतुरं बालम्,
(३) चतुरेण बालेन,
(४) चतुराय बालाय,
(५)चतुरात् बालात् ,
(६) चतुरस्य बालस्य
(७) चतुरे बाले,
(८) चतुर बाल।

यह व्याख्या हम आप की साधारण जानकारी के लिए कर रहे हैं। गीता में विशेषण–विशेष्य का प्रयोग अधिक नहीं है।

अजन्त पुंल्लिंगाः शब्दाः — तालिका नं. १

अकारान्त, इकारान्त, उकारान्त, ऋकारान्त, ओकारान्त

	राम	हरि	सखि	गुरू	धातृ	गो
एकवचन						
प्र.	रामः	हरिः	सखा	गुरू	धाता	गौः
द्वि.	रामम्	हरिम्	सखायम्	गुरूम्	धातारम्	गाम्
तृ.	रामेण	हरिणा	सख्या	गुरूणा	धात्रा	गवा
च.	रामाय	हरये	सख्ये	गुरवे	धात्रे	गवे
पं.	रामात्	हरेः	सख्युः	गुरोः	धातुः	गोः
ष.	रामस्य	हरेः	सख्युः	गुरोः	धातुः	गोः
स.	रामे	हरौ	सख्यौ	गुरौ	धातरि	गवि
संबो.	हे राम	हे हरे	हे सखे	हे गुरो	हे धातः	हे गौः
द्विवचन						
प्र.	रामौ	हरी	सखायौ	गुरू	धातारौ	गावौ
द्वि.	रामौ	हरी	सखायौ	गुरू	धातारौ	गावौ
तृ.	रामाभ्याम्	हरिभ्याम्	सखिभ्याम्	गुरूभ्याम्	धातृभ्याम्	गोभ्याम्
च.	रामाभ्याम्	हरिभ्याम्	सखिभ्याम्	गुरूभ्याम्	धातृभ्याम्	गोभ्याम्
पं.	रामाभ्याम्	हरिभ्याम्	सखिभ्याम्	गुरूभ्याम्	धातृभ्याम्	गोभ्याम्
ष.	रामयोः	हर्योः	सख्योः	गुर्वोः	धात्रोः	गवोः
स.	रामयोः	हर्योः	सख्योः	गुर्वोः	धात्रोः	गवोः
संबो.	हे रामौ	हे हरी	हे सखायौ	हे गुरू	हे धातारौ	हे गावौ
बहुवचन						
प्र.	रामाः	हरयः	सखायः	गुरवः	धातारः	गावः
द्वि.	रामान्	हरीन्	सखीन्	गुरून्	धातृन्	गाः
तृ.	रामैः	हरिभिः	सखिभिः	गुरुभिः	धातृभिः	गोभिः
च.	रामेभ्यः	हरिभ्यः	सखिभ्यः	गुरूभ्यः	धातृभ्यः	गोभ्यः
पं.	रामेभ्यः	हरिभ्यः	सखिभ्यः	गुरूभ्यः	धातृभ्यः	गोभ्यः
ष.	रामाणाम्	हरीणाम्	सखीनाम्	गुरूणाम्	धातृणाम्	गवाम्
स.	रामेषु	हरिषु	सखिषु	गुरूषु	धातृषु	गोषु
संबो.	हे रामाः	हे हरयः	हे सखायः	हे गुरवः	हे धातारः	हे गावः

अजन्त स्त्रीलिंगाः शब्दाः

तालिका नं. २

आकारान्त, इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त, ऋकारान्त

	विद्या	मति	नदी	स्त्री	धेनु	मातृ
एकवचन						
प्र.	विद्या	मतिः	नदी	स्त्री	धेनुः	माता
द्वि	विद्याम्	मतिम्	नदीम्	स्त्रियम्,स्त्रीम्	धेनुम्	मातरम्
तृ.	विद्यया	मत्या	नद्या	स्त्रिया	धेन्वा	मात्रा
च.	विद्यायै	मत्यै	नद्यै	स्त्रियै	धेन्वै,धेनवे	मात्रे
पं.	विद्यायाः	मत्याः,मतेः	नद्याः	स्त्रियाः	धेन्वाः,धेनोः	मातुः
ष.	विद्यायाः	मत्याः,मतेः	नद्याः	स्त्रियाः	धेन्वाः,धेनोः	मातुः
स.	विद्यायाम्	मत्याम्,मतो	नद्याम्	स्त्रियाम्	धेन्वाम् ,धेनौ	मातरि
संबो	हे विद्ये	हे मते	हे नदि	हे स्त्रि	हे धेनो	हे मातः
द्विवचन						
प्र.	विद्ये	मती	नद्यौ	स्त्रियौ	धेनू	मातरौ
द्वि.	विद्ये	मती	नद्यौ	स्त्रियौ	धेनू	मातरौ
तृ.	विद्याभ्याम्	मतिभ्याम्	नदीभ्याम्	स्त्रीभ्याम्	धेनुभ्याम्	मातृभ्याम्
च.	विद्याभ्याम्	मतिभ्याम्	नदीभ्याम्	स्त्रीभ्याम्	धेनुभ्याम्	मातृभ्याम्
पं.	विद्याभ्याम्	मतिभ्याम्	नदीभ्याम्	स्त्रीभ्याम्	धेनुभ्याम्	मातृभ्याम्
ष.	विद्ययोः	मत्योः	नद्योः	स्त्रियोः	धेन्वोः	मात्रोः
स.	विद्ययोः	मत्योः	नद्योः	स्त्रियौः	धेन्वोः	मात्रोः
संबो.	हे विद्ये	हे मती	हे नद्यौ	हे स्त्रियौ	हे धेनू	हे मातरौ
बहुवचन						
प्र.	विद्याः	मतयः	नद्यः	स्त्रियः	धेनवः	मातरः
द्वि.	विद्याः	मतीः	नदीः	स्त्रियः,स्त्रीः	धेनूः	मातॄः
तृ	विद्याभिः	मतिभिः	नदीभिः	स्त्रीभिः	धेनुभिः	मातृभिः
च.	विद्याभ्यः	मतिभ्यः	नदीभ्यः	स्त्रीभ्यः	धेनुभ्यः	मातृभ्यः
प.	विद्याभ्यः	मतिभ्यः	नदीभ्यः	स्त्रीभ्यः	धेनुभ्यः	मातृभ्यः
ष.	विद्यानाम्	मतीनाम्	नदीनाम्	स्त्रीणाम्	धेनूनाम्	मातॄणाम्
स.	विद्यासु	मतिषु	नदीषु	स्त्रीषु	धेनुषु	मातृषु
संबो.	हे विद्याः	हे मतयः	हे नद्यः	हे स्त्रियः	हे धेनवः	हे मातरः

अजन्त नपुंसकलिंगाः शब्दाः <u>तालिका नं. ३</u>

अकारान्त, इकारान्त, उकारान्त, ऋकारान्त,

	फल	वारि	पूति	बहु	कर्तृ
एकवचन					
प्र.	फलम्	वारि	पूति	बहु	कर्तृ
द्वि.	फलम्	वारि	पूति	बहु	कर्तृ
तृ.	फलेन	वारिणा	पूतिना	बहुना	कर्तृणा,कर्त्रा
च.	फलाय	वारिणे	पूतिने	बहुने, बहुवे	कर्तृणे,कर्त्रे
पं.	फलात्	वारिणः	पूतिनः	बहुनः, बहोः	कर्तृणः,कर्तुः
ष.	फलस्य	वारिणः	पूतिनः	बहुनः, बहोः	कर्तृणः,कर्तः
स.	फले	वारिणि	पूतिनि	बहुनि, बहौ	कर्तृणि,कर्तरि
सबो.	हे फल	हेवारि,हे वारे	हे पूति	हे बहु, हेबहो	हे कर्तृ, हेकर्तः
द्विवचन					
प्र.	फले	वारिणी	पूतिनी	बहुनी	कर्तृणी
द्वि.	फले	वारिणी	पूतिनी	बहुनी	कर्तृणी
तृ.	फलाभ्याम्	वारिभ्याम्	पूतिभ्याम्	बहुभ्याम्	कर्तृभ्याम्
च.	फलाभ्याम्	वारिभ्याम्	पूतिभ्याम्	बहुभ्याम्	कर्तृभ्याम्
पं.	फलाभ्याम्	वारिभ्याम्	पूतिभ्याम्	बहुभ्याम्	कर्तृभ्याम्
ष.	फलयोः	वारिणोः	पूतिनोः	बहुनोः,बहूवोः	कर्तृणोः,कर्त्रोः
स.	फलयोः	वारिणोः	पूतिनोः	बहुनोः,बहूवोः	कर्तृणोः,कर्त्रोः
सबो.	हे फले	हे वारिणी	हे पूतिनी	हे बहुनी	हे कर्तृणी
बहुवचन					
प्र.	फलानि	वारीणि	पूतीनि	बहूनि	कर्तृणि
द्वि.	फलानि	वारीणि	पूतीनि	बहूनि	कर्तृणि
तृ.	फलैः	वारिभिः	पूतिभिः	बहुभिः	कर्तृभिः
च.	फलेभ्यः	वारिभ्यः	पूतिभ्यः	बहुभ्यः	कर्तृभ्यः
पं.	फलेभ्यः	वारिभ्यः	पूतिभ्यः	बहुभ्यः	कर्तृभ्यः
ष.	फलानाम्	वारीणाम्	पूतीनाम्	बहूनाम्	कर्तृणाम्
स.	फलेषु	वारिषु	पूतिषु	बहुषु	कर्तृषु
सबो.	हे फलानि	हे वारीणि	हे पूतीनि	हे बहूनि	हे कर्तृणि

हलन्त पुंल्लिंगाः शब्दाः (१) तालिका नं. ४ (१)

तकारान्त

	मरुत्	धीमत्	भवत्	ध्यायत्	महत्
एकवचन					
प्र.	मरुत्	धीमान्	भवान्	ध्यायन्	महान्
द्वि.	मरुतम्	धीमन्तम्	भवन्तम्	ध्यायन्तम्	महान्तम्
तृ.	मरुता	धीमता	भवता	ध्यायता	महता
च.	मरुते	धीमते	भवते	ध्यायते	महते
पं.	मरुतः	धीमतः	भवतः	ध्यायतः	महतः
ष.	मरुतः	धीमतः	भवतः	ध्यायतः	महतः
स.	मरुति	धीमति	भवति	ध्यायति	महति
सबो.	हे मरुत्	हे धीमत्	हे भवन्	हे ध्यायन्	हे महन्
द्विवचन					
प्र.	मरुतौ	धीमन्तौ	भवन्तौ	ध्यायन्तौ	महान्तौ
द्वि.	मरुतौ	धीमन्तौ	भवन्तौ	ध्यायन्तौ	महान्तौ
तृ.	मरुद्भ्याम्	धीमद्भ्याम्	भवद्भ्याम्	ध्यायद्भ्याम्	महद्भ्याम्
च.	मरुद्भ्याम्	धीमद्भ्याम्	भवद्भ्याम्	ध्यायद्भ्याम्	महद्भ्याम्
पं.	मरुद्भ्याम्	धीमद्भ्याम्	भवद्भ्याम्	ध्यायद्भ्याम्	महद्भ्याम्
ष.	मरुतोः	धीमतोः	भवतोः	ध्यायतोः	महतोः
स.	मरुतोः	धीमतोः	भवतोः	ध्यायतोः	महतोः
सबो.	हे मरुतौ	हे धीमन्तौ	हे भवन्तौ	हे ध्यायन्तौ	हे महान्तौ
बहुवचन					
प्र.	मरुतः	धीमन्तः	भवन्तः	ध्यायन्तः	महान्तः
द्वि.	मरुतः	धीमतः	भवतः	ध्यायतः	महतः
तृ.	मरुद्भिः	धीमद्भिः	भवद्भिः	ध्यायद्भिः	महद्भिः
च.	मरुद्भ्यः	धीमद्भ्यः	भवद्भ्यः	ध्यायद्भ्यः	महद्भ्यः
पं.	मरुद्भ्यः	धीमद्भ्यः	भवद्भ्यः	ध्यायद्भ्यः	महद्भ्यः
ष.	मरुताम्	धीमताम्	भवताम्	ध्यायताम्	महताम्
स.	मरुत्सु	धीमत्सु	भवत्सु	ध्यायत्सु	महत्सु
सबो.	हे मरुतः	हे धीमन्तः	हे भवन्तः	हे ध्यायन्तः	हे महान्तः

हलन्त पुंल्लिंगाः शब्दाः (२)   तालिका नं. ४ (२)

नकारान्त

	अर्यमन्	आत्मन्	पथिन्	राजन्	शशिन्	श्वन्
एकवचन						
प्र.	अर्यमा	आत्मा	पन्थाः	राजा	शशी	श्वा
द्वि.	अर्यमणम्	आत्मानम्	पन्थानम्	राजानम्	शशिनम्	श्वानम्
तृ.	अर्यम्णा	आत्मना	पथा	राज्ञा	शशिना	शुना
च.	अर्यम्णे	आत्मने	पथे	राज्ञे	शशिने	शुने
प.	अर्यम्णः	आत्मनः	पथः	राज्ञः	शशिनः	शुनः
ष.	अर्यम्णः	आत्मनः	पथः	राज्ञः	शशिनः	शुनः
स.	अर्यम्णि	आत्मनि	पथि	राज्ञि, राजनि	शशिन्	शुनि
सबो.	हे अर्यमन्	हे आत्मन्	हे पथिन्	हे राजन्	हे शशिन्	हे श्वन्
द्विवचन						
प्र.	अर्यमणौ	आत्मानौ	पन्थानौ	राजानौ	शशिनौ	श्वानौ
द्वि.	अर्यमणौ	आत्मानौ	पन्थानौ	राजानौ	शशिनौ	श्वानौ
तृ.	अर्यमभ्याम्	आत्मभ्याम्	पथिभ्याम्	राजभ्याम्	शशिभ्याम्	श्वभ्या
च.	अर्यमभ्याम्	आत्मभ्याम्	पथिभ्याम्	राजभ्याम्	शशिभ्या	श्वभ्याम्
पं.	अर्यमभ्याम्	आत्मभ्याम्	पथिभ्याम्	राजभ्याम्	शशिभ्याम्	श्वभ्याम्
ष.	अर्यम्णोः	आत्मनोः	पथोः	राज्ञोः	शशिनोः	शुनोः
स.	अर्यम्णोः	आत्मनोः	पथोः	राज्ञोः	शशिनोः	शुनोः
सबो.	हे अर्यमणौं	हे आत्मानौ	हे पन्थौ	हे राजानौ	हे शशिनौ	हे श्वानौ
बहुवचन						
प्र.	अर्यमणः	आत्मानः	पन्थानः	राजानः	शशिनः	श्वानः
द्वि.	अर्यमणः	आत्मनः	पथः	राज्ञः	शशिनः	शुनः
तृ.	अर्यमभिः	आत्मभिः	पथिभिः	राजभिः:	शशिभिः	श्वभिः
च.	अर्यमभ्यः	आत्मभ्यः	पथिभ्यः	राजभ्यः	शशिभ्यः	श्वभ्यः
पं.	अर्यमभ्यः	आत्मभ्यः	पथिभ्यः	राजभ्यः	शशिभ्यः	श्वभ्यः
ष.	अर्यम्णाम्	आत्मानाम्	पथाम्	राज्ञाम्	शशिनाम्	शुनाम्
स.	अर्यमसु	आत्मसु	पथिषु	राजसु	शशिषु	श्वसु
सबो.	हे अर्यमणः	हे आत्मानः	हे पन्थानः	हे राजानः	हे शशिनः	हे श्वानः

हलन्त पुं ल्लिंगाः शब्दाः (३)

तालिका नं. ४ (३)

दकारान्त, धकारान्त, शकारान्त,

एकवचन

	तत्त्वविद्	युध्	ईदृश्	विश्
प्र.	तत्त्ववित्–द्	युत्–द्	ईदृक्–ग्	विद् विड्
द्वि.	तत्त्वविदम्	युधम्	ईदृशम्	तिशम्
तृ.	तत्त्वविदा	युधा	ईदृशा	विशा
च.	तत्त्वविदे	युधे	ईदृशे	विशे
पं.	तत्त्वविदः	युधः	ईदृशः	विशः
ष.	तत्त्वविदः	युधः	ईदृशः	विशः
स.	तत्त्वविदि	युधि	ईदृशि	विशि
सबो.	हे तत्त्वविद्	हे युत्-द्	हे ईदृक्–ग्	हे विद् हे विड्

द्विवचन

	तत्त्वविद्	युध्	ईदृश्	विश्
प्र.	तत्त्वविदौ	युधौ	ईदृशौ	विशौ
द्वि.	तत्त्वविदौ	युधौ	ईदृशौ	विशौ
तृ.	तत्त्वविद्भ्याम्	युद्भ्याम्	ईदृग्भ्याम्म्	विड्भ्याम्
च.	तत्त्वविद्भ्याम्	युद्भ्याम्	ईदृग्भ्याम्	विड्भ्याम्
पं.	तत्त्वविद्भ्याम्	युद्भ्याम्	ईदृग्भ्यायम्	विड्भ्याम्
ष.	तत्त्वविदोः	युधोः	ईदृशोः	विशोः
स.	तत्त्वविदोः	युधोः	ईदृशोः	विशोः
सबो.	हे तत्त्वविदौ	हे युधौ	हे ईदृशौ	हे विशौ

बहुवचन

	तत्त्वविद्	युध्	ईदृश्	विश्
प्र.	तत्त्वविदः	युधः	ईदृशः	विशः
द्वि.	तत्त्वविदः	युधः	ईदृशः	विशः
तृ.	तत्त्वविद्भिः	युद्भिः	ईदृग्भः	विड्भिः
च.	तत्त्त्वविद्भ्यः	युद्भ्यः	ईदृग्भ्यः	विड्भ्यः
पं.	तत्त्वविद्भ्यः	युद्भ्यः	ईदृग्भ्यः	विड्भ्यः
ष.	तत्त्वविदाम्	युधाम्	ईदृशाम्	विशाम्
स.	तत्त्ववित्सु	युत्सु	ईदृक्षु	विटत्ससु, विटसु
सबो.	हे तत्त्वविदः	हे युधः	हे ईदृशः	हे विशः

हलन्त पुल्लिंगा : शब्दा : (४) 　　　　 तालिका नं. ४ (४)

सकारान्त

	गरीयस्	चन्द्रमस्	पुमस्	विद्वस्
एकवचन				
प्र.	गरीयान्	चन्द्रमाः	पुमान्	विद्वान्
द्वि.	गरीयांसम्	चन्द्रमसम्	पुमांसम्	विद्वांससम्
तृ.	गरीयसा	चन्द्रमसा	पुंसा	विदुषा
च.	गरीयसे	चन्द्रमसे	पुंसे	विदुषे
पं.	गरीयसः	चन्द्रमसः	पुंसः	विदुषः
ष.	गरीयसः	चन्द्रमसः	पुंसः	विदुषः
स.	गरीयसि	चन्द्रमसि	पुंसि	विदुषि
संबो.	हे गरीयन्	हे चन्द्रमः	हे पुमन्	हे विद्वन्
द्विवचन				
प्र.	गरीयांसौ	चन्द्रमसौ	पुमांसौ	विद्वांसौ
द्वि.	गरीयांसौ	चन्द्रमसौ	पुमांसौ	विद्वांसौ
तृ.	गरीयोभ्याम्	चन्द्रमोभ्याम्	पुंभ्याम्	विद्वद्भ्याम्
च.	गरीयोभ्याम्	चन्द्रमोभ्याम्	पुंभ्याम्	विद्वद्भ्याम्
पं.	गरीयोभ्याम्	चन्द्रमोभ्याम्	पुंभ्याम्	विद्वद्भ्याम्
ष.	गरीयसोः	चन्द्रमसोः	पुंसोः	विदुषोः
स.	गरीयसोः	चन्द्रमसोः	पुसोः	विदुषोः
संबो.	हे गरीयांसौ	हे चन्द्रमसौ	हे पुमांसौ	हे विद्वांसौ
बहुवचन				
प्र.	गरीयांसः	चन्द्रमसः	पुमांसः	विद्वांसः
द्वि.	गरीयसः	चन्द्रमसः	पुंसः	विदुषः
तृ.	गरीयोभिः	चन्द्रमोभिः	पुंभिः	विद्वद्भिः
च.	गरीयोभ्यः	चन्द्रमोभ्यः	पुंभ्यः	विद्वद्भ्यः
पं.	गरीयोभ्यः	चन्द्रमोभ्यः	पुंभ्यः	विद्वद्भ्यः
ष.	गरीयसाम्	चन्द्रमसाम्	पुंसाम्	विदुषाम्
स.	गरीयस्सु	चन्द्रमस्सु	पुंसु	विद्वत्सु
संबो.	हे गरीयांसः	हे चन्द्रमसः	हे पुमांसः	हे विद्वांसः

हलन्त स्त्रीलिंगाः शब्दाः तालिका नं. ५

चकारान्त, पकारान्त, रकारान्त, वकारान्त शकारान्त

	वाच्वाणी	आप्	गिर्	द्दिव्	दिश्
एकवचन					
प्र.	वाक्-वाग्		गीः	द्यौः	दिक्-ग्
द्वि.	वाचम्		गिरम्	दिवम्	दिशम्
तृ.	वाचा		गिरा	दिवा	दिशा
च.	वाचे		गिरे	दिवे	दिशे
पं.	वायः		गिरः	दिवः	दिशः
ष.	वाचः		गिरः	दिवः	दिशः
स.	वाचि		गिरि	दिवि	दिशि
संबो.	हे वाक्-ग्		हे गीः	हे द्यौः	दिक्-ग्
द्विवचन					
प्र.	वाचौ		गिरौ	दिवौ	दिशौ
द्वि.	वाचौ		गिरौ	दिवौ	दिशौ
तृ.	वाग्भ्याम्		गीर्भ्याम्	द्युभ्याम्	दिग्भ्याम्
च.	वाग्भ्याम्		गीर्भ्याम्	द्युभ्याम्	दिग्भ्याम्
पं.	वाग्भ्याम्		गीर्भ्याम्	द्युभ्याम्	दिग्भ्याम्
ष.	वाचौः		गिरोः	दिवोः	दिशोः
स.	वाचोः		गिरोः	दिवोः	दिशोः
संबो.	हे वाचौ		हे गिरौ	हे दिवौ	हे दिशौः
बहुवचन					
प्र.	वाचः	आपः	गिरः	दिवः	दिशः
द्वि.	वाचः	आपः	गिरः	दिवः	दिशः
तृ.	वाग्भिः	अभ्दिः	गीर्भिः	द्युभिः	दिग्भिः
च.	वाग्भ्यः	अद्भ्यः	गीर्भ्यः	द्युभ्यः	दिग्भ्यः
पं.	वागभ्यः	अद्भ्यः	गीर्भ्यः	द्युभ्यः	दिग्भ्यः
ष.	वाचाम्	अपाम्	गिराम्	दिवाम्	दिशाम्
स.	वाक्षु	अप्सु	गीर्षु	द्युषु	दिक्षु
संबो.	हे वाचः	हे आपः	हे गिरः	हे दिवः	हे दिशः

हलन्त नपुंसक लिंगाः शब्दाः तालिका नं. ६ (१)

तकारान्त, नकारान्त

	जगत्	नश्यत्	अहन्	जन्मन्	कर्मन्
एकवचन					
प्र.	जगत्–द्	नश्ययत्	अहः	जन्म	कर्म
द्वि.	जगत्–द्	नश्यत्	अहः	जन्म	कर्म
तृ.	जगता	नश्यता	अह्na	जन्मना	कर्मणा
च.	जगते	नश्यते	अह्ने	जन्मने	कर्मणे
पं.	जगतः	नश्यतः	अह्नः	जन्मनः	कर्मणः
ष.	जगतः	नश्यतः	अह्नः	जन्मनः	कर्मणः
स.	गजगति	नश्यति	अह्नि	जन्मनि	कर्मणि
संबो.	हे जगत्	हे नश्यत्	हे अहः	हे जन्म	हे कर्म
द्विवचन					
प्र.	जगती	नश्यन्ती	अह्नी	जन्मनी	कर्मणी
द्वि.	जगती	नश्यन्ती	अह्नी	जन्मनी	कर्मणी
तृ.	जगद्भ्याम्	नश्यद्भ्याम्	अहोभ्याम्	जन्मभ्याम्	कर्मभ्याम्
च.	जगद्भ्याम्	नश्यद्भ्याम्	अहोभ्याम्	जन्मभ्याम्	कर्मभ्याम्
पं.	जगद्भ्याम्	नश्यद्भ्याम्	अहोभ्याम्	जन्मभ्याम्	कर्मभ्याम्
ष.	जगतोः	नश्यतोः	अह्नोः	जन्मनोः	कर्मणोः
स.	जगतोः	नश्यतोः	अह्नोः	जन्मनोः	कर्मणाः
संबो.	हे जगती	हे नश्यन्ती	हे अह्नी	हे जन्मनी	हे कर्मणी
बहुवचन					
प्र.	जगन्ति	नश्यन्ति	अहानि	जन्मानि	कर्माणि
द्वि.	जगन्ति	नश्यन्ति	अहानि	जन्मानि	कर्माणि
तृ.	जगद्भिः	नश्यद्भिः	अहोभिः	जन्मभिः	कर्मभिः
च.	जगद्भ्यः	नश्यद्भ्यः	अहोभ्यः	जन्मभ्यः	कर्मभ्यः
पं.	जगद्भ्यः	नश्यभ्द्यः	अहोभ्यः	जन्मभ्यः	कर्मभ्यः
ष.	जगताम्	नश्यताम्	अह्नाम्	जन्मनाम्	कर्मणाम्
स.	जगत्सु	नश्यत्सु	अहःसु	जन्मसु	कर्मसु
संबो.	हे जगन्ति	हे नश्यन्ति	हे अहानि	हे जन्मानि	हे कर्माणि

हलन्त नपुंसक लिंगाः शब्दाः — तालिका नं. ६ (२)

सकारान्त

	धनुस्	मनस्	हविस्
एकवचन			
प्र.	धनुः	मनः	हविस्
द्वि.	धनुः	मनः	हविः
तृ.	धनुषा	मनसा	हविषा
च.	धनुषे	मनसे	हविषे
पं.	धनुषः	मनसः	हविषः
ष.	धनुषः	मनसः	हविषः
स.	धनुषि	मनसि	हविषि
संबो.	हे धनु	हे मनः	हे हविः
द्विवचन			
प्र.	धनुषी	मनसी	हविषी
द्वि.	धनुषी	मनसी	हविषी
तृ.	धनुर्भ्याम्	मनोभ्याम्	हविर्भ्याम्
च.	धनुर्भ्याम्	मनोभ्याम्	हविर्भ्याम्
पं.	धनुर्भ्याम्	मनोभ्याम्	हविर्भ्याम्
ष.	धनुषोः	मनसोः	हविषोः
स.	धनुषोः	मनसोः	हविषोः
संबो.	हे धनुषी	हे मनसी	हे हविषी
बहुवचन			
प्र.	धनूंषि	मनोसिः	हवीषि
द्वि.	धनुंययषि	मनोसि	हवीषि
तृ.	धनुर्भिः	मनोभिः	हविर्भिः
च.	धनुर्भ्यः	मनोभ्यः	हविर्भ्यः
पं.	मनोभ्यः	मनोभ्यः	हविर्भ्यः
ष.	धनुषाम्	मनसाम्	हविषाम्
स.	धनुष्षु	मनस्सु	हविष्षु
संबो.	हे धनूंषि	हे मनांसि	हे हवींषि

६. सर्वनाम

संस्कृत भाषा में लगभग ३५ शब्दों को सर्वनाम कहा गया है। हम इनको तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं :

(क) ऐसे शब्द जो हिन्दी सर्वनाम शब्दों के पर्याय हैं – जैसे, मैं (अस्मद्), तुम (युष्मद्) और वह (तद्) । हम इन्हें "साधारण सर्वनाम" कहेंगे।

(ख) ऐसे शब्द जो हिन्दी में संज्ञा अथवा विशेषण रूप के हैं – जैसे, सब (सर्व), दोनों (उभय), दूसरा (अन्य) । हम इन्हें "संज्ञा-विशेषण सर्वनाम" कहेंगे।

(ग) ऐसे शब्द जो हिन्दी में संख्यावाची रूप के हैं – जैसे, एक (एक), दो (द्वि), इत्यादि। हम इन्हें संख्यावाची सर्वनाम कहेंगे।

६.१ साधारण सर्वनाम

सर्वनाम का लिंग वचन और विभक्ति उसी नाम के अनुरूप होते हैं जिसके स्थान में सर्वनाम आता है । परन्तु पुरुषवाचक सर्वनाम मैं (अस्मद्) और तुम (युष्मद्) के रूप तीनों लिंगों में एक समान रहते हैं। (दखिए तालिका नं. ७) साधारण सर्वनाम के छः भेद हैं :-

(क) पुरुषवाचक

मैं (अस्मद्), तुम (युष्मद्), और वह (तद्) के लिए देखें तालिकाएं (७) और (८) । आप(भवत्) के रूप हम नहीं दे रहे, इनका प्रयोग गीता में नहीं के बराबर है।

(ख) निश्चयवाचक यह (इदम्, एतद्); वह (तद् , अदस्)

संस्कृत में "यह" और "वह" के लिए दो-दो शब्द हैं। समीपस्थ वस्तु या व्यक्ति के लिए "इदम्" शब्द के रूपों का प्रयोग होता है तथा और अधिक समीपवर्ती के लिए "एतद्" के रूपों का प्रयोग किया जाता है। यदि दूरस्थ वस्तु का बोध कराना हो तो "अदस्" शब्द के रूपों का प्रयोग किया जाता है। "तद्" शब्द के रूपों का प्रयोग केवल परोक्ष पदार्थ या व्यक्ति को बतलाने के लिए किया जाता है। इदम् और एतद् के लिए देखिए तालिका न. (९) और अदस् और तद् के लिए क्रमशः (१०) और (८)

(ग) प्रश्न वाचक

"कौन", "क्या" आदि सर्वनामों का बोध कराने के लिए संस्कृत में "किम्", शब्द है जिसके पुल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग प्रथमा एकवचन के रूप हैं कः, का और किम् (देखिए तालिका) (११)

(घ) अनिश्चयवाचक

"किसी", "कोई", "कुछ" आदि सर्वनामों का बोधकराने के लिए संस्कृत "किम्" के रूपों के साथ "अपि", "चित्" अथवा "चन" जोड़ दिया जाता है। (देखिए तालिका) (१२)। गीता में इनके प्रयोग नहीं हैं।

(ङ) सम्बन्धवाचक

जो (यद्) इसके रूप तीनों लिगों में भिन्न-भिन्न होते हैं। (देखिए तालिका) (१३)

(च) निजवाचक

"अपने आप" "अपने को" आदि का बोध कराने के लिए संस्कृत में (१) आत्मन् (२) स्व और (३) स्वयम् का प्रयोग होता है। "स्वयम्" शब्द अव्यय हैं। सब लिगों और वचनों में यह एक जैसा ही प्रयोग में आता है। "आत्मन्" शब्द के रूप केवल पुंल्लिंग एक वचन में चलते हैं और सभी लिंगों और वचनों में निजवाचक्ता का अर्थ होता है। "स्व" शब्द के रूप "सर्व के समान तीनों लिगों में अलग-अलग चलते है। (देखिए तालिका) (१४)

६.२ संज्ञा-विशेषण सर्वनाम

"सर्व" शब्द तीनों लिगों में अलग-अलग चलता है। (देखिए तालिका) (१४)

"अन्य" शब्द भी तीनों लिंगों में अलग-अलग चलता है। (देखिए तालिका) (१२ क)

व्यक्ति वाचक सर्वनाम - तालिका न. (७)

(१) उत्तम पुरुष :- अस्मद् (अहम्), मैं

(२) मध्यम पुरुष :- युष्मद् (त्वम्), तू, तुम

	अस्मद्		युष्मद्	
एकवचन		वैकल्पिक		वैकल्पिक
प्र.	अहम्		त्वम्	
द्वि.	माम्	मा	त्वाम्	त्वा
तृ.	मया		त्वया	
च.	मह्यम्	मे	तुभ्यम्	ते
पं.	मत्		त्वत्	
ष.	मम	मे	तव	ते
स.	मयि		त्वयि	
द्विवचन				
प्र.	आवाम्		युवाम्	
द्वि.	आवाम्	नौ	युवाम्	वाम्
तृ.	आवाभ्याम्		युवाभ्याम्	
च.	आवाभ्याम्	नौ	युवाभ्याम्	वाम्
पं.	आवाभ्याम्		युवाभ्याम्	
ष.	आावयोः	नौ	युवयोः	वाम्
स.	आवयोः		युवयोः	
बहुवचन				
प्र.	वयम्		यूयम्	
द्वि.	अस्मान्	नः	युष्मान्	वः
तृ.	अस्माभिः		युष्माभिः	
च.	अस्मभ्यम्	नः	युष्मभ्यम्	वः
पं.	अस्मत्		युष्मत्	
ष.	अस्माकम्	नः	युष्माकम्	वः
स.	अस्मासु		युस्मासु	

नोट- (१) उपर्युक्त सर्वनाम तीनों लिगों में एक समान हैं।

(२) वैकल्पिक रूप सब जगह प्रयोग में नहीं लाये जाते–जैसे वाक्य के आरम्भ में, पद्य के चरण के आदि में तथा च, वा, ह, हा, अह एव और अव्ययों के साथ।

(३) सर्वनाम शब्द में सम्बोधन नहीं होते।

व्यक्ति वाचक सर्वनाम – तालिका नं. ८

तद् (वह)

एकवचन	पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्र.	सः	सा	तत् ,द्
द्वि.	तम्	ताम्	तत् , द्
तृ.	तेन	तया	तेन
च.	तस्मै	तस्यै	तस्मै
पं.	तस्मात्	तस्याः	तस्मात् , द्
ष.	तस्य	तस्याः	तस्य
स.	तस्मिन्	तस्याम्	तस्मिन्
द्विवचन			
प्र.	तौ	ते	ते
द्वि.	तौ	ते	ते
तृ.	ताभ्याम्	ताभ्याम्	ताभ्याम्
च.	ताभ्याम्	ताभ्याम्	ताभ्याम्
पं.	ताभ्याम्	ताभ्याम्	ताभ्याम्
ष.	तयोः	तयोः	तयोः
स.	तयोः	तयोः	तयोः
बहुवचन			
प्र.	ते	ताः	तानि
द्वि.	तान्	ताः	तानि
तृ.	तैः	ताभिः	तैः
च.	तेभ्यः	ताभ्यः	तेभ्यः
पं.	तेभ्यः	ताभ्यः	तेभ्यः
ष.	तेषाम्	तासाम्	तेषाम्
स.	तेषु	तासु	तेषु

निश्चयवाचक :- सर्वनाम -(१) तालिका नं. ९

समीप बोधक - इदम, एतद (यह)

	इदम्			एतद्		
एकवचन	पुं	स्त्री.	नपु.	पु.	स्त्री.	नपु.
प्र.	अयम्	इयम्	इदम्	एषः	एषा	एतत्
द्वि.	इमम्	इमाम्	इदम्	एतम्	एताम्,एनाम्	एतत्
तृ.	अनेन	अनया	अनेन	एतेन	एतया	एतेन
च.	अस्मै	अस्यै	अस्मै	एतस्मै	एतस्यै	एतस्मै
पं.	अस्मात्	अस्याः	अस्मात्	एतस्मात्	एतस्याः	एतस्मात्
ष.	अस्य	अस्याः	अस्य	एतस्य	एतस्याः	एतस्य
स.	अस्मिन्	अस्याम्	अस्मिन्	एतस्मिन्	एतस्याम्	एतस्मिन्
द्विवचन						
प्र.	इमौ	इमे	इमे	एतौ	एते	एते
द्वि.	इमौ	इमे	इमे	एतौ	एते	एते
तृ.	आभ्याम्	आभ्याम्	आभ्याम्	एताभ्याम्	एताभ्याम्	एताभ्याम्
च.	आभ्याम्	आभ्याम्	आभ्याम्	एताभ्याम्	एताभ्याम्	एताभ्याम्
पं.	आभ्याम्	आभ्याम्	आभ्याम्	एताभ्याम्	एताभ्याम्	एताभ्याम्
ष.	अन्योः	अनयोः	अनयोः	एतयोः	एतयोः	एतयोः
स.	अनयोः	अनयोः	अनयोः	एतयोः	एतयोः	एतयोः
बहुवचन						
प्र.	इमे	इमाः	इमानि	एते	एताः	एतानि
द्वि.	इमान्	इमाः	इमानि	एतान्	एताः	एतानि
तृ.	एभिः	आभिः	एभिः	एतैः	एताभिः	एतैः
च.	एभ्यः	आभ्यः	एभ्यः	एतेभ्यः	एताभ्यः	एतेभ्यः
पं.	एभ्यः	आभ्यः	एभ्यः	एतेभ्यः	एताभ्यः	एतेभ्यः
ष.	एषाम्	आसाम्	एषाम्	एतेषाम्	एतासाम्	एतेषाम्
स.	एषु	आसु	एषु	एतेषु	एतासु	एतेषु

निश्चयवाचक सर्वनाम –(२) तालिका नं (१०)

(२) दूरवर्ती – अदस् , तद्,* (वह) – अदस् –

एकवचन	पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्र.	असौ	असौ	अदः
द्वि.	अमुम्	अमूम्	अदः
तृ.	अमुना	अमुया	अमुना
च.	अमुष्मै	अमुष्यै	अमुष्मै
पं.	अमुष्मात्	अमुष्याः	अमुष्मात्
ष.	अमुष्य	अमुष्याः	अमुष्य
स.	अमुष्मिन्	अमुष्याम्	अमुष्मिन्
द्विवचन			
प्र.	अमू	अमू	अमू
द्वि.	अमू	अमू	अमू
तृ.	अमूभ्याम्	अमूभ्याम्	अमूभ्याम्
च.	अमूभ्याम्	अमूभ्याम्	अमूभ्याम्
पं.	अमूभ्याम्	अमूभ्याम्	अमूभ्याम्
ष.	अमुयोः	अमुयोः	अमुयोः
स.	अमुयोः	अमुयोः	अमुयोः
बहुवचन			
प्र.	अमी	अमूः	अमूनि
द्वि.	अमून्	अमूः	अमूनि
तृ.	अमीभिः	अमूभिः	अमीभिः
च.	अमीभ्यः	अमूभ्यः	अमीभ्यः
पं.	अमीभ्यः	अमूभ्यः	अमीभ्यः
ष.	अमीषाम्	अमूषाम्	अमीषाम्
स.	अमीषु	अमूषु	अमीषु

* देखिए तालिका (८)

प्रश्नवाचक सर्वनाम – तालिका नं. (११)

किम्, (क्या), (कौन)

एकवचन	पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्र.	कः	का	किम्
द्वि.	कम्	काम्	किम्
तृ.	केन	कया	केन
च.	कस्मै	कस्यै	कस्मै
पं.	कस्मात्	कस्याः	कस्मात्
ष.	कस्य	कस्याः	कस्य
स.	कस्मिन्	कस्याम्	कस्मिन्
द्विवचन			
प्र.	कौ	के	के
द्वि.	कौ	के	के
तृ.	काभ्याम्	काभ्याम्	काभ्याम्
च.	काभ्याम्	काभ्याम्	काभ्याम्
पं.	काभ्याम्	काभ्याम्	काभ्याम्
ष.	कयोः	कयोः	कयोः
स.	कयोः	कयो	कयोः
बहुवचन			
प्र.	के	काः	कानि
द्वि.	कान्	काः	कानि
तृ.	कैः	काभिः	कैः
च.	केभ्यः	काभ्यः	केभ्यः
पं.	केभ्यः	काभ्यः	केभ्यः
ष.	केषाम्	कासाम्	केषाम्
स.	केषु	कासु	केषु

अनिश्चयवाचक सर्वनाम — तालिका नं. (१२)

किम्, (किसी), (कोई), (कुछ)

	पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
	कः	का	किम्
अपि	कोऽपि	कापि	किमपि
चित्	कश्चित्	काचित्	किंचित्
चन	कश्चन्	काचन	किंचन

तालिका नं. (१२ क)

सर्वनाम अन्य (दूसरा)

एकवचन	पुंलिग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्र.	अन्यः	अन्या	अन्यत्
द्वि.	अन्यम्	अन्याम्	अन्यत्
तृ.	अनयेन	अन्यया	अन्येन्
च.	अन्यस्मै	अन्यस्यै	अन्यस्मै
पं.	अन्यस्मात्	अन्यस्याः	अन्यस्मात्
ष.	अन्यस्य	अन्यस्याः	अन्यस्य
स.	अन्यस्मिन्	अन्यस्याम्	अन्यस्मिन्
द्विवचन			
प्र.	अन्यौ	अन्ये	अन्ये
द्वि.	अन्यौ	अन्ये	अन्ये
तृ.	अन्याभ्याम्	अन्याभ्याम्	अन्याभ्याम्
च.	अन्याभ्याम्	अन्याभ्याम्	अन्याभ्याम्
पं.	अन्याभ्याम्	अन्याभ्याम्	अन्याभ्याम्
ष.	अन्ययोः	अन्ययोः	अन्ययोः
स.	अन्ययोः	अन्ययोः	अन्ययोः
बहुवचन			
प्र.	अन्ये	अन्याः	अन्यानि
द्वि.	अन्यान्	अन्याः	अन्यानि
तृ.	अन्यैः	अन्याभिः	अन्यैः
च.	अन्येभ्यः	अन्याभ्यः	अन्येभ्यः
पं.	अन्येभ्यः	अन्याभ्यः	अन्येभ्यः
ष.	अन्येषाम्	अन्यासाम्	अन्येषाम्
स.	अन्येषु	अन्यासु	अन्येषु

सम्बन्धवाचक सर्वनाम – तालिका नं. (१३)

यद् (जो)

	पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
एकवचन			
प्र.	यः	या	यद्
द्वि.	यम्	याम्	यद्
तृ.	येन	यया	येन
च.	यस्मै	यस्यै	यस्मै
पं.	यस्मात्	यस्याः	यस्मात्
ष.	यस्य	यस्याः	यस्य
स.	यस्मिन्	यस्याम्	यस्मिन्
द्विवचन			
प्र.	यौ	ये	ये
द्वि.	यौ	ये	ये
तृ.	याभ्याम्	याभ्याम्	याभ्याम्
च.	याभ्याम्	याभ्याम्	याभ्याम्
पं.	याभ्याम्	याभ्याम्	याभ्याम्
ष.	ययोः	ययोः	ययोः
सं.	ययोः	ययोः	ययोः
बहुवचन			
प्र.	ये	याः	यानि
द्वि.	यान्	याः	यानि
तृ.	यैः	याभिः	यैः
च.	येभ्यः	याभ्यः	येभ्यः
पं.	येभ्यः	याभ्यः	येभ्यः
ष.	येषाम्	यासाम्	येषाम्
स.	येषु	यासु	येषु

संज्ञा विशेषण सर्वनाम – सर्व (सब)

तालिका नं. (१४)

	पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
एकवचन			
प्र.	सर्वः	सर्वा	सर्वम्
द्वि.	सर्वम्	सर्वाम्	सर्वम्
तृ.	सर्वेण	सर्वया	सर्वेण
च.	सर्वस्मै	सर्वस्यै	सर्वस्मै
पं.	सर्वस्मात्	सर्वस्याः	सर्वस्मात्
ष.	सर्वस्य	सर्वस्याः	सर्वस्य
स.	सर्वस्मिन्	सर्वस्याम्	सर्वस्मिन्
संबो.	सर्व	सर्वे	सर्वे
द्विवचन			
प्र.	सर्वौ	सर्वे	सर्वे
द्वि.	सर्वौ	सर्वे	सर्वे
तृ.	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्याम्
च.	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्याम्
पं.	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्याम्
ष.	सर्वयोः	सर्वयोः	सर्वयोः
स.	सर्वयोः	सर्वयोः	सर्वयोः
संबो.	सर्वौ	सर्वे	सर्वे
बहुवचन			
प्र.	सर्वे	सर्वाः	सर्वाणि
द्वि.	सर्वान्	सर्वाः	सर्वाणि
तृ.	सर्वैः	सर्वाभिः	सर्वैः
च.	सर्वेभ्यः	सर्वाभ्यः	सर्वेभ्यः
पं.	सर्वेभ्यः	सर्वाभ्यः	सर्वेभ्यः
ष.	सर्वेषाम्	सर्वासाम्	सर्वेषाम्
स.	सर्वेषु	सर्वासु	सर्वेषु
संबो.	सर्वे	सर्वाः	सर्वाणि

६.३ संख्या वाची सर्वनाम

६.३.१ संख्या वाचक "एक" तीनों लिंगों में एक वचनान्त होता है: विभक्ति रूप इस प्रकार हैं:-

	पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्र.	एकः	एका	एकम्
द्वि.	एकम्	एकाम्	एकम्
तृ.	एकेन	एकया	एकेन
च.	एकस्मै	एकस्यै	एकस्मै
पं.	एकस्मात् , द्	एकस्याः	एकस्मात् , द्
ष.	एकस्य	एकस्याः	एकस्य
स.	एकस्मिन्	एकस्याम्	एकस्मिन्

नोटः "एक" शब्द का प्रयोग "अल्प", "प्रधान", "प्रथम", "केवल", "साधारण" और "समान" अर्थों में भी होता है। तब इसके रूप सब वचनों में "सर्व" की तरह चलते हैं ।

६.३.२ संख्यावाचक "द्वि" तीनों लिंगों में द्विवचनान्त ही होता है, विभक्ति रूप इस प्रकार हैं :-

	पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्र.	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वि.	द्वौ	द्वे	द्वे
तृ.	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
च.	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
पं.	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
ष.	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः
स.	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः

६.३.३ "त्रि" और बाद के सब संख्यावाची शब्द तीनों लिंगो में बहुवचनान्त ही होते हैं :-

प्र.	त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
द्वि.	त्रीन्	तिस्रः	त्रीणि
तृ.	त्रिभिः	तिसृभिः	त्रिभिः
च.	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
पं.	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
ष.	त्रयाणाम्	तिसृणाम्	त्रयाणाम्
स.	त्रिषु	तिसृषु	त्रिषु

६.३.४ चतुर् (चार) के रूप भी तीनों लिंगों में अलग-अलग और बहुवचन में ही होते हैं :-

प्र.	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
द्वि.	चतुरः	चतस्रः	चत्वारि
तृ.	चतुर्भिः	चतसृभिः	चतुर्भिः
च.	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
पं.	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
ष.	चतुर्णाम्	चतसृणाम्	चतुर्णाम्
स.	चतुर्षु	चतसृषु	चतुर्षु

६.३.५ "पञ्चन्" (पांच) से आगे संख्यावाचक शब्दों के रूप तीनों लिंगों में समान होते हैं और केवल बहुवचन में :-

प्र.	पञ्च	षट्	सप्त	अष्ट, अष्टौ	नव	दश
द्वि.	पञ्च	षट्	सप्त	अष्ट, अष्टौ	नव	दश
तृ.	पञ्चभिः	षड्भिः	सप्तभिः	अष्टभिः,अष्टाभिः	नवभिः	दशभिः
च.	पञ्चभ्यः	षड्भ्यः	सप्तभ्यः	अष्टभ्यः,अष्टाभ्यः	नवभ्यः	दशभ्यः
पं.	पञ्चभ्यः	षड्भ्यः	सप्तभ्यः	अष्टभ्यः,अष्टाभ्यः	नवभ्यः	दशभ्यः
ष.	पञ्चानाम्	षण्णाम्	सप्तानाम्	अष्टानाम्,अष्टानाम्	नवानाम्	दशानाम्
स.	पञ्चसु	षट्सु	सप्तसु	अष्टसु, अष्टासु	नवसु	दशसु

६.४ क्रमवाचक सर्वनामों के रूप तीनों लिंगों में इस प्रकार से हैं :

संख्या	पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
एक	प्रथमः	प्रथमा	प्रथमम्
द्वि	द्वितीयः	द्वितीया	द्वितीयम्
त्रि	तृतीयः	तृतीया	तृतीयम्
चतुर्	चतुर्थः	चतुर्थी	चतुर्थम्
पञ्चन्	पञ्चमः	पञ्चमी	पञ्चमम्
षष्	षष्ठः	षष्ठी	षष्ठम्
सप्तन्	सप्तमः	सप्तमी	सप्तमम्
अष्टन्	अष्टमः	अष्टमी	अष्टमम्
नवन्	नवमः	नवमी	नवमम्
दशन्	दशमः	दशमी	दशमम्
एकादशन्	एकादशः	एकादशी	एकादशम्
द्वादशन्	द्वादशः	द्वादशी	द्वादशम्

नोटः क्रमवाचक शब्दों के रूप पुंल्लिंग और नपुंसकलिंग में क्रमशः "राम" और "फल" की तरह चलते है। स्त्रीलिंग में प्रथमा, द्वितीया और तृतीया के रूप "विद्या" की तरह और बाकी विभक्तियों में "नदी" की तरह हैं ।

६.५ परिमाणवाचक सर्वनाम

"यद" से यावत् और ' तद' से तावत् इन शब्दों के रूप पुंल्लिंग में 'भवत्' और नपुंसकलिंग में 'जगत्' की तरह हैं। स्त्रीलिंग में 'नदी' की तरह।

"एतावत्" 'कियत्' और 'इयत्' भी इसी प्रकार हैं। 'कियत् और 'इयत्' के प्रयोग गीता में नहीं हैं।

६.६ सार्वनामिक शब्द

जब सर्वनाम संज्ञा के साथ विशेषण बनकर आता है, तब वह सार्वनामिक विशेषण कहलाता है। गीता में निम्न उदाहरण आते हैं।

(i) विशेषण रूप में

अयम् (देही २/३०); एषा (ब्राह्मी स्थितिः २/७२)
अमी (सुरसङ्घा ११.२१) अस्मिन् (देहे १३/२२)
सर्वेषु (अयनेषु १/११)

(ii) संज्ञा रूप में

मामकाः (१/११) मामिकाम् (९/७)
ईदृक् (११/४९) ईदृशम् (२/३२)
अस्मदीयः (११/२६)

७. *कारक, विभक्ति*

आपने ऊपर प्रकरण (२) में विभक्तियों के अन्तर्गत पढ़ा कि संस्कृत भाषा में कारक और सम्बन्ध वाची चिन्ह अलग से

प्रयुक्त न होने के कारण शब्द के साथ'विभक्ति' लगा दी जाती है जिससे उसका सम्बन्ध वाक्य में मुख्यतः क्रिया अथवा दूसरे शब्दों के साथ दर्शित होता है। विभक्ति लगने से शब्द के रूप में कुछ परिवर्तन हो जाता है। संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका (संज्ञा या सर्वनाम का) सम्बन्ध क्रिया के साथ जाना जाता है उसे कारक कहते हैं। कारक छः है और उनकी विभक्तियां इस प्रकार हैं जिन्हें हम साधारणतः 'विभक्ति का प्रयोग' कह सकते है :
प्रथमा – कर्ता; द्वितीया – कर्म; तृतीया – करण; चतुर्थी – सम्प्रदान; पंचमी – अपादान; सप्तमी – अधिकरण। षष्ठी – सम्बन्धवाचक, और अष्टमी – सम्बोधन का क्रिया पद से प्रत्यक्ष सम्बन्ध न होने के कारण, इन दोनो की गणना कारकों में नहीं की जाती। कारक दर्शाने के अतिरिक्त इन विभक्तियों का प्रयोग अन्य प्रयोजनों के लिए भी होता है जैसा आप अभी आगे चलकर पढ़ेंगे। इनमें से प्रत्येक के उदाहरण जो गीता में आए हैं, हम नीचे दे रहे हैं :

७.१ प्रथमा विभक्ति

(क) इसका कारक प्रयोग "कर्ता" को दर्शाना है जैसे 'वाक्यमुवाच मधु सूदनः' (२/१) इसे कर्त्ता प्रयोग कहते हैं। आप जानते है संस्कृत भाषा में क्रिया के तीन वाच्य होते हैं – कर्तृ, कर्म और भाव। आप आगे चल कर देखेंगे (देखिए प्रकरण १०.३.४) कि कर्तृवाच्य में कर्ता और कर्मवाच्य में 'कर्म' प्रथमा विभक्ति में होता है जैसे 'स एवायं मया तेऽद्य योगः प्रोक्तः पुरातनः' (४/३) यहां योगः प्रथमा विभक्ति में होते हुए भी कर्म है। तीसरे, सम्बोधन में

भी प्रथमा विभक्ति होती है – 'सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत' (१/२१)

(ख) इसके अन्य प्रयोग –

(i) शब्द का अर्थ और लिंग बतलानाः संस्कृत भाषा में जबतक किसी शब्द में विभक्ति न लगाई जाए तब तक उसका कोई अर्थ नहीं होता। जैसे केवल 'कृष्ण' निरर्थक शब्द है पर कृष्णः 'सार्थक' शब्द है। कहीं - कहीं अव्यय शब्दों में भी प्रथमा विभक्ति लगाई जाती है जैसे 'उच्चैः' 'नीचैः' आदि। परन्तु कुछ वैयाकरण इन्हें विसर्ग युक्त शब्द मानते हैं। ऐसे शब्दों और नियतलिंगी शब्दों (जैसे रामः फलम् और कन्या) को छोड़कर शब्द का लिंग बतलाने के लिए भी प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होता है जैसे तट, तटी तटम् तीनों का अर्थ है किनारा।

(ii) नाम गिनाने के लिएः भीष्मः, कर्णः, कृपः (१/८)

(iii) संख्या बतलाने के लिएः एकः, द्वौ, बहवः

७.२ द्वितीया विभक्ति

हिन्दी तथा अंग्रेजी में साधारणतः जिस वस्तु या व्यक्ति के ऊपर क्रिया का प्रभाव पड़ता है उसे 'कर्म' कहते हैं। परन्तु पाणिनिने 'कर्म' की बड़ी ही रोचक परिभाषा दी है : "जिसे कर्ता अपनी क्रिया द्वारा सबसे अधिक पाना चाहता हैं उसे 'कर्म' कहते हैं। "कर्म" को बतलाने के लिए द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है। इसके अतिरिक्त द्वितीया विभक्ति के प्रयोग के लिए अनेक विशेष सूत्र हैं। उनमे से

हम नीचे उन नियमों का उल्लेख कर रहे है जिनका गीता में प्रयोग हुआ हैं :-

(क) 'अकथित' कर्म , अपादान इत्यादि के द्वारा अविवक्षित कारक 'अकथित' कर्म कहलाता है । ये 'द्वि कर्मक' धातुओं वालें वाक्य में ही आते हैं और गौण कर्म के रूप में स्वीकार कर लिए जाते हैं । अतः इनके लिए द्वितीया विभक्ति का ही प्रयोग किया जाता हैं । गीता में ऐसे उदाहरण अधिक नहीं हैं।

(ख) गत्यर्थ कर्मणि, गत्यर्थक धातुएं वे हैं जिनका अर्थ हो 'जाना' - जैसे 'या' 'गम्' 'चल' 'इण्' इत्यादि । ऐसी धातुओं के साथ गमन के स्थान वाचक शब्द में द्वितीया का प्रयोग होता है - विकल्प से चतुर्थी का भी ।

७.३ तृतीया विभक्ति

क्रिया की सिद्धि में जो अत्यन्त सहायक हो उसे 'करण' कहते हैं । कर्म वाच्य तथा भाव वाच्य में कर्त्ता अनुक्त होता है । कर्त्तृव्यच्च्य के 'करण' में तथा अनुक्त कर्त्ता में अर्थात कर्मवाच्य के कर्त्ता में तृत्तीया विभक्ति आती है।

इसके अतरिक्त 'तृतीया' का प्रयोग केवल निम्न प्रयोजनों के लिए गीता में किया गया है :-

(i) 'सह' के योग में अप्रधान (अर्थात् जो क्रिया के प्रधान कर्त्ता के साथ आता है) में तृतीया विभक्ति आती है जैसे, पुत्रेण सह पिता गच्छति, कैर्मया सह.... (१/२२)

(ii) 'पृथक' 'विना' 'नाना' शब्दों के साथ तृतीया, द्वितीया अथवा पंचमी विभक्ति हो सकती है : जैसे
रामेण/रामं/रामाद् विना दशरथो नाजीवत् ; "तद् विना" (१०/३९)

(iii) 'तुला' और 'उपमा' का अर्थ प्रकट करने वाले शब्दों के साथ 'तृतीया' अथवा 'षष्ठी' विभक्ति होती है जैसे, रामेण/रामस्य सदृशः । "सदृशो मया" (१६/१५)

(iv) जिस 'हेतु' से कोई कार्य हो या किया जाय उसमें तृतीया विभक्ति आती है जैसे "हित काम्यया"; (१०/१) और

(v) 'प्रकृति' आदि अर्थों में तृतीया विभक्ति आती है । जैसे रामः प्रकृत्या दयालुः ; "...प्रकृत्या नियताः स्वया" (७/२०)

७.४ चतुर्थी विभक्ति

कर्ता जिसको कुछ देता है, अथवा जिसके लिए कोई कार्य करता है उस व्यक्ति अथवा पदार्थ को सम्प्रदान कहते हैं। सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति आती है; जैसे विप्राय गां ददाति । गीता में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग केवल निम्न प्रयोजनों के लिए किया गया है :

(i) किसी धातु में तुमुन् प्रत्यय जोड़ने से जो अर्थ प्रकट होता है वही अर्थ उसी धातु से बनी भाववाचक संज्ञा को चतुर्थी में प्रयोग करने से भी निकलता है: जैसे परित्राणाय (परित्रातुम्) विनाशाय (विनाशयितुम्) (४/८)

(ii) जिस प्रयोजन के लिए कोई कार्य किया जाय उस (प्रयोजन) में चतुर्थी विभक्ति होती है; जैसे–

मुक्तये हरिं भजति, '...अमृतव्याय कल्पते' (२/१५)

(iii) नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा अलं तथा वषट् शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति आती है; जैसे– रामाय नमः, नमस्ते (११/३९)

परन्तु, उपपद विभक्ति से कारक विभक्ति (क्रिया के योग से होने वाली) बलवती होने के कारण, द्वितीया विभक्ति का ही प्रयोग होता है; जैसे – मां नमस्कुरु (९/३४)

७.५ पञ्चमी विभक्ति

अपाय कहते हैं अलग होने को। उसकी सिद्धि में ध्रुव या अवधि भूत (जहां से विश्लेष (या अलग) हो) कारक को अपादान कहते हैं। अपादान में 'पञ्चमी' विभक्ति का प्रयोग होता है; यथा – वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।

पंचमी विभक्ति का प्रयोग गीता में केवल निम्न प्रयोजनों के लिए हुआ है।

(i) जिससे भय हो अथवा जिसके भय के कारण रक्षा करनी हो, उस कारक को अपादान कहते हैं; जैसे – सर्पाद् भयम्; त्रायते महतो भयात् ; 'भयाद्रणात्' (२/३५)

(ii) "जन्" धातु के कर्त्ता का जो आदि कारण हो, वह 'अपादान' होता है; जैसे – कामात् क्रोधोऽभिजायते (२/६२)

यहां क्रिया "अभिजायते" का कर्त्ता क्रोध है और उसका आदि कारण 'काम' है। अतः काम अपादान कारक है।

(iii) उत्पन्न होने वाले का "प्रभव" (उत्पत्ति स्थान) भी अपादान होता है; जैसे – अव्यक्ताद् व्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्ति (८/१८)

(iv) जिसके द्वारा किसी वस्तु का तुलनात्मक तारतम्य दिखाया जाय वहां पंचमी विभक्ति होती है; परन्तु ये दोनो वस्तुएं भिन्न जाति, गुण क्रिया तथा संज्ञा वाली होनी चाहिएं; जैसे– श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात् (३/३५)

(v) अन्य, आरात्, इतर ऋते दिग्वाची शब्दों के योगः में पञ्चमी विभक्ति होती है; जैसे – भविता, न च मे तस्मादन्यः प्रियतरो भुवि (१८/६९)

(vi) हेतु या कारण को प्रकट करने वाले गुणवाची शब्द (जो स्त्रीलिंगी नहीं है) विकल्प से तृतीया या पंचमी विभक्ति में होते हैं; जैसे – जाड्येन/जाड्यात् वा बद्ध : (सि. कौ.) वह मूर्खता के कारण पकड़ा गया।

भयात् – भयाद्रणादुपरतं मंस्ययन्ते त्वां महारथाः (२/३५)

७.६ सप्तमी विभक्ति

क्रिया का आधार 'अधिकरण' कहलाता है। आधार तीन प्रकार का होता है। अधिकरण में सप्तमी विभक्ति आती है।
गीता में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग निम्न प्रकार से हुआ है :-

(क) आधारानुसारः :-

(i) औपश्लेषिक आधारः- यह वहां होता है जहां आधार के किसी अंश से ही दूसरी वस्तु का लगाव हो अर्थात् जहां आधेय का भौतिक लगाव हो; जैसे धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः (१/१)

(ii) वैषयिक आधार :- यह विषय सम्बन्धी लगाव होता है; जैसे मोक्षे इच्छास्ति; 'स्वधर्मे निधनं श्रेयः' (३/३५)

(iii) अभिव्यापक आधारः - इस दशा में आधेय का व्याप्य - व्यापक सम्बन्ध होता है; जैसे - तिलेषु तैलम् , 'वेपथुश्च शरीरे- (१/२९)

(ख) यदि किसी वस्तु का अपने समूह की वस्तुओं से कोई विशेष निर्धारण किया जाय तो उस समूहवाचक शब्द में "सप्तमी" अथवा "षष्ठी" विभक्ति का प्रयोग किया जाता है; जैसे - कविषु कालिदासः श्रेष्ठः, या कवीनां कालिदासः श्रेष्ठः,

और गीता में 'वेदानां सामवेदोऽस्मि, देवानामस्मि वासवः' । यहां 'वेदानां' के स्थान पर 'वेदेषु' और 'देवानां' के स्थान पर 'देवेषु' हो सकता है ।

७.७ षष्ठी विभक्ति

आप ऊपर पढ़ आए हैं षष्ठी विभक्ति की गणना कारकों में नहीं होती । परन्तु जो बात अन्य विभक्तियों से नहीं बतलाई जा सकती वह षष्ठी द्वारा बतलाई जाती है ।

गीता में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग केवल निम्न प्रयोजनों के लिए हुआ है :-

(i) स्वामी तथा भृत्य, जन्य तथा जनक, कार्य तथा कारण इत्यादि सम्बन्ध बतलाने के लिए जैसे – रूपमत्यद्भुतं हरेः (१८.७७)

(ii) "हेतु" शब्द के प्रयोग में; यथा – राज्यस्य हेतोः (१/३५)

(iii) जब "क्त" प्रत्ययान्त शब्द (जो कि भूतकाल बोधक होते हैं) वर्तमान् के अर्थ में आएं जैसे – अद्वेष्टा सर्वभूतानाम् (१२/१३)

(iv) जिन शब्दों के अन्त में कृत्य प्रत्यय [१]लगे रहते हैं उनका प्रयोग होने पर कर्त्ता में तृतीया या षष्ठी विभक्ति आती है; जैसे–
'गुरुः मया पूज्यः' या 'गुरुः मम पूज्यः;'
अस्य पूज्यः– त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान्
लोकस्य – पितासि लोकस्य चराचरस्य (११/४३)

१. देखें प्रकरण ११

८. अव्यय

जो शब्द तीनों लिंगों, तीनों वचनों तथा सब विभक्तियों में एक समान रहे, उसे 'अव्यय' कहते हैं। अव्यय पांच प्रकार के हैं :- (१) उपसर्ग, (२) क्रिया विशेषण, (३) समुच्य बोधक, (४) मनोविकार बोधक तथा (५) प्रकीर्ण।

उपसर्ग

उपसर्ग वे शब्दांश हैं जो धातु या धातु से निष्पन्न संज्ञा आदि शब्दों से जुड़कर कभी उनके अर्थ को उलटा कर देते हैं, कभी वही अर्थ रखते हुए उसे विशिष्ट कर देते हैं और कभी ठीक वही अर्थ रहने देते हैं। जैसे 'जय' का अर्थ है 'जीत' किन्तु 'पराजय' का अर्थ है 'हार'।

गीता में निम्न प्रकार के अव्ययों का प्रयोग हुआ है, जो हम नीचे, उनके भिन्न-भिन्न अर्थों सहित दे रहे हैं :-

८.१ उपसर्ग	अर्थ	शब्द
प्र	प्रकर्ष, अधिकता	प्रनष्टः
	विस्तार, विशेषता	प्रवृत्ति
प्र	उत्पत्ति	प्रभवन्ति
अप	दूर, बुरा	अपहृत ज्ञाना
अति	बाहुल्य	अतिरिच्यते
सम्	अच्छी तरह उत्पन्न	संस्थापनार्थाय
	होना	संभ्वामि
निस्	नहीं, पूर्ण	संन्यास
		निःश्रेयसकरावुभौ
निर्	नहीं	निर्मम, निरंहकार
वि	विना	विगुणः
दुस्	कठिन	दुष्प्रापः
दुर्	बुरा	दुर्गतिम्
आङ्	सम्यक्	आचरति
नि	विरुद्ध	निग्रहः
सु	अच्छी तरह	सुलभः
उद्	ऊपर उठना	उद्धरेत्
अभि	ओर	अभिजातः
प्रति	ओर	प्रतिजाने
परि	चारों ओर	परि कीर्तितः
उप	निकट	उपजायते
अनु	पीछे	अनुवर्तते

८.२ क्रिया विशेषण अव्ययः

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
उच्चैः	ऊंचे स्वर से	ऊर्ध्वम्	ऊपर, उपरान्त
ऋते	बिना, से रहित	एव	भी, एकमात्र, केवल
अधः	नीचे, नीचे की ओर	एवम्	इस प्रकार, ऐसा
		कच्चित	क्या, क्या यह है
अथः	अब, तदनन्तर भी, यदि, फिर, और		कुछ भी

८.२.१ तद्धित प्रत्ययों से बने क्रिया विशेषण अव्यय

शब्द	प्रत्यय	क्रि.वि. अव्यय	अर्थ
किम् (कु)	तसिल्	कुतः	कहां से
किम्	थम्	कथम्	कैसे, किस प्रकार
इदम् (इ)	तसिल्	इतः	इससे, इसकी अपेक्षा, इस (संसार) के बाद
सर्व	तसिल्	सर्वतः	सर्वत्र, सब ओर से
यद्	तसिल्	यतः	जहां, जिससे
यद्	त्रल्	यत्र	जहां
इदम् (अत्त्व)	त्रल्	अत्र	जहां
इदम्	ह	इह	इस, यहां, इस लोक में
यद् तद्	दा	यदा,तदा	जब, तब
यद् तद्	थाल्	यथा, तथा	जैसा वैसा
अनेक	धा	अनेकधा	अनेक प्रकार से
अष्ट	धा	अष्टधा	आठ प्रकार की

शब्द	प्रत्यय	क्रि.वि. अव्यय	अर्थ
शतसहस्र	शः	शतशः सहस्रशः	सैकड़ों, हजारों
			सौ गुणा, हजार गुणा
सहस्र	कृत्वः	सहस्र कृत्वः	सहस्रो बार
आश्चर्य	वत्	आश्चर्यवत्	आश्चर्य जैसा
आदित्य्	वत्	आदित्यवत्	सूर्य जैसा
विस्तर	शः	विस्तरशः	विस्तार से

८.२.२ कृत्प्रत्ययों से बने क्रिया विशेषण अव्यय

इर्ष्	त्वा, 'क्तवा'	इष्ट्वा	पूजा कर के
वच्	क्त्वा	उक्तवा	कह कर
प्र + नम्	ल्यप् (य)	प्रणम्य	प्रणाम करके
उप + विश्	ल्यप् (य)	उपविश्य	बैठकर
हन्	तुमुन् (तुम)	हन्तुम्	मारने के लिए
कृ	तुमुन (तुम)	कर्तुम्	करने के लिए
			करने को

८.३ समुच्चय बोधक अव्यय

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
च	और	अथवा	अथवा, या
आहो	अथवा	–	–

८.४ मनोविकार बोधक अव्यय

अहो	हाय	हन्त	अच्छा, ठीक है,
			तेरा कल्याण हो

८.५ प्रकीर्ण प्रत्यय

(१) अव्ययी भाव समास

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अधिभूतम्	मूल तत्त्व	समक्षम्	किसी के सामने
अधिदैवतम्	देवताओं सम्बन्धी		

(२) अन्य समास

अतीव	मानो अद्वितीय	जातु	कभी भी, किसी भी समय
क्षिप्रम	तुरंत शीघ्र		
		तूष्णीम्	चुपचाप

९. स्त्री प्रत्यय

आप जानते हैं संस्कृत भाषा में शब्दों का लिंग ज्ञान अत्यावश्यक है। कुछ शब्द नित्य लिंगी हैं जैसे रामः, निशा और फलम् सदैव क्रमशः पुंल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसक लिंग में ही रहते हैं। लिंग बोध स्मरण और अभ्यास का विषय है। हमने गीता कोश में पाठकों की सुविधा के लिए प्रत्येक संज्ञा शब्द के लिए लिंग सूचक शब्द दर्शाए हैं, देखिए तालिका पृष्ठ ४१२ पर।

नित्य लिंगी शब्दों को छोड़ कर प्रत्यय प्रयोग द्वारा भी शब्द का लिंग बदल दिया जाता हैं। संस्कृत में मुख्य स्त्री प्रत्यय सात हैं:-

(१) टाप्, (२) डाप्, (३) टाप् का रूप 'आ' है ?

(४) ङीप्, (५) ङीन् , (६) ङीष् का रूप 'ई' है और (७) ऊङ .... का रूप 'ऊ' है

गीता में उपर्युक्त (६) और (७) के उदाहरण नहीं मिलते। प्रथम तीन 'अजादिगण' के उदाहरण भी गीता में नहीं के बराबर हैं।

साधारण जानकारी के लिए कुछ शब्द इस प्रकार हैं

बाल – बाला। वत्स – वत्सा।

अज – अजा। अश्व – अश्वा।

'टाप्' प्रत्यय के दो उदाहरण गीता में मिलते हैं :- सर्वाः; मामिकाम्

ङीप् और ङीन् प्रत्यय के निम्न उदाहरण हैं :

प्रत्यय	शब्द	अर्थ
ङीप्	दैवी	ईश्वरीय
	मानुषीम्	मानवीय
	गुणमयी	गुणयुक्त
	जाह्नवी	जह्नु की पुत्री, गंगा
	राक्षसीम्	राक्षसी
	पुराणी	प्राचीन
ङीन्	नारीणाम्	स्त्रियों में

उपर्युक्त ङीप् और ङीन् प्रत्ययान्त शब्दों के रूप 'नदी' की तरह चलते हैं और सर्वाः के रूप विद्या की तरह।

१०. क्रिया

हम ऊपर विभक्तियों के अन्तर्गत बतला आए हैं कि संस्कृत भाषा में सम्बन्ध वाचक चिन्ह अलग से नहीं हैं। संस्कृत भाषा में सहायक क्रियाएं भी नहीं हैं। इसके लिए क्रिया में अलग-अलग प्रत्यय (चिन्ह) लगाए जाते हैं। जैसे – गच्छामि (मैं जाता हूं), गच्छसि (तुम जाते हो) और गच्छति (वह जाता है)। यहां "हूं" "हो" और "है" सहायक क्रियाओं के लिए क्रमशः 'आमि' 'सि' और 'ति' का प्रयोग किया गया है। इसी प्रकार भूतकाल और भविष्यत् काल की सहायक क्रियाएं दर्शाने के लिए भी अलग-अलग चिन्ह हैं (नीचे देखिए लकार के अन्तर्गत) और फिर यह चिन्ह क्रिया के गण, विभाग, पद, वाच्य, वचन और पुरुष के अनुसार बदल जाते हैं। इनका अध्ययन हम आगे चलकर विभिन्न तालिकाओं द्वारा करेंगे। पर पहले 'शब्द व्युत्पत्ति' के विषय में कुछ जान लेना जरूरी है।

१०.१ धातु

"धातु" का अर्थ है 'शब्दयोनि' अर्थात् जिससे शब्दों की उत्पत्ति हो। संस्कृत भाषा में सभी शब्द धातुओं से बने हैं। कुल धातुएं २२०० से कुछ अधिक हैं। धातुओं से क्रिया पद बनाने के लिए जो (तिप् से महिङ् तक) प्रत्यय लगाए जाते हैं उन्हें तिङ् प्रत्यय कहते हैं और ऐसे बने क्रिया शब्दों को तिङन्त।

१०.२ गण

धातुओं को दस भागों में बांटा गया है। इनको गण कहते हैं। गण का अर्थ है 'समूह' या 'समुदाय'। प्रत्येक गण का नाम धातु के नाम के अनुरूप रखा गया है जो उस गण के आदि में आती है। जैसे आदि में "भू" धातु होने से भ्वादि गण। 'अद्' से अदादि गण। दसों गणों के नाम हैं :- भ्वादि (अ), अदादि (शून्य), जुहोत्यादि (शून्य), दिवादि (य्), स्वादि (नु), तुदादि (अ), रुधादि (न), तनादि (उ), क्र्यादि (ना), और चुरादि (अय्)। प्रत्येक गण के सामने ब्रैकेट में उसका प्रत्यय व विकरण दिया है जिसके जुड़ने से क्रिया शब्द बनता है। जैसे "भू" धातु में 'अ' जुड़ने से भव् - भवति, भवसि, भवामि। इसी प्रकार प्रत्येक धातु का रूप उसके विकरण को जोड़ने के बाद चलाया जाता है जो हम आगे तालिकाओं में देखेंगे।

१०.३ धातु और क्रियाओं के भेद :

१०.३.१ सकर्मक : अकर्मक : जो क्रिया कर्म की आकांक्षा करती है सकर्मक कहलाती है, जो नहीं - अकर्मक। हिन्दी के पाठक इस क्रिया भेद से भली प्रकार परिचित हैं।

१०.३.२ सेद्, अनिद् और वेद् : रूप चलाने की सुगमता के लिए धातुओं का यह भेद किया जाता है। सेद् का अर्थ है - इद् सहित अर्थात् जिनके रूपों में धातु और आर्ध धातुक प्रत्यय

(नीचे देखिए लकार के अन्तगर्त) के बीच में 'इ' आजाती है। जैसे वदिष्यन्ति (२/३६)।

जहां "इ" नहीं आती वे धातुएं अनिद् हैं। वेद् विभाग में वे धातुएं है जहां 'इ' विकल्प से आती है। अनिद् का उदाहरण है स्थास्यति (२/५३) और वेद् का निवसिष्यसि (१२/८) अथवा निवत्स्यसि, 'इट्' न होने पर।

१०.३.३ परस्मैपद, आत्मनेपद और उभयपद : परस्मैपद का अर्थ है "जो दूसरे के लिए हो" और आत्मनेपद का "जो अपने लिए हो"। साधारणतः ऐसी क्रियाएं जिनका फल दूसरों के लिए हो परस्मैपदी होती हैं और जिनका फल अपने लिए हो आत्मनेपदी होती हैं। सः वपति और सः वपते दोनों का अर्थ "वह बोता है" है परन्तु "वपति" परस्मैपदी क्रिया होने से बोने का जो फल है वह दूसरों के लिए होगा जबकि "वपते" आत्मनेपदी क्रिया है - फल अपने लिए होगा। परन्तु इस प्रकार के प्रयोग केवल समझाने मात्र के लिए हैं। अनुपालन में इस नियम का उल्लंघन ही होता है। जो धातुएं दोनों रूपों में प्रयुक्त होती हैं उन्हें उभयपदी कहा जाता है। प्रत्येक के अलग-अलग प्रत्यय हैं जो तालिकाओं में दिखलाए गए हैं।

१०.३.४ वाच्य : संस्कृत भाषा में क्रिया के रूप तीन वाच्यों में होते हैं - कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य। इन्हें क्रमशः 'कर्तरि प्रयोग', 'कर्मणि प्रयोग' और 'भावे प्रयोग' भी कहते हैं। अंग्रेजी में केवल दो वाच्य (Voice) ही हैं : Active

voice (कर्तृवाच्य) और Passive voice (कर्मवाच्य)। हिन्दी में अधिकतर कर्तृवाच्य का ही प्रयोग किया जाता है। क्रिया का भाववाच्य रूप संस्कृत की विशेषता है। जिस वाक्य में क्रिया अकर्मक हो और क्रिया का अर्थ या भाव ही प्रधान हो वह भाववाच्य कहलाता है। तीनों वाच्यों की रचना के नियम इस प्रकार हैं :

(i) कर्तृवाच्य की रचना में कर्ता प्रथमा में, कर्म द्वितीया में होता है और क्रिया, कर्ता के पुरुष और वचन के अनुरूप रहती है – रामः ग्रामं गच्छति।

(ii) कर्मवाच्य की रचना में कर्म प्रथमा में, कर्ता तृतीया में होता है और क्रिया, कर्म के पुरुष एवं वचन के अनुसार होती है। रामेण ग्रन्थाः लिख्यन्ते।

(iii) भाववाच्य में कर्ता तृतीया में और क्रिया में प्रत्येक लकार (नीचे देखिए "लकार" के अन्तर्गत) का रूप केवल प्रथम पुरुष, एकवचन में होता है, ऐसी रचना में कर्म होता ही नहीं। जैसे मया न अट्यते (मुझसे चला नहीं जाता)।

(iv) कर्मवाच्य् और भाववाच्य में केवल 'आत्मनेपद' के प्रत्यय लगते हैं।

१०.४ लकार

आप देख रहे हैं संस्कृत भाषा में सहायक क्रियाओं के न होने से क्रियाओं के रूप किन-किन कारणों से बदल

जाते हैं। इन सबमें अधिक महत्त्व का कारण है- "काल"। मुख्ययतः काल के तीन भेद हैं - भूत, वर्तमान और भविष्यत्।

हिन्दी में प्रत्येक काल को साधारणतया निम्न प्रकार से प्रविभाजित किया जाता है :

वर्तमान काल - सामान्य, अपूर्ण (अथवा तात्कालिक) और संदिग्ध

भूत काल - सामान्य, आसन्न, पूर्ण, अपूर्ण, सन्दिग्ध और हेतु हेतुमद्भूत (या क्रियातिपत्ति)

भविष्यत्काल - सामान्य और सम्भाव्य

इनके अतिरिक्त भावानुसार क्रियाओं के कुछ और भी भेद हैं :- जैसे पूर्वकालिक, विधि, प्रेरणार्थक, समापिका, संयुक्त-क्रिया, नामधातु और सम्भावना। संस्कृत में काल, अवस्था और भाव के अनुसार क्रियाओं के भेद लकारों द्वारा किए जाते हैं और हर अवस्था में क्रिया का रूप बदल जाता है।

लकार दस हैं, जो दो भाग में विभाजित हैं :

ट् इत् - लट् लिट् लुट् लृट् लेट् लोट्

ङ्इत् - लङ् लिङ् लुङ् लृङ्

वर्तमान काल में केवल एक ही लकार है - लट्

भूतकाल में तीन लकार है :

लिट् (परोक्ष भूत) लङ् (अनद्यतन भूत) और लुङ् (सामान्य भूत)

परोक्ष का एक अर्थ है : 'दृष्टि से बाहर'। अगोचर।

परोक्ष भूतकाल ऐसा अतीत काल है जो आंखों के सामने न हुआ हो। अतः परोक्ष भूत का प्रयोग उत्तम पुरुष में नहीं हो सकता क्योंकि स्वयं की गई क्रिया परोक्ष नहीं हो सकती।

अद्यतन का अर्थ है : 'आज सम्बन्धी', 'आज का'।

अनद्यतन भूतकाल ऐसा भूतकाल है जो आज न हुआ हो, जिसकी क्रिया आज समाप्त न हुई है, कल या इससे पूर्व समाप्त हो गई हो।

बाकी 'सामान्य भूतकाल' सर्वत्र प्रयोग में आता है चाहे क्रिया आज समाप्त हुई हो चाहे पहले कभी।

भविष्यत् काल में दो 'लकार' हैं :

लुट् (अनद्यतन भविष्यत) और लृट् (सामान्य भविष्यत)

अनद्यतन का प्रयोग उस दशा में नहीं हो सकता जब क्रिया आज ही आरम्भ होने को हो।

सामान्य भविष्यत् का प्रयोग बाकी सब दशाओं में किया जाता है चाहे क्रिया आज ही आरम्भ होने को है चाहे कभी भविष्य में।

उपयुर्कत छः लकारों के प्रयोग ध्यान में रखें बाकी चार लकार बचे :

ट् इत् में दो :- लेट् और लोट्; और

ङ् इत् में दो :- लिङ् और लृङ्।

इनमें से लेट् लकार केवल वैदिक साहित्य में ही आता है। वहां इसका प्रयोग लिङ् लकार के अर्थ में होता है। संस्कृत भाषा में अन्यत्र इसका प्रयोग नहीं है। लिंग लकार के फिर दो भेद हैं: विधिलिङ् और आशीर्लिङ्।

इस प्रकार बाकी चार लकारों का प्रयोग निम्न प्रयोजनों के लिए किया जाता है।

लोट्, विधिलिङ् : विधि और आज्ञा आदि अर्थों में। यदि आज्ञा के रूप का प्रयोग हो, तो नरम आदेश होता है जैसे स्वामी का सेवक को आदेश देना। और, यदि विधिका प्रयोग हो तो कड़ा।

आशीर्लिङ् : अप्राप्त इष्ट वस्तु की प्राप्ति की इच्छा को "आशीः" कहते हैं। आशीर्लिङ् का प्रयोग आशीर्वादात्मक होता है।

लृङ् : इस लकार द्वारा भूतकाल के क्रियातिपत्ति रूप का प्रयोग किया जाता है।
क्रियातिपत्ति का प्रयोग ऐसे अवसर पर किया जाता है जब एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया के होने पर निर्भर हो।

लकारों का एक और भेद है :-
सार्वधातुक : लट् लोट् लङ् और विधिलिङ्
आर्धधातुक : बाकी छः लकार।

हम ऊपर बतला आए हैं कि संस्कृत भाषा में सम्पूर्ण धातुओं को दस गणों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक गण का एक विकरण चिन्ह है जो धातु और क्रिया प्रत्ययों के बीच में जुड़ता है। ध्यान रहे यह विकरण चिन्ह केवल सार्वधातुक लकारों में ही जुड़ते हैं।

आगे पढ़ने से पहले एक बार लकारों को फिर दोहरा लें। इसके लिए यह तालिका सहायक होगी :-

लकारों की तालिका - १५

	काल	लकार का नाम	लकार का प्रयोग
१	वर्तमान्	लट्	वर्तमान् (काल जैसा भी हो)
२	भूतकाल	लिट्	परोक्ष भूत
		लङ्	अनद्यतन भूत
		लुङ्	सामान्य भूत
३	भविष्यत्काल	लुट्	अनद्यतन भविष्यत्
		लृट्	सामान्य भविष्यत्
४	अन्य लकार	लोट्	आज्ञार्थ
		विधिलिङ्	विधिरूप आज्ञा
		आशीर्लिङ्	आशीर्वादात्मक
		लृङ्	भूतकाल के क्रियातिपत्ति-रूप में इसका प्रयोग होता है। इसी अर्थ के लिए वेद में लेट् लकार का भी प्रयोग है।

१०.५ धातुओं का उनके गण और पद विभाजन के अनुसार भिन्न-भिन्न लकारों में प्रयोग।

अब हम कुछ तालिकाओं द्वारा गीता में प्रयुक्त धातुओं को उनके गण और पद के अनुसार अलग-अलग लकारों के अन्तर्गत निर्दशित करते हैं। देखिए काल, वचन और पुरुष के अनुसार क्रिया का रूप कैसे बदल जाता है। धीरे-धीरे प्रासंगिक प्रत्ययों को स्मरण करने का प्रयास करें। यद्यपि हम द्विवचन के रूप भी दे रहे हैं, ध्यान रहे इनका प्रयोग गीता में कम ही है।

लकार और उनके प्रयोग स्मरण करने में निम्न तालिकाएं सहायक होंगीं :-

तालिका १६ : परस्मैपदीय धातुओं के प्रत्ययः धातु 'भू'-भव

तालिका १७ : आत्मेनपदीय धातुओं के प्रत्ययः धातु 'सेव'

तालिका १८ : परस्मैपदीय और आत्मनेपदीय धातुओं की तुलनात्मक सारणी

तालिका १९ : भ्वादि गण की अन्य धातुएं जिनका गीता में प्रयोग हुआ है

तालिका २० : अन्य गणों की धातुएं जिनका गीता में प्रयोग हुआ है

तालिका १६

परस्मैपद धातु भू-भव (होना) भ्वादि गण विकरण (अ)

१ वर्तमान् काल लट् लकार प्रत्यय और उदाहरण

पुरुष	वचन					
	एक		द्वि		बहु	
	प्रत्यय	उदाहरण	प्रत्यय	उदाहरण	प्रत्यय	उदाहरण
अन्य	ति.	भवति	तः	भवतः	अन्ति	भवन्ति
मध्यम	सि.	भवसि	थः	भवथः	थ	भवथ
उत्तम	आमि.	भवामि	वः	भवावः	मः	भवामः

२ (i) भूतकाल लिट् लकार (परोक्ष भूत)

अन्य	अ	बभूव	अतुः	बभूवतुः	उः	बभूवुः
मध्यम	थ	बभूविथ	अथुः	बभूवथुः	अ	बभूव
उत्तम	अ	बभूव	व	बभूविव	म	बभूविम

२ (ii) भूतकाल लङ् लकार (अनद्यतन भूत)

अन्य	त्	अभवत्	ताम्	अभवताम्	अन्	अभवन्
मध्यम	स्	अभवः	तम्	अभवतम्	त	अभवत
उत्तम	अम्	अभवम्	आव	अभवाव	आम	अभवाम

२ (iii) भूतकाल लुङ लकार (सामान्य भूत)

अन्य	त्	अभूत्	ताम्	अभूताम्	अन्	अभूवन्
मध्यम	स्	अभूः	तम्	अभूतम्	त	अभूत
उत्तम	अम्	अभूवम्	आव	अभूव	आम	अभूम

नोट : आप देख रहे हैं लङ्-लुङ् के प्रत्यय एक समान ही हैं। पर रूप भिन्न हैं

तालिका १६

३ (i) भविष्यत्काल लुटकार (अनद्यतन भविष्य) प्रत्यय और उदाहरण

पुरुष	वचन					
	एक		द्वि		बहु	
	प्रत्यय	उदाहरण	प्रत्यय	उदाहरण	प्रत्यय	उदाहरण
अन्य	तास्	भविता	तारौ	भवितारौ	तारः	भवितारः
मध्यम	तासि	भवितासि	तास्थः	भवितास्थः	तास्थ	भवितास्थ
उत्तम	तास्मि	भवितास्मि	तास्वः	भवितास्वः	तास्मः	भविवास्मः

३ (ii) भविष्यत्काल लृट लकार (सामान्य भविष्य)

अन्य	ति	भविष्यति	तः	भविष्यतः	अन्ति	भविष्यन्ति
मध्यम	सि	भविष्यसि	थः	भविष्यथः	थ	भविष्यथ
उत्तम	आमि	भविष्यामि	वः	भविष्यावः	मः	भविष्यामः

नोटः (आप देख रहे हैं यहां लृट् लकार के प्रत्यय लट् लकार के ही प्रत्ययों के समान है।)

४ (i) लोट् लकार (आज्ञा के अर्थ में)

अन्य	तु तात्	भवतु भवतात्	ताम्	भवताम्	अन्तु	भवन्तु
मध्यम	(हि) तात्	भव भवतात्	तम्	भवतम्	त	भवत
उत्तम	आनि	भवानि	आव	भवाव	आम	भवाम

तालिका १६

४ (ii) विधि लिङ् लकार प्रत्यय और उदाहरण
(विधि-आज्ञा आदि के अर्थ में)

पुरुष	वचन					
	एक		द्वि		बहु	
	प्रत्यय	उदाहरण	प्रत्यय	उदाहरण	प्रत्यय	उदाहरण
अन्य	ईत्	भवेत्	ईताम्	भवेताम्	ईयुः	भवेयुः
मध्यम	ईः	भवेः	ईतम्	भवेतम्	ईत	भवेत
उत्तम	ईयम्	भवेयम्	ईव	भवेव	ईम	भवेम

४ (iii) आशीर्लिङ् लकार (आशीर्वादात्मक)

अन्य	यात्	भूयात्	याताम्	भूयास्ताम्	युः	भूयासुः
मध्यम	याः	भूयाः	यातम्	भूयास्तम्	यात	भूयास्त
उत्तम	याम्	भूयासम्	याव	भूयास्व	याम	भूयास्म

४ (iv) लृङ् लकार (क्रियातिपत्ति के अर्थ में)

अन्य	त्	अभविष्यत्	ताम्	अभविष्याताम्	अन्	अभविष्यन्
मध्यम	स्	अभविष्यः	तम्	अभविष्यतम्	त	अभविष्यत
उत्तम	अम्	अभविष्यम्	आव	अभविष्याव	आम	अभविष्याम

नोट : "लृङ्" के प्रत्यय "लङ्" के ही समान है

तालिका १७

आत्मनेपद धातु सेव् (सेवा करना) भ्वादिगण विकरण (अ)

१. वर्तमान् काल लट् लकार प्रत्यय और उदाहरण

पुरुष	वचन					
	एक		द्वि		बहु	
	प्रत्यय	उदाहरण	प्रत्यय	उदाहरण	प्रत्यय	उदाहरण
अन्य	ते	सेवते	इते	सेवेते	अन्ते	सेवन्ते
मध्यम	से	सेवसे	इथे	सेवेथे	ध्वे	सेवध्वे
उत्तम	इ	सेवे	वहे	सेवावहे	महे	सेवामहे

२. (१) भूतकाल लिट् लकार (परोक्ष भूत)

अन्य	ए	सेवाञ्चक्रे	आते	सेवाञ्चक्राते	इरे	सेवाञ्चक्रिरे
मध्यम	से	सेवाञ्चकृषे	आथे	सेवाञ्चक्राथे	ध्वे	सेवाञ्चकृढ्वे
उत्तम	ए	सेवाञ्चक्रे	वहे	सेवाञ्चकृवहे	महे	सेवाञ्चकृमहे

२. (२) भूतकाल लङ् लकार (अनद्यतन भूत)

अन्य	त	असेवत	इताम्	असेवेताम्	अन्त	असेवन्त
मध्यम	थाः	असेवथाः	इथाम्	असेवेथाम्	ध्वम्	असेवध्वम्
उत्तम	इ	असेवे	वहि	असेवावहि	महि	असेवामहि

२. (३) भूतकाल लुङ्लकार (सामान्य भूत)

अन्य	इष्ट	असेविष्ट	इषाताम्	असेविषाताम्	इषत	असेविषत
मध्यम	इष्ठाः	असेविष्ठाः	इषाथाम्	असेविषाथाम्	इषध्वम्	असेविषध्वम्
उत्तम	इषि	असेविषि	इष्वहि	असेविष्वहि	इष्महि	असेविष्महि

नोट : सामान्य भूत के रूप संस्कृत में सात प्रकार के हैं। ऊपर केवल पंचम प्रकार के प्रत्यय और उदाहरण जानकारी के लिए दिए हैं। गीता में इसका भी उपयोग नहीं मिलता ।

तालिका १७

३. (i) भविष्यत्काल लुट् लकार (अनद्यतन भविष्य) प्रत्यय और उदाहरण

पुरुष	वचन					
	एक		द्वि		बहु	
	प्रत्यय	उदाहरण	प्रत्यय	उदाहरण	प्रत्यय	उदाहरण
अन्य	ता	सेविता	तारौ	सेवितारौ	तारः	सेवितारः
मध्यम	तासे	सेवितासे	तासाथे	सेवितासाथे	ताध्वे	सेविताध्वे
उत्तम	ताहे	सेविताहे	तास्वहे	सेवितास्वहे	तास्महे	सेवितास्महे

३. (ii) भविष्यत् काल लृट लकार (सामान्य भविष्य)

अन्य	स्यते	सेविष्यते	स्येते	सेविष्येते	स्यन्ते	सेविष्यन्ते
मध्यम	स्यसे	सेविष्यसे	स्येथे	सेविष्येथे	स्यध्वे	सेविष्यध्वे
उत्तम	स्ये	सेविष्ये	स्यावहे	सेविष्यावहे	स्यामहे	सेविष्यामहे

४. (i) लोट् ल्कार (आज्ञा के अर्थ में)

अन्य	ताम्	सवेताम्	इताम्	सेवेताम्	अन्ताम्	सेवन्ताम्
मध्यम	स्व	सेवस्व	इथाम्	सेवेथाम्	ध्वम्	सेवध्वम्
उत्तम	ऐ	सेवै	आवहै	सेवावहै	आमहै	सेवामहै

तालिका १७

४. (ii) विधिलिङ् लकार (विधि-आज्ञा आदि के अर्थ में) प्रत्यय और उदाहरण

पुरुष	वचन					
	एक		द्वि		बहु	
	प्रत्यय	उदाहरण	प्रत्यय	उदाहरण	प्रत्यय	उदाहरण
अन्य	इत	सेवेत	ईयाताम्	सेवेयाताम्	ईरन	सेवेरन्
मध्यम	ईथाः	सेवेथाः	ईयाथाम्	सेवेयाथाम्	ईध्वम्	सेवेध्वम्
उत्तम	ईय	सेवेय	ईवहि	सेवेवहि	ईमहि	सेवेमहि

४.(iii) आशीर्लिङ् लकार (आशीर्वादात्मक)

अन्य	सीष्ठ	सेविषीष्ठ	सीयास्ताम्	सेविषीयास्ताम्	सरिन	सेविषिरन
मध्यम	सीष्ठाः	सेविषीष्ठाः	सीयास्थाम्	सेविषीयास्थाम्	सध्विम्	सेविषध्विम्
उत्तम	सीय	सेविषीय	सविहि	सेविषीवहि	समिहि	सेविषमिहि

४. (iv) लृङ लकार (क्रियातिपत्ति के अर्थ में)

अन्य	स्यत	असेविष्यत	स्येताम	असेविष्येताम	स्यन्त	असेविष्यन्त
मध्यम	स्यथाः	असेविष्यथाः	स्येथाम्	असेविष्येथाम्	स्यध्वम्	असेविष्यध्वम्
उत्तम	स्य	असेविष्ये	स्यावहि	असेविष्यावहि	स्यामहि	असेविष्यामहि

१०.६ ऊपर परस्मैपदी (भू) और आत्मनेपदी (सेव्) धातुओं के लिए, लकारों के प्रत्यय उदाहरण सहित दिए गए हैं। ध्यान रहे इन प्रत्ययों के रूप गणानुसार नहीं बदलते। अतः हम पाठकों की सुविधा के लिए एक बार फिर दोनों धातुओं के प्रत्यय रूपों को एक सारणी में दे रहे हैं कि प्रत्येक लकार के अंतर्गत उनकी तुलना भी हो सके :

तालिका १८

पुरुष	परस्मैपदी प्रत्यय वचन			आत्मनेपदी प्रत्यय वचन		
(क) वर्तमान काल :		**लट् लकार**				
	१	२	३	१	२	३
अन्य	ति	तः	अन्ति	ते	इते	अन्ते
मध्यम	सि	थः	थ	से	इथे	ध्वे
उत्तम	मि	वः	मः	इ	वहे	महे
(ख) भूतकाल :		**(i) लिट् लकार**		**(परोक्ष भूत)**		
अन्य	अ	अतुः	उः	ए	आते	इरे
मध्यम	थ	अथुः	अ	से	आथे	ध्वे
उत्तम	अ	व	म	ए	वहे	महे
		(ii) लङ् लकार		**(अनद्यतन भूत)**		
अन्य	त्	ताम	अन्	त	इताम्	अन्त
मध्यम	स्	तम्	त	थाः	इथाम्	ध्वम्
उत्तम	अस्	आव	आम	इ	वहि	महि
		(iii) लुङ् लकार		**(सामान्य भूत)**		
अन्य	सीत्	स्ताम्	सुः	स्त	साताम्	सत्
मध्यम	सीः	स्तम्	स्त	सथाः	साथाम्	ध्वम्
उत्तम	सम्	स्व	स्म	सि	स्वहि	स्महि
(ग) भविष्यत् काल :		**(i) लुट् लकार**		**(अनद्यतन)**		
अन्य	तास्	तारौ	तारः	ता	तारौ	तारः
मध्यम	तासि	तास्थः	तास्थ	तासे	तासाथे	ताध्वे
उत्तम	तास्मि	तास्वः	तास्मः	ताहे	तास्वहे	तास्महे
		(ii) लृट लकार		**(सामान्य भविष्य)**		
अन्य	ति	तः	अन्ति	स्यते	स्येते	स्यन्ते
मध्यम	सि	थः	थ	स्यसे	स्येथे	स्यध्वे
उत्तम	मि	वः	मः	स्ये	स्यावहे	स्यामहे

तालिका १८

		परस्मैपदी प्रत्यय		आत्मनेपदी प्रत्यय		
		वचन		वचन		
(घ)	**अन्य लकार**	**(i) लोट (आज्ञा)**				
पुरुष	१	२	३	१	२	३
अन्य	तु	ताम्	अन्तु	ताम्	इताम्	अन्ताम्
मध्यम	तु या, तात्	तम्	त	स्व	इथम्	ध्वम्
उत्तम	आनि	आव	आम	ऐ	आवहै	आमहै
		(ii) विधि लिङ्				
अन्य	ईत्	ईताम्	ईयुः	इत	ईयाताम्	ईरन्
मध्यम	ईः	ईतम्	ईत्	ईथाः	ईयाथाम्	ईध्वम्
उत्तम	ईयम्	ईव	ईम	ईय	ईवहि	ईमहि
		(iii) आशीर्लिङ्				
अन्य	यात्	यास्ताम	यासुः	सीष्ठ	सीयास्ताम्	सीरन्
मध्यम	याः	यास्तम्	यास्त	सीष्ठा	सीयास्थाम्	सीध्वम्
उत्तम	यासम्	यास्व	यास्म	सीय	सीवहि	सीमहि
		(iv) लुङ् (क्रियातिपत्ति)				
अन्य	स्यत्	स्यताम्	स्यन्	स्यत	स्येताम्	स्यन्त
मध्यम	स्यः	स्यतम्	स्यत	स्यथाः	सयेथाम्	सयध्वम्
उत्तम	स्यम्	स्याव	स्याम	स्य	स्यावहि	स्यामहि

१०.७ भ्वादिगण की परस्मैपदी और आत्मनेपदी अन्य धातुएं जिनका गीता में प्रयोग है, निम्नलिखित हैं :

तालिका १९

(i) परस्मैपद की धातुएं :

गम् (जाना) जि (जीतना) दृश् (देखना)
नी (ले जाना) स्मृ (स्मरण करना)
शुच् (शोक करना) स्था (ठहरना)
श्रि (आश्रय लेना) तृ (तैरना) नम् (झुकना)
त्यज् (छोड़ना) हृ (हरना) दह् (जलाना)

(ii) आत्मनेपद की धातुएं :

लभ् (पाना) मुद् (प्रसन्न होना)

१०.८ भ्वादिगण के अतिरिक्त अन्य गणों की धातुएं, जिनके गीता में प्रयोग हैं, और उनके विकरण

तालिका २०

गण	धातु			विकरण
	१. परस्मैपदी	२. आत्मनेपदी	३. उभयपदी	
२. अदादि	अद् (खाना) अस् (बैठना) इण् (जाना) हन् (मारना) या (जाना) विद् (जानना)	आस् (बैठना)	ब्रू (बोलना)	शून्य
३. जुहोत्यादि	हु (हवन करना)		दा (देना) धा (धारण करना) हा (त्यागना) भृ (भरण करना)	शून्य

गण	धातु			विकरण
	१.परस्मैपदी	२.आत्मनेपदी	३. उभयपदी	
४.दिवादि	दिव् (चमकना; जुआ खेलना) नश् (नष्ट होना) तुष (सन्तुष्ट होना) विनश् (नाश होना) परिशुष् (सूखना) प्रदुष् (दूषित होना) प्रसिध् (सिद्ध होना) प्रहृष् (हर्ष पाना) मुह् (मूर्च्छित होना) युध् (लड़ाई करना) शुच् (शोक करना)	विद् (होना)		य
५. स्वादि	१. आप् (पाना) शक् (समर्थ होना) अश् (अनुभव करना, प्राप्त होना)			नु
६. तुदादि	इष् (इच्छा करना) अन्विच्छ् (खोजना) सृज (बनाना)	विन्द् (पाना) मुच् (छोड़ना)	नुद् (दूर करना) तुद् (पीड़ा पहुंचाना)	अ

तालिका २०

गण	धातु			विकरण
	१. परस्मैपदी	२. आत्मनेपदी	३. उभयपदी	
	प्रच्छ् (पूछना)		लिप् (लीपना)	
	विश् (बैठना)			
	क्षिप् (फेंकना)			
७. रुधादि	छिद् (काटना)		भुज् (खाना)	न अथवा न्
	युज् (जोड़ना)			
	हिंस् (मारना)			
८. तनादि			कृ (करना)	उ
९. क्र्यादि	पुष् (पोषण करना)		ज्ञा (जानना)	ना
			ग्रह (लेना)	
			बन्ध् (बांधना)	
			गृह् (पकड़ना)	
१०. चुरादि			कथ् (कहना)	अय्

११. कृत् प्रत्यय

प्रत्यय शब्दांश हैं। इन का स्वतन्त्र प्रयोग नहीं होता। ये शब्द के अन्त में जोड़े जाते हैं जिससे उसके अर्थ में परिवर्तन हो जाता है।

जो प्रत्यय धातु या क्रिया के अन्त में जोड़े जाते हैं वे कृत् प्रत्यय कहलाते हैं, और इस प्रकार जो शब्द बनते हैं उन्हें कृदन्त शब्द कहते हैं। यदि हम एक बार हिन्दी भाषा के कृत् प्रत्यय सम्बन्धी कुछ नियमों को संक्षेप में दोहरा लें तो संस्कृत भाषा में इनको समझने में थोड़ी सहायता मिलेगी।

(I)

कृत् प्रत्यय जोड़ने से दो प्रकार के कृदन्त शब्द बनते हैं। (क) विकारी और (ख) अविकारी।

(क) **विकारी कृदन्त शब्द** तीन प्रकार के होते है :- (१) क्रिया से बने संज्ञा शब्द; (२) क्रिया से बने विशेषण शब्द; और (३) क्रिया से बने क्रियार्थक अथवा क्रिया द्योतक शब्द।

(१) क्रिया से बने संज्ञा शब्द : ये तीन प्रकार के हैं :
(अ) जातिवाचक, (इ) वस्तुवाचक; और (उ) भाववाचक।

(अ) जाति वाचक संज्ञा शब्द

क्रिया	प्रत्यय	प्रत्ययान्त शब्द
लिखना	क	लेखक
गाना	इया	गवैया
रखना	एल	रखैल
खाना	वाला	खानेवाला
मिलना	सार	मिलनसार
पालना	हार	पालनहार

(इ) वस्तु वाचक संज्ञा शब्द

क्रिया	प्रत्यय	प्रत्ययान्त शब्द
झूलना	आ	झूला
बिछाना	आनी	बिछानी
खेलना	औना	खिलौना
झाड़ना	ऊ	झाड़ू
पिचकना	कारी	पिचकारी

(उ) भाववाचक संज्ञा शब्द

लड़ना	आई	लड़ाई
लिखना	आवट	लिखावट
चलना	अन	चलन
धड़कना	अन	धड़कन
खपना	त	खपत

(२) क्रिया से बने विशेषण शब्द

पीना	अक्कड़	पियक्कड़
भूलना	अक्कड़	भुलक्कड़
उपजना	आऊ	उपजाऊ
चलना	आऊ	चलाउ, चालू

(३.क) क्रिया से बने क्रियार्थक शब्द

खा	ना	खाना
पी	ना	पीना
गा	ना	गाना
रो	ना	रोना

(३.ख) **क्रिया से बने क्रिया द्योतक शब्द;ये दो प्रकार के है :-**

(i) **वर्तमान कालीन**

जीना	ता	जीता (जानवर)
चरना	ता	चरता (गधा)

(ii) **भूत कालीन**

मरना	आ	मरा (मनुष्य)
बोना	या	बोया (खेत)

उपर्युक्त संज्ञा और विशेषण शब्द विकारी हैं। अतः ये लिंग और वचन के साथ बदल जाते हैं। पर, हिन्दी में सम्बन्ध वाचक चिन्ह अलग से होने के कारण ये वाक्य में कारक के अनुसार नहीं बदलते जैसे संस्कृत भाषा में। दूसरे हिन्दी भाषा में प्रत्ययों के नाम और रूप में कोई विशेष अन्तर नहीं है जैसा संस्कृत भाषा में ! (देखिए नीचे "भाग" (II) के अन्तर्गत)।

(ख) **अविकारी कृदन्त शब्द** चार प्रकार के हैं :-

(१) पूर्ण क्रिया द्योतक - मुझे आए दो घन्टे हो गए; वह मुहं खोले रह गया।

(२) अपूर्ण क्रिया द्योतक - उसे गाते किसने देखा।

(३) पूर्व कालिक क्रिया द्योतक - वह पढ़कर सो गया।

(४) तात्कालिक क्रिया द्योतक : अपूर्ण कालिक क्रिया शब्द के साथ "ही" जोड़ने से बनते हैं – वह खीरा खाते ही बीमार पड़ गया।

(II)

संस्कृत में कृत् प्रत्यय तीन प्रकार के हैं :- कृत्य, कृत् और उणादि।

(१) कृत्य प्रत्यय : हिन्दी में "चाहिए", "योग्य" है शब्दों का प्रयोग किया जाता है, जैसे यह पुस्तक पढ़ने योग्य है; यह काम करना चाहिए आदि। संस्कृत में ऐसे शब्दों के लिए भी प्रत्यय हैं जो कृत्य प्रत्यय कहलाते हैं। कृत्य प्रत्यय सात प्रकार के हैं जिनके नाम और रूप, उदाहरण सहित हम नीचे दे रहे हैं :-

	कृत्य प्रत्यय का नाम	रूप	उदाहरण
१.	तव्य	तव्य	
२.	तव्यत्	तव्य	पक्तव्य
३.	अनीयर्	अनीय	पचनीय
४.	केलिमर्	एलिम्	पचेलिम
५.	यत्	य	देय, गेय
६.	क्यप्	य	इत्य, शिष्य
७.	ण्यत्	य	कार्य

गीता में अनीयर् और केलिमर् प्रत्ययों के उदाहरण नहीं मिलते। ध्यान रहे कृत्यांत शब्दों के रूप तीनों लिंगो में चलते हैं– पुंल्लिग में "राम", नपुंसक लिंग में "फल" और स्त्रीलिंग में "विद्या" की तरह। कृत्य प्रत्ययान्त शब्दों के उदाहरण जो गीता में प्रयुक्त हैं, "तालिकाएं" २१–२४ में दिये गए हैं। ऐसे प्रत्ययान्त शब्दों के अर्थ और संकेत शब्द आदि के लिए देखिए गीता कोश।

तालिका २१

कृत्य प्रत्यय-तव्य और तव्यत् - रूप "तव्य"

धातु शब्द	प्रत्ययान्त शब्द	धातु शब्द	प्रत्ययान्त शब्द
कृ	कर्तव्यम्	यज्	यष्टव्यम्
गम्	गन्तव्यम्	युज	योक्तव्यः
ज्ञा	ज्ञातव्ययम्	युध्	योद्धव्यम्
दा	दातव्यम्	विद्	वेदितव्यम्
बुध्	बोद्धव्यम्	श्रु	श्रोतव्यस्य
मन्	मन्तव्यः	परि–मार्गी	परिमार्गितव्यम्

तालिका २२

कृत्य प्रत्यय "यत् - रूप "य"

ज्ञा	ज्ञेयः	लभ्	लभ्यः
रस्	रस्याः	शक्	शक्यम्

तालिका २३

कृत्य प्रत्यय- "क्यप्"- रूप "य"

शास्	शिष्यः		

तालिका २४

कृत्य प्रत्यय "ण्यत्" रूप 'य'

आ - चर्	आचार्य	चिन्त्	चिन्त्यः
अ ञ्ज्	आज्यम्	त्यज्	त्याज्यम्
ईड्	ईड्यम्	द्विष्	द्वेष्यः
कम्–कामि	काम्यानाम्	वच्	वाक्यम् , वाक्येन
कृ	कार्यम्	विद्	वेद्यः वेद्यम्

(२) **कृत् प्रत्ययः** ये (क) भूत कालिक, (ख) वर्तमान कालिक और (ग) भविष्यत्कालिक होते हैं।

२. (क) भूतकालिक कृत् प्रत्यय पूर्णकालिक क्रिया-द्योतक शब्दों को दर्शाने के लिए संस्कृत में दो प्रत्यय हैं :- "क्त" (त) और क्तवतु (तवत्) । ऐसे प्रत्ययान्त शब्द अंग्रेजी के पास्ट पार्टिसिपल् (Past Participle) के समान व्यवहार में लाए जाते हैं। इन के रूप तीनों लिंगों में और सातों विभक्तियों में विशेष्य के अनुसार होते हैः- 'क्त' प्रत्ययान्त शब्द अकारान्त होने से पुंल्लिंग में 'राम' और नपुंसकलिंग में 'फल' की तरह चलते हैं और आकारान्त होने से स्त्रीलिंग में "विद्या" की तरह। "क्तवतु" प्रत्ययान्त शब्द पुंल्लिंग में अकारान्त् (राम), नपुंसकलिंग में तकारान्त (मरुत्) और स्त्रीलिंग् में ईकारान्त (नदी) की तरह चलते हैं।

भूतकाल के कृत् प्रत्ययान्त शब्दों के उदाहरण जो गीता में प्रयुक्त हैं, तालिकाएं २५ से २८ में दिये गए हैं। कृत् प्रत्ययों का भावार्थ प्रयोग भी है जो हम २९ से ४० तक की तालिकाओं में दे रहे हैं। कृत प्रत्यय के अन्य प्रयोग भी हैं। जो उदाहरण गीता में मिलते हैं वे ४४ से ७१ तक की तालिकाओं में दिए हैं। कृतान्त प्रत्ययों की वर्णानुक्रमिक सूची में तालिकाओं के नम्बर भी दिए हैं। प्रत्ययों के नाम रूप आदि का वर्णन सम्बन्धित तालिका में किया गया है। कृत् प्रत्ययान्त शब्दों के अर्थ व संकेत-शब्द गीता कोश में देखिए।

कृत् प्रत्ययों की वर्णानुक्रमिक सूची

प्रत्यय का नाम	तालिका न.	प्रत्यय का नाम	तालिका न.
अङ्	३३,६८	घञ्	२९,५७
अच्	३८,४७,६१	घिणुन	५०
अथुच्	३२	डु	५१
अप्	३५,६२	णिनि	४६
इत्र	६५	ण्वुल्	४४
इष्णुच्	५४	तृच्	४४
उ	५२	नङ्	६३
क	४९	नन्	४०
किः	३९	युच्	५३,६६
क्त	२५-२८, ५५,५६	ल्युट्	३६,४५,५८
क्तवत्	२७	शः	६९
क्तिन्	३१,६०	शतृ	४८
क्यप्	७१	शानच्	५९
क्विप्	३७,७०	ष्ट्रन्	३४,६४
खल्	३०,६७		

तालिका २५

कृत् प्रत्यय 'क्त' - रूप 'त' (कर्तरि प्रयोग)

धातुशब्द	प्रत्ययान्त शब्द	धातुशब्द	प्रत्ययान्त शब्द
अभि-रम्	अभिरतः	उद्-स्था	उत्थिता
अनु-प्र-पद्	अनुप्रपन्नाः	उप पद्	उपपन्नम्
अभि-जन् जा	अभिजातः, अभिजातस्य	उप रम्	उपरतम्
अभि-प्र-वृत्	अभिप्रवृत्तः	उप-आ-श्रि	उपाश्रिताः
अव-स्था	अवस्थितः, अवस्थितम्	उप-इ	उपेतः, उपेताः
आ-गम्	आगताः	गम्	गतः, गताः
आ-पद्	आपन्नाः, आपन्नम्	तुष्	तुष्टः
ब्रू-वच्	उक्तः		

तालिका २६

कृत् प्रत्यय क्त - रूप "त" कृतप्रत्यय (कर्तरि प्रयोग)

नश्	नष्टः	रम्	रताः
प्र-नश्	प्रनष्टः	लुभ्	लुब्धः
प्र-पद्	प्रपन्नम्	वि-क्रम्	विक्रान्तः
प्र-या	प्रयाताः	वि-गम्	विगतः
प्र-ली	प्रलीनः	वि.तान्	वितताः
प्र-सञ्ज्	प्रसक्ताः	श्रि	श्रिताः
प्र-सद्	प्रसन्नेन	सम्-इन्ध्	समिद्धः
प्र-आप्	प्राप्तः	सम्-उप-स्था	समुपस्थितम्
प्र-इ	प्रेतान्	सम्-उप-आ-श्रि	समुपाश्रितः
भज्	भक्तः भक्ताः	स्था	स्थितः
मन्	मतः	हृष्-हृष्ट (+णिच्)	हृषितः

तालिका २७

कृत् प्रत्यय 'क्त-रूप 'त'

धातु शब्द	प्रत्ययान्त शब्द	धातु शब्द	प्रत्ययान्त शब्द
	(कर्त्ता)		(कर्मणि)
शब्दवि-अति-इ	व्यतीतानि	वि-आप्	व्याप्तम्
वि-अव-सो	व्यवसिताः	वि-वह्	व्यूढम्
वि-अव-स्था	व्यवस्थितौ,व्यवस्थितान्	शम्	शान्तः
सम्-नि-विश	संनिविष्टः	श्रु	श्रुतौ
सम-वृत	संवृत्तः	सम्-प्र-कीर्त्	संप्रकीर्तितः
सञ्ज्	सक्तः	सम्-भू-भावि	संभावितस्य
सम-अति-इ	समतीतानि	सम्-ऋध्	समृद्धम्
सम-अव-स्था	समवस्थितम्	सृज्	सृष्टम्
सम + अव-इ	समवेताः; समवेतान्	स्मृ	स्मृतः
सम-आ-गम्	समागताः	हन्	हतः
सम-आ-धा	समाहितः	हु	हुतम्
स्तम्भ्	स्तब्धः; स्तब्धाः		
स्निह्	स्निग्धाः		

तालिका २८

कृत् प्रत्यय-क्तवत्-रूप 'तवत्'

दृश	दृष्टवान	श्रु	श्रुतवान्

कृत् प्रत्यय का वर्णन	धातु शब्द	प्रत्ययान्त शब्द

तालिका २९

"घञ्" प्रत्यय का रूप "अ"	शब्द	शब्दः
है। यह प्रत्यय धातु का अर्थ	शम्	शमः
दर्शाने के लिए जोड़ा	सम्-हन्	संघातः
जाता है। प्रयोग	सम्-नि-अस्	संन्यासः
"भावे" है कहीं कहीं	सम्-मुह्	संमोहः
"कर्मणि" भी। इसके जुड़ने-	सम्-वद्	संवादम्
से पुंल्लिंग संज्ञा शब्द	सञ्ज्	संगः
बनते है।	सम्-आ-रभ्	समारम्भाः
	संम-अस्	समासेन
	सृज्	सर्गः
	स्पृश् (कर्मणि)	स्पर्शान्
	हृष्	हर्षम्

तालिका ३०

"खल" प्रत्यय का	सु-दुर्-दृश्	सुदुर्दशम्
रूप "अ" है। यह		
कठिन और सरल,	सु.दुर्-लभ्	सुदुर्लभः
दुःखात्मक और सुखात्मक		
"भाव" दिखाने के	सु-दुस्	सुदुष्करम्
लिए जोड़ा जाता है।		
इसका प्रयोग है	सु-लभ्	सुलभः
"कर्मणि"		

कृत् प्रत्यय का वर्णन	धातु शब्द	प्रत्ययान्त शब्द
		तालिका ३१
"क्तिन्" प्रत्यय का रूप 'ति' है और यह स्त्री-लिंग में लगाया जाता है। प्रयोग "भावे" है	वि-अञ्ज्	व्यक्तयः
	शम्	शान्तिः
	सम्-सिध्	संसिद्धिये
	सिध्	सिद्धये
	स्था	स्थितिः
	स्मृ	स्मृतिः
	हा	हानिः
		तालिका ३२
"अथुच्" प्रत्यय का रूप "अथु" है और प्रत्ययान्त पुल्लिंग में होते हैं। प्रयोग "भावे" है	टुवेपृ	वेपथुः
		तालिका ३३
"अङ्" प्रत्यय का रूप "आ" है और यह स्त्रीलिंग में आता है। प्रयोग 'भावे' है।	व्यथ्	व्यथा
	श्रध् धा	श्रद्धा
	सम्-प्रति-स्था	संप्रतिष्ठा
	सेव्	सेवया
	स्पृह्	स्पृहा
	हिंस्	हिंसाम्
		तालिका ३४
"ष्ट्रन" प्रत्यय करण अर्थ में आता है। गीता में इसके कर्तरि और 'करणे' प्रयोग हैं।	शास्	शास्त्रम्
	शस्	शस्त्राणि

कृत् प्रत्यय का वर्णन	धातु शब्द	प्रत्ययान्त शब्द
		तालिका ३५
"अप्" प्रत्यय	सम्-ग्रह्	संग्रहेण
यह ऋकारान्त		
और उकारान्त धातुओं	सम्-भू	संभवः
में लगता है। प्रयोग		
"भावे" है		
		तालिका ३६
"ल्युट्" प्रत्यय का रूप	सम्-नि-अस्	संन्यसनात्
है "अन"। प्रयोग	स्था	स्थानम्
भावे, अधिकरणे व	स्पृश्	स्पर्शनम्
करणे है। ल्यट्		
प्रत्ययान्त शब्द		
गीता में नपुंसक लिंग		
में ही हैं।		
		तालिका ३७
"क्विप्" प्रत्यय		
प्रयोग "भावे" है	सम-पद्	संपत्
		तालिका ३८
'अच्' प्रत्यय का		
रूप है 'अ'। यह	सम्-शी	संशयः
इकारन्त धातुओं		
में जोड़ा जाता है।		
प्रयोग "भावे" है		

कृत् प्रत्यय का वर्णन	धातु शब्द	प्रत्ययान्त शब्द
		तालिका ३९
'किः' प्रत्यय प्रयोग "कर्मणि" है	सम्-आधा	समाधौ
		तालिका ४०
"नन्" प्रत्यय प्रयोग "भावे" है	स्वप्	स्वप्नम्

२. (ख) वर्तमान कालिक कृत् प्रत्यय

अपूर्ण क्रिया द्योतक शब्दों को दर्शाने के लिए भी संस्कृत में दो प्रत्यय हैं "शतृ" और "शानच्" । अंग्रेजी में इन्हें "प्रेजेन्ट पार्टिसिपल" कहते हैं जैसे वह जा रहा है; वह गाते हुए आया। उदाहरणों के लिए देखिए तालिकाएं ४१ और ४२ ।

तालिका ४१

"शतृ" प्रत्यय का रूप "अत्" है। यह परस्मैपदी धातुओं के अनन्तर जोड़ा जाता है। 'शतृ' प्रत्ययान्त शब्द "ध्यायत्" की तरह चलते हैं :-

धातु शब्द	प्रत्ययान्त शब्द	धातु शब्द	प्रत्ययान्त शब्द
अनु-चिन्त्	अनुचिन्तयन्	उत्	उत्क्रामन्तम्
अनु-स्मृ	अनुस्मरन्	कथ्+णिच् = कथि	कथयन्तः
अभि-असूय्	अभ्यसूयन्तः	कृष्+णिच् = कर्शि	कर्षयन्तः
अश्	अश्नन्	कल्+णिच् = कलि	कलयताम्
आ-चर्	आचरन्: आचरतः	काङ्क्ष्	काङ्क्षन्तः

तालिका ४१

धातु शब्द	प्रत्ययान्त शब्द
कृ+णिच् = कारि	कारयन्
कृत्+णिच् = कीर्ति	कीर्तयन्तः
कृ	कुर्वन्
गम्	गच्छन्
ग्रह्	गृह्णन्
हन्	घ्नतः
चर्	चरन्, चरताम्
चिन्त्+णिच् = चिन्ति	चिन्तयन्तः
छल्+णिच् = छलि	छलयताम्
जागृ	जाग्रतः
ज्ञा = जा	जानन्
जि+सन् = जिगीष्	जिगीषताम्
घ्रा = जिघ्र्	जिघ्रन्
ज्वल्	ज्वलद्भिः
तप्	तपन्तम्
स्था = तिष्ठ्	तिष्ठन्तम्
त्यज्	त्यजन्
दम् + णिच् = दमि	दमयताम्
द्विष्	द्विषतः
धृ+णिच् = धारि	धारयन्
ध्यै	ध्यायतः ध्याय
नमस्+क्यच् = नमस्य्	नमस्यन्तः
नश्	नश्यत्सु
निन्द्	निन्दन्तः
नि-मिष्	निमिषन्
परि-चिन्त्+णिच् = परिचिन्ति	परिचिन्तयन्
पू	पवताम्
प्र-दृश् = पश्य्	प्रपश्यद्भिः
प्र-लप्	प्रलपन्
प्र-वद्	प्रवदताम्
प्र-हस्	प्रहसन्
बुध+णिच् = बोधि	बोधयन्तः
भ्रम्+णिच् = भ्रामि	भ्रामयन्
यज्	यजन्तः
यत्	यततः
युज्	युञ्जन्तः
वि-ज्ञा = जा	विजानतः
वि-नश्	विनश्यत्सु

तालिका ४१

धातु शब्द	प्रत्ययान्त शब्द	धातु शब्द	प्रत्ययान्त शब्द
वि-सीद्		श्वस्	श्वसन्
= विषीद्	विषीदन्	सम्-जन्+णिच्	
वि-सृज्	विसृजन्	= संजनि	संजनयन्
वि-अनु-नद्+णिच्		सम्-दृश्	
= व्यनुनादि	व्यनुनादयन्	= पश्य्	संपश्यम्
वि-आ-हृ	व्याहरन्	सम्-यम्	संयमताम्
श्रु	शृण्वन् , शृण्वतः	अस्	सन्
		सम्-आ-चर्	समाचरन्

तालिका ४२

'शानच्' प्रत्यय का रूप "आन" है जो भ्वादि दिवादि, तुदादि और चुरादि गण् की धातुओं में "मान" हो जाता है। यह प्रत्यय आत्मनेपदी धातुओं में जोड़ा जाता है। शानच् प्रत्ययान्त शब्द "राम", "फल" और "विद्या" की तरह चलते हैं – क्रमशः पुंल्लिग, नपुंसकलिंग और स्त्रीलिंग में।

धातु शब्द	प्रत्ययान्त शब्द	धातु शब्द	प्रत्ययान्त शब्द
आस्	आसीन, आसीनम्	प्र-ब्रू वच्	प्रोच्यमानम्
उद्-आस्	उदासीन	भुंज्	भुञ्जानम्
कृ	कुर्वाणः	युध्	युयुधानः
ग्रस	ग्रसमानः	वृत्	वर्तमानः
प्री+कर्मणि	प्रीयमाणाय	श्रध्+धा	श्रद्दधानाः
त्वर्	त्वरमाणाः	हन्	हन्यमाने

२.(ग) भविष्यत्कालिक कृत्-प्रत्यय

अंग्रेजी में इन्हें फ्यूचर पार्टिसिपल (future participle) कहते हैं और संस्कृत में इनके लिए वर्तमान् कालिक "शतृ" और शानच् प्रत्ययों का ही प्रयोग किया जाता है। इन प्रत्ययों को कभी-कभी 'ष्यत्' और 'ष्यमाण' भी कहते है। गीता में केवल निम्न उदाहरण आते हैं :

तालिका ४३

शतृ	भू+स्य	भविष्यताम्
	भू+स्य	भविष्याणि
		भविष्यन्ति
शानच्	युध्+स्य	योत्स्यमानान्

३.अन्य कृत् प्रत्यय

तालिका ४४

प्रत्यय का वर्णन	धातु शब्द	प्रत्यान्त शब्द
"ण्वुल्" और 'तृच्' ये कर्तृ वाचक प्रत्यय हैं	अभि-असूय्	अभ्यसूयकाः
"ण्वुल" प्रत्यय का रूप है- 'अक'	नी	नायकाः
	पू	पावकः
	प्र-काश्	प्रकाशकम्
तृच् प्रत्यय		
	उप-दृश्	उपद्रष्टा
	कृ	कर्ता
	छिद्	छेत्ता
	दृश्	द्रष्टा
	धा	धाता

प्रत्यय का वर्णन	धातु शब्द	प्रत्यान्त शब्द
		तालिका ४४
तृच् प्रत्यय	परि- ज्ञा	परिज्ञाता
	भृ	भर्ता
	भुज	भेक्ता; भोक्तारम
	सम्-उद्-हृ	समुद्धर्ता
		तालिका ४५
कर्तृवाचक प्रत्यय		
"ल्युट्" रूप है 'अन्'	नश्+णिच् = नाशि	नाशनम्
	मुह्+णिच् = मोहि	मोहनम्
		तालिका ४६
कर्तृवाचक प्रत्यय		
"णिनि", रूप है "इन्"	आ-वृत्	आवर्तिनः
		तालिका ४७
कर्तृवाचक प्रत्यय	अर्ह्	अर्हाः
"अच्", रूप है 'अ'	क्षर्	क्षरः
	प्र-अन्	प्राणम्
	मन्द्	मन्दान्
	युध्	योधाः
		तालिका ४८
प्रत्यय "शतृ"	विद्+शतृ = वसु	विद्वान्
		तालिका ४९
प्रत्यय 'क'	बुध्	बुधः
		तालिका ५०
प्रत्यय "घिणुन्"	त्यज्	त्यागी

प्रत्यय का वर्णन	धातु शब्द	प्रत्यान्त शब्द
		तालिका ५१
प्रत्यय "डु"	प्र-भू	प्रभुः
	वि-भू	विभुः

(४) शील-धर्म साधुकारिता वाचक कृत् प्रत्यय

प्रत्यय का वर्णन	धातु शब्द	प्रत्यान्त शब्द
		तालिका ५२
प्रत्यय 'उ'	आ-रुह्+सन्	आरुरुक्षो
	कृ+सन्	
	= चिकीर्ष्	चिकीर्षुः
	ज्ञा+सन	
	= जिज्ञास्	जिज्ञासुः
	युध्-सन्	
	= युयुत्स्	युयुत्सवः
		तालिका ५३
प्रत्यय 'युच्'	ज्वल्	ज्वलनम्
	पू	पवनः
		तालिका ५४
प्रत्यय 'इष्णुच्'	प्र-भू	प्रभविष्णु

(५) कृदन्त प्रत्यय 'क्त' (कर्मणि प्रयोग)

तालिका ५५

धातुशब्द	प्रत्ययान्त शब्द	धातु शब्द	प्रत्ययान्त शब्द
अनु-सम्-तन्	अनुसंततानि	दृश्+णिच्=दर्शि	दर्शितम्
अनु- इ	अन्विताः	दीप्	दीप्तम्
अप-आ-वृ	अपावृतम्	दृह्	दृढम्
अभि-धा-हि	अभिहिता	दिव्	द्यूतम्
अव-ज्ञा	अवज्ञातम्	नश्+णिच्=नाशि	नाशितम्
अहं-कृ	अहंकृत	नि-ग्रह्	निगृहीतानि
आ-ख्या	आख्यातम्	नि-बन्ध्	निबद्धः
आ-विश्	आविष्ट, आविष्टम्	नि-रुध्	निरुद्धम्
आ-श्रि	आश्रितः, आश्रितम्	नि-वृत्	निवृत्तानि
ब्रू =वच्	उक्तः, उक्तम्	निस्-चि	निश्चितम्
			निश्चिताः
उद्-शिष्	उच्छिष्टम्	नि-हन्	निहताः
उद्-आ-हृ	उदाहृतः, उदाहृतम्	परि-कीर्ति	परिकीर्तितः
उद्-यम्	उद्यताः	परि-आप्	पर्याप्तम्
ऊर्ज्+णिच् =ऊर्जि	ऊर्जितम्	परि-वस् =परिवस्	पर्युषितम्
ऋध्	ऋद्धम्	पू	पूताः
काङ्क्ष्	काङ्क्षितम्	प्रथ्	प्रथितः
कृ	कृतम्; कृतेन	प्र-दिश्	प्रदिष्टम्
गै=गा	गीतम्	प्र-दीप्	प्रदीप्तम्
चूर्ण	चूर्णितैः	प्र-युज्	प्रयुक्तः
जन् =जा	जातस्य	प्र-वृत्	प्रवृत्तः
जि	जितः		प्रवृत्ते
जॄ	जीर्णानि	प्र-शंस्	प्रशस्ते
ज्ञा	ज्ञातेन	प्र-वच्	प्रोक्तः
तन्	ततम्	प्र-वे	प्रोतम्
तप्	तप्तम्	बन्ध्	बद्धाः

तालिका ५५

धातुशब्द	प्रत्ययान्त शब्द	धातु शब्द	प्रत्ययान्त शब्द
मुह्-णिच्	मोहितम्	वि-भज्	विभक्तम्
	मोहिताः	वि-मुच्	विमुक्तः
युध्	युद्धम्	वि-शिष्	विशिष्टाः
लभ्	लब्धम्	वि-शुध्	विशुद्धया
वि-नि = यम्	विनियतम्	वि-धा	विहिताः
वि-निस्-चि	विनिश्चितैः		

तालिका ५६

(६) कृदन्त	प्रत्यय 'क्त'	(भावे प्रयोग)	
जीव्	जीवितेन	परि-क्लिश्	परिक्लिष्टम्

तालिका ५७

(७) कृदन्त प्रत्यय	'घञ' रूप	'अ' (भावे प्रयोग)	
अधि-कृ	अधिकारः	दम्	दमः
अभि-अस्	अभ्यासात् ,अभ्यासेन	दम्म्	दम्मः
अहं-कृ	अहंकारः, अहंकारम्	दम्भ्	दम्भः
	अहंकारात्	भुज्	भोगाः
आ-चर्	आचारः	दृप्	दर्प
आ-रभ्	आरम्भः	दुष्	दोषम्
क्रुध्	क्रोधः, क्रोधात्	द्विष्	द्वेषः
क्लिश्	क्लेशः	नाश्	नाशाय
घुष्	घोषः	नि-बन्ध्	निबन्धाय
त्यज्	त्यागः	नि-यम्	नियमम्

तालिका ५७

धातुशब्द	प्रत्ययान्त शब्द	धातु शब्द	प्रत्ययान्त शब्द
निर्-दिश्	निर्देशः	वद्	वादः
नि-अस्	न्यासम्	वस्	वासः
परि-नम्	परिणामे	वि-कृ	विकारान्
परि-त्यज्	परित्यागः	वि-नश्	विनाशः,विनाशाय
प्र-काश्	प्रकाशः	वि-मोक्ष्	विमोक्षाय
प्र-नि-पत्	प्रणिपातेन	वि-सद्	विषादम्
प्रति-अव्-इ	प्रत्यवायः	वि-सृज्	विसर्गः
प्र-मद्	प्रमादः	वि-स्तृ	विस्तारम्
प्र-सञ्ज्	प्रसंगेन	विज्	वेगम्
प्र-सद्	प्रसादम्	**कर्मणि प्रयोग**	
बन्ध	बन्धम्	अभिमान्	अभिमानः
	बन्धात्	आ-हृ	आहारः
भू	भावः	कम्+णिच् =कामि	कामः
भद्	भेदम्	भुज्	भोगाः
लुभ्	लाभः	मन्त्र्	मन्त्रः
		युज्	योगः
		लभ्	लाभम्

तालिका ५८

कृदन्त प्रत्यय ल्युट् रूप "अन"

धातुओं में 'ल्युट्' प्रत्यय लगाने से नपुंसकलिंगी भाव वाचक शब्द बनते हैं :

अधि-स्था	अधिष्ठानम्	कृ	करणम्
अप-उहू	अपोहनम्	घ्रा	घ्राणम्
अभि-उद-स्था	अभ्युत्थानम्	जीव्	जीवनम्
इ	अयनेषु	ज्ञा	ज्ञानम्
		दा	दानम्

तालिका ५८

धातुशब्द	प्रत्ययान्त शब्द	धातु शब्द	प्रत्ययान्त शब्द
ध्यै =ध्या	ध्यानम्	भुज्	भोजनम्
नि-धा	निधानम्	मृ	मरणात्
परि-धा	निधानम्	राध्	राधनम्
परि-त्रै = त्रा	परित्राणय	वच्	वचनम्
प्र-मा	प्रमाणम्	विं-ज्ञा	विज्ञानम्

तालिका ५९

कृदन्त प्रत्यय शानच्

आ-पृ =पूरि	आपूर्यमाणम्	कृ	क्रियमाणानि

तालिका ६०

प्रत्यय "क्तिन्" रूप "ति" (भावे प्रयोग) धातुओं में 'क्तिन्' प्रत्यय जोड़कर स्त्रीलिंगी भाववाचक शब्द बनाए जाते हैं।

आ-वृत्	आवृत्तिम्	नी	नीतिः
कृत्-विच् =कीर्ति	कीर्तिः	प्र-कृ	प्रकीर्त्या
क्षम्	क्षान्तिः	प्र-कृ (कर्मणि)	प्रकृतिः
गम्	गतिः	प्र-वृत्	प्रवृत्ति, प्रवृत्तिम्
ग्लै	ग्लानिः	प्री	प्रीतिः
तुष्	तुष्टिः	भज्	भक्तिः
तृप्	तृप्तिः	भू	भूतिः
दृश्	दृष्टिम्	मन्	मतिः
धृ	धृतिः	वि-भू	विभूतिम्
नि-वृत्	निवृत्तिम्		

तालिका ६१

धातुशब्द	प्रत्ययान्त शब्द	धातु शब्द	प्रत्ययान्त शब्द
कृतन्त प्रत्यय 'अच्' रूप "अ"			
निस्-चि	निश्चयम् , निश्चयेन	भी	भयम्
प्र-जन्+णिच्	प्रजनः	भू	भव
प्र-नी	प्रणयेन	वि-जि	विजय
प्र-ली	प्रलयः	वि-स्मि	विस्मयः

तालिका ६२

धातुशब्द	प्रत्ययान्त शब्द	धातु शब्द	प्रत्ययान्त शब्द
कृदन्त प्रत्यय "अप्" प्रयोग भावे			
यह प्रत्यय "ऋकारान्त" और उकारान्त		धातुओं में लगता है	
नि-ग्रह्	निग्रहः, निग्रहम्	वृष्	वर्षम्
परि-ग्रह्	परिग्रहम्	वश्	वशम्
प्र-नु	प्रणवः	विस्तृ	विस्तरः
प्र-भू	प्रभवः, प्रभवम्		
मद्	मदम्	आ-ह्वे (अधिकरणे)	आहवे

तालिका ६३

धातुशब्द	प्रत्ययान्त शब्द	धातु शब्द	प्रत्ययान्त शब्द
कृदन्त प्रत्यय नङ् रूप न			
यज्-याच्-यत्-विच्छ-प्रच्छ धातुओं में		"नङ्" प्रत्यय लगता है	
परि-प्रच्छ्	परिप्रश्नेन	यज्	यज्ञः
प्र-यत्	प्रयत्नात्		

तालिका ६४

धातुशब्द	प्रत्ययान्त शब्द	धातु शब्द	प्रत्ययान्त शब्द
कृदन्त प्रत्यय 'ष्ट्रन्'			
यह प्रत्यय 'दाप्' आदि धातुओं में लगता है		पत्	पत्रम्

तालिका ६५

धातुशब्द	प्रत्ययान्त शब्द	धातु शब्द	प्रत्ययान्त शब्द
कृदन्त प्रत्यय - इत्र			
यह प्रत्यय 'पुत्र' धातु में लगता है		पू	पवित्रम्

तालिका ६६

कृदन्त प्रत्यय "युच" रूप ("अन्")

चित् =चेति (भावे)	चेतना	परि-देव् (भावे)	परिदेव
दुर-युध् (कर्मणि)	दुर्योधनः	भ-भावि (णिच्) (भावे)	भावना

तालिका ६७

कृदन्त प्रत्यय "खल्" रूप ("अ")

दुर-आ-सद्	दुरासदम्	दुस्-पृ-पूरि (णिच्)	दुष्पूरम्
दुर्-नि-ग्रह्	दुर्निग्रहम्		
दुर-निर्-ईक्ष्	दुर्निरीक्ष्यम्	दुस्-प्र-आप्	दुष्प्रापः

तालिका ६८

धातुशब्द	प्रत्ययान्त शब्द	धातु शब्द	प्रत्ययान्त शब्द

प्रत्यय 'अङ्'

यह प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंगी भाव वाचक शब्द बनते है

धातुशब्द	प्रत्ययान्त शब्द	धातु शब्द	प्रत्ययान्त शब्द
उप-मा	उपमा	दय्	दया
कृप्	कृपया	नि-स्था	निष्ठा
क्षम्	क्षमा	पीड्+ (णिच्)पीडि =	पीडया
चिन्त+णिच्	चिन्ताम्	प्रति-स्था	प्रतिष्ठा
चेष्ट्	चेष्टा	प्र-भा	प्रभा
जॄ	जरा	भाष्	भाषा

तालिका ६९

कृदन्त प्रत्यय 'शः'

धातुशब्द	प्रत्ययान्त शब्द	धातु शब्द	प्रत्ययान्त शब्द
इष्	इच्छा	कृ	क्रियाभिः

तालिका ७०

कृदन्त प्रत्यय "क्विप्"

भ्राज् आदि में यह प्रत्यय लगता है और यह समस्त लोप हो जाता है

धातुशब्द	प्रत्ययान्त शब्द	धातु शब्द	प्रत्ययान्त शब्द
भाः	भाः		

तालिका ७१

कृदन्त प्रत्यय 'क्यप्'

धातुशब्द	प्रत्ययान्त शब्द	धातु शब्द	प्रत्ययान्त शब्द
यज्	इज्यया		

१२. तद्धित प्रत्यय

ये प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण के अन्त में जोड़े जाते हैं। इस प्रकार जो शब्द बनते हैं उनको तद्धितान्त शब्द कहते हैं। जैसे 'लड़का' से 'लड़कपन'। 'आप' से आपस। ये तद्धितान्त शब्द भी संज्ञा, विशेषण और सर्वनाम अथवा अव्यय होते हैं। हिन्दी भाषा के कुछ तद्धित प्रत्ययों पर एक नजर डाल लें तो संस्कृत भाषा में इनको समझने में थोड़ी सुविधा होगी।

(क) <u>तद्धित संज्ञा शब्दः</u>

१.	कर्तृ वाचक	पाठ	पाठक
		इतिहास	इतिहासकार
२.	भाव वाचक	पुरुष	पौरुष
		बन्धु + त्व	बन्धुत्व
		उत्तम + ता	उत्तमता
३.	अपत्य (वंश) वाचक	कुन्ती	कौन्तेय
		पाण्डु	पाण्डव
४.	ऊन (लघुरूप) वाचक	पुस्तक	पुस्तिका
५.	कारण वाचक	लेख	लेखनी
६.	अधिकार अथवा पदवी वाचक	द्वार	द्वारपाल
७.	वस्त्र वाचक	जांघ	जांघिया
८.	स्थान वाचक	ससुर	सुसराल
९.	समुदाय वाचक	कागज	कागजात
१०.	सम्बध वाचक	बहन	बहनोई
		ननद	ननदोई

(ख) <u>तद्धित सर्वनाम शब्द</u>

आप	आपस

(ग) <u>तद्धित विशेषण शब्द</u>

रंग	रंगीला
नीति	नैतिक
चाचा	चचेरा
वह	वैसा

(घ) <u>तद्धित अव्यय शब्द</u>

यह	यहां
जो	जिधर
वह	वहां
करीब	करीबन

आप देख रहे हैं, हिन्दी में तद्धित प्रत्यय लगने से शब्द में कुछ अधिक परिवर्तन नहीं होता। संस्कृत में प्रत्यय लगाने के विशेष नियम हैं। परन्तु, हम उन नियमों का उल्लेख न करके गीता में प्रयुक्त प्रत्यय इस प्रकार दे रहे हैं कि पाठक उनके नामों से जानकारी भर करलें और उनके जोड़ने से शब्द में जो परिवर्तन होता है उसे केवल देखलें। प्रत्ययान्त शब्द किन-किन नियमों के अनुसार बने हैं इसके लिए जिज्ञासु पाठक व्याकरण की सम्बन्धित पाठ्य पुस्तकों का अध्ययन करें।

गीता कोश में तद्धित प्रत्ययान्त शब्द उनके संकेत शब्दों के साथ दिए हैं। हम यहां निम्न तालिकाओं द्वारा ऐसे तद्धित प्रत्ययों से आप का परिचय भर करा रहे हैं। गीता में प्रयुक्त ऐसे प्रत्ययों की वर्णानुक्रमिक सूची के लिए अगला पृष्ठ देखिए।

तद्धित प्रत्ययों की वर्णानुक्रमिक सूची

	प्रत्यय का नाम	तालिका नम्बर		प्रत्यय का नाम	तालिका नम्बर
१.	अच्	१००	१९	डट्	९७
२.	अञ्	९९	२०	ढक्	७८
३.	अण्	७२ (क) से (ङ)	२१	ष्य	८१
४.	आकिनिच्	८५	२२	तयप्	८९
५.	इतच्	७५	२३	तरप्	७६
६.	इनिठनौ	७९	२४	तल्	७३
७.	इमनिच्	९१	२५	त्व	७३
८.	इय	देखें 'घ'	२६	मतुप्	१०
९.	इयसुन	७६	२७	मयट्	८८
१०	इष्ठन्	९३	२८	मात्रच्	९४
११.	ईय	देखें 'छ'	२९	यक्	८४
१२.	एय	देखें 'ढक्'	३०	यत्	८२
१३	'घ'	८७	३१	वति	७४
१४	'छ'	७७	३२	वतुप्	१०२
१५	ञ्यः	९८	३३	विनि	८६
१६	ट्युल	९२	३४	शालच्	९५
१७	ठक	९६	३५	ष्यञ्	८३
१८	ठञ	८०	३६	साति	९०

तालिका ७२ (क)

प्रत्यय 'अण्' (तस्येदम्–उससे सम्बन्धित अर्थ में)*

शब्द	प्रत्ययान्त शब्द	शब्द	प्रत्यान्त शब्द
असुर	आसुरः ; आसुरम्	चन्द्रमस्	चान्द्रमसम्
तमस्	तामसः ; तामसाः	ईश्वर	ऐश्वरम्
पुरुष	पौरुषम्	मनस्	मानसम् ; मानसाः
अस्मद्+ममक्	मामका ; मामकम्	रजस्	राजसः; राजसाः, राजसम्
शरीर	शरीरम् ;		राजससस्य

तालिका ७२ (ख)

प्रत्यय 'अण्' (भावे- भावाचक अर्थ में)

ऋजु	आर्जवम्	मुनि	मौनम्
कुशल	कौशलम्	युवन्	यौवनम्
क्षत्र	क्षात्रम्	लघु	लाघवम्
मृदु	मार्दवम्	शुचि	शौचम्

तालिका ७२ (ग)

प्रत्यय 'अण्' (स्वार्थे - अपने अर्थ में)

ओषधि	औषधम्	शुचि	शौचम्

तालिक ७२ (घ)

प्रत्यय 'अण्' (अपत्ये (१) सन्तान अर्थ में)

पाण्डु	पाण्डव	भरत	भारत
पृथा	पार्थ	जह्नु	जाह्नवी
ब्रह्मन्	ब्राह्मणस्य, ब्राह्मणाः ब्राह्मणे	वसुदेव	वासुदेवः
दनु	दानवाः	वसु	वासवः

* प्रत्यय सहित शब्द पढ़ने के दो उदाहरण -

असुर तस्येदम् अण्– आसुरः

मुनि भावे अण्– मौनम्

तालिका ७२ (घ)

प्रत्यय 'अण्' (अपत्ये (२)- सम्बन्ध अर्थ में)

शब्द	प्रत्ययान्त शब्द	शब्द	प्रत्ययान्त शब्द
देव	दैवः, दैवम्	मित्र	मैत्रः

तालिका ७२ (ङ)

प्रत्यय 'अण्' ('वाला' अर्थ में)

त्रिविधा	त्रैविधाः	मृगशीर्ष	मार्गशीर्षः
ब्रह्मन्	ब्राह्मी	मित्र	मैत्रः
भिक्षा	भैक्षम्		

तालिका ७३

प्रत्यय (१) 'त्व' और (२) 'तल्' (भाव अर्थ में)

अनादि (१)	अनादित्वात्	चञ्चल	चञ्चलत्वात्
अमृत	अमृतत्वाय	निर्गुण	निर्गुणत्वात्
अलोलुप	अलोलुप्त्वम्	निर्मल	निर्मलत्वात्
एक	एकत्वेन (एकत्वम्)	सम	समत्वम्
कर्तृ	कर्तृत्वम्	सम् (२)	समता

नोट 'त्व' प्रत्यायान्त शब्द नपुंसकलिंगवाची और 'तल्' प्रत्यायान्त शब्द स्त्रीलिंगवाची होते हैं ।

तालिका ७४

प्रत्यय 'वति' स्यात्, यतुल्यं (अर्थ में)

आदित्य	आदित्यवत्	उदासीन	उदासीनवत्
आश्चर्य	आश्चर्यवत्	कृत्स्न	कृत्सनवत्
		तद्	तद्वत्

तालिका ७५

प्रत्यय 'इतच्' अस्य संजातम्–उससे उत्पन्न (अर्थ में)

शब्द	प्रत्ययान्त शब्द	शब्द	प्रत्ययान्त शब्द
अध्यात्म संज्ञा	अध्यात्म संज्ञितम्	योगसंज्ञा	योगसंज्ञितम्
कर्म संज्ञा	कर्म संज्ञितः	पुष्प	पुष्पिताम्

तालिका ७६

प्रत्यय (१) 'तरप्' (२) 'इयसुन्' दो में से एक को अतिशय कराने वाले (अर्थ में)

दुःख (१)	दुःखतरम्	अणु (२)	अणीयांसम्
दुर्लभ (१)	दुर्लभतरम्	गुरु (२)	गरीयः (गरीयसे)
		प्रशस्य = श्र (२)	श्रेयः (श्रेयान्)

तालिका ७७

प्रत्यय 'छ' = ई

अस्मद्	अस्मदीयैः	तदर्थ	तदर्थीयम्

तालिका ७८

प्रत्यय ढक् = एय (स्त्री प्रत्ययान्तों में–अपत्य अर्थ में)

द्रौपदी	द्रौपदेयाः	कुन्ती	कौन्तेय (कौन्तेयः)
विनता	वैनतेयः	वृष्णि	वार्ष्णेय

तालिका ७९

प्रत्यय "इनिठनौ"

(इन् और 'ठन' ये मत्वर्थीय प्रत्यय हैं। हिन्दी में 'वान्' 'वाला' 'पाल'

आदि अर्थ को सूचित करने वाले । गीता में 'इन्' के ही उदाहरण उपलब्ध हैं।

शब्द	प्रत्ययान्त शब्द	शब्द	प्रत्ययान्त शब्द
आगमापाय	आगमापायिनः	क्षेत्र	क्षेत्री
कर्मसंग	कर्मसंगिनाम्,	चक्र	चक्रिणम्
	कर्मसंगिषु	ज्ञान	ज्ञानिनः
कर्मन्	कर्मिभ्यः	दीर्घसूत्र	दीर्घसूत्री
किरीट	किरीटी,	दुष्कृत	दुष्कृतिनः
	किरीटिनम्	मौन	मौनी
क्षमा	क्षमी		

तालिका ८०

प्रत्यय 'ठञ्' (इक) कालवाची (अर्थ में)

अत्यन्त	आत्यन्तिकम्	पूर्वदेह	पौर्वदैहिकम्
एकान्त	ऐकान्तिकस्य		

तालिक ८१

प्रत्यय 'ण्य' (य) - सन्तान अर्थ में

अदिति	आदित्यान्, आदित्यानाम्

तालिका ८२

प्रत्यय 'यत्' (वाला अर्थ में)

आदि	आद्यम्	न्याय	न्याय्यम्
तुला	तुल्य	मुख	मुख्यम्
धर्म	धर्म्यम्, धर्म्यात्	रहस	रहस्यम्

तालिका ८३

प्रत्यय 'ष्यञ्' (य)- भाव अर्थ में

शब्द	प्रत्ययान्त शब्द	शब्द	प्रत्ययान्त शब्द
अधिपति	आधिपत्यम्	पुरुष	पारुष्यम्
क्लीब	क्लैब्यम्	महात्मन्	महात्म्यम्
चतुर्वर्ण	चातुर्वर्ण्यम्	विराग	वैराग्यम्
त्रिगुण	त्रैगुण्य		वैराग्येण
त्रिलोक	त्रैलोक्य	शूर	शौर्यम्
दक्ष	दाक्ष्यम्	विश्	वैश्यः
निष्कर्मन्	नैष्कर्म्यम्	शिवि	शैव्यः

तालिका ८४

प्रत्यय 'यक' (भाव अर्थ में)

आस्तिक	आस्तिक्यम्	राजन्	राज्यम्
			राज्येन

तालिका ८५

प्रत्यय 'आकिनिच्' (असहाय अर्थ में)

एक	एकाकी

तालिका ८६

प्रत्यय 'विनि (वाला अर्थ में)

तेजस्	तेजस्विनाम्	तपस्	तपस्विभ्यः
मेधा	मेधावी		

तालिका ८७

प्रत्यय 'घ' = इय (सम्बन्धित अर्थ में)

शब्द	प्रत्ययान्त शब्द	शब्द	प्रत्ययान्त शब्द
क्षत्र	क्षत्रियस्य		

तालिक ८८

प्रत्यय 'मयट्' (परिपूर्ण अर्थ में)

शब्द	प्रत्ययान्त शब्द	शब्द	प्रत्ययान्त शब्द
तेजस्	तेजोमयम्	अस्मद्	मन्मयाः
सर्वाश्चर्य	सर्वाश्चर्यमयम्		

तालिका ८९

प्रत्यय 'तयप्' (वाला अर्थ में)

शब्द	प्रत्ययान्त शब्द	शब्द	प्रत्ययान्त शब्द
त्रि	त्रयम्		

तालिका ९०

प्रत्यय 'साति'

शब्द	प्रत्ययान्त शब्द	शब्द	प्रत्ययान्त शब्द
भस्मन्	भस्मसात्		

तालिका ९१

प्रत्यय 'इमनिच्'

शब्द	प्रत्ययान्त शब्द	शब्द	प्रत्ययान्त शब्द
महत्	महिमानम्		

तालिका १२

प्रत्यय 'ट्युल' = तुट्

शब्द	प्रत्ययान्त शब्द	शब्द	प्रत्ययान्त शब्द
सना	सनातनः		

तालिका १३

प्रत्यय 'इष्ठन्' विशेषण की उत्तमावस्था)

प्रशस्य = श्र	श्रेष्ठ		

तालिका १४

प्रत्यय	**मात्रच्**		
निमित्त	निमित्तमात्रम्		

तालिका १५

प्रत्यय	**'शालच्"**		
वि	विशालम्		

तालिका १६

प्रत्यय	**'ठक्'**		
निष्कृति	नैष्कृतिकः		

तालिका १७

प्रत्यय	**'डट्'**		
पञ्चन्	पञ्चमम्		

तालिका ९८

प्रत्यय 'ञ्यः'

शब्द	प्रत्ययान्त शब्द	शब्द	प्रत्ययान्त शब्द
पञ्चजन	पाञ्चजन्यम्		

तालिका ९९

प्रत्यय 'अञ्' (सन्तान अर्थ में)

शब्द	प्रत्ययान्त शब्द	शब्द	प्रत्ययान्त शब्द
पुत्र	पौत्राः	मनु	मानुषम् , मानुषे
मनु	मानवः		

तालिका १००

प्रत्यय अच्

शब्द	प्रत्ययान्त शब्द	शब्द	प्रत्ययान्त शब्द
पुण्य	पुण्यः	पाप	पापाः

तालिका १०१

प्रत्ययः 'मतुप्'

शब्द	प्रत्ययान्त शब्द	शब्द	प्रत्ययान्त शब्द
अंश	अंशुमान्	अभिजन	अभिजनवान्

तालिका १०२

प्रत्यय 'वतुप्'

शब्द	प्रत्ययान्त शब्द	शब्द	प्रत्ययान्त शब्द
एतद्	एतावत्	ज्ञान	ज्ञानवत्ताम्

१३. सन्धि विचार

'सन्धि' शब्द का अर्थ है 'मेल' । व्याकरण में दो शब्दों के मेल को सन्धि कहते हैं।

जब दो शब्द पास-पास आते हैं और उच्चारण की सुविधा के लिए उन्हें मिला दिया जाता है, तो उनमें सन्धि हो जाती है। वास्तव में, साधारण नियम यह है कि यदि दोनों शब्दों का एक साथ बार-बार उच्चारण किया जाए तो उनमें जो अनायास परिवर्तन हो जाता है वही सन्धि नियमों का आधार है। ऐसा हर भाषा में होता है- अंग्रेजी में भी इन्-प्युर, इन्-पर्फेक्ट क्रमशः इम्प्युर, इम्पर्फेक्ट हो जाते हैं।

ऐसे पास-पास आने वाले दो शब्दों में से पहले शब्द का अन्तिम वर्ण "पूर्व वर्ण" कहलाता है और दूसरे शब्द का प्रथम वर्ण "उत्तर वर्ण" या "पर वर्ण" और इन्हीं दोनों वर्णों में सन्धि होती है। हिन्दी और संस्कृत में ऐसे मिलने वाले वर्णों के लिए कई नियम हैं जो तीन भाग में विभाजित हैं : स्वर-सन्धि, व्यंजन सन्धि और विसर्ग सन्धि । इस विषय में आगे पढ़ने से पहले हमें कुछ पारिभाषिक शब्दों को जान लेना चाहिए।

१. आगम

जब कोई अक्षर किसी अक्षर के पास आकर बैठ जाता है तो उसे 'आगम' कहते हैं। जैसे वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया। यहां 'च्' का आगम हुआ है।

२. आदेश

जब कोई अक्षर किसी अक्षर को हटाकर बैठता है तो वह 'आदेश' कहलाता है। जैसे 'यदि' + अपि = यद्यपि । यहां

'इ' के स्थान पर 'य्' का आदेश हुआ है। इसे आदिष्ट 'य्' भी कहते हैं।

३. प्रातिपदिक

अव्यय, धातु तथा प्रत्यय को छोड़कर सभी अर्थयुक्त शब्द विभक्तियां लगने से पहले प्रातिपदिक कहलाते हैं। जैसे राम, विद्या।

४. हल्

व्यंजन 'हल्' कहलाते हैं।

६. उपधा

किसी शब्द के अन्तिम वर्ण से पूर्व के वर्ण को उपधा कहते हैं। जैसे चिन्त् में न्।

७. अवग्रह

लुप्त 'अ' जिसका उच्चारण नहीं होता, उसे चिन्ह (ऽ) से अंकित किया जाता है जिसे 'अवग्रह' कहते है

१३.१ स्वर अथवा अच् सन्धि - नियम

स्वर तीन भाग में विभाजित हैं -

ह्रस्व - अ इ उ ऋ ऌ

दीर्घ - आ ई ऊ ॠ ॡ

मिश्रित अथवा संयुक्त - ए ऐ ओ औ

ह्रस्व स्वर के उच्चारण में एक मात्रा का समय लगता है, दीर्घ में दो और जिसमें इससे अधिक समय लगे, उसे प्लुत स्वर कहते हैं। यह सम्बोधन के प्रयोग में आता है।

दो स्वरों के मिलने से अर्थात् पूर्व और पर दोनों वर्णो में स्वर होने पर जो सन्धि होती है उसे स्वर सन्धि कहते हैं। गीता में इसके छः प्रकार के उदाहरण मिलते हैं :

(i) दीर्घ संधि–

यदि ह्रस्व अथवा दीर्घ स्वर के अनन्तर सवर्ण ह्रस्व अथवा दीर्घ स्वर आवे तो दोनों के स्थान में 'सवर्ण-दीर्घ स्वर होता है। जैसे –

(क)	कार्य + अकार्ये	=	कार्याकार्ये
	भय + अभये	=	भयाभये
	फल + आकांक्षी	=	फलाकांक्षी
(ख)	सर्वाणि + इन्द्रिय कर्माणि	=	सर्वाणीन्द्रियकर्माणि
	अति + इन्द्रियम्	=	अतीन्द्रियम्
	उत्क्रामति + ईश्वरः	=	उत्क्रामतीश्वरः
(ग)	बहु + उदरम्	=	बहूदरम्
	तु + उद्देशतः	=	तूद्देशतः

(ii) <u>गुण सन्धि-</u>

यह असवर्ण स्वरों की सन्धि है जो चार प्रकार की हो सकती है :-

(क)	अ आ + इ ई	=	ए
	योग + ईश्वरः	=	योगेश्वरः
	एव + इतरः	=	एवेतरः
	एका + इह	=	एकेह
(ख)	अ आ + उ ऊ	=	ओ
	रथ + उपस्थे	=	रथोपस्थे
	श्रद्धया + उपेतः	=	श्रद्धयोपेतः
(ग)	अ आ + ऋ	=	अर्
	पुरुष + ऋषभ	=	पुरुर्षभ
	देव + ऋषिः	=	देवर्षिः
(घ)	अ आ + ऌ	=	अल्

इसके उदाहरण गीता में नहीं हैं

(iii) <u>वृद्धि सन्धि</u>

यह संयुक्त स्वरों की सन्धि है और तीन प्रकार की हो सकती हैं :

(क)	अ आ + ए ऐ	=	ऐ
	न + एषम्	=	नैषम्
	ब्रह्म + एव	=	ब्रह्मैव
(ख)	अ आ + ओ औ	=	औ
	उत्तम + ओजाः	=	उत्तमौजाः
(ग)	अ आ + ऋ	=	आर्

इसके उदाहरण गीता में नहीं हैं

(iv) <u>यण् सन्धि</u>

इस सन्धि में ह्रस्व और दीर्घ स्वरों का जिस प्रकार परिवर्तन होता है, वह नीचे देखिए :

(क)	इ ई + असमान स्वर	=	य्
	गच्छन्ति + अनामयम्	=	गच्छन्त्यनामयम्
	पराणि + आहुः	=	पराण्याहुः
	अपरि + आप्तम्	=	अपर्याप्तम्
(ख)	उ ऊ + असमान स्वर	=	व्
	कर्मसु + अनुषज्जते	=	कर्मस्वनुषज्जते
(ग)	ऋ ॠ + असमानस्वर	=	र्
	कर्तृ + ए	=	कर्त्रे
	जागृ + अति	=	जाग्रति
	जागृ + अतः	=	जाग्रतः

(v) <u>अयादि संधि</u>

इस सन्धि में निम्न संयुक्त स्वरों का परिवर्तन जिस प्रकार होता है, कोई भी स्वर परे होने से, वह नीचे देखिए :

(क)	ए + कोई भी स्वर	=	अय्
	राजर्षे + अस्	=	राजर्षयः
(ख)	ऐ + कोई भी स्वर	=	आय्
	नै + अकाः	=	न् + आय् काः = नायकाः
(ग)	ओ + कोई भी स्वर	=	अव्
	मनो + ए	=	मन् + अव् + ए = मनवे
(घ)	औ + कोई भी स्वर	=	आव्
	द्वौ + इमौ	=	द्व + आव्+ इमौ = द्वाविमौ

(vi) <u>पूर्व रूप सन्धि</u>

वास्तव में, यह अयादि सन्धि का अपवाद है। पदान्त 'ए' 'ओ' से आगे यदि ह्रस्व 'अ' आए तो 'अ' का लोप हो जाता है जिसे अवग्रह चिन्ह (S) द्वारा दर्शाया जाता है :

प्रयाणकाले + अपि	=	प्रयाणकालेSपि
ते + अभिहिता	=	तेSभिहिता
तुमुलो + अभवत्	=	तुमुलोSभवत्

उपर्युक्त छः नियमों के अतिरिक्त दो और सन्धि नियम हैं पर उनके उदाहरण गीता में नहीं मिलते :

(i) पररूप सन्धि – यह वृद्धि सन्धि का अपवाद हैं

(ii) प्रकृति भाव सन्धि – यह सन्धि का ही अपवाद है

आइए व्यंजन सन्धि पढ़ने से पहले एक बार फिर स्वर सन्धि के विभाजनों को दोहरा लें :-

(१) <u>दीर्घ सन्धि</u> यह सवर्ण स्वरों – ह्रस्व अथवा दीर्घ – की सन्धि है।

(२) <u>गुण सन्धि</u> यह असवर्ण स्वरों– ह्रस्व अथवा दीर्घ–की सन्धि है।

(३) <u>वृद्धि सन्धि</u> यह 'अ' 'आ' की संयुक्त अथवा मिश्रित स्वरों के साथ सन्धि है।

(४) <u>यण् सन्धि</u> यह 'अ' 'आ' को छोड़कर अन्य स्वरों – ह्रस्व अथवा दीर्घ – की असमान स्वरों के साथ सन्धि है।

(५) <u>अयादि सन्धि</u> यह संयुक्त स्वर-ह्रस्व अथवा दीर्घ-की किसी भी स्वर के साथ सन्धि है।

(६) <u>पूर्वरूप सन्धि</u> यह अयादि सन्धिका अपवाद है, अथवा लुप्त अकार की सन्धि है।

१३.२ व्यंजन अथवा हल् सन्धि – प्रारम्भिक बातें

जब किसी व्यंजन वर्ण के परे कोई स्वर या व्यंजन हो तो उनके मेल को व्यंजन या हल् सन्धि कहते हैं। इसके नियम अनेक प्रकार के और बहुत ही पेचीदे हैं। हम इन्हें गीता से उदाहरण दे देकर समझा रहे है, आप इनका प्रति दिन धीरे-धीरे अध्ययन करें, कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए परन्तु, पहले कुछ प्रारम्भिक बातें।

व्यंजनो को निम्नवर्गों में विभाजित किया गया है :-

क वर्ग	क ख ग घ ङ	(कु)[१]
च वर्ग	च छ ज झ ञ	(चु)
ट वर्ग	ट ठ ड ढ ण	(टु)
त वर्ग	त थ द ध न	(तु)
प वर्ग	प फ ब भ म	(पु)
अन्तःस्थ	य र ल व	
ऊष्म	श ष स ह	
अनुस्वार	ं	
अनुनासिक	ँ	
विसर्ग	:	

१ "कुचुटुतुपु" उदित् कहलाते हैं और क्रमशः अपने-अपने वर्ग के वाचक हैं। प्रत्येक उदित् के पंचम वर्ण अर्थात् ङञणनम को अनुनासिक भी कहते है।

आगे व्यंजनों का जो प्रविभाजन हुआ है उसे निम्न तालिका में देखिए। वास्तव में, ये प्रत्याहारों के नाम हैं जो पाणिनि के १४ सूत्रों पर आधारित हैं। आप इन सूत्रों को अपनी मेज पर शीशे के नीचे रखिए, समय-समय पर देखते रहिए। इनकी सहायता से आप स्वयं कोई भी प्रत्याहार बना सकेंगे जैसा हम आगे बतला रहे हैं, ध्यान रहे, 'प्रत्याहार' ऐसे स्वर-व्यंजनों के समूह हैं जिनका सन्धि नियमों के अनुसार एक सा व्यवहार होता है :

प्रत्याहार तालिका – १

व्यंजन

झल् — अन्तःस्थ और अनुनासिक व्यंजनों को छोड़कर कोई भी व्यंजन झल् के अन्तर्गत आता है। ऐसे व्यंजनों को "वर्गीय १,२,३,४ तथा ऊष्म" भी कह सकते हैं।

झश् — किसी वर्ग का तृतीय अथवा चतुर्थ वर्ण। ऐऐ व्यंजन "वर्गीय ३,४" होते हैं।

झय् — झल् के सब व्यंजन ऊष्म वर्ण को छोड़कर, अर्थात् वर्गीय १,२,३,४।

जश् — किसी वर्ग का तृतीय वर्ण अर्थात् वर्गीय ३

खर् — कुचुटुतुपु के प्रथम दो वर्ण, अर्थात् वर्गीय १,२।

चर् — कुचुटुतुपु का प्रथम वर्ण अर्थात् वर्गीय १

यर् — ह को छोड़कर कोई भी व्यंजन

यय् — ऊष्म को छोड़कर कोई भी व्यंजन

पाणिनि के १४ सूत्र जो माहेश्वर कहे जाते हैं इस प्रकार हैं -

१.	अ इ उ ण्	८.	झ भ ञ्
२.	ऋ ऌ क्	९.	घ ढ ध ष
३.	ए ओ ङ्	१०.	ज ब ग ड द श्
४.	ऐ औ च्	११.	ख फ छ ठ थ च ट त व्
५.	ह य व र ट्	१२.	क प य्
६.	ल ण्	१३.	श ष स र्
७.	ञ म ङ ण न म्	१४.	ह ल्

पहले चार सूत्रों में जो 'अ' से 'च' तक हैं, स्वर हैं और बाकी के सूत्रों में जो 'ह्' से 'ल' तक हैं, व्यंजन हैं। अतः स्वरों और व्यंजनों को क्रम से 'अच्' और हल् भी कहते हैं।

अब देखिए, सूत्रों को ध्यान में रखते हुए कि निम्नलिखित प्रत्याहारों में कौन-कौन अक्षर आते हैं :-

अक् : अ इ उ ऋ ऌ

यण् : य व र ल

'अक्' प्रत्याहार सूत्र १ और २ से बना है और यण् ५ और ६ से। प्रत्येक सूत्र के अक्षर गिनते समय अन्तिम अक्षर छोड़ दिया जाता है। ये इत् संज्ञक हैं और इनका प्रयोग नहीं किया जाता। झल् जैसे बड़े-बड़े प्रत्याहार बनाने के लिए हमारा सुझाव है कि आप सम्पूर्ण व्यंजन लिख लें :-

(क)	(ख)	(ग)	(घ)	ङ	(त)	(थ)	(द)	(ध)	न
(च)	(छ)	(ज)	(झ)	ञ	(प)	(फ)	(ब)	(भ)	म
(ट)	(ठ)	(ड)	(ढ)	ण	य	र	ल	व	
					(श)	(ष)	(स)	(ह)	

और सूत्र ८ (यहां 'झ' आया है) से सूत्र १४ तक (यहां ल् है) में जितने अक्षर आए हैं उनपर ( )लगाइए। ऐसे चिन्ह लगाने के बाद आप देखेंगे कि झल् प्रत्याहार के अन्तर्गत् वही अक्षर आते है जो हमने ऊपर प्रत्याहार तालिका में बतलाए हैं। ऐसे ही चिन्ह लगा कर आप 'झश्' (सूत्र ८ से १० तक) और 'जश्' (सूत्र १०) प्रत्याहारों में आने वाले अक्षरों को भी तालिका से मिला सकते हैं। ऐसे सब अक्षरों पर जो किसी प्रत्याहर में आतें हैं एक सन्धि नियम लागू होता है, जैसा अब आप आगे पढ़ेंगे। पर मुख्य-मुख्य प्रत्याहारों में कौन-कौन व्यंजन है, यह सदा ध्यान में रखना चाहिए। इसके लिए निम्न तालिका उपयोगी सिद्ध होगी।

प्रत्याहार तालिका - २

प्रत्याहार	चर्	में	केवल	वर्गीय	१	हैं
	खर्	"	"	"	१,२	हैं
	जश्	"	"	"	३	हैं
	झश्	"	"	"	३ ४	हैं
	झय्	"	"	"	१२३४	हैं
	झल्	"	"	"	१२३४	और ऊष्म हैं
	यर्	"			ह को छोड़कर कोई भी व्यंजन	
	यय्	"		वर्गीय १२३४५ हैं ऊष्म को छोड़कर कर;		
	हश	"		वर्गीय ३ ४ ५, अन्तःस्थ और ह;		
	अश्			वे सभी अक्षर जो हश् प्रत्याहार में आते हैं और स्वर		
	अट्			स्वर और ह य व र		

१३ .३ व्यंजन सन्धि-नियम

व्यंजन सन्धि के नियम जिनका गीता में प्रयोग हुआ है, उदाहरणों सहित हम नीचे दे रहे है :-

१ स्तोः श्चुना श्चुः ८/४/४० *

जब 'सकार-तवर्ग,' 'शकार-चवर्ग' के योग में आते हैं तो वे 'शकार-च वर्ग हो जाते हैं, जैसा नीचे चार्ट में दिखाया है :

१ जब सकार- तवर्ग	२ शकार-चवर्ग के योग में आते हैं	३ तो वे शकार-चवर्ग हो जाते हैं
स्	श्	श्
त्	च्	च्
थ्	छ्	छ्
द्	ज्	ज्
ध्	झ्	झ्
न्	ञ	ञ्

* यह निर्देश पाणिनि के ग्रन्थ अष्टाध्यायी का है- आठवां अध्याय। चौथा पद। चालीसवां सूत्र। इस ग्रन्थ में ४००० सूत्र और आठ अध्याय हैं। मैक्समूलर ने पाणिनी का समय ३५० वर्ष ई. पू. निश्चित किया है।

अर्थात्, जब कालम (१) के वर्ण के बाद कालम (२) के वर्ण क्रम से आते हैं तो वे कालम (२) का ही रूप ले लेते है जैसा कालम (३) में दिखलाया है। इस नियम के अपवाद भी हैं जो इच्छुक पाठक व्याकरण की किसी प्रामाणिक पुस्तक में देख सक्ते हैं। अब गीता में दिए उदाहरणों को दखिए :-

(i)	निस् + चरति	=	निश्चरति
	मनस् + चञ्चलम्	=	मनश्चञ्चलम्
	कस् + चन	=	कश्चन
(ii)	कत् + चित्	=	कच्चित्
(iii)	यद् + ज्ञात्वा	=	यज् ज्ञात्त्वा
(iv)	युन् + जीत	=	युञ्जीत

२. ष्टुना ष्टु : ८/४/४१

जब 'सकार-तवर्ग,' 'ष्कार-टवर्ग' के योग में आते हैं तो वे 'ष्कार-ट्वर्ग हो जाते हैं जैसा नीचे चार्ट में दिखाया है, :-

१ जब सकार-तवर्ग	२ षकार-खर्ग के योग में आते हैं	३ तो षकार-टवर्ग हो जाते हैं
स्	ष्	ष्
त्	ट्	ट्
थ्	ठ्	ठ्

द्	ड्	ड्
ध्	ढ्	ढ्
न्	ण्	ण्

कई बार सन्धि सम्पूर्ण होने से पहले एक से अधिक सूत्र सक्रिय हो जाते हैं जैसा आप नीचे दिए उदाहरणों में देख सकते हैं; हम प्रत्येक सूत्र का वर्णन करके अपने पाठकों को संस्कृत व्याकरण की गहराइयों में अभी नहीं डालना चाहते :

(१) सृज् + (क्त्वा) त्वा = सृष् + त्वा

= सृष्ट्वा

(२) प्रवेश् + तुम् = प्रवेष् + तुम्

= प्रवेष्टुम्

(३) प्रनश् + तः = प्रनष् + तः

= प्रनष् + टः

= प्रनष्टः

(४) दृश् + तः = दृष् + तः

= दृष् + टः

= दृष्टः

३ झलां जश् झशि ८/४/५३

जब 'झल्' व्यंजन के उपरान्त 'झश्' (वर्गीय ३,४) आता है तो 'झल्', 'जश्' (वर्गीय ३) में बदल जाता है :-

(१) लभ् + ध्वा = लब्ध्वा

(२) बोध् + धव्यं = बोद् + धव्यं = बोद्धव्यं

(३) आदित्यवत् + ज्ञानम् = आदित्यवद् + ज्ञानम्

ऊपर १ के अनुसार = आदित्यवज्ज्ञानम्

४ झलां जशोऽन्ते ८/२/३९

पदान्त में 'झल्' के स्थान में 'जश्' (वर्गीय ३) हो जाता है :-

प्रसिध्येत् + अकर्मणः = प्रसिध्येद् + अकर्मणः

= प्रसिद्ध्येदकर्मणः

५ यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा ८/४/४५

यदि 'यर्' के बाद कोई अनुनासिक वर्ण का योग हो, तो 'यर्' व्यंजन् के स्थान में उसी वर्ग वाला अनुनासिक वर्ण हो जाता है – विकल्प से।

जगत् + निवास = जगन्निवास

षट् + मासा = षण्मासा

६ खरि च ८/४/५५

यदि झल् व्यंजन के बाद 'खर्' (वर्गीय १.२) हो तो वह 'चर्' (वर्गीय १) हो जाता है :-

छिद् + त्वा	=	छित्तवा
तद् + कुरुष्वः	=	तत्कुरुष्व
हृद् + स्थम्	=	हृत्स्थम्

७ झषस्तथोर्धोऽधः ८/२/४०

यदि 'झ्ष्' (वर्गीय ३,४) से परे 'त्' 'थ्' हो तो ये 'ध्' हो जाते है :-

बोध् + तव्यम्	=	बोध् + ध्व्यम्
	=	बोद्धव्यम्
रुध् + (क) त्वा	=	रुध् + ध्वा
	=	रुद्ध्वा
बुध् + (क्तिन्) तिः	=	बुध् + धिः
	=	बुद्धिः

८ झयो होऽन्यतरस्याम् ८/४/६२

'झय्' से परे 'ह्' के स्थान पर पूर्व सवर्ण हो जाता है, विकल्प से :

(१)	धर्म्यात् + हि	=	धर्म्यात् + धि
	देखिए ऊपर ३	=	धर्म्याद् + धि
		=	धर्म्याद्धि

(२) एतत् + हि = एतत् + धि

देखिए ऊपर ३ = एतद् + धि

= एतद्धि

९ तोर्लि ८/४/६०

'त' वर्ग के बाद लकार होने पर ल् हो जाता है :-

(१) श्रुतिमत् + लोके = श्रुतिमल्लोके

(२) श्रद्धावान् + लभते = श्रद्धावांल्लभते

(न् के स्थान अनुनासिक 'ल्' हुआ है)

(३) शुभान् + लोकान् = शुभांल्लोकान्

यहां भी न् के स्थान पर अनुनासिक 'ल' हुआ है

१० चोः कु ८/२/३०

झल् परे रहने पर अथवा पदान्त में विद्यमान् 'चवर्ग' के स्थान पर कवर्ग होता है :

मुच् + (क्तः) तः = मुक्तः

११ वावसाने ८/४/५६

पदान्त में 'झलों' के स्थान पर विकल्प से चर् हो जाता है :

सु हृद् = सुहृत्

१२ षढोः कः सि ८/२/४१

'स' परे रहने पर 'ष' और 'ढ' के स्थान पर 'क' हो जाता है :

विनंश् + ष्यसि

सूत्र ८/२/३६ के अनुसार 'श्' को 'ष्'

विनंष् + ष्यसि = विनंक् + ष्यसि

= विनंक्ष्यसि

१३ मोऽनुस्वारः ८/३/२३

पदान्त 'म्' के बाद यदि कोई व्यंजन हो तो 'म्' के स्थान में अनुस्वार हो जाता है :

(१) सम् + जनयन् = संजनयन् (सञ्जनयन्)

(२) धनम् + जयः = धनंजयः (धनञ्जयः)

(३) सम् + करः = संकरः

१४ नश्चापदान्तस्य झलि ८/३/२४

अपदान्त नकार और मकार को अनुस्वार होता है, झल् परे होने पर :

(१) वासान् + सि = वासांसि

(२) रक्षान् + सि = रक्षांसि

१५ अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः ८/४/५८

यदि अनुस्वार के परे यय् हो तो परसवर्ण हो जाता है अर्थात् अनुस्वार के स्थान में उस वर्ग का पंचम-वर्ण हो जाता है, जिस वर्ग का व्यंजन वर्ण अनुस्वार के बाद आता है :

शाम् + तिः = शांति

भुञ्ज् + ष्व = भुंक् + ष्व = भुङ्क्ष्व

= भुंक्ष्व

१६ वा पदान्तस्य ८/४/५९

यदि अनुस्वार किसी पद के अन्त में रहे तो ऊपर वाला नियम (१५) विकल्प से लगता है। ये दोनों नियम एक प्रकार के हैं- ऊपर वाला नियम अपदान्त म् के लिए है और यह पदान्त म् के लिए।

शाम् + तः = शान्तः

धनम् + जय = धनंजय/धनञ्जय

परम् + तप = परंतप/परन्तप

१७ शश्छोऽटि ८/४/६३

'झय्' से परे श् के स्थान में 'छ' होता है, विकल्प से अट् परे होने पर।

(१) एतत् श्रुत्वा = एतच् छ्रुत्वा (नियम १)

= एतच्छ्रुत्वा

(२)	अत्युत् + श्रितम्	=	अत्युच् + श्रितम् (नियम १)
		=	अत्युच्छ्रितम्
(३)	उत् + शिष्टम्	=	उच् + शिष्टम्
		=	उच्छिष्टम्

१८ ङमो ह्रस्वादचि ङमुण्नित्यम् ८/३/३२

ह्रस्व स्वर से परे यदि पदान्त 'ङ' 'ण' 'न्' हो और परे कोई भी स्वर हो तो ङ् ण् न् का आगम होकर, द्वित्व हो जाता है

(१)	कुर्वन् + अपि	=	कुर्वन् + न् + अपि
		=	कुर्वन्नपि
(२)	सन् + अव्ययात्मा	=	सन् + न् + अव्ययात्मा
		=	सन्नव्ययात्मना ।

१९ नश्छव्य प्रशान् ८/३/७

पदान्त न् से परे यदि (i) च, छ, (ii) ट, ठ, अथवा (iii) त, थ हो, तो न् के स्थान पर अनुस्वार अथवा आनुनासिक हो जाता है और क्रमशः (i) श, (ii) ष् , अथवा (iii) स् जुड़ जाता है :

(i)	विद्वान् + तथा	=	विद्वांस् + तथा
		=	विद्वांस्तथा

(ii)	कामान् + त्यक्त्वा	=	कामांस् + त्यक्तवा
		=	कामांस्त्यक्त्वा
(iii)	प्रज्ञावादान् + च	=	प्रज्ञावादांश् + च
		=	प्रज्ञावादांश्च

२० छे च ६/१/७३

ह्रस्व स्वर से परे यदि छ् हो तो छ् के पूर्व नित्य ही च् जोड़ा जाता है

(i)	कृष्ण + छेत्तुम	=	कृष्ण + च् + छेत्तुम्
		=	कृष्णच्छेत्तुम्
(ii)	अस्य + छेत्ता	=	अस्यच्छेत्ता

२१ पदान्ताद्वा ६/१/७६

पदान्त दीर्घ से 'छ' परे हो, तो च् विकल्प से जोड़ा जाता है :

गायत्री + छन्दसाम् = गयत्रीच्छन्दसाम्

अथवा गायत्री छन्दसाम्

३.४ विसर्ग संधि नियम

संस्कृत व्याकरण में 'विसर्ग' को 'विसर्जनीय' भी कहते हैं। विसर्ग (एवं अनुस्वार) को 'अयोगवाह' भी कहते हैं, किसी भी वर्ण के योग के बिना इनकी स्थिति नहीं होती।

विसर्ग से परे स्वर अथवा व्यंजन होने पर विसर्ग का जो परिवर्तन होता है, उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं। यह परिवर्तन भी अनेक रूपों के हैं, हम मुख्य-मुख्य जो गीता में प्रयोग में आए हैं, नीचे दे रहे हैं :-

(१) विसर्जनीयस्य सः ८/३/३४ खरि

विसर्ग के स्थान पर स् हो जाता है यदि कोई 'खर्' व्यंजन परे हो :-

(i) प्राहुः + त्यागम् = प्राहुस् + त्यागम्

= प्राहुस्त्यागम्

(ii) संतुष्टः + तस्य = संतुष्टस् + तस्य

= संतुष्टस्तस्य

(iii) नमः + ते = नमस्ते

(२) वा शरि: ८/३/३६

यदि विसर्ग के बाद श् ष् स् हो तो विसर्ग के स्थान में स् विकल्प से होता है:-

(i) यतय: + संशितव्रता: = यतयस्संशितव्रता:

= यतयस्संशितव्रता:

अथवा यतय: संशितव्रता:

(ii) दिशा: + च = दिशास् + च

= दिशाश् + च

= दिशाश्च

अथवा = दिशा: च

(३) अत: + च्यवन्ति = अतस् + च्यवन्ति

= अतश् + च्यवन्ति

= अतश्च्यवन्ति

अथवा अत: च्यवन्ति

३ ससजुषो रुः ८/२/६६

४ खरवसानयोर्विसर्जनीयः ८/३/१५

पदान्त स् तथा सजुष्* के ष् के स्थान में 'र' (रु) हो जाता है।

(i)	सजुष् = सजुर्	=	सजुः
(ii)	रामस् = रामर्	=	रामः

इस पदान्त 'र' के बाद खर् व्यंजन तथा श् ष् स् का कोई वर्ण हो अथवा कोई भी वर्ण न हो तो र् के स्थान मे विसर्ग हो जाता है

(i)	समः + सिद्धौ	=	समःसिद्धौ
(ii)	ब्रह्मणः पथि	=	ब्रह्मणः पथि
(iii	शब्दः खे	=	शब्दः खे
(iv)	अधियज्ञः कथम्	=	अधियज्ञः कथम्
(v)	विमत्सराः	=	विमत्सराः
(vi)	करोति सः	=	करोति सः

उपर्युक्त नियम (३) का, नियम (४) और (५), (जो नीचे दिए जा रहे हैं), के साथ अध्ययन करना चाहिए।

*सजुष् का अर्थ है – प्यारा, मित्र, साथ रहने वाला

५ अतो रोरप्लुतादप्लुते ६/१/११३

अप्लुत 'अकार' (अर्थात् ह्रस्व 'अकार') परे होने पर स् के स्थान पर ह्रस्व 'उकार' हो जाता है: (यद्यपि नियम (३) के अनुसार 'र्' होना चाहिए।

जयस् + अस्मि	=	जय + रु + आस्मि
	=	जय + उ + अस्मि
	=	जयो + अस्मि
	=	जयोऽस्मि

६ हसि च ६/१/११४

यह नियम (५) का ही परिवर्धित रूप है। हश् प्रत्याहार परे होने पर भी स् के स्थान पर ह्रस्व 'उकार' हो जाता है : (यद्यपि नियम (३) के अनुसार 'र्' होना चाहिए)

(i)	यशास् + लभस्व	=	यश + उ + लभस्व
		=	यशो लभस्व
(ii)	योगस् + नष्टः	=	योग + उ + नष्टः
		=	योगोनष्टः
(iii)	राजर्ष्यस् + विदुः	=	राजर्ष्य + उ + विदुः
		=	राजर्षयो विदुः

७ रो रि ८/३/१४

'र्' के बाद यदि र आवे तो 'र्' का लोप हो जाता है और उसके पूर्व यदि 'अ' 'इ' 'उ' हो ते वे दीर्घ हो जाते हैं

(i) धार्तराष्ट्रार् + रणे = धार्तराष्ट्रा रणे

(ii) पुनर् + रमते = पुनारमते

नीचे हम विसर्ग सन्धि के कुछ और सूत्र, और उनके उदाहरण मात्र दे रहे हैं जिनका गीता में प्रयोग हुआ है। ये सूत्र किस प्रकार सक्रिय होते हैं जानने के लिए आप संस्कृत व्याकरण पर प्रामाणिक पुस्तकें देखें :

८ भो भगो अघो अपूर्वस्य योऽशि ८/३/१७

गुणाः + वर्तन्ते = गुणा वर्तन्ते
अहंकारः + इति = अहंकार इति
यच्छ्रेयः + एतयोः = यच्छ्रेय एतयोः

९ हलि सर्वेषाम् ८/३/२२

संस्पर्शजाः + भोगाः = संस्पर्शजा भोगाः

१० एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ् समासेहलि ६/१/१३२

एषस् + क्रोधः = एषः क्रोधः
= एष कोधः
सस् + घोषः = सः घोषः
= स घोषः

११ र्वोरुपधाया दीर्घ इकः ८/२/७६

निराशिस् + निर्ममः = निराशीः + निर्ममः

= निराशीर्निर्ममः

१२ इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य ८/३/४१

निः + कर्म = निष्कर्म, (तस्य भावो नैष्कर्म्यम्)

निः कृति = निष्कृति, (तस्य भावो नैष्कृतिकः)

१३ सोऽपदादौ ८/३/३८

अतपः + काय = अतपस्काय

१४ रोऽसुपि ८/२/६९

अहन् + आगमे = अहर् + आगमे

= अहरागमे

अहन् + रात्रविदः = अह + रु + रात्रविदः

= अह + उ + रात्रविदः

= अहो रात्रविदः

१४. समास

परस्पर सम्बध रखने वाले दो या अधिक शब्दों में समास होता है। हिन्दी में जो अर्थ 'संक्षेप' का है, वही अर्थ 'समास' का समझना चाहिए – दो या अधिक शब्दों को इस प्रकार पास-पास रख देना कि उनके आकार में कमी भी हो जाए और अर्थ पूरा ही रहे; जैसे धर्मस्य क्षेत्रे = धर्मक्षेत्रे। समास में विभक्ति का लोप हो जाता है और सन्धि नियमों का प्रयोग होता है।

जिन शब्दों में समास होता है समास के पूर्व उन्हें 'समस्यमान्' और पीछे 'समस्त' कहते हैं। प्रत्यय लगने से ये शब्द बनते हैं। और, पदों की प्रधानता या अप्रधानता के कारण 'समास' के मुख्य चार भेद हैं :-

१. अव्ययीभाव जिसमें पहला पद प्रधान हो

२. तत्पुरुष " जिसमें दूसरा पद प्रधान हो

३. द्वन्द्व " जिसमें दोनों पद प्रधान हों

४. बहुव्रीहि " जिसमें कोई अन्यपद प्रधान हो

तत्पुरुष के अन्तर्गत और भी दो समास आते हैं : (१) कर्मधारय; और (२) द्विगु। कर्म धारय ऐसे सामासिक शब्द हैं जिनमे विशेष्य-विशेषण या उपमान-उपमेय का भाव रहता हैं। और, जिन सामासिक शब्दों में पहला पद संख्या वाचक होता है उनमें द्विगु समास होता है।

समस्त शब्दों को अलग-अलग करना उनका 'विग्रह' है और ऐसे विग्रह किए शब्दों को खण्ड कहते हैं।

गीता में आए सामासिक शब्दों का विग्रह हम गीता कोश में दिखला रहे हैं और आशा करते हैं कि हमारे पाठक इस बात का स्वयं निर्णय करलेंगें कि कौन समास, किस प्रकार का है, निम्नलिखित संकेतों की सहायता द्वारा -

१. <u>अव्ययी भाव समास</u> इस समास में पहला पद प्रधान होता है और प्रायः अव्यय् या उपसर्ग होता हे और समस्त पद 'अव्यय' बन जाता है। दूसरे पद् का रूप नपुंसक लिंग के एक वचन में होता है, जैसे -

यथाभागम् - (१) यथा और (२) भागः

यहां 'यथा' शब्द प्रधान है, और दोनों मिलकर अव्यय का रूप लेते है। 'भागः' शब्द ने पुल्लिंग होते हुए भी एक वचन नपुंसक का रूप धारण किया है। ध्यान रहे इस समास की यही बड़ी पहचान है कि इसका पूर्व पद अव्यय रूप में, मुख्यतः उपसर्ग होता है और दूसरा पद नपुंसकान्त रूप में होता है। इसके रूप चलते नहीं।

२. <u>तत्पुरुष समास</u> इस समास में द्वितीय पद प्रधान होता है। यह सामासिक शब्द संज्ञा, विशेषण अथवा क्रिया-विशेषण का काम करता है। समासान्त पद का लिंग और वचन अन्तिम पद के अनुसार ही होता है। तत्पुरुष समास के दो मुख्य भेद है :-

(i) <u>व्यधिकरण</u> अर्थात् जिसमें समास का प्रथम पद द्वितीया से लेकर सप्तमी विभक्ति तक किसी एक में होता है और दूसरा पद प्रथम पद की विभक्ति से भिन्न में, और

(ii) <u>समानाधिकरण</u> अर्थात् समास के दोनो पदों की एक ही विभक्ति होती है, जैसे पुरुषः व्याघ्रः = पुरुषव्याघ्रः

व्याधिकरण तत्पुरुष समास

विभक्त्यानुसार इस समास के छः और भेद हैं – जिस विभक्ति में पूर्व पद होता है वही समास का नाम होता है :-

समास का नाम	उदाहरण	
	समस्यमान् पद्	समस्तपद
द्वितीया तत्पुरुष	द्वन्द्वम् अतीतः	द्वन्द्वातीतः
तृतीया तत्पुरुष	ज्ञानेन दीपिते	ज्ञानदीपिते
	बुद्ध्या युक्तः	बुद्धियुक्तः
चतुर्थी तत्पुरुष	संस्थापनाय अयम्	संस्थापनार्थाय
पंचमी तत्पुरुष	कायक्लेशाद् भयं	कायक्लेशभयं
	योगाद् भ्रष्टः	योगभ्रष्टः
षष्टी तत्पुरुष	प्रजायाः पतिः	प्रजापतिः
सप्तमी तत्पुरुष	स्वे कर्मणि निरतः	स्वकर्मनिरतः
	आकाशे स्थितः	आकाशस्थितः

समानाधिकरण तत्पुरुष समास

यदि प्रथम शब्द प्रथमा विभक्ति में रहे तो व्यधिकरण तत्पुरुष समास न होकर, वह समानाधिकरण हो जाता है। समानधिकरण का अर्थ है ऐसे पद जिनका अधिकरण (अर्थात् आसन) समान हो; व्यधिकरण में दोनों पदों का अधिकरण (अर्थात् आसन) अलग अलग होता है जैसा आपने ऊपर देखा है।

(iii) कर्मधारय तत्पुरुष समास

ऐसा समानाधिकरण तत्पुरुष समास जिसमें दोनो पदों का समान अधिकार हो 'कर्मधारय तत्पुरुष समास' कहलाता है। इस समास के मुख्य भेद इस प्रकार हैं –

(क) कर्मधारय विशेषण-विशेष्य समास

जैसे नीलम उत्पलम् = नीलोत्पलम।

इसके उदाहरण गीता में नहीं है।

(ख) कर्मधारय उपमान-उपमेय

(i) उपमान पूर्वपद — महान् चासौ ईश्वरः

= महेश्वरः

(ii) उपमानोत्तपद– पुरुषः व्याघ्रः

= पुरुषव्याघ्रः

(ग) द्विग तत्पुरुष समास

जब कर्म धारय समास में प्रथम पद संख्यावाची हो और दूसरा पद कोई संज्ञा तो उसे 'द्विगु समास' कहते हैं। यह समाहार अर्थात् संग्रह अथवा समूह का द्योतक है। जैसे, त्रैलोक्य।

(iv) अन्य तत्पुरुष समास

गीता में ये दो ही प्रकार के हैं –

(क) प्रादि तत्पुरुष- जब किसी तत्पुरुष में पूर्व पद में 'प्र' आदि उपसर्गों में से कोई आए तो उसे 'प्रादि' तत्पुरुष कहते हैं। जैसे प्रपितामहः, अतीन्द्रियम्।

(ख) नञ् तत्पुरुषः

जब प्रथम पद 'न' रहे और दूसरा कोई संज्ञा या विशेषण हो तो ऐसे सामासिक शब्द को यह नाम दिया जाता है। यह 'न' व्यंजन के पूर्व 'अ' में और स्वर के पूर्व 'अन्' में बदल जाता है:– जैसे अनिष्टम्, 'अकर्मणः'

३. द्वन्द्व समास इसके दो भेद गीता में मिलते हैः-

(i) इतरेतर द्वन्द्व– इसमें सभी पद प्रधान रहते हैं और 'च' से जुड़े रहते हैं। इसका लिंग दूसरे पद के समान होता है :-

सुखं च दुःखं च = सुख दुःखे

लाभः च अलाभः च = लाभालाभौ

जयः च अजयः च = जयाजयौ

(ii) समाहार द्वन्द्व

जिस समास में समाहार (समूह) का बोध हो : जैसे –

कायः च शिरः च ग्रीवा च = कायशिरो ग्रीवम्

(४) बहुव्रीहि समास

जिसमें अन्य पद प्रधान हो और वह किसी अन्य शब्द का विशेषण हो तो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं:

नास्ति अहंकारः यस्य स – निरहंकारः

नास्ति ममत्वं यस्य स – निर्ममः

क्षीणानि कल्मषाणि येषां ते – क्षीणकल्मषाः

गीता कोश

गीता में प्रयुक्त शब्दों की संख्या ३८३८ है। वर्णानुसार व्यवस्था का विवरण इस प्रकार है :-

(१) मोटे टाइप में शब्द; उसके आगे बड़े ब्रैकेट के भीतर छोटे टाइप में –

(२) अंकों में, बिन्दु के पहले गीता अध्याय और बाद में श्लोक संख्या–जहां जहां शब्द, (कुछ अव्यय सर्वनाम आदि को छोड़कर), प्रयुक्त हुए हैं, जैसे–

अंशः [१५.७ (अध्याय १५ श्लोक ७)]
अकर्तारम् [४.१३; १३.२९ (अध्याय ४ श्लोक १३); (अध्याय १३ श्लोक २९)]
अद्‌भुतम् [११.२०, १८.७४, ७६ (अध्याय ११. श्लोक २०, अध्याय १८ श्लोक ७४ और ७६)]

(३) पहले छोटे ब्रैकेट में शब्द का व्याकरणिक परिचय * संकेत शब्दों द्वारा, (देखिए गीता व्याकरण)

(४) आवश्यकतानुसार, दूसरे छोटे ब्रैकेट में शब्द की व्याख्या; और बड़े ब्रैकेट के बाहर

(५) साधारण टाइप में शब्दार्थ,

दिये गए हैं

*शब्द का व्याकरणिक परिचय

(१) कोई कोई शब्द कई स्थानों में प्रयोग में आये हैं– कहीं संज्ञा, कहीं विशेषण इत्यादि। स्थानाभाव के कारण हम ऐसे शब्दों का अलग-अलग परिचय न देकर, उसका केवल एक ही रूप दिखा रहे हैं। शब्द कहां संज्ञा है, कहां विशेषण इसका निर्णय श्लोक पढ़ते समय पाठक स्वयं बड़ी सरलता से कर सकते हैं। सब रूप अधिकतः एक समान चलते हैं। (देखिए गीता व्याकरण)

(२) संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि शब्दों के लिए जो संकेत शब्द और अंक दिए हैं जैसे–

(i) अंशः सं(राम १.१)
(ii) अनुपकारिणे वि(शशिन् ४.१)
(iii) अमी-सर्व (अदस् पु. १.३)

उनके अर्थ हैं:–

(i) अंश–राम जैसा संज्ञा शब्द है, प्रथमा विभक्ति, एक वचन में;
(ii) अनुपकारिणे–शशिन् जैसा विशेषण शब्द है चतुर्थो विभक्ति एक वचन में।
(iii) अमी–सर्वनाम अदस् पु. रूप में प्रथमा विभक्ति बहुवचन में।

जिस प्रकार संकेत शब्द चलते हैं, उसी प्रकार इन शब्दों को भी चलाया जाना चाहिए। (देखिए गीता व्याकरण) विभक्तियां (१) से (८) तक हैं; और वचन तीन हैः

(१) एकवचन, (२) द्विवचन और (३) बहुवचन

(३) क्रिया शब्दों के आगे जो अंक हैं, वे दर्शाते हैं पुरुष और वचन, जैसे अनुतिष्ठन्ति में (३.३) का अर्थ है अन्य पुरुष बहुवचन। पुरुष तीन हैं (१) उत्तम, (२) मध्यम और (३) अन्य।

(४) यदि कोई शब्द साधारण व्याकरण की परिधि के बाहर है, तो उसका कोई परिचय नहीं दिया गया है।

संकेताक्षर और चिन्ह

√	मूल, धातु	तना.	तनादिगणीय
A	आत्मनेपदी	तुदा.	तुदादिगणीय
P	परस्मैपदी	दिवा.	दिवादिगणीय
A/P	उभयपदी	न.	नपुंसकलिंग
अ.	अव्यय	पु.	पुंल्लिंग
अनि.	अनिश्चयवाचक	भ्वा.	भ्वादिगणीय
अदा.	अदादिगणीय	रुधा.	रुधादिगणीय
कर्म.	कर्मवाच्य	वि.	विशेषण
क्रि.वि.	क्रियाविशेषण	सर्व.	सर्वनाम
क्र्या.	क्र्यादिगणीय	सार्व.	सार्वनामिक/विशेषण
चुरा.	चुरादिगणीय	स्त्री.	स्त्रीलिंग
जुहो.	जुहोत्यादिगणीय	स्वा.	स्वादिगणीय

अ

अंशः [१५.७ सं(राम १.१)] भाग, खंड

अंशुमान् [१०.२१ सं(धीमत्(१.१)] कान्तिमय, जगमगाता, किरणोंवाला,

अकर्तारम् [४.१३, १३.२९ वि(कर्तृ २.१) (न + कर्तारम्)] अक्रियाशील, अकर्त्ता

अकर्म [४.१६, १८ सं(कर्मन् १.१) (न + कर्म)] अकर्म, निष्क्रियता आलस्य

अकर्मकृत् [३.५ (मरूत्) १.१)] बिना काम किए, कर्म किए बिना

अकर्मणः [३.८, ४.१७ सं(कर्मन् ५.१)] अकर्म से, अकर्मण्यता की अपेक्षा, निष्क्रियता से, कर्म न करने से

अकर्मणि [२.४७, ४.१८ सं(कर्मन् ७.१)] अकर्म में, कर्म न करने में

अकल्मषम् [६.२७ वि(राम २.१)] पाप रहित हुए को, निष्पाप को

अकारः [१०.३३ सं(राम १.१)] 'अ' अक्षर

अकार्यम् [१८.३१ सं(फल २.१)] अकार्य, अकर्तव्य, जो नहीं करना चाहिए

अकीर्तिः [२.३४ सं(मति १.१)] अपयश

अकीर्तिकरम् [२.२ वि(फल १.१)] अपयश देने वाला, ख्याति नाशक

अकीर्तिम् [२.३४ सं(मति २.१)] अपयश

अकुर्वत [१.१ (√कृ तना.A लङ् ३.३)] किया

अकुशलम् [१८.१० सं(फल २.१)] अप्रिय, अरुचिकर

अकृतबुद्धित्वात् [१८.१६ सं(फल ५.१)] (न कृता बुद्धिः येन तस्य भावात्)] उसकी अवस्था से जिसे बुद्धि प्राप्त नहीं हुई, असंस्कृत बुद्धि वाला

अकृतात्मानः [१५.११ सं(आत्मन् १.३) (न कृतः आत्मा यैः ते)] वे जिनके द्वारा आत्मा को (अपने को) बनाया नहीं (गया है) (सुधारा नहीं गया है), वे जिन्होंने आत्म शुद्धि नहीं की है, संस्कार रहित लोग

अकृतेन [३.१८ वि(राम ३.१)] कर्म न करने से, न करने से

अकृत्स्नविदः [३.२९ वि(तत्त्वविद् १.३)] सब न जानने वाले, असर्वज्ञ, अल्प ज्ञान वाले

अक्रियः [६.१ वि(राम १.१)] क्रिया के विना; क्रिया से रहित

अक्रोधः [१६.२ सं(राम १.१)] क्रोध का न होना; क्रोध रहित होना

अक्लेद्यः [२.२४ वि(राम १.१)] जो गीला न हो सके; गीला न होने वाला

अक्षयः [१०.३३ वि(राम १.१)] सदैव रहने वाला, अविनाशी

अक्षय्यम् [५.२१ वि(फल २.१)] अविनाशी; अविनश्वर; जो नष्ट न हो

अक्षरः [८.२१, १५.१६ सं(राम १.१)] अनश्वर; अविनाशी

अक्षरम् [८.३, ११, १०.२५; ११.१८, ३७, १२.१, ३ सं(राम २.१) सं(फल १.१)] क्षय न होने वाला, अविनाशी, अक्षर

अक्षरसमुद्भवम् [३.१५ सं(फल २.१) (अक्षरात् समुद्भवः यस्य तत्)] वह जो उत्पन्न होता है अविनाशी (अक्षय) से, परमात्मा से उत्पन्न हुआ

अक्षराणाम् [१०.३३ सं(राम ६.३)] अक्षरों में

अक्षरात् [१५.१८ सं(राम ५.१)] अक्षर से; अध्वंस्य की अपेक्षा

अखिलम् [४.३३; ७.२९; १५.१२ सं(फल १/२.१)] निःशेष, अखण्ड, सम्पूर्ण

अगतासून् [२.११ वि.(गुरु २.३) (न गताः असवः येषां तान्)] वे जिनके प्राण नहीं गए हैं उन को; (जीवितों को)

अग्निः [४.३७; ८.२४; ९.१६; ११.३९; १८.४८ सं(हरि १.१)] अग्नि

अग्नौ [१५.१२ सं(हरि ७.१)] अग्नि में

अग्रे [१८.३७; ३८, ३९ अ.(क्रिवि ७.१)] आरम्भ में

अघम् [३.१३ सं(राम २.१)] पाप को

अघायुः [३.१६ सं(गुरु १.१)] (अघम् आयुः यस्य सः) वह जिसका सम्पूर्ण जीवन पापमय है, पापी जीवन वाला

अङ्गानि [२.५८ सं(फल २.३)] अंगों को

अचरम् [१३.१५ सं(फल १.१)] अचल, अटल, स्थिर

अचलः [२.२४ वि(राम १.१)] अचल, अटल

अचलप्रतिष्ठम् [२.७० वि(राम २.१)] जिसकी मर्यादा निश्चल है उसे; अचल स्थिति वाले को

अचलम् [६.१३, १२.३ अ.(क्रि.वि) २.१ वि((राम २.१)] अचल, अटल, अपरिवर्तनीय

अचला [२.५३ वि(विद्या १.१)] अचल, स्थिर

अचलाम् [७.२१ वि(विद्या २.१)] स्थिर, दृढ़

अचलेन [८.१० वि(फल ३.१)] निश्चल से, अचल-से

अचापलम् [१६.२ सं(फल १.१)] चपलता का न होना; अचंचलता

अचिन्त्यः [२.२५ वि(राम १.१)] अकल्पनीय, जो मनोगम्य नहीं; जिसका चिन्तन न किया जा सके

अचिन्त्यम् [१२.३ वि(राम २.१)]

जिसका चिन्तन न हो सके; अकल्पनीय

अचिन्त्यरूपम् [८.९ वि(राम २.१ (अचिन्त्य रूपं यस्य तम्)] उसको जिसका रूप (आकार) अकल्पनीय हैं

अचिरेण [४.३९ अ.(क्रिवि)] विना विलम्ब के, तुरन्त, शीघ्र;

अचेतसः [३.३२, १५.११, १७.६ वि(चन्द्रमस् १.३,२.३)] बुद्धिहीन; अविवेकी

अच्छेद्यः [२.२४ वि(राम १.१)] जो काटा न जा सके; न काटा जाने वाला

अच्युत [१.२१; ११.४२; १८.७३ सं(राम ८.१)] अच्युत ! (जो गिरे न, जो विचलित न हो), श्री कृष्ण ! अपरिवर्तनीय; अविकार्य

अजः [२.२०, ४.६ वि.(राम १.१) सं(राम १.१)] अजन्मा

अजम् [२.२१; ६.२५; १०.३, वि. (राम २.१) १०.१२) वि(कर्मन् १.१)] अजन्मा, जन्मरहित

अजस्रम् [१६.१९ अ.(क्रिवि)] निरन्तर, बारम्बार

अजानता [११.४१ (अ.) वि(ध्यायत् ३.१)] अनजाने से, न जानते हुए के द्वारा

अजानन्तः [७.२४, ९.११, १३.२५ सं.(ध्यायत् १.३)] (अ + √ ज्ञा क्र्या P + शतृ) न जानते हुए

अज्ञः [४.४० वि(राम १.१)] अज्ञानी, न जानता हुआ

अज्ञानजम् [१०.११, १४.८ सं(फल २.१)] (अज्ञानात् जातम्) अज्ञान से उत्पन्न

अज्ञानम् [५.१६; १३.११; १४.१६; १७, १६.४ सं(फल १.१) (२.१)] अज्ञान

अज्ञानविमोहिताः [१६.१५ सं(राम १.३) (अज्ञानेन विमोहिताः)] अज्ञान से मोहित हुए

अज्ञानसंभूतम् [४.४२ वि(राम २.१) (अज्ञानात् संभूतम्)] अज्ञान से उत्पन्न

अज्ञानसंमोहः [१८.७२ सं(राम १.१) (अज्ञानस्य संमोहः)] अज्ञान जन्य मोह

अज्ञानाम् [३.२६ सं(राम ६.३)] अज्ञानियों की

अज्ञानेन [५.१५ सं(फल ३.१)] अज्ञान से; अविद्या से

अणीयांसम् [८.९ सं(गरीयस् २.१)] अधिक छोटा, लघुतर, सूक्ष्मतर

अणोः [८.९ सं(गुरु ५.१)] अणु से, लघु से

अतः (अ.) इसके बाद, भविष्य में, इसलिए

अतत्त्वार्थवत् [१८.२२ वि(जगत् १.१)] बिना तात्त्विक (मौलिक) अर्थ के; बिना किसी सार्थकता के

अतन्द्रितः [३.२३ वि.(राम १.१)] अक्लांत; अथकित; अथक; आलस्य रहित (होकर)

अतपस्काय [१८.६७ सं(राम ४.१)] उसको जो बिना तप के है, उसके लिए जो तपस्वी नहीं है

अतितरन्ति [१३.२५ (अति + √ तृ भ्वा P लट् ३.३) (वे)] पार उतर जाते हैं; तर जाते है

अतिरिच्यते [२.३४ (अति + √ रिच् दिवा A लट् ३.१)] से अधिक होती है, से बढ़ जाती है

अतिवर्तते [६.४४, १४.२१ (अति + √ वृत भ्वा A लट ३.१)] परे चला जाता है, लांघ जाता है

अतिस्वप्नशीलस्य [६.१६ वि(राम ६.१)] (अति स्वप्तुं शीलं यस्य तस्य) उसका जिसकी प्रवृत्ति अधिक नींद लेने की (है); अधिक सोने वाले का

अतीतः [१४.२१, १५.१८ वि(राम १.१) (अति + √ई + क्त)] पार किए; परे चले गए;..से परे; लांघ गया (हूं)

अतीत्य [१४.२० (अ.) (अति + √इ अदा P + ल्यप्)] पार कर के, लांघ कर; परे जाकर

अतीन्द्रियम् [६.२१ वि(फल १.१) (इन्द्रियाणि अति)] इन्द्रियों से परे, इन्द्रियों से अतीत

अतीव [१२.२० (अ.) (अति + इव)] बहुत, अत्यन्त, अद्वितीय

अत्यद्भुतम् [१८.७७ वि(फल १.१)] अति आश्चर्यजनक

अत्यन्तम् [६.२८ (अ.) वि(फल २.१)] अति, परम, चरम, अनन्त, असीम, अपरिमित

अत्यर्थम् [७.१७ अ.(क्रिवि)] अतिशय, अत्याधिक, अतिमात्र में, अत्यन्त

अत्यश्नतः [६.१६ सं(ध्यायत् ६.१) (√ अश्न् क्र्या P + शत्)] अधिक खाने वाले (का)

अत्यागिनाम् [१८.१२ सं(शशिन् ६.३)] त्याग न करने वालों का

अत्युच्छ्रितम् [६.११ सं(फल २.१)] बहुत ऊँचा

अत्येति [८.२८ अति + √ इ लट् (३.१)] के पार जाता है, परे चला जाता है

अत्र (अ.) यहां

अथ (अ.) (क्रि.वि.) अब, तदनन्तर; भी; यदि; फिर; और

अथवा (अ.) अथवा, या, वा किंवा

अथो (अ.) अर्थात्, अभिप्राय यह कि

अदक्षिणम् [१७.१३वि(राम २.१)] बिना दक्षिणा के

अदम्भित्वम् [१३.७ सं(फल १.१)] बिना दम्भ के; बिना पाखण्डके; अमिथ्याभिमानता, आडम्बर हीनता

अदाह्यः [२.२४ वि(राम १.१)] जो जल न सके, न जलने वाला

अदृष्टपूर्वम् [११.४५ वि(फल २.१) (पूर्वम् न दृष्टम्)] पहिले न देखा हुआ

अदृष्टपूर्वाणि [११.६ वि(फल २.३) (पूर्वम् न दृष्टानि)] पहिले न देखे हुए

अदेशकाले [१७.२२ सं(राम ७.१) (न देशे कालेच)] न ठीक स्थान में और न ठीक समय में

अद्भुतम् [११.२०, १८.७४, ७६ वि(फल १.१)] आश्चर्यजनक, चामत्कारिक

अद्य (अ.) आज

अद्रोहः [१६.३ सं(राम १.१)] वैर का अभाव, द्वेष का न होना, (द्रोह = दूसरे का अहित चिंतन)

अद्वेष्टा [१२.१३ वि(कर्तृ. १.१)] द्वेष न करते हुए, घृणा न करते हुए

अधः [१४.१८, १५.२ अ.(क्रिवि)) नीचे की ओर; नीचे

अधःशाखम् [१५.१ वि(राम २.१) (अधः शाखाः यस्य तम्)] वह जिस की शाखाएं नीचे हैं

अधमाम् [१६.२० वि(विद्या २.१)] अधम, नीचतम, निकृष्ट

अधर्मः [१.४० सं(राम १.१)] अव्यवस्था, अन्धेर, अराजकता

अधर्मम् [१८.३१,३२; सं(राम २.१)] अधर्म (को) अनुचित (को)

अधर्मस्य [४.७ सं(राम ६.१)] अधर्म का, पाप का

अधर्माभिभवात् [१.४१ सं(राम ५.१)] (अधर्मस्य अभिभवात्) अराजकता के, प्रचलन से (प्रचार से)

अधिकः [६.४६ वि(राम १.१)] अधिक, ऊंचा, उच्च, महान्

अधिकतरः [१२.५ वि(राम १.१)] बहुत अधिक; अधिक से अधिक

अधिकम् [६.२२ वि(राम २.१)] और अधिक

अधिकारः [२.४७ सं(राम १.१)] अधिकार, हक, स्वत्व

अधिगच्छति [२.६४; ७१; ४.३९; ५.६, २४; ६.१५; १४.१९, १८.४९ (अधि + गच्छति- √ गम्-गच्छ भ्वा. P लट् ३.१)] प्राप्त होता है; पाता है

अधिदैवतम् [८.४ सं(फल १.१)] अधिदेवता, (देखिए अध्याय ७ श्लोक ३०)

अधिदैवम् [८.१ सं(फल १.१)] अधिदैव (देवताओं संबन्धी ज्ञान)

अधिभूतम् [८.१, ४ सं(फल १.१)] अधिभूत मूल तत्त्व (आकाश पृथ्वी जल अग्नि वायु) का ज्ञान (देखिए अध्याय ७ श्लोक ३०)

अधियज्ञः [८.२, ४ सं(राम १.१)] अधियज्ञ, (देखिए अध्याय ७ श्लोक ३०)

आधिष्ठानम् [३.४०; १८.१४ सं(फल १.१) (अधि + √स्था + ल्युट्)] आसन; स्थान; शरीर क्षेत्र

अधिष्ठाय [४.६; १५.९ (अधि + √स्था भ्वा P + ल्यप्)] पर निर्भर या आधारित होकर, टिकते हुए, स्थित हो कर

अध्यक्षेण [९.१० वि(राम ३.१)] निरीक्षक द्वारा (देखिए प्रवेशिका-II)

अध्यात्मचेतसा [३.३० सं(मनस् ३.१) (अध्यात्मनि चेतसा)] अध्यात्म चित्त से; आत्मा में स्थिर बुद्‌धिसे, विवेकात्मक बुद्‌धि से, (अध्यात्म, आत्मा या परमात्मा से संबंधित ज्ञान द्वारा) (देखिए प्रवेशिका-II)

अध्यात्मज्ञाननित्यत्वम् [१३.११ सं(फल १.१) (अध्यात्मनः ज्ञाने नित्यत्वम्)] अध्यात्म ज्ञान (विद्या जो आत्मा-अपने-से संबंधित है) की स्थिरता-अटल होना, (देखिए प्रवेशिका - II)

अध्यात्मनित्याः [१५.५ सं(राम १.३) (अध्यात्मनि नित्याः)] अपने में सदैव स्थापित; अपने में सदा निमग्न; अपने में सदैव स्थिर, (देखिए प्रवेशिका - II)

अध्यात्मम् [७.२९; ८.१; ३ सं(फल १.१) (आत्मानम् अधिकृत्य कृतम्)] आत्मा से सम्बन्धित; अध्यात्म (को) (देखिए प्रवेशिका - II)

अध्यात्मविद्या [१०.३२ सं(विद्या १.१) (आत्मानम् अधिकृत्य विद्या)] विद्या जो आत्मा (अपने) से सम्बंधित है, आत्म ज्ञान, आत्मा या परमात्मा से संबंधित ज्ञान या विवेचन, (देखिए प्रवेशिका - II)

अध्यात्मसंज्ञितम् [११.१ वि(फल १.१)] अध्यात्म नाम का

अध्येष्यते [१८.७० (अधि + √इ अदा P लृट् ३.१)] अध्ययन करेगा, अभ्यास करेगा

अध्रुवम् [१७.१८ वि(फल १.१)] अस्थिर

अनघ [३.३; १४.६; १५.२० सं(राम ८.१)] हे अनघ; (पापरहित)

अनन्त [११.३७ सं(राम ८.१)] हे अनन्त (जिसका अन्त नही)

अनन्तः [१०.२९ सं(राम १.१)] शेषनाग

अनन्तबाहुम् [११.१९ वि(गुरु २.१) (अनन्ताः बाहवः यस्य तम्)] उसको जिसकी अनन्त भुजाएं हैं

अनन्तम् [११.११, ४७ वि(फल २.१)] अनन्त अन्तरहित, निरन्त

अनन्तरम् [१२.१२, १८.५५ (अ.) क्रिवि)] शीघ्र ही, तुरन्त ही, तत्काल

अनन्तरूप [११.३८ सं(राम ८.१)] हे अनन्त रूप (हे अगणित स्वरूप वाले)

अनन्तरूपम् [११.१६ वि(राम २.१) (अनन्तानि रूपाणि यस्य तम्)] उसको जिसके अनन्त स्वरूप हैं

अनन्तविजयम् [१.१६ सं(राम २.१)] अनन्त विजय (युधिष्ठिर का शंख)

अनन्तवीर्य [११.४० सं(राम ८.१) (अनन्तं वीर्यं यस्य सः)] (वह जिसकी शक्ति अनन्त है) हे अनन्त वीर्य

अनन्तवीर्यम् [११.१९ सं(राम २.१) (अनन्तं वीर्यं यस्य तम्)] उसको जिसकी शक्ति अनन्त है, अपार बल वाले को

अनन्ताः [२.४१ वि(विद्या १.३)] अन्तहीन, अनन्त

अनन्यचेताः [८.१४ वि.(चन्द्रमस् १.१) (न अन्यस्मिन् चेताः यस्य सः)] वह जिसका विचार दूसरे में नहीं (है) एकाग्र मन वाला

अनन्यभाक् [९.३० वि.(ऋत्विज १.१) (न अन्यं भजति इति)] ऐसे दूसरे को नहीं भजता जो; एकनिष्ठ होकर

अनन्यमनसः [९.१३ वि(चन्द्रमस् १.३) (न अन्यस्मिन् मनः)] वे जिनका मन दूसरे में नहीं (है); एक मन से-

अनन्यया [८.२२, ११.५४ सार्व वि.(विद्या ३.१)] अन्य से संबन्ध न रखने वाला, अनन्य, एकनिष्ठ, एक ही में लीन

अनन्ययोगेन [१३.१० सं(राम ३.१)] अनन्य योग से; एकनिष्ठ योग से, बिना दूसरे का ध्यान किए-योग द्वारा

अनन्याः [९.२२ सार्व. वि(राम १.३)] बिना दूसरे के; दूसरे का ध्यान न करते हुए; अनन्य भाव से, एकनिष्ठ

अनन्येन [१२.६ सार्व. वि(राम ३.१)] बिना दूसरे के, दूसरे (किसी) का नहीं, (ध्यान न करते हुए) एक निष्ठ

अनपेक्षः [१२.१६ वि(राम १.१) (न अपेक्षा यस्य सः)] इच्छा रहित, निःस्पृह; बिना प्रतीक्षा के,

अनपेक्ष्य [१८.२५ (अ.) (अन् + अप + √ ईक्ष् + ल्यप्)] बिना ध्यान करते हुए; ध्यान न देते हुए

अनभिष्वंगः [१३.९ सं(राम १.१)] तादात्म्य न होना; एकीकरण न करना, लिप्त न होना, ममता का अभाव

अनभिसंधाय [१७.२५ (अ.) (अन् + अभि + सम् √ धा + ल्यप्)] इच्छा न कर के, ध्यान न देकर, लक्ष्य न करके

अनभिस्नेहः [२.५७ वि(राम १.१)] स्नेह रहित; असम्बद्ध

अनयोः [२.१६ सार्व.वि(इदम् ६.२)] इन (दोनों) का

अनलः [७.४ सं(राम १.१)] अग्नि

अनलेन [३.३९ सं(राम ३.१)] अग्नि से; ज्वाला से; लौ से

अनवलोकयन् [६.१३ (ध्यायत् १.१) (अन् + अव. + √लोक् + शतृ)] न देखते हुए

अनवाप्तम् [३.२२ सं(फल १.१) (अन् + अव् + √ आप् स्वा P + क्त)] अप्राप्त, न मिला हुआ

अनश्नतः [६.१६ वि.सं(ध्यायत् ६.१) (न अश्नतः)] न खाने वाले का

अनसूयः [१८.७१ वि(राम १.१)] निन्दा

न करने वाला, दोष न दिखाने वाला

अनसूयन्तः [३.३१ वि (ध्यायत् १.३)] छिद्रान्वेषण न करते हुए, निंदा न करते हुए

अनसूयवे [९.१ वि(गुरु ४.१)] निन्दा न करने वाले को, दोषदर्शन न करने वाले के लिए

अनहंकारः [१३.८ सं(राम १.१)] अहंकार रहित, अहंकार का अभाव

अनहंवादी [१८.२६ वि(शशिन् १.१) (न अहं वदति इति)] " मैं हूं " ऐसा नहीं कहता है, अहंपन में जिसकी आस्था नहीं

अनात्मनः [६.६ वि(आत्मन् ६.१) (न (जितः) आत्मा यस्य तस्य)] जिसकी आत्मा (विजित) नहीं है, उसका; जिसने अपने को नहीं जीता है, उसका, (देखिए प्रवेशिका - II)

अनादित्वात् [१३.३१ सं(फल ५.१)] अनादि होने से, आरम्भ रहित होने के कारण

अनादिम् [१०.३ वि(हरि २.१)] आदि रहित, जिसका प्रारम्भ नहीं

अनादिमत् [१३.१२ वि(जगत् १.१)] आदि रहित, जिसका प्रारम्भ नहीं

अनादिमध्यान्तम् [११.१९ वि(राम २.१) (न आदिः मध्यम् अन्तः यस्य तम्)] उसको जिसका आदि, मध्य अन्त नहीं है

अनादी [१३.१९ वि(हरि २.२)] आदि रहित (दोनों को)

अनामयम् [२.५१, १४.६ वि(फल २.१)] पीड़ा हीन, अकष्टकर, आरोग्यकर

अनारम्भात् [३.४ सं(राम ५.१)] आरम्भ न करने से

अनार्यजुष्टम् [२.२ वि.(फल १.१) (√जुष् + क्त (अनार्यैः जुष्टम्)] (जिसमें) अनार्य प्रसन्न हों, (जिसे) आर्य व्यवहार में नहीं लाते

अनावृत्तिम् [८.२३, २६ सं(मति २.१)] न लौटने की स्थिति, पुनरागमन का अभाव

अनाशिनः [२.१८ वि(शशिन् ६.१)] अनश्वर का, अविनाशी का

अनाश्रितः [६.१ वि(राम १.१) (न आश्रितः)] (पर) निर्भर या आश्रित न रहने या होने वाला

अनिकेतः [१२.१९ वि(राम १.१)] विना घर (स्थान) का, जो एक स्थान से बंधा नहीं हो

अनिच्छन् [३.३६ वि(ध्यायत् १.१) (न इच्छन्)] न चाहता हुआ; इच्छा न रखता हुआ

अनित्यम् [९.३३ वि(राम २.१)] अनित्य, अस्थायी, नश्वर, क्षण भंगुर

अनित्याः [२.१४ वि(राम १.३)] अस्थायी, अल्प कालिक

अनिर्देश्यम् [१२.३ वि(फल २.१)] अपरिभाष्यः अवर्णनीय, शब्दों द्वारा जिसका वर्णन न हो सके

अनिर्विण्णचेतसा [६.२३ सं(मनस् ३.१) (अ निर्विण्णेन चेतसा)] उदास न हुए मनसे, बिना निराश हुए

अनिष्टम् [१८.१२ वि(फल १.१)] अवांछनीय, अप्रिय

अनीश्वरम् [१६.८ वि(फल २.१)] बिना ईश्वर का

अनुकम्पार्थम् [१०.११ (अ.) (अनुकम्पायाः अर्थम्)] दया के लिए, करुणा के वास्ते, तरस खाके

अनुचिन्तयन् [८.८वि(ध्यायत् १.१)] चिन्तन करता हुआ, विचार करता हुआ

अनुतिष्ठन्ति [३.३१ ३२ (अनु + √स्था भ्वा P लट् ३.३)] अनुसरण करते हैं, पालन करते हैं

अनुत्तमम् [७.२४ वि(राम २.१)] सर्वोत्तम

अनुत्तमाम् [७.१८ वि(विद्या २.१) (न अस्ति उत्तमा यस्याः ताम्)] वह जिससे उत्तम नहीं है (उसको), सर्वोत्तम को,

अनुद्विग्नमनाः [२.५६ वि(चन्द्रमस् १.१) (न उद्विग्नं मनः यस्य सः)] वह जिसका मन उद्विग्न (उत्तेजित) नहीं होता, आकुल नहीं होता, घबराता नहीं

अनुद्वेगकरम् [१७.१५ वि(फल १.१] (न उद्वेगं करोति इति)] जो उत्तेजना उत्पन्न नहीं करता

अनुपकारिणे [१७.२० वि(शशिन् ४.१)] प्रत्युपकार न करने वाले को, भलाई का बदला न चुकाने वाले को

अनुपश्यति [१३.३०, १४.१९ (अनु + √दृश् - पश्य् भ्वा P लट् ३.१)] पहचानता है , देखता है, अनुभव करता है, समझता है

अनुपश्यन्ति [१५.१० (अनु + √दृश्-पश्य् भ्वा P लट् ३.३)] पहचानते हैं, देखते हैं अनुभव करते हैं

अनुपश्यामि [१.३१ (अनु + √दृश् - पश्य् P लट् १.१)] (मैं) देखता हूं; (मुझे) दिखाई देता है

अनुप्रपन्नाः [९.२१ वि(राम १.३)] निष्ठावान् , आश्रय लिए हुए

अनुबन्धम् [१८.२५ सं(राम २.१)] परिणाम को, निष्कर्ष को

अनुबन्धे [१८.३९ सं(राम ७.१)] परिणाम में

अनुमन्ता [१३.२२ वि(कर्तृ १.१)] अनुमति देने वाला

अनुरज्यते [११.३६ (अनु + √रञ्ज् + कर्म A लट् ३.१)] प्रीति करता है

अनुवर्तते [३.२१ अनु + √वृत् भ्वा A लट् ३.१)] अनुसरण करता है, अनुगमन करता है, पीछे पीछे चलता है

अनुवर्तन्ते [३.२३, ४.११] (अनु + √वृत् भ्वा A/P लट् ३.३)] अनुसरण करते हैं, अनुगमन करते हैं

अनुवर्तयति [३.१६ (अनु + √वृत् भ्वा A लट् ३.१)] अनुसरण करता है, पालन करता है

अनुविधीयते [२.६७ (अनु + वि + √धा (कर्मणि) A लट् ३.१)] अनुकूल कर दिया जाता है, पीछे लगा दिया जाता हे, अनुरूप कर दिया जाता है

अनुशासितारम् [८.९ वि(धातृ २.१(] संसार के शासक को, नियन्ताको, शासक को

अनुशुश्रुम [१.४४ (अनु + √श्रु स्वा P लिट् १.३)] हमने सुना है

अनुशोचन्ति [२.११ अनु + √शुच् भ्वा P लट् ३.३)] शोक मनाते हैं, सोचकर दुःखित होते हैं

अनुशोचितुम् [२.२५ अनु √शुच् भ्वा + तुमुन्)] शोक करने के लिए

अनुषज्जते [६.४, १८.१० अनु + √षस्ज् भ्वा A लट् ३.१)] आसक्त होता है, अनुरक्त होता है

अनुसंततानि [१५.२ वि(फल १.३)] बहुशाखी, शाखा विस्तार हुआ है जिसका, फैले हुए, बिछे हुए

अनुस्मर [८.७ (अनु + √स्मृ भ्वा P लोट २.१)] स्मरण करना, स्मरण कर

अनुस्मरन् [८.१३ वि.(ध्यायत् १.१) (अनु + √ स्मृ भ्वा P + शतृ)] स्मरण करते हुए

अनुस्मरेत् [८.९ (अनु + √ स्मृ + भ्वा P विधि ३.१)] चिन्तन (मनन) करते हुए

अनेकचित्तविभ्रान्ताः [१६.१६ वि(राम १.३) (अनेकैः चित्तैः विभ्रान्ताः)] अनेक विचारों से घबराए हुए, अनेक भ्रान्तियों में पड़े हुए

अनेकजन्मसंसिद्धः [६.४५ वि(राम१.१) (अनेकैः जन्मभिः संसिद्धः)] अनेक जन्मों से पूर्ण हुआ, सिद्धि को प्राप्त हुआ

अनेकदिव्याभरणम् [११.१० सं(फल २.१) (अनेकानि दिव्यानि आभरणनि यस्मिन् तत्)] वह जिसमें अनेक ईश्वरीय आभूषण (हैं), अनेक दिव्य आभूषण वाला

अनेकधा [११.१३ (अ)] अनेक रीति से, अनेक प्रकार से, नाना रूप, विविध।

अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रम् [११.१६ सं(राम २.१) (अनेकानि बाहवः च उदराणि च वक्त्राणि च नेत्राणि च यस्य तम्)] उसकी जिसकी अनेक भुजाएं, पेट, मुख और नेत्र हैं

अनेकवक्त्रनयनम् [११.१० सं(फल २.१) (अनेकानि वक्त्राणि च नयनानि च यस्मिन् तत्)] वह जिसमें अनेक मुख और नेत्र) (हैं), अनेक मुख और नेत्र वाले, को

अनेकवर्णम् [११.२४ सं(राम २.१) (अनेके वर्णाः यस्य तम्)] उसको जिसके अनेक रंग हैं, अनेक रंग वाले को

अनेकाद्भुतदर्शनम् [११.१० वि(फल २.१) (अनेकानि अद्भुतानि दर्शनानि यस्मिन् तत्)] वह जिसमें अनेक चामत्कारिक दृश्य हैं, अनेक अद्भुत दर्शनों वाला

अनेन [३.१०, ११, ९.१०, ११.८ सर्व(इदम् पु / नपु. ३.१)] इससे, इसके द्वारा

अन्तः [२.१६, १०.१९, २०, ३२, ४०, १३.१५, १५.३ सं(राम १.१)] अन्तिम परिणाम, निष्कर्ष, अन्त, अवसान, अन्दर, भीतर

अन्तःशरीरस्थम् [१७.६ वि(राम २.१) (अन्तः शरीरे स्थितम्)] शरीर के भीतर स्थित, अन्तःकरण में रहने वाले (को)

अन्तःसुखः [५.२४ वि(राम १.१) (अन्तः (आत्मनि) सुखं यस्य सः)] वह जिसका सुख अपने में है, जो अन्तर (आत्मा) में सुखी है, अन्तः सुखी

अन्तःस्थानि [८.२२ वि.(फल १.३) (अन्तः तिष्ठन्ति इति तानि)] वे जो ऐसे भीतर खड़े होते हैं, अन्तर्गत, भीतर स्थित हैं

अन्तकाले [२.७२, ८.५ सं(राम ७.१) (अन्तस्य काले)] अन्त समय में

अन्तगतम् [७.२८ वि(फल १.१)] जिसका अंत हो गया है, जो चला गया है

अन्तम् [११.१६ सं(राम २.१)] अन्त, समाप्ति, अवसान

अन्तरम् [११.२०, १३.३४ सं(फल १.१)] अन्तराल, बीच का आकाश-स्थान, भेद, भिन्नता

अन्तरात्मना [६.४७ सं(आत्मन् ३.१)] अन्तर आत्मा से, एकचित्त से

अन्तरारामः [५.२४ वि(राम १.१) (अन्तः (आत्मनि) आरामः यस्य सः)] वह जिसका आनन्द अपने में है, जिसके अन्तर में आनन्द (शान्ति) है

अन्तरे [५.२७ वि(फल ७.१)] मध्य में

अन्तर्ज्योतिः [५.२४ वि(मुनि १.१) (अन्तः (आत्मनि) ज्योतिः यस्य सः)] वह जिसकी ज्योति अपने में है, जो अन्तर में प्रकाशवान् है, अन्तर्ज्ञानी

अन्तवत् [७.२३ वि(जगत् १.१)] अन्त वाले, नाशवान

अन्तवन्तः [२.१८ वि(भवत् १.३)] अन्तवाले

अन्तिके [१३.१५ (अ..,वि(राम / फल ७.१)] पास, निकट, समीप ।

अन्ते [७.१९, ८.६ सं(राम ७.१) अन्त में

अन्नम् [१५.१४ सं(फल २.१)] अन्न, भोजन

अन्नसंभवः [३.१४ सं(राम १.१) (अन्नस्य संभवः)] अन्न की उत्पत्ति

अन्नात् [३.१४ सं(फल ५.१)] अन्नसे

अन्यः [२.२९. ४.३१, ६.३९, ८.२०,

११.४३, १५.१७, १६.१५, १८.६९ सर्व(अन्य. पुं. १.१)] एक और, कोई दूसरा, परलोक, दूसरा कोई

अन्यत् [२.३१, ४२; ७.२, ७; ११.७; १६.८ सर्व.(अन्यत् नपु. १.१)] दूसरा, अन्य

अन्यत्र [३.९ (अ.)] अन्य प्रकार से, दूसरे

अन्यथा [१३.११ (अ.)] भिन्न, दूसरी दृष्टि से, विपरीत

अन्यदेवताः [७.२० (अन्याः देवताः) सं(विद्या २.३)] दूसरे देवता

अन्यदेवताभक्ताः [९.२३ सं(राम १.३) (अन्यानां देवतानां भक्ताः)] दूसरे देवताओं के भक्त

अन्यम् [१४.१९ सर्व(२.१)] दूसरा, अन्य को, दूसरे को, और किसी को

अन्यया [८.२६ सर्व(विद्या ३.१)] दूसरे से, दूसरे मार्ग से

अन्यान् [११.३४ सर्व(अन्य पु २.३)] दूसरे

अन्यानि [२.२२ सर्व(अन्यत् नपु. १.३)] दूसरे

अन्याम् [७.५ सर्व(अन्या स्त्री. २.१)] दूसरी, उच्च श्रेणी की

अन्यायेन [१६.१२ सं(राम् ३.१)] अन्याय से, अत्याचार से, अनीति पूर्वक

अन्ये [१.९;४.२६; ९.१५; १३.२४; २५; १७.४ सर्व(अन्य पुं. १.३)] दूसरे

अन्येन [११.४७. ४८ सर्व(अन्य पुं. ३.१)] दूसरे से

अन्येभ्यः [१३.२५ सर्व(अन्य पुं. ५.३)] दूसरों से

अन्वशोचः [२.११ (अनु + √ शुच् भ्वा. P लङ् २.१)] शोक विलाप किया है

अन्विच्छ [२.४९ (अनु + √इष्- इच्छ् तुदा P लोट २.१)] खोजना, पता लगाना (तू) खोज, पता लगा

अन्विताः [९.२३, १७.१ वि(राम १.३)] सम्पन्न, युक्त

अपनुद्यात् [२.८ अप + √ नुद P विधि. ३.१)] दूरकर सके

अपरम् [४.४, ६.२२ वि(राम(२.१) (फल१.१)] बादमें, दूसरे किसी को

अपरस्परसंभूतम् [१६.८ वि(फल २.१) (अपरः च परः च ताभ्यां संभूतम्)] एक दूसरे से उत्पन्न, नर मादा के सम्बन्ध से उत्पन्न

अपरा [७.५ वि(विद्या १.१)] निम्न श्रेणी की

अपराजितः [१.१७ सं(राम १.१) अजेय।

अपराणि [२.२२ वि(फल १.३)] दूसरे, अन्य

अपरान् [१६.१४ वि(राम २.३)] दूसरों को

अपरिग्रहः [६.१० वि(राम १.१)] धन सम्पत्ति के संग्रह के बिना (रहित) आवश्यक धन से अधिक का त्याग

अपरिमेयाम् [१६.११ वि(विद्या २.१)] अमाप, अपार

अपरिहार्ये [२.२७ वि(राम ७.१)] अनिवार्य (विषय में)

अपरे [४.२५, २७, २८, २९.३०, १३.२४, १८.३ वि(पूर्व. १.३) अ.] दूसरे, कुछ, कोई, और कोई

अपर्याप्तम् [१.१० वि(फल १.१)] अपरिमित, असीमित; अपर्याप्त जो जितना चाहिए, न हो

अपलायनम् [१८.४३ सं(फल १.१)] न भागना, अडिगता

अपश्यत् [१.२६, ११.१३ (√दृश्-पश्य् भ्वा P लङ् ३.१)] देखा

अपहृतचेतसाम् [२.४४ सं.(मनस् ६.३) (अपहृतं चेतः येषां तेषाम्)] जिनकी बुद्धि हर ली गई है, उनको

अपहृतज्ञानाः [७.१५ वि(राम १.३) (अपहृतं ज्ञानं येषां ते)] वे जिनका ज्ञान हर लिया गया है, जिनका ज्ञान नष्ट होगया है, वे

अपात्रेभ्यः [१७.२२ सं(फल ४.३)] कुपात्रों को, अयोग्य पुरुषों को

अपानम् [४.२९ सं(राम २.१)] भीतर आने वाली श्वास

अपाने [४.२९ सं(राम ७.१)] भीतर आने वाली श्वास में

अपावृतम् [२.३२ वि(फल १.१)] खुला हुआ

अपि [(अ] भी, से भी, ज्यों, फिर भी, तो भी, साथ ही, ही

अपुनरावृत्तिम् [५.१७ सं(मति २.१)] न फिर लौट कर आने की स्थिति, को

अपैशुनम् [१६.२ सं(फल १.१)] छल कपट का न होना, निष्कपट, पीठ पीछे निन्दा न करना

अपोहनम् [१५.१५ सं(फल १.१)] तर्क की काट, प्रतिवाद, शंका का निराकरण, उन सब विषयों का निराकरण जो विचारणीय विषय के बाहर हो, अभाव, दूर होना, विस्मरण

अप्रकाशः [१४.१३ सं(राम १.१)] अंधकार, अज्ञान

अप्रतिमप्रभावः [११.४३ वि(राम १.१) (अप्रतिमः प्रभावः यस्य सः)] वह जिसकी शक्ति अद्वितीय (है), अनुपम प्रभाव वाले

अप्रतिष्ठः [६.३८ वि(राम १)] अस्थिर, डावाँडोल

अप्रतिष्ठम् [१६.८ वि(फल १.१)] बिना आधार के, बिना नींव के

अप्रतीकारम् [१.४६ वि(राम २.१)] बिना सामना किए, बिना प्रतिकार किए, (विना बदला लिए) (विरोध न करते हुए) प्रतिकार या विरोध न करने वाले को

अप्रदाय [३.१२ (अ.) (अ + प्र + √दा + ल्यप्)] बिना लौटाए, बिना दिए

अप्रमेयम् [११.१७, ४२ वि(राम २.१)] अमित, अपार, अमापनीय

अप्रमेयस्य [२.१८ वि(राम ६.१)] अमापनीय का, अपार का।

अप्रवृत्तिः [१४.१३ सं(मति १.१)] अक्रियता, निष्क्रियता

अप्राप्य [६.३७, ९.३, १६.२० (अ.) (अप्र + √आप् स्वा P + ल्यप्)] प्राप्त न करके, न पाकर

अप्रियम् [५.२० वि(राम २.१/फल २.१)] अप्रिय वस्तु, असुखद

अप्सु [७.८ सं(अप् सदैव बहुवचन) ७.३)] जल में

अफलप्रेप्सुना [१८.२३ वि(साधु ३.१) (न फलस्य प्रेप्सुना)] फल की इच्छा से रहित के द्वारा, फल वितृष्ण के द्वारा

अफलाकाङ्क्षिभिः [१७.११, १७ वि(शशिन् ३.३) (न फलस्य काङ्क्षिभिः)] जिन्हें फल की इच्छा नहीं उनके द्वारा, जो फल के इच्छुक नहीं उनके द्वारा

अबुद्धयः [७.२४ वि(हरि १.३)] अविवेकी लोग, बुद्धिहीन जन

अब्रवीत् [१.२, २८, ४.१ (√ब्रू अदा. P लङ् ३.१)] कहा, बोले

अभक्ताय [१८.६७ सं(राम ४.१)] जो बिना भक्ति के है उसे, जो भक्त नहीं है उसको

अभयम् [१०.४, १६.१ सं(फल १.१)] अभय, निडरता

अभवत् [१.१३ (√भू भ्वा. P लङ् ३.१)] था, हुआ

अभावः [२.१६; १०.४ सं(राम १.१)] अनस्तित्व, जिसका अस्तित्व नहीं अविद्यमानता, नाश

अभावयतः [२.६६ सं(ध्यायत् ६.१) (वि √भू भ्वा P + णिच् + शतृ)] मनन चिन्तन न करने वाले को, ध्यान रहित को

अभाषत [११.१४ (√भाष् भ्वा A लङ् ३.१)] कहा, बोला

अभिक्रमनाशः [२.४० सं(राम १.१) (अभिक्रमस्य नाशः)] प्रारम्भ (किये हुए) का नाश, प्रयत्न का लोप

अभिजनवान् [१६.१५ वि(धीमत् १.१)] कुलीन

अभिजातः [१६.५ सं(राम १.१)] पैदा हुआ, जन्मा हुआ

अभिजातस्य [१६.३, ४ सं(राम ६.१(] जन्मे हुए का

अभिजानन्ति [९.२४ (अभि + √ज्ञा क्र्या. P लट् ३.३)] (वे) जानते हैं

अभिजानाति [४.१४, ७.१३, २५, १८.५५ (अभि √ज्ञा क्र्या P लट् ३.१)] (वह) भली प्रकार जानता है

अभिजायते [२.६२, ६.४१, १३.२३ (अभि + √ जन् दिवा A लट् ३.१)] उत्पादित, प्रस्तुत होता है, उत्पन्न होता है

अभितः [५.२६ (अ)] पास, दोनों ओर, आसपास

अभिधास्यति [१८.६८ (अभि + √धा P लट् ३.१)] कहेगा, प्रचार करेगा, बतलाएगा

अभिधीयते [१३.१, १७.२७, १८.११ (अभि + √धी जुहो + कर्मणि A लट् ३.१)] कहलाता है, नाम दिया जाता है

अभिनन्दति [२.५७ (अभि + √नन्द भ्वा P लट् ३.१)] (वह) आनन्द मानता है, हर्षित होता है

अभिप्रवृत्तः [४.२० (सं(राम १.१)] पूरी तरह प्रवृत्त हुआ (लगा हुआ)

अभिभवति [१.४० (अभि + √भू P लट् ३.१)] (पर) विजयी होता है, दबा देता है, हरा देता है

अभिभूय [१४.१० (अ.) (अभि + √भू - भव्- भ्वा P + ल्यप्)] पराजित करके, दबाकर

अभिमानः [१६.४ सं(राम १.१)] घमण्ड, अभिमान, गर्व

अभिमुखाः [११.२८ वि(राम १.३)] की ओर मुख किए हुए

अभिरक्षन्तु [१.११ (अभि + √रक्ष् भ्व. P लोट् ३.३)] रक्षा करें

अभिरतः [१८.४५ वि(राम १.१)] लगा हुआ, व्यस्त

अभिविज्वलन्ति [११.२८ (अभि + वि + √ज्वल् भ्वा P लट् ३.३)] धधकते हुए, लपटों वाले

अभिसंधाय [१७.१२ (अ.) क्रि. वि. (अभि-सम् ध्यै-णिच् ल्यप्)] ध्येय करके, उद्देश्य से

अभिहिता [२.३९ वि. (विद्या १.१) (अभि + √धा जुहो A/P क्त)] बताई गई, कही हुई

अभ्यधिकः [११.४३ वि(राम १.१)] से बढ़कर या श्रेष्ठ होना, अधिक से आगे बढ़ना

अभ्यर्च्य [१८.४६ (अ.) (अभि + √अर्च् भ्वा P + ल्यप्)] पूजा करके

अभ्यसूयकाः [१६.१८ सं(राम १.३)] छिद्रान्वेषण करने वाले, दोष निकालने वाले

अभ्यसूयति [१८.६७ (अभि + √अस् A/P P लृट् ३.१)] छिद्रान्वेषण करता है, दोष निकालता है

अभ्यसूयन्तः [३.३२ वि(ध्यायत् १.३)] छिद्रान्वेषण करते हुए, दोष निकालते हुए, कुड़ कुड़ाते हुए

अभ्यहन्यन्त [१.१३ (अभि + √हन् P अदा लङ्३.३)] बजे, बज उठे

अभ्यासयोगयुक्तेन [८.८ वि. (फल३.१) (अभ्यासेन च योगेन च युक्तेन)] अभ्यास द्वारा योग से युक्त, (सन्तुलित, लीन)

अभ्यासयोगेन [१२.९ सं(राम ३.१)] अभ्यास के योग से

अभ्यासात् [१२.१२, १८.३६ सं(राम ५.१)] अभ्यास से, अभ्यास की अपेक्षा

अभ्यासे [१२.१० सं(राम ७.१)] अभ्यास में

अभ्यासेन [६.३५ सं(राम ३.१)] अभ्यास से

अभ्युत्थानम् [४.७ सं(फल १.१)] उठता है, उत्थान होता है, बढ़ता है।

अमलान् [१४.१४ वि(राम २.३)] निर्मल, निष्कलंक

अमानित्वम् [१३.७ सं(फल १.१)] अभिमान का अभाव, नम्रता, दूसरों से सम्मानित होने की अभिलाषा का अभाव

अमितविक्रमः [११.४० वि(राम १.१) (अमितः विक्रमः यस्य सः)] वह जिसकी शक्ति असीम (अपार, अमापनीय) है

अमी [११.२१, २६.२८ सर्व(अदस् पु. १.३)] ये

अमुत्र [६.४० (अ.)] परलोक में

अमूढाः [१५.५ सं(राम १.३)] जो मोहित नही होते, ज्ञानीजन

अमृतत्वाय [२.१५ सं(फल ४.१)] अमरता के लिए, अमरत्व के लिए

अमृतम् [९.१९, १०.१८, १३.१२, १४.२० सं(फल १.१/२.१)] अमरता, अमरत्व

अमृतस्य [१४.२७ सं(फल ६.१)] अमृत का, अमरत्व का

अमृतोद्भवम् [१० २७ सं(फल २.१) (अमृतात् उद्भवः यस्यपतम्)] उसको जिसकी उत्पत्ति अमृत से (है), अमृत मंथन के समय उत्पन्न

अमृतोपमम् [१८.३७, ३८ सं(फल १.१) (अमृतम् उपमा यस्य तत्)] वह जिसकी उपमा अमृत है, अमृत के समान

अमेध्यम् [१७.१० वि(फल १.१)] अस्वच्छ, अपवित्र, अयज्ञीय

अम्बुवेगाः [११.२८ सं(राम १.३) (अम्बूनां वेगाः)] जल प्रवाह, धारा बहते जल की, प्रचण्ड धारा

अम्भसा [५.१० सं(मनस् ३.१)] जल से

अम्भसि [२.६७ सं(मनस् ७.१)] जल में

अयम् [२.१९.. सर्व(इदम् पु १.१)] यह, यह मनुष्य

अयज्ञस्य [४.३१ वि(राम ६.१)] यज्ञ न करने वाले का

अ-यति [६.३७ सं(मुनि १.१)] जो दमन न कर सका हो, जो अपने को वश में न कर पाए

अयथावत् [१८.३१ (अ.)] अनुचित रीति से, जो ठीक न हो

अयनेषु [१.११ सं(फल ७.३)] सेना की पंक्तियों में, नियुक्त स्थान में

अयशः [१०.५ सं(मनस् १.१)] अयश, अकीर्ति, कुख्याति, कलंक

अयुक्तः [५.१२, १८.२८ वि(राम १.१) (अ + √युज् चुरा P + क्त)] जो युक्त नही, असंतुलित, विसंगत

अयुक्तस्य [२.६६ वि(राम ६.१)] अनियंत्रित का, असंतुलित का

अयोगतः [५.६ (अ.) (अ + योग +

तसिल्)] बिना योग के

अरतिः [१३.१० सं(मति १.१)] अरुचि, अप्रीति

अरागद्वेषतः [१८.२३ (न रागात् वा द्वेषात् वा)] बिना प्रेम के अथवा द्वेष के अथवा, बिना राग द्वेष के

अरिसूदन [२.४ सं(राम ८.१) (अरीणां सूदन)] हे शत्रुओं को मारने वाले

अर्चितुम् [७.२१ (√ अर्च् भ्वा P + तुमुन्)] पूजना, पूजने के लिए

अर्जुन [२.२.. सं(राम ८.१)] हे अर्जुन

अर्जुनः [१.२१.. सं(राम १.१)] अर्जुन

अर्जुनम् [१.५० सं(राम २.१)] अर्जुन (को)

अर्थः [२.४६, ३.१८ सं(राम १.१)] अर्थ, प्रयोजन, स्वार्थ, उपयोग, प्रयोग, व्यवहार, से सम्बन्ध रखना, के लिए महत्त्व रखना

अर्थकामान् [२.५ सं(राम २.३) (अर्थं कामयन्ते इति तान्)] वे जो धन के लोलुप हैं, वे जो अर्थ की कामना वाले हैं

अर्थव्यपाश्रयः [३.१८ सं(राम १.१) (अर्थस्य व्यपाश्रयः)] स्वत्व (लाभ, हित स्वार्थ) की निर्भरता, (अधीनता पराव- लम्बन), व्यक्तिगत लाभ

अर्थसंचयान् [१६.१२ सं(राम २.३) (अर्थस्य संचयान्)] धन का संग्रहण, द्रव्य का समूहीकरण

अर्थार्थी [७.१६ वि(शशिन् १.१) (अर्थम् अर्थयते इति)] इस प्रकार धन चाहने वाला, धन का इच्छुक

अर्थे [१.३३, २.२७ ३.३४. (अ.) (राम ७.१)] लिए, वास्ते, के कारण, विषय में

अर्पणम् [४.२४ सं(फल १.१)] भेंट की क्रिया, अर्पण

अर्पितमनोबुद्धिः [८.७, १२.१४ वि(मुनि १.१) (अर्पिते, मनः च बुद्धिः च यस्य सः)] वह जो मन और बुद्धि को अर्पण किए है, (भेंट किए है)

अर्यमा [१०.२९ सं(अर्यमन् १.१)] (पितरों का देवता) अर्यमा

अर्हति [२.१७ (√ अर्ह् भ्वा P लट् ३.१)] योग्य है

अर्हसि [२.२५ – २७, ३०, ३१ ३.२०, ६.३९, १०.१६, ११.४४, १६.२४ (√ अर्ह् भ्वा P लट् २.१)] (तुझे) योग्य है, (तुझे) करना चाहिए

अर्हाः [१.३७ वि.(राम १.३) (√ अर्ह + अच्)] योग्य, चाहिए

अलसः [१८.२८ वि(राम १.१)] आलसी

अलोलुप्त्वम् [१६.२ सं(फल १.१)] लोलुपता का न होना, लिप्सा का अभाव

अल्पबुद्धयः [१६.९ सं(हरि १.३) (अल्पा बुद्धिः येषां ते)] वे जिनकी बुद्धि थोड़ी है, मंदमति

अल्पम् [१८.२२ वि(फल १.१)] तुच्छ, छोटा

अल्पमेधसाम् [७.२३ वि(चन्द्रमस् ६.३) (अल्पा मेधा येषां तेषाम्)] उनको जिनकी बुद्धि थोड़ी है, अल्प बुद्धि वालों का

अवगच्छ [१०.४१ (अव + √गम् भ्वा P लोट २.१)] पहिचानना, मानलेना

अवजानन्ति [९.११ (अव + √ज्ञा क्र्या P लट् ३.३)] तिरस्कार करना, तुच्छ समझना

अवज्ञातम् [१७.२२ वि(फल १.१)] निन्दित, तिरस्कार पूर्वक

अवतिष्ठति [१४.२३ (अव + √स्था भ्वा P लट्३.१)] अलग खड़ा रहता है, स्थिर रहता है, ठहरता है

अवतिष्ठते [६.१८ (अव + √स्था भ्वा A लट् ३.१)] बैठता है, ठहरता है, स्थिर होता है

अवध्यः [२.३० वि(राम १.१)] अभेद्य, जिसका भेद, छेदन या विभाग न हो सके

अवनिपालसंघैः [११.२६ सं(राम ३.३) (अवनिं पालयन्ति इति तेषां संघैः)] समुदाय सहित उनके जो इस प्रकार पृथ्वी का पालन करते हैं; राजाओं के समूह सहित

अवरम् [२.४९ वि(फल १.१)] निम्न, निकृष्ट, तुच्छ

अवशः [३.५, ६.४४, ८.१९; ६०वि(राम १.१)] असहाय, निराश्रय, विवश हुआ

अवशम् [९.८ वि(राम २.१)] असहाय, निस्सहाय, निराश्रय, निरवलम्ब

अवशिष्यते [७.२ (अव + √शिष् चुरा + कर्मणि A लट् ३.१)] शेष रहता है, बचता है,

अवष्टभ्य [९.८, १६.९ (अ.) (अव + √स्तम्भ् + ल्यप्)] घिरा हुआ, आश्रय लेकर

अवसादयेत् [६.५ (अव + √सद् P भ्वा + णिच् चुरा विधिलिङ् ३.१)] अधः पतन करना चाहिए, नीचे गिराना चाहिए, पदावनत करना चाहिए, अवनत करना चाहिए

अवस्थातुम् [१.३० (अ.) (अव + √स्था P + तुमुन्)] खड़ा होना

अवस्थितः [९.४, १३.३२ (अव + √स्था भ्वा P + क्त) वि(राम १.१)] स्थित हुआ, प्रतिष्ठित हुआ

अवस्थितम् [१५.११ वि(राम २.१)] स्थित हुआ

अवस्थिताः [१.११, ३३; २.६, ११.३२ वि(राम १.३) (अव + √स्था भ्वा P + क्त)] खड़े हुए, खड़े हैं, खड़ा किए हुए, व्यवस्थित

अवस्थितान् [१.२२, २७ वि(राम २.३) (अव + √स्था भ्वा P + क्त)] खड़े हुए

अवहासार्थम् [११.४२ (अ.) (अवहासस्य अर्थम्)] विनोद के कारण, हंसी मजाक में

अवाच्यवादान् [२.३६ सं(राम २.३) (अवाच्यान् वादान्)] न कहने योग्य बातें, अनुचित बातें

अवाप्तव्यम् [३.२२ (अव-√आप् + क्तव्य फल १.१)] प्राप्त करने योग्य

अवाप्तुम् [६.३६ (अ.) अव + √आप् स्वा P + तुमुन्] प्राप्त होना, प्राप्त करने के लिए, प्राप्त करना

अवाप्नोति [१५.८, १६.२३, १८.४६ (अव् + √आप् स्वा P लट् ३.१)] प्राप्त करता है

अवाप्य [२.८ (अ.) (अव + √आप् स्वा P + ल्यप्)] प्राप्त करके

अवाप्यते [१२.५ (अव + √आप् स्वा A कर्म लट् ३.१)] प्राप्त की जाती है

अवाप्स्यथ [३.११ (अव + √आप् स्वा P लृट् २.३)] (तुम) प्राप्त करोगे, पाओगे

अवाप्स्यसि [२.३३, ३८,५३; १२.१० (अव + √आप् स्वा P लृट् २.१)] प्राप्त करेगा, प्राप्त करेगा

अविकम्पेन [१०.७ वि(राम ३.१) (न विकम्पते इति तेन)] नहीं डोलता है उस (से), अचल

अविकार्यः [२.२५ वि(राम १.१)] अपरिवर्तनशील, जो बदले न

अविज्ञेयम् [१३.१५ वि(फल १.१)] जो जाना न जाए, अज्ञेय

अविद्वांसः [३.२५ सं(विद्वस् १.३)] अज्ञानी, अविवेकी (लोग)

अविधिपूर्वकम् [९.२३, १६.१७ सं(हरि २.१) (अविधिपूर्वं यथा स्यात् तथा)] बिना विधि के, विधिरहित

अविनश्यन्तम् [१३.२७ वि(ध्यायत् २.१) (अ + वि + √नश् + शतृ + अम्) अविनाशी, नष्ट न होते हुए

अविनाशि [२.१७ वि.(वारि १.१)] अनश्वर, अविनाशी

अविनाशिनम् [२.२१ (वि(शशिन् २.१)] अविनाशी को

अविपश्चितः [२.४२ वि(मरुत् १.३)] अविवेकी, अज्ञानी, मूर्ख, ना समझ लोग

अविभक्तम् [१३.१६, १८.२० वि(राम २.१)] अविभाजित, अखंडित, अलग अलग नहीं

अवेक्षे [१.२३ अव् + √ईक्ष् भ्वा A लट् १.१)] देखता, (हूं) देखूं

अवेक्ष्य [२.३१ (अव + √ईक्ष् भ्वा A + ल्यप्)] देखकर

अव्यक्तः [२.२५, ८.२०, २१ वि(राम १.१)] अप्रत्यक्ष, जो प्रकट नहीं, दिखाई न देने वाला

अव्यक्तनिधनानि [२.२८ वि(फल १.३) (अव्यक्तं निधनं येषां तानि)] वे जिनका विनाश अप्रत्यक्ष है, वे जिनके मरने

के बाद की स्थिति प्रकट नहीं

अव्यक्तम् [७.२४, १२.१, ३, १३.५ वि(राम २.१) (फल २.१)] अप्रकट, अप्रत्यक्ष

अव्यक्तमूर्तिना [९.४ सं(मुनि ३.१) (अव्यक्ता मूर्तिः यस्य तेन)] उससे जिसका स्वरूप अप्रकट है, अव्यक्त स्वरूप वाले (से)

अव्यक्तसंज्ञके [८.१८ सं(राम ७.१) (अव्यक्तं संज्ञा यस्य तस्मिन)] जिसका "अव्यक्त" नाम है, उसमें

अव्यक्ता [१२.५ वि(विद्या १.१)] अव्यक्त, अप्रत्यक्ष, अप्रकट

अव्यक्तात् [८.१८, २० (राम ५.१)] अप्रकट, अप्रत्यक्ष (से), (की अपेक्षा)

अव्यक्तादीनि [२.२८ वि.(वारि १.३) (अव्यक्तम् आदिः येषां तानि)] वे जिनका आरंभ प्रकट नहीं

अव्यक्तासक्तचेतसाम् [१२.५ सं(मनस् ६.३) (अव्यक्ते आसक्तम् चेतः येषां ते)] वे जिनका मन लगा है अप्रत्यक्ष में, अव्यक्त के चिंतकों को

अव्यभिचारिणी [१३.१० वि(नदी १.१)] न भटकती हुई, एकनिष्ठ

अव्यभिचारिण्या [१८.३३ वि(नदी ३.१)] अटल, दृढ़, जो डाँवाँ डोल न हो, डगमगाए न उससे

अव्यभिचारेण [१४.२६ वि(राम ३.१)] बिना भटकते हुए, एकनिष्ठ

अव्ययः [११.१८,१३.३१; १५.१७ वि(राम १.१)] अक्षय, अविनाशी, अनन्त

अव्ययम् [२.२१,४.१, १३; ७.१३,२४,२५; ९.२,१३,१८; ११.२,४; १४.५; १५.१५; १८.२०,५६ वि(राम २.१)] जिसका ह्रास न हो, नाश रहित, अव्यय, अक्षय, असीम, अनन्त अपार

अव्ययस्य [२.१७ १४.२७ वि(राम ६.१)] अविकारी (का) अक्षय (का)

अव्ययात्मा [४.६ वि.(आत्मन् १.१) (अव्ययः आत्मा यस्य सः)] वह जिसकी आत्मा का ह्रास नहीं होता, अविनाशी

अव्ययाम् [२.३४ वि(राम २.१)] जिसका ह्रास न हो, अविनाशी

अव्यवसायिनाम् [२.४१ वि(शशिन् ६.३)] अनिश्चय विचार वालों की, डाँवाँ डोल मति वालों की, ढुलमुलों की

अशक्तः [१२.११ सं(राम १.१)] असमर्थ, योग्य नहीं , नहीं कर सकता (जो)

अशमः [१४.१२ सं(राम १.१)] अशांति

अशस्त्रम् [१.४६ वि(राम २.१)] बिना अस्त्र वाले को, निरस्त्र को

अशान्तस्य [२.६६ सं(राम ६.१)] अशान्त का, जिसे शन्ति न हो उसे

अशाश्वतम् [८.१५ वि(फल २.१)] सदा न रहने वाला, अनित्य, अशाश्वत

अशास्त्रविहितम् [१७.५ वि(फल २.१) (न शास्त्रेण विहितम्)] शास्त्रों के आदेशानुसार नहीं , शास्त्र निषिद्ध

अशुचिः [१८.२७ सं(हरि १.१)] अपवित्र

अशुचिव्रताः [१६.१० वि(राम १.३) (अशुचीनि व्रतानि येषां ते)] वे जिनके प्रण अशुभ हैं, अमंगल निश्चय वाले

अशुचौ [१६.१६ सं(हरि ७.१)] अपवित्र, अशुद्ध, गन्दा, बीभत्स (में)

अशुभात् [४.१६, ९.१ सं(राम /फल ५.१)] अशुभ से, पाप से, विपत्ति (अनिष्ट) से, बुराई से

अशुभान् [१६.१९ सं(राम २.३)] अपवित्रों, अशुद्धों, गन्दों (को)

अशुश्रूषवे [१८.६७ वि(गुरु ४.१)] जो ध्यान पूर्वक सुनना नहीं चाहता

अशेषतः [६.२४, ३९, ७.२, १८.११ (अशेष + तस्) (अ.)] निःशेष, पूर्ण रीति से

अशेषेण [४.३५, १०.१६, १८.२९, ६३ क्रिवि/ सं(राम ३.१)] निःशेष, पूर्ण रीति से

अशोच्यान् [२.११ (राम २.३)] शोक न करने योग्यों (को)

अशोष्यः [२.२४ वि(राम १.१)] जो सूख न सके, न सूखने वाला

अश्नन् [५.८ वि. (ध्यायत् १.१) (√अश् क्र्य P शतृ)] खाते हुए

अश्नन्ति [९.२० (√अश् क्र्या P लट् ३.३)] खाते हैं, सेवन करते है

अश्नामि [९.२६ (√ अश् क्र्या P लट् १.१)] मैं सेवन करता हूं, खाता हूं

अश्नासि [९.२७ (√अश् क्र्या P लट् २.१)] (तू) खाता है, सेवन करता है

अश्नुते [३.४, ५.२१, ६.२८, १३.१२, १४.२० (√अश क्र्या. A लट् ३.१)] प्राप्त करता है, पाता है

अश्रद्दधानः [४.४० वि(राम १.१)] श्रद्धा रहित, बिना विश्वास किए हुए

अश्रद्दधानाः [९.३ वि(राम १.३)] श्रद्धा हीन, अविश्वासी (लोग)

अश्रद्धया [१७.२८ सं(विद्या ३.१)] बिना श्रद्धा से

अश्रुपूर्णाकुलेक्षणम् [२.१ वि(फल १.२) (अश्रुभिः पूर्णेच आकुले च ईक्षणे यस्य तम्)] उसे जिसकी आखें आसुओं से भरी और बेचैन हैं

अश्रौषम् [१८.७४ (√ श्रु स्वा P लुङ् १.१)] सुना

अश्वत्थः [१०.२६ सं(राम १.१)] पीपल

अश्वत्थम् [१५.१, ३ सं(राम २.१)] अश्वत्थ वृक्ष को, (पीपल के वृक्ष को)

अश्वत्थामा [१.८ सं(आत्मन् १.१)] अश्वत्थामा

अश्वानाम् [१०.२७ सं(राम ६.३)] घोड़ो में, तुरंगो में

अश्विनौ [११.६, २२ सं(शशिन् २.२)] दोनों अश्विनी कुमारों को

अष्टधा [७.४ (अ.)] आठ प्रकार की

असंन्यस्तसंकल्पः [६.२ वि(राम १.१) (न संन्यस्तः संकल्पः येन सः)] वह

जिसके द्वारा संकल्पों का त्याग नहीं हुआ, वह जिसने संकल्पों का त्याग नहीं किया (संकल्प-काम करने की इच्छा)

असंमूढः [५.२०, १०.३, १५.१९ वि(राम १.१)] मोह रहित, असम्भ्रान्त

असंमोहः [१०.४ सं(राम १.१) (अ + संमोहः)] मोह राहित्य, घबराहट का अभाव

असंयतात्मना [६.३६ सं(आत्मन् ३.१) (असंयतः आत्मा यस्य तेन)] उससे जिसकी आत्मा वश में नहीं है, जो अपने आप को संयम में नहीं रखता उससे

असंशयः [८.७, १८.६८ सं(राम १.१)] निस्सन्देह

असंशयम् [६.३५, ७.१ क्रि.वि.)] निस्सन्देह

असक्तः [३.७, १९, २५ वि(राम १.१)] आसक्ति रहित, संगरहित

असक्तबुद्धिः [१८.४९ सं(हरि १.१) (असक्ता बुद्धिः यस्य सः)] वह जिसकी बुद्धि आसक्ति रहित है, अनासक्त बुद्धि वाला

असक्तम् [९.९, १३.१४ वि(फल २.१)] आसक्ति रहित, संगरहित

असक्तात्मा [५.२१ (आत्मन् १.१) (असक्तः आत्मा यस्य सः)] वह जिसकी आत्मा आसक्त (अनुरक्त) नहीं, जिसका मन - लगा हुआ नहीं

असक्तिः [१३.९ सं(मति १.१)] अनासक्ति, संगरहित

असंगशस्त्रेण [१५.३ सं(राम ३.१) (असंगस्य शस्त्रेण)] अनासक्ति के शस्त्र से

असत् [९.१९, ११.३७, १३.१२, १७.२८ वि(ध्यायत् १.१)] जिसका अस्तित्व नहीं, असत्

असतः [२.१६ वि(राम् ६.१)] जो नहीं है उसका, जिसका अस्तित्व नहीं है उसका, जो कल्पित है उसका,

असत्कृतः [११.४२ वि(राम १.१)] अपमान किया हुआ, असम्मानित

असत्कृतम् [१७.२२ वि(फल १.१)] बिना मान किए, बिना सत्कार के

असत्यम् [१६.८ सं(राम १.१) (फल १/२.१)] असत्य

असद्ग्राहान् [१६.१० सं(राम २.३) (असतः ग्राहान्)] बुरी लत, दुर्व्यसन

असपत्नम् [२.८ वि(फल २.१)] अद्वितीय, बेजोड़, बिना प्रतिद्वंदी के

असमर्थः [१२.१० वि.(राम १.१)] असमर्थ (है), योग्य नहीं

असि [४.३,३६... (√अस् अदा. P लट् २.१)] (तू) है

असितः [१०.१३ सं(राम १.१)] असित (ऋषि)

असिद्धौ [४.२२ सं(मति ७.१)] असफलता में

असुखम् [९.३३ वि(राम २.१)] सुखरहित
असृष्टान्नम् [१७.१३ वि(फल २.१) (न सृष्टम् अन्नम् यस्मिन् तत्)] वह जिसमें भोजन नहीं दिया जाता है , बिना अन्नदान का
असौ [११.२६, १६.१४ सर्व.(अदस् पु १.१)] यह, वह
अस्ति [२.४०.. (√अस् अदा P लट् ३.१)] है
अस्तु [२.४७, ३.१०, ११.३१, ३९.४० (√ अस् अदा P लोट् ३.१)] होवे, हो
अस्थिरम् [६.२६ वि(फल १.१)] अस्थिर, चंचल
अस्मदीयैः [११.२६ वि(सार्व. ३.३)] (उन) अपनों के साथ
अस्माकम् [१.७.१० सर्व(अस्मद् ६.३)] हमारा, हम में
अस्मात् [१.३९ सर्व(इदम् पु ५.१)] इस से
अस्मान् [१.३६ (सर्व(अस्मद् २.३)] हमें
अस्माभिः [१.३९ सर्व(अस्मद् ३.३)] हमारे द्वारा
अस्मि [७.८, ९,१०.. (√अस् अदा P लट् १.१)] (मैं) हूं
अस्मिन् [१.२२.२.१३, ३.३; ८.२, १३.२२, १४.११, १६.६ (सर्व इदम् पु ७.१) नपु. ७.१)] इसमें
अस्य [२.१७, ४० (सर्व इदम् पु ६.१) (नपु ६.१)] इसका, उसका, इस
अस्याम् [२.७२ सर्व(इदम् स्त्री ७.१)] इसमें
अस्वर्ग्यम् [२.२ वि(फल १.१)] अस्वर्गीय, जो स्वर्ग की ओर न ले जाए

अहः [८.१७, २४ सं(अहन् २.१)] दिन
अहंकारः [७.४, १३.५ सं(राम १.१)] अहंकार, वैयक्तिकता, विशिष्टता
अहंकारम् [१६.१८, १८.५३, ५९ सं(राम २.१)] अहंकार (को)
अहंकारविमूढात्मा [३.२७ सं(आत्मन् १.१) (अहंकारेण विमूढः आत्मा यस्य सः)] वह जिसकी आत्मा अहंकार से मोहित है, अहंकार से मूढ हुआ (मनुष्य)
अहंकारात् [१८.५८ सं(राम ५.१)] अहंकार से, अहंकार की अपेक्षा
अहंकृतः [१८.१७ वि(राम १.१)] अहंकारी
अहत्वा [२.५ (अ.) (न + √हन् + क्त्वाच्) क्रिया) वि.]न मारकर, बध न करके
अहम् [१.२२, २३.... (सर्व. अस्मद् १.१)] मैं
अहरागमे [८.१८, १९ सं(राम ७.१) (अह्नः आगमे)] दिन के आगमन में, दिन निकलने पर
अहिंसा [१०.५, १३.७, १६.२, १७.१४ सं(विद्या १.१)] अहिंसा
अहिताः [२.३६, १६.९ सं(राम १.३)] अहित कारी, अनिष्ट कारी
अहैतुकम् [१८.२२ क्रि.वि.)] बिना कारण के, बिना किसी अर्थ के
अहो [१.४५ (अ.)] हाय
अहोरात्रविदः [८.१७ वि.(मरुत् १.३) (अहः च रात्रिं च विदन्ति इति)] इस प्रकार दिन और रात जानते हैं (जो)

आ

आ [८.१६ (अ.)] तक, पर्यन्त

आकाशम् [१३.३२ सं(राम २.१] आकाश, अन्तरिक्ष

आकाशस्थितः [९.६ वि(राम १.१) (आकाशे स्थितः)] आकाश में स्थित, आकाश में रहता हुआ

आख्यातम् [१८.६३ सं(फल १.१) (आ + √ख्या अदा + क्त)] कहा है

आख्याहि [११.३१ (आ + √ख्या A/P लोट् २.१)] (आप) बतलाइए

आगच्छेत् [३.३४ (आ + √गम् + भ्वा P विधि लिङ् ३.१)] (उसे) आने दो, आवे

आगताः [४.१०, १४.२ वि(राम १.३) (आ + √गम् + क्त)] आए हुए (हैं) प्राप्त हुए हैं

आगमापायिनः [२.१४ सं(शशिन् १.३) (आगमः च अपायः च येषां ते)] वे जो आते हैं और जाते हैं, आने जाने वाले

आचरतः [४.२३ (ध्यायत् ६.१) (आ + √चर् भ्वा P + शतृ)] करते हुए, (कर्म) करने वाले का

आचरति [३.२१, १६.२२ (आ + √चर् भ्वा P ३.१)] करता है

आचरन् [३.१९ (ध्यायत् १.१) (आ + √चर् + शतृ)] करते हुए, आचरण करता हुआ

आचारः [१६.७ सं(राम १.१)] शुद्ध आचार व्यवहार, भला चाल चलन

आचार्य [१.३ सं(राम ८.१)] हे आचार्य

आचार्यम् [१.२ सं(राम २.१]] आचार्य, गुरु (को)

आचार्याः [१.३४ सं(राम १.३)] गुरु जन

आचार्यान् [१.२६ सं(राम २.३)] गुरुलोग (को)

आचार्योपासनम् [१३.७ सं(फल १.१) (आचार्यस्य उपासनम्)] गुरु सेवा, आचार्य की सेवा

आज्यम् [९.१६ सं(फल १.१)] घी, आहुति

आढ्यः [१६.१५ वि(राम १.१)] धनवान्

आततायिनः [१.३६ सं(शशिन् २.३)] अत्याचारी मनुष्यों को, घोर पाप करने वाले आदमियों को; शास्त्रकारों के अनुसार किसी के घर, संपत्ति या खलिहान में आग लगाने वाला, प्राण लेने के लिए विष देने वाला, शस्त्र से हत्या करने वाला, भूमि छीनने वाला, धन हड़पने वाला और स्त्री का अपहरण करने वाला; ये ६ प्रकार के काम करने वाले आततायी माने जाते हैं (संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर)

आतिष्ठ [४.४२ (आ + √स्था भ्वा P लोट् २.१)] आचरण कर, अभ्यास कर

आत्थ [११.३ (√ब्रू अदा P लट् २.१)] (तू) कहता है

आत्मकारणात् [३.१३ सं(राम ५.१) (आत्मनः कारणात्)] अपने लिए

आत्मतृप्तः [३.१७ वि(राम १.१) (आत्मना तृप्तः)] अपने द्वारा ही संतुष्ट, आत्मा में तृप्त

आत्मनः [४.४२, ५.१६.६.५, ६.११, १९; ८.१२; १०.१८, ६.२१, २२, १७.१९, १८.३९ सं(आत्मन् ६.१)] आत्मा का, अपना

आत्मना [२.५५, ३.४३; ६.५, ६.२०; १०.१५;१३.२४, २८ सं(आत्मन् ३.१)] आत्मा से, अपने से, (द्वारा) अपने आप

आत्मनि [२.५५, ३.१७, ४.३५, ३८, ५.२१, ६.१८, २०, २६, २९; १३.२४, १५.११ सं(आत्मन् ७.१)] आत्मा में, अपने में

आत्मपरदेहेषु सं (राम.७.३) [१६.१८ (आत्मनः च परेषां च देहेषु)] अपने और दूसरे के शरीरों में

आत्मबुद्धिप्रसादजम् [१८.३७ सं(फल १.१) (आत्मनः बुद्धेः प्रसादात् जातम्)] आत्माके ज्ञान की शान्ति से उत्पन्न, आत्मज्ञान की सौम्यता से उत्पन्न

आत्मभावस्थः [१०.११ वि(राम १.१) (आत्मनः भावे स्थितः)] निज के स्वभाव में स्थित, (दृढ़)

आत्ममायया [४.६ सं(विद्या ३.१) (आत्मनः मायया)] अपनी माया से

आत्मयोगात् [११.४७ सं(राम ५.१) (आत्मनः योगात्)] आत्मयोग से, अपने योग बल से, अपनी योग शक्ति द्वारा

आत्मरतिः [३.१७ सं(हरि १.१) (आत्मनि रतिः यस्य सः)] वह जिसका आनन्द अपने में है, आत्म मग्न, आत्म सुखी

आत्मवन्तम् [४.४१ वि(धीमत् २.१)] अपने को वश में करते हुए, आत्मनिष्ठ व्यक्ति को

आत्मवश्यैः [२.६४ वि(राम ३.३) (आत्मनः वश्यैः)] निज के नियन्त्रण से, अपने वश में की हुई (इन्द्रियों) से

आत्मवान् [२.४५ वि(धीमत् १.१)] आत्म परायण, आत्म भाव से भरपूर, आत्मनिष्ठ

आत्मविनिग्रहः [१३.७, १७.१६ सं(राम १.१)] आत्म संयम, आत्म नियन्त्रण

आत्मविभूतयः [१०.१६, १९, सं(मति १.३) (आत्मनः विभूतयः)] अपनी महिमांए, अपना प्रताप, अपनी विभूतियां

आत्मविशुद्धये [६.१२ सं(मति ४.१) (आत्मनः विशुद्धये)] आत्म शुद्धि के लिए

आत्मशुद्धये [५.११ सं(मति ४.१) (आत्मनः शुद्धये)] आत्म शुद्धि के लिए

आत्मसंभाविताः [१६.१७ वि(राम १.३)

(आत्मना संभाविताः)] अपने से स्तुत्य, अपनी श्लाघा करने वाले, अपनी बड़ाई करने वाले

आत्मसंयमयोगाग्नौ [४.२७ सं(हरि ७.१) (आत्मनः संयम एव योगः तस्य अग्नौ] आत्म- संयम के योग की अग्नि में

आत्मसंस्थम् [६.२५ वि(राम २.१)] अपने में स्थिर, आत्मा में स्थापित

आत्मा [६.५, ६, ७.१८, ९.५, १०.२०, १३.३२ सं(आत्मन् १.१)] आत्मा, अपना आप (देखिए प्रवेशिका - II)

आत्मानम् [३.४३, ४.७, ६.५, १०, १५, २०,२८, २९; ९.३४, १०, १५, ११.३, ४; १३.२४, २८, २९ १८.१६, ५१ सं(आत्मन् २.१)] आत्मा को, अपने को

आत्मौपम्येन [६.३२ सं(फल ३.१) (आत्मनः औपम्येन)] अपने साथ तुलना करके, अपने जैसा मान कर, अपने जैसा

आत्यन्तिकम् [६.२१ वि(फल १.१)] एक दम अन्तिम, परम, अनन्त

आदत्ते [५.१५ (आ + √दा A लट् ३.१)] लेता है, ग्रहण करता है

आदर्शः [३.३८ सं(राम १.१)] दर्पण

आदिः [१०.२, २०, ३२, १५.३ सं(हरि १.१)] प्रारम्भ, उत्पत्तिकारण

आदिकर्त्रे [११.३७ वि(धातृ ४.१)] आदि कर्त्ता को

आदित्यगतम् [१५.१२ वि(फल १.१) (आदित्ये गतम्)] सूर्य में स्थित

आदित्यवत् [५.१६ (अ.)] सूर्य के समान

आदित्यवर्णम् [८.९ वि(राम २.१) (आदित्यस्य वर्णः इव वर्णः यस्य तम्)] उसको जिसका रंग सूर्य जैसा है

आदित्यान् [११.६ सं(राम २.३)] आदित्य, अदिति के पुत्र, ये बारह हैं

आदित्यानाम् [१०.२१ सं(राम ६.३)] आदित्यों में

आदिदेवः [११.३८ सं(राम १.१)] आदि देव, देवों में प्रथम

आदिदेवम् [१०.१२ सं(राम २.१)] आदि देव को , देवों में प्रथम को

आदिम् [११.१६ सं(हरि २.१)] आदि, आरम्भ, उत्पत्ति, मूल स्रोत

आदौ [३.४१, ४.४ सं(हरि ७.१)] आरम्भ में, प्रथम

आद्यन्तवन्तः [५.२२ वि(धीमत् १.३)] आदि और अन्त वाले

आद्यम् [८.२८, ११.३१, ४७, १५.४ वि(फल २.१)] प्रथम, मूल, प्रारंभिक, आदि

आधत्स्व [१२.८ (आ + √धा जुहो. A/P लोट् २.१)] लगाओ, लगा

आधाय [५.१०, ८.१२ (अ.) (आ + √धा जुहो P + ल्यप्)] रख कर, आधार बना कर, स्थापित करके

आधिपत्यम् [२.८ सं(फल २.१)] प्रभुत्व, स्वामित्व

आपः [२.२३, ७०, ७.४ (सं पु नित्य बहुवचन १.३)] पानी, जल

आपन्नम् [७.२४ वि(राम २.१) (आ + √पद दिवा A + क्त)] पहुंचा हुआ, घटित हुआ

आपन्नाः [१६.२० वि(राम १.३) (आ + √पद् + क्त)] गिरे हुए, गिरकर, आ पड़े हुए

आपूर्य [११.३० (अ.) (आ + √ पूर् चुरा P + ल्यप्)] भर के, पूरित कर के, पूरा भर कर

आपूर्यमाणम् [२.७० सं(राम २.१) (आ √ पृ-पूर् चुरा P कर्मणि A + शानच्)] (निरन्तर) भरते हुए, चारों ओर से पूर्ण होते हुए

आप्तुम् [५.६, १२.९ (अ.) (√आप् स्वा P + तुमुन्)] प्राप्त करने, पाने के लिए

आप्नुयाम् [३.२ (√ आप् स्वा P विधि १.१)] (मैं) प्राप्त कर सकूं, पासकूं

आप्नुवन्ति [८.१५ (√ आप स्वा P लट् ३.३)] (वे) प्राप्त करते हैं

आप्नोति [२.७०, ३.१९, ४.२१, ५.१२, १८.४७, ५० (√ आप् स्वा P लट् ३.१)] पाता है, प्रात करता है

आयुःसत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः [१७.८ वि(राम १.३) (आयुःच सत्त्वं च बलं च आरोग्यं च सुखं च प्रीतिःच तासां विवर्धनाः)] जीवन शक्ति, शुचिता, बल, स्वास्थ्य, सुख और प्रफुल्लता बढ़ाने वाला

आयुधानाम् [१०.२८ सं(फल ६.३)] शस्त्रों में

आरभते [३.७ (आ + √रभ् भ्वा A लट् ३.१)] आरम्भ करता है

आरभ्यते [१८.२५ (आ + √रभ् भ्वा A कर्मणि लट् ३.१)] आरम्भ किया जाता है

आरम्भः [१४.१२ सं(राम १.१)] आरम्भ, प्रारम्भ आदि

आरुरुक्षोः [६.३ वि(गुरु ६.१)] आरोहण के अभिलाषी का, ऊपर चढ़ने की इच्छा वाले का, आरूढ़ (स्थिर) होने के अभिलाषी का

आर्जवम् [१३.७, १६.१, १७.१४, १८.४२ सं(फल १.१)] साधुता, सीधापन, सरलता, सत्यता

आर्तः [७.१६ वि(राम १.१)] दुःखी

आवयोः [१८.७० सर्व(अस्मद् ६.२)] हम दोनों का

आवर्तते [८.२६ (आ + √वृत् भ्वा A लट् ३.१)] (वह) लौटता है, फिर आजाता है

आवर्तिनः [८.१६ सं.(शशिन् १.३)] लौटने वाले

आविश्य [१५.१३, १७ (अ.) (आ + √विश् तुदा P + ल्यप्)] प्रवेश करके, (में) समाकर (के)

आविष्टः [१.२८ वि(राम १.१ (आ + √विश् तुदा P + क्त)] प्रविष्ट हुआ, पूरित हुआ, अभिभूत हुआ

आविष्टम् [२.१ वि(राम २.१) (आ + √विश् तुदा + क्त)] व्याप्त हुआ, भरा हुआ

आवृतः [३.३८ वि(राम १.१)] लिपटा रहता (है), घिरा रहता (है)

आवृतम् [३.३८, ३९, ५.१५ वि(फल १.१/२.१)] घिरा रहता है, अव गुण्ठित रहता है

आवृता [१८.३२ वि(क्रिया १.१) (आ + √वृत् भ्वा A + क्त + टाप्)] घिरे हुए ढका हुआ, आच्छादित

आवृताः [१८.४८ वि(राम १.३)] घिरे हुए, ढके हुए

आवृत्तिम् [८.२३ सं(मति २.१)] लौटना, प्रति गमन

आवृत्य [३.४०, १३.१३, १४.९ (अ.) (आ + √वृत् भ्वा A ल्यप्)] घेरा हुआ, ढका हुआ

आवेशितचेतसाम् [१२.७ सं.(मनस् ६.३) (आवेशितं चेतः येषां तेषाम्)] उनका जिनका मन स्थिर है, अटल चित्त है जिनका उनका

आवेश्य [८.१०, १२.२ (अ.) (आ + √विश् + णिच् + ल्यप्)] रख कर, स्थिर कर के, स्थापित करके

आव्रियते [३.३८ (आ + √वृ स्वा A लट् ३.१)] घिरा रहता है, आवृत रहता है

आशयात् [१५.८ सं(राम ५.१)] शयन स्थान से

आशापाशशतैः [१६.१२ सं(फल ३.३) आशायाः पाशानाम् शतैः)] आशा की सैकड़ों रस्सियों से

आशु [२.६५ (अ.)] तुरन्त, शीघ्र ही

आश्चर्यवत् [२.२९, (अ.)] आश्चर्यजनक जैसा, अद्भुत, चमत्कारिक जैसा (के समान) (के रूप में)

आश्चर्याणि [११.६ सं(फल २.३)] चमत्कार, अद्भुत वस्तुएं

आश्रयेत् [१.३६ (आ + √श्रय् भ्वा विधि ३.१)] लगेगा

आश्रितः [१२.११, १५.१४ वि(राम १.१) (आ + √श्रि भ्वा A/P + क्त)] शरण लिए हुए, आसरा लिए हुए

आश्रितम् [९.११ वि(राम २.१)] शरण लिए हुए, (को)

आश्रिताः [७.१५, ९.१३ वि(राम १.३) (आ + √श्रि भ्वा A/P + क्त)] आश्रय में आए हुए, (लोगों (को)

आश्रित्य [७.२९, १६.१०, १८.५९ (अ.) (आ + √श्रि भ्वा A/P + ल्यप्)] शरण में आकर, आश्रय लेकर

आश्वासयामास [११.५० (आ + √श्वस् + णिच् लिट् ३.१)] सान्त्वना या दिलासा दिया, शान्त किया

आसक्तमनाः [७.१ वि(चन्द्रमस् १.१) (आसक्तं मनः यस्य सः)] वह जिसका मन आसक्त है, (संलग्न है)

आसनम् [६.११ सं(फल १.१)] आसन

आसने [६.१२ सं(फल ७.१)] आसन पर

आसम् [२.१२ (√अस् अदा P लङ् १.१)] था

आसाद्य [१.२० (आ + √ सद् + णिच् + ल्यप्)] पहुँच कर

आसीत [२.५४,६१; ६.१४, (√आस् अदा A विधि ३.१)] (वह) बैठे, बैठना चाहिए, बैठता है

आसीनः [१४.२३ वि(राम १.१)] बैठा हुआ

आसीनम् [९.९ वि(राम २.१)] बैठे हुए (को)

आसुरः [१६.६ वि(राम १.१)] राक्षसी, आसुरी

आसुरनिश्चयान् [१७.६ वि(राम २.३) (आसुरः निश्चयः येषां तान्)] उनको जिनका निश्चय आसुरी है, आसुरी निष्ठा वालों को

आसुरम् [७.१५, १६.६ वि(राम २.१)] आसुरी, राक्षसी

आसुराः [१६.७ वि(राम १.३)] आसुर (लोग), पैशाचिक, नर पिशाच

आसुरी [१६.५ सं(नदी १.१)] राक्षसी, पैशाचिकी

आसुरीम् [९.१२, १६.४, २० वि(नदी २.१)] असुर सम्बन्धी, राक्षसी (भाव को)

आसुरीषु [१६.१९ सं(नदी ७.३)] आसुरी-में, राक्षसी (में)

आस्तिक्यम् [१८.४२ सं(फल १.१)] विश्वास, श्रद्धा, आस्था

आस्ते [३.६, ५.१३ (√आस् अदा A लट् ३.१)] बैठता है, रहता है

आस्थाय [७.२० (अ.) (आ √स्था भ्वा P + ल्यप्)] आश्रय लेकर, सहारा लेकर, पालन कर के

आस्थितः [५.४, ६.३१, ७.१८, ८.१२ वि(राम १.१) (आ + √स्था भ्वा P + क्त)] स्थित हुआ, स्थिर हुआ

अस्थिताः [३.२० वि(राम १.३) (आ+ √स्था भ्वा P + क्त)] प्राप्त हुए

आह [१.२१, ११.३५ (√ ब्रू अदा A/P लिट् ३.१)] कहा

आहवे [१.३१ सं(फल ७.१)] युद्ध में

आहारः [१७.७ सं(राम १.१)] भोजन

आहाराः [१७.८, ९ सं(राम १.३)] भोजन (बहुवचन) भोजन पदार्थ

आहुः [३.४२, ४.१९; ८.२१; १०.१३; १४.१६; १६.८ (√ब्रू अदा P लट् ३.३)] (वे) कहते हैं, घोषित करते हैं

आहो [१७.१ (अ.)] अथवा

इ

इक्ष्वाकवे [४.१ सं(गुरु ४.१)] इक्ष्वाकु (मनुपुत्र) को

इंगते [६.१९, १४.२३ (√इंग् भ्वा A लट् ३.१)] टिमटिमाता है, झिलमिलाता है, हिलता है

इच्छ [१२.९ (√ इष्-इच्छ् तुदा लोट् २.१)] इच्छा कर, अभिलाषा कर

इच्छति [७.२१ (√ इष् तुदा P लट् ३.१)] इच्छा करता है

इच्छन्तः [८.११ (√ इष् तुदा P + शतृ पु ध्यायत् १.३)] इच्छा करते हुए

इच्छसि [११.७, १८.६०, ६३ (√ इष् तुदा P लट् २.१)] (तुम) इच्छा करते हो, चाहते हो

इच्छा [१३.६ सं(विद्या १.१)] इच्छा, अभिलाषा, कामना

इच्छाद्वेषसमुत्थेन [७.२७ वि.(राम ३.१) (इच्छायाः च द्वेषात् च समुत्तिष्ठति इति तेन)] इच्छा और द्वेष से उत्पन्न हुए, इस प्रकार के द्वारा

इच्छामि [१.३५, ११.३, ३१, ४६; १३.१; १८.१ (√ इष् तुदा P लट् १.१)] (मैं) इच्छा करता हूं, (मैं) चाहता हूं

इज्यते [१७.११, १२ (√ यज् भ्वा P/A + कर्मणि + लट् ३.१)] किया जाता है, अर्पित किया हुआ

इज्यया [सं(विद्या ३.१) ११.५३] यज्ञ से, यज्ञ के द्वारा, यज्ञ (करने) से

इतः [७.५, १४.१ (अ.)] इस से, इसकी अपेक्षा, अतः, इस संसार से (इस देह को छोड़ने के बाद)

इतरः [३.२१ वि.(राम१.१))] अन्य, दूसरे

इति [१.२५.. (अ.)] इस प्रकार, ऐसा इसलिए

इदम् [१.१०.. सर्व(इदम् नपु १.१/२.१)] यह

इदानीम् [११.५१ (अ.)] अब

इन्द्रियकर्माणि [४.२७ सं(कर्मन् १.३/२.३) (इन्द्रियाणां कर्माणि)] इन्द्रियों के कर्मों को

इन्द्रियगोचराः [१३.५ वि(राम १.३) (इन्द्रियाणां गोचराः)] इन्द्रियों की गोचर भूमि (चरागाह) इन्द्रियों के विषय – शब्द स्पर्श रूप रस और गन्ध

इन्द्रियग्रामम् [६.२४, १२.४ सं(राम २.१) (इन्द्रियाणां ग्रामम्)] इन्द्रियों के समुदाय को, समस्त इन्द्रियों को

इन्द्रियस्य [३.३४ सं(फल ६.१)] इन्द्रिय का

इन्द्रियाग्निषु [४.२६ सं(मुनि ७.३) (इन्द्रियाणाम् अग्निषु)] इन्द्रियों की अग्नि में

इन्द्रियाणाम् [२.८, ६७, १०.२२ सं(फल ६.३)] इन्द्रियों के, इन्द्रियों में

इन्द्रियाणि [२.५८, ६०, ६१, ६८; ३.७, ४०, ४१, ४२; ४.२६; ५.९, १३.५, १५.७ सं(फल २.३)] इन्द्रियां, इन्द्रियों (को): यह ग्यारह हैं, पांच, ज्ञानेन्द्रियां (आंख कान, नाक जीभ और त्वचा) पांच कर्मेन्द्रियां (हाथ, पैर, मुख, शिश्न और गुदा) और एक मन

इन्द्रियारामः [३.१६ सं(राम १.१) (इन्द्रियेषु आरामः यस्य सः)] वह जो इन्द्रियों में आनन्द मनाता है, इन्द्रिय भोगी, इन्द्रिय सुखों में व्यस्त

इन्द्रियार्थान् [३.६ सं(राम २.३)] इन्द्रियों के विषयों को

इन्द्रियार्थेभ्यः [२.५८, ६८ सं(राम ५.३) (इन्द्रियाणाम् अर्थेभ्यः)] इन्द्रियों के विषयों से

इन्द्रियार्थेषु [५.९, ६.४, १३.८ सं(राम ७.३) (इन्द्रियाणाम् अर्थेषु)] इन्द्रियों के विषयों में

इन्द्रियेभ्यः [३.४२ सं(फल ५.३)] इन्द्रियों की अपेक्षा, इन्द्रियों से

इन्द्रियैः [२.६४, ५.११ सं(फल ३.३)] इन्द्रियों द्वारा-से

इमम् [१.२८; २.३३; ४.१, २; ९.८, ३३; १३.३३, १६.१३, १७.७, १८.७०, ७४, ७६ सर्व (इदम् पु. २.१)] यह, इसको

इमान् [१०.१६, १८.१७ सर्व(इदम् पु २.३)] इन सब को

इमानि [१८.१३ सं(इदम् नपु १.३/२.३)] ये इनको

इमाः [३.२४, १०.६ सर्व(इदम् स्त्री. १.३)] ये

इमाम् [२.३९, ४२ सर्व(इदम् स्त्री २.१)] इसको

इमे [१.३३, २.१२, १८; ३.२४ सर्व(इदम् पु १.३)] ये

इमौ [१५.१६ सर्व(इदम् पु १.२)] ये दो

इयम् [७.४, ५ सर्व(इदम् स्त्री १.१)] यह (स्त्री)

इव [१.३०.. (अ.)] सदृश, तुल्य, समान, जैसा, से, मानो

इषुभिः [२.४ सं(गुरु ३.३)] बाणों से

इष्टः [१८.६४, ७० वि(राम १.१) (√इष् तुदा P + क्त)] प्रिय, पूजित

इष्टकामधुक् [३.१० वि.(कामधुक् १.१)] (इष्टान् कामान् दोग्धि)] इच्छित पदार्थों को देने वाला (कामधेनु)

इष्टम् [१८.१२ वि(फल १.१)] वांछनीय, प्रिय

इष्टाः [१७.९ वि(राम १.३) (√इष् तुदा P+ क्त)] प्रिय

इष्टान् [३.१२ वि(राम २.३)] इच्छित (को)

इष्टानिष्टोपपत्तिषु [१३.९ सं(मति ७.३) (इष्टानां च अनिष्टानां च उपपत्तिषु)] प्रिय और अप्रिय घटनाओं में

इष्ट्वा [९.२० (अ.) (√यज् भ्वा A/P + क्तवाच्)] पूजा करके, पूजकर, बलिदान करके

इह [२.५...(अ.)] इस, यहां, इस लोक में

ई

ईक्षते [६.२९, १८.२० (√ईक्ष् भ्वा A लट् ३.१)] देखता है

ईड्यम् [११.४४ वि(राम २.१)] स्तुत्य, प्रशंसनीय, वंदनीय

ईदृक् [११.४९ सार्ववि(१.१)] ऐसा

ईदृशम् [२.३२, ६.४२ वि(२.१)] ऐसा, इस प्रकार का

ईशम् [११.१५, ४४ सं(राम २.१)] ईश्वर को

ईश्वरः [४.६, १५.८, १७; १६.१४, १८.६१ सं(राम १.१)] ईश्वर

ईश्वरभावः [१८.४३ सं(राम १.१) (ईश्वरस्य भावः)] ईश्वर का स्वभाव, प्रभुता

ईश्वरम् [१३.२८ सं(राम २.१)] ईश्वर को

ईहते [७.२२ (√ ईह् भ्वा A लट् ३.१)] चाहता है

ईहन्ते [१६.१२ (√ ईह् भ्वा A लट् ३.३)] (वे) प्रयत्न करते हैं (प्राप्त करने को), कठिन प्रयास करते हैं

उ

उक्तः [१.२४, ८.२१, १३.२२ वि(राम १.१) (√ब्रू अदा P + क्त)] सम्बोधित किया हुआ, कहा हुआ-गया

उक्तम् [११.१, ४१, १२.२०; १३.१८; १५.२० वि(राम २.१) (√ब्रू अदा P + क्त] कहा है,

उक्ताः [२.१८ वि(राम १.३) (√ब्रू अदा P + क्त)] कहे गए (हैं)

उक्त्वा [१.४७, २.९, ११.९, २१, ५० (अ.) (√ ब्रू + वच् अदा P + क्त्वाच्)] कह कर

उग्रकर्माणः [१६.९ वि(शर्मन् १.३) (उग्राणि कर्माणि येषां ते)] वे जिनके कार्य-कर्म भयानक हैं, घोर कर्म वाले

उग्रम् [११.२० वि(फल १.१)] भयानक, डरावना

उग्ररूपः [११.३१ सं(राम १.१) (उग्रं रूपं यस्य सः)] वह जिसका स्वरूप भयानक है, भयंकर रूपवाला

उग्राः [११.३० वि(राम १.३)] हिंस्र, भीषण

उग्रैः [११.४८ वि(राम ३.३)] भीषण (से)

उच्चैः [१.१२ (अ. क्रिवि)] उच्च स्वर से

उच्चैःश्रवसम् [१०.२७ सं(चन्द्रमस् २.१)] उच्चैश्रवा नाम के इन्द्र के घोड़े को

उच्छिष्टम् [१७.१० वि.(फल १.१)] जूठन को

उच्छोषणम् [२.८ वि(फल १.१) (उत् + शोषणम्)] शोषक, सुखाने वाला

उच्यते [२.२५...(ब्रू अदा. P वच् कर्मणि लट् ३.१)] कहा जाता है, पुकारा जाता है, बुलाया जाता है

उत [१.४०, १४.९, ११ (अ.)] वास्तव में, सचमुच, अवश्य ही

उत्क्रामति [१५.८ (उत् + √ क्रम् भ्वा P ३.१)] त्यागता है, छोड़ता है

उत्क्रामन्तम् [१५.१० वि(ध्यायत् २.१) (उत् + √ क्रम् भ्वा P + शतृ)] जाते हुए, त्याग करते हुए (को)

उत्तमः [१५.१७, १८ वि(राम १.१)] सर्वोच्च, सर्वोपरि, उत्तम

उत्तमम् [४.३, ६.२७, ९.२ वि(फल १.१/२.१)] सब से श्रेष्ठ, उत्तम

उत्तमविदाम् [१४.१४ सं(मरुत् ६.१ (उत्तमं विदन्ति इति तेषाम्)] उनको (जो) इस प्रकार जानते हैं सर्वोच्च (को), ज्ञानियों को

उत्तमांगैः [११.२७ वि(राम ३.३)] मस्तकों सहित, सब से उत्तम अंगों (सिरों) सहित

उत्तमौजाः [१.६ सं(चन्द्रमस् १.१)] उत्तमौजा

उत्तरायणम् [८.२४ सं(फल १.१)] उत्तरायण, वह छः महीने (माघ से आषाढ़) का समय जिसमें सूर्य मकर रेखा से चल कर बराबर उत्तर की ओर बढ़ता रहता है

उत्तिष्ठ [२.३, ३७, ४.४२, ११.३३ (उत् + √ स्था भ्वा P लोट् २.१)] उठ खड़ा हो, उठ

उत्थिता [११.१२ वि(विद्या १.१) (उत् + √ स्था भ्वा P + क्त)] उदय हुई

उत्सन्नकुलधर्माणाम् [१.४४ वि(राम ६.३) (उत्सन्नः कुलस्य धर्मः येषा ते)] वे जिनका कुल धर्म नष्ट हुआ है

उत्सादनार्थम् [१७.१९ सं(राम २.१) उत्सादनस्य अर्थम्)] विनाश के लिए, नाश के हेतु, ध्वंस करने के लिए

उत्साद्यन्ते [१.४३ (उत् + √ सद् + णिच् A ३.३)] नष्ट किए जाते हैं, विनाश होते हैं

उत्सीदेयुः [३.२४ (उत् + √ सद् भ्वा P विधि ३.३)] नष्ट हो जाएंगे, ध्वस्त हो जाएंगे

उत्सृजामि [९.१९) (उत् + √ सृज् भ्वा P लट् १.१)] (मैं) जाने देता हूं, छोड़ देता हूं

उत्सृज्य [१६.२३, १७.१ क्रि.वि (उत् + √ सृज् भ्वा P + ल्यप्)] त्याग कर, छोड़कर

उदपाने [२.४६ सं(फल ७.१)] छोटे कुण्ड (पोखर) में

उदाराः [७.१८ सं(राम १.३)] उच्च, बड़ा, श्रेष्ठ

उदासीनः [१२.१६ वि(राम १.१)] तटस्थ, विरक्त, उदासीन

उदासीनवत् [९.९, १४.२३ वि(जगत् २.१)] उदासीन जैसा, तटस्थ सा

उदाहृतः [१५.१७ वि(राम १.१) (उत् + आ + √ हृ भ्वा P + क्त)] कहलाता है, पुकारा जाता है

उदाहृतम् [१३.६, १७.१९, २२, १८.२२, २४, ३९ वि(फल १.१) (उत् + आ + √ हृ भ्वा P ल्यप्)] कहा जाता है, पुकारा जाता है

उदाहृत्य [१७.२४ (अ.) (उत् + आ √ हृ भ्वा P + ल्यप्)] कह कर, उच्चारण करके

उद्दिश्य [१७.२१ (उत् + √ दिश् तुदा P/A + ल्यप्)] प्रत्याशा की दृष्टि से, उद्देश से

उद्देशतः [१०.४० (अ.) (क्रि.वि.) (उत् + देश + तस्)] दृष्टान्त रूप से

उद्धरेत् [६.५ (उत् + √ हृ भ्वा विधि लिङ् ३.३)] उद्धार करना चाहिए, ऊपर उठाना चाहिए, उन्नत करना चाहिए

उद्भवः [१०.३४ सं(राम १.१)] जन्म, उत्पत्ति

उद्यताः [१.४५ वि(राम १.३) (उत् + यम् भ्वा + क्त)] उठ खड़े हैं, तत्पर हैं, तय्यार है

उद्यम्य [१.२० (अ.) (उत् √ यम् भ्वा + ल्यप्)] उठाकर, उठाया

उद्विजते [१२.१५ (उत् √ विज् तुदा A लट् ३.१)] उत्तेजित होता है, उद्वेग, संताप पाता है

उद्विजेत् [५.२०) (उत-विज् तुदा. P विधि ३.१)] उत्तेजित हो, घबराए, दुःखी हो

उन्मिषन् [५.९ वि(ध्यायत् १.१) (उत् + √ मिष् तुदा P + शतृ)] (आंख) खोलते हुए

उपजायते [२.६२, ६५, १४.११ (उप + √ जन् दिवा A लट् ३.१)] उत्पन्न होता है, का उद्भव होता है

उपजायन्ते [१४.२ (उप + √ जन् भ्वा A लट् ३.३)] उत्पन्न होते हैं

उपजुह्वति [४.२५ (उप + √ हु जुहो P लट् ३.३)] होम करते हैं, हवन करते हैं, यज्ञ करते हैं, अर्पित करते हैं

उपदेक्ष्यन्ति [४.३४ (उप + √ दिश् तुदा P लृट् ३.३)] उपदेश देंगे, शिक्षा देंगे

उपद्रष्टा [१३.२२ वि(कर्तृ १.१)] निरीक्षक, पास में रह कर देखने वाला, साक्षी

उपधारय [७.६, ९.६ (उप + √ धृ चुरा P लोट् २.१)] समझ, जान

उपपद्यते [२.३, ६.३९, १३.१८, १८.७ (उप + √ पित् दिवा A लट् ३.१)] योग्य है, शोभा देता है, उचित है, उपयुक्त, मिल सकता है

उपपन्नम् [२.३२ वि(फल १.१) उप + √ पद् दिवा A + क्त)] आया हुआ, प्राप्त हुआ

उपमा [६.१९ सं(विद्या १.१)] उपमा

उपयान्ति [१०.१० (उप √ या भ्वा P लट् ३.३)] आते हैं, प्राप्त करते हैं

उपरतम् [२.३५ वि(राम २.१)] पीछे हटा हुआ, से अलग हुआ, निकल भागा

उपरमते [६.२० (उप + √ रम् भ्वा A लट् ३.१)] शान्त होता है, स्थिर होता है

उपरमेत् [६.२५ (उप + √ रम् भ्वा A विधि ३.१)] उसे (कार्य कलाप से) छुट्टी पाने दो, शान्ति प्राप्त करने दो

उपलभ्यते [१५.३ (उप् + √ लभ् भ्वा A + य + लट् ३.१)] समझाजाता है, जाना जाता है, देखा जाता है

उपलिप्यते [१३.३२ (उप् + लिप्यते √ लिप् तुदा A लट् ३.१)] लिप्त होता है, प्रभावित होता है

उपविश्य [६.१२ (अ.) (उप + √ विश् तुदा P + ल्यप्)] बैठ कर

उपसंगम्य [१.२ (अ.) (क्रि.वि) (उप् + सम् + √ गम् + ल्यप्)] पास जाकर

उपसेवते [१५.९ (उप् + √ सेव् भ्वा A लट् ३.१)] सेवन करता है, भोगता है

उपहन्याम् [३.२४ (उप + √ हन् अदा P विधि १.१)] (मै) वध करूंगा, मार डालूंगा वध करूं, मार डालूँ

उपायतः [६.३६ (अ.)] उपाय से, साधन से

उपाविशत् [१.४७ (उप + आ + √ विश् भ्वा लङ् ३.१)] धंस गया, गिर पड़ा, धप से बैठ गया

उपाश्रिताः [४.१०, १६.११ वि(राम १.३)] आश्रय लिए हुए

उपाश्रित्य [१४.२, १८.५७ (उप + आ + √ श्रि भ्वा P + ल्यप्)] आश्रय लेकर, सहारे से

उपासते [९.१४, १५, १२.२,६, १३.२५ (उप + √ आस् अदा A लट् ३.३)] पूजा करते हैं, उपासना करते है

उपेतः [६.३७ सं(राम १.१) (उप + √ इण अदा P + क्त)] से युक्त, से सम्पन्न

उपेताः [१२.२ सं(राम १.३)] से युक्त, से सम्पन्न

उपेत्य [८.१५, १६ (अ.) (उप + √ इ अदा P + ल्यप्)] आकर, पहुंचकर,

उपैति [६.२७, ८.१०, २८ (उप + √ इ अदा. P लट् ३.१)] प्राप्त होता है

उपैष्यसि [९.२८ (उप + √ इ अदा P लृट् २.१)] (तू) आएगा, प्राप्त होगा

उभयविभ्रष्टः [६.३८ वि(राम १.१) (उभयतः विभ्रष्टः)] दोनों से गिरा हुआ, दोनों ओर से भ्रष्ट हुआ

उभयोः [१.२१, २४, २७; २.१०, १६; ५.४ वि(राम ६.२) विद्या ६.२/७.२)] दो (के), दोनों (के)

उभे [२.५० संवि(फल १.२)] दोनों

उभौ [२.१९, ५.२, १३.१९ वि(राम २.२)] दोनों

उरगान् [११.१५ सं(राम २.३)] सर्प (बहुवचन), साँपों को

उल्बेन [३.३८ सं(फल ३.१)] झिल्ली से, उल्व से, उल्व = वह झिल्ली जिससे लिपटा हुआ बच्चा पैदा होता है

उवाच [१.१...(ब्रू-वच् अदा A/P लिट् ३.१)] कहा, बोला

उशना [१०.३७ सं(उशनस् १.१)] उशना, शुक्राचार्य

उषित्वा [६.४१ (√ वस् भ्वा P क्त्वाच्)] रह कर

ऊ

ऊर्जितम् [१०.४१ वि(फल १.१)] शक्तिशाली, प्रभावशाली

ऊर्ध्वम् [१२.८, १४.१८, १५.२ (अ. क्रिवि)] उपरान्त, ऊपर, ऊंचे

ऊर्ध्वमूलम् [१५.१ सं(राम २.१) (ऊर्ध्वम् मूलम् यस्य तम्)] वह जिसकी जड़ें ऊपर हैं

ऊष्मपाः [११.२२ सं(ऊष्मपा १.३)] ऊष्मपा, पितर

ऋ

ऋक् [९.१७ सं(वाच् १.१)] ऋग्वेद

ऋच्छति [२.७२, ५.२९ (√ ऋ भ्वा P लट् ३.१)] प्राप्त करता है, पाता है

ऋतम् [१०.१४ वि(फल २.१)] सच, सत्य

ऋतूनाम् [१०.३५ सं(गुरु ६.३)] ऋतुओं में

ऋते [११.३२ (अ. क्रिवि)] बिना, से रहित

ऋद्धम् [२.८ वि(फल २.१)] समृद्ध, धन धान्य संपन्न

ऋषयः [५.२५, १०.१३ सं(हरि १.३)] ऋषिगण

ऋषिभिः [१३.४ सं(हरि ३.३)] ऋषियों द्वारा

ऋषीन् [११.१५ सं(हरि २.३)] ऋषि गणको

ए

एकः [११.४२, १३.३३ (संख्यावाचक वि पु प्रथमा)] अकेला, एक

एकत्वम् [६.३१ सं(फल २.१)] एकत्व (को), एकता में

एकत्वेन [९.१५ सं(फल ३.१)] एकत्व से, एक रूप से

एकभक्तिः [७.१७ वि.(हरि १.१) (एकस्मिन् भक्तिः यस्य सः)] वह जिसकी भक्ति एक में है, एक की ही भक्ति करने वाला

एकम् [३.२; ५.१, ४, ५; १०.२५; १३.५; १८.२०, ६६ सं वि(एक नपु २.१)] एक, एक ही

एकया [८.२६ वि(विद्या ३.१)] एक से

एकस्थम् [११.७, १३; १३.३० सं(फल २.१/१.१) (एकस्मिन् स्थितम्)] एक में स्थित हुए, एक रूप में स्थित

एकस्मिन् [१८.२२ सं वि(एक पु ७.१)] एक में

एका [२.४१ वि(एक स्त्री १.१)] एक, एक को

एकांशेन [१०.४२ सं(राम ३.१)] एक अंश से

एकाकी [६.१० वि(शशिन् १.१)] एकाकी, अकेला

एकाक्षरम् [८.१३ वि(फल २.१)] एकाक्षरी, एक अक्षर वाला

एकाग्रम् [६.१२ वि(फल २.१)] एकाग्र, संकेन्द्रित

एकाग्रेण [१८.७२ वि(फल. ३.१)] एक रत, एक ओर स्थिर

एकान्तम् [६.१६ वि(फल १.१)] अकेले, केवल, मात्र, (सम्पूर्णतः)

एके [१८.३ सर्व(१.३)] कोई, कुछ एक

एकेन [११.२० वि(एक ३.१ पु) (नपुं)] एक से, एकके द्वारा

एतत् [२.३,..(सर्व (एतद् नपु १.१) २.१)] यह

एतद्योनीनि [७.६ सं(वारि २.३) (एषा योनिः येषां तानि)] वे जिनका यह गर्भ (है), उत्पत्तिका कारण (है)

एतम् [६.३९ सर्व(एतद् पु २.१)] इसको

एतयोः [५.१ सर्व(एतद् नपु ६.२)] इन दो में से, इन दोनों का

एतस्य [६.३३ सर्व(एतद् पु. ६.१)] इसकी, उसकी

एतान् [१.२२... सर्व(एतद् पु. २.३)] इनको, इन्हें

एतानि [१४.१२, १३, १५.८, १८.६, १३ सर्व(एतद् नपु १.३] ये, इन

एताम् [१.३, ७.१४, १०.७, १६.९ सर्व(एतद् स्त्री २.१)] यह, इस

एतावत् [१६.११ वि.(जगत् १.१)] इतना मात्र, यही सब कुछ है

एति [४.९, ८.६, ११.५५ (√ इण् अदा P लट् ३.१)] जाता है, आता है

एते [१.२३.. सर्व(एतद् पु. १.३/स्त्री १.२/२.२/नपु. १.२/२.२)] ये, (दो) ये (सब)

एतेन [३.३९, १०.४२ सर्व(एतद् ३.१)] इस से, इसके द्वारा

एतेषाम् [१.१० सर्व(एतद् पु. नपु ६.३)] इनकी

एतैः [१.४३, ३.४०, १६.२२ सर्व(एतद नपु.पु. ३.३)] इन से, इनके द्वारा

एधांसि [४.३७ सं(मनस् १.३)] ईंधन, लकड़ियां, जलावन

एनम् [२.१९... सर्व(एतद् पु २.१)] यह, इसको

एनाम् [२.७२ सर्व(एतद् स्त्री. २.१)] यह, इसे, इसको

एभिः [७.१३, १८.४० सर्व(इदम् नपु /पु ३.३)] इनके द्वारा, इन से

एभ्यः [३.१२, ७.१३ सर्व(इदम् पु ५.३) (४.३)] इनको, इन से, इनके लिए

एव [१.६...(अ. क्रिवि)] भी एकमात्र केवल, से भी

एवंरूपः [११.४८ सं.वि.(राम १.१)] ऐसा रूप, इस प्रकार का रूप

एवंविधः [११.५३, ५४ वि(राम १.१)] इस प्रकार का

एवम् [१.२४...(अ. क्रिवि)] इस प्रकार ऐसा

एषः [३.१० सर्व(एतद् पु १.१)] यह

एषा [२.३९, ७२, ७.१४ सर्व(एतद् स्त्री १.१)] यह

एषाम् [१.४२ सर्व(एतद् पु ६.३)] इनके

एष्यति [१८.६८ (√ इ अदा P लृट् ३.१)] (वह) आएगा

एष्यसि [८.७, ९.३४, १८.६५ (√इ अदा P लृट् २.१)] (तू) आएगा

ऐ

ऐकान्तिकस्य [१४.२७ वि(फल ६.१)] परम, आत्यंतिक, उच्चतम

ऐरावतम् [१०.२७ सं(राम २.१)] ऐरावत को (इस नाम के इन्द्र के हाथी को)

ऐश्वरम् [९.५, ११.३, ८, ९, वि(राम २.१)] सर्वश्रेष्ठ, परम्

ओ

ओंकारः [९.१७ सं(राम १.१)] ओम्

ओजसा [१५.१३ सं(मनस् ३.१)] शक्ति से, बल से

ओम् [८.१३, १७.२३, २४ (अ.)] ॐ, ओम्

औ

औषधम् [९.१६ सं(फल १.१)] जड़ी बूटी, (यज्ञ की) वनस्पति

औषधीः [१५.१३ सं(मति २.३)] वनस्पतियों को

क

कंदर्पः [१०.२८ सं(राम १.१)] कन्दर्प, कामदेव

कः [२.२७; ८.२; ११.३१; १६.१५ सर्व.(किम् पु. १.१)] कौन

कच्चित् [६.३२, १८.७२ (अ. क्रिवि)] क्या, कुछ भी, क्या यह है

कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्षविदाहिनः [१७.९ वि(शशिन् १.१) (कटुः च अम्लः च लवणः च अत्युष्ण च तीक्ष्णः च रूक्षः च विदाही च)] कड़वा खट्टा खारा, बहुत गर्म, तीखा, सूखा, और जलन पैदा करने वाला

कतरत् [२.६ सर्व(तुलनात्मक) (किम् + उतरच्)] (दोनों में) कौन सा, क्या

कथम् [१.३७,...(अ.)] कैसे, किस प्रकार

कथय [१०.१८ (√कथ् चुरा P लोट् २.१)] कहना, बतलाना

कथयतः [१८.७५ (√कथ् चुरा P + शतृ ध्यायत् ५.१)] कहते हुए, (से)

कथयन्तः [१०.९ (ध्यायत् १.३) (√कथ् चुरा P + शतृ)] (वे) वर्णन करते हुए, कहते हुए

कथयिष्यन्ति [२.३४ (√कथ् चुरा P लृट् ३.३)] (वे) वर्णन करेंगे, कहेंगे

कथयिष्यामि [१०.१९ (√कथ् चुरा P लृट् १.१)] (मैं) वर्णन करूंगा, कहूंगा

कदाचन [२.४७, १८.६७ (अ.)] कभी भी किसी समय भी

कदाचित् [२.२० (अ.)] कभी

कपिध्वजः [१.२० वि(राम १.१) (कपिः ध्वजे यस्य सः)] वह जिसकी ध्वजा में कपि (हनुमान) है

कपिलः [१०.२६ सं(राम १.१)] कपिल

कम् [२.२१ (सर्व पु किम् २.१)] किस को किसी को

कमलपत्राक्ष [११.२ सं(राम ८.१) (कमलस्य पत्रम् इव अक्षिणी यस्य सः)] हे कमल पत्र जैसी आँखों वाले, हे कमल नेत्र

कमलासनस्थम् [११.१५ वि(राम २.१) (कमलस्य आसने स्थितम्)] कमल के आसन पर बैठे (हुए)

करणम् [१८.१४, १८ सं(फल १.१)] साधन, इन्द्रिय, (ये तेरह हैं) (देखिए अध्याय १३ श्लोक २०)

करिष्यति [३.३३ (√कृ तना P लृट् ३.१)] करेगा

करिष्यसि [२.३३, १८.६० (√कृ तना P लृट् २.१)] (तू) करेगा

करिष्ये [१८.७३ (√कृ तना A लृट् १.१)] (मैं) करूंगा

करुणः [१२.१३ वि(राम १.१)] कृपालु, सदय, दयालु

करोति [४.२०, ५.१०, ६.१; १३. ३१ (√कृ तना P लट् ३.१)] करता है

करोमि [५.८ (√कृ तना P लट् १.१)] (मैं) करता हूं

करोषि [९.२७ (√कृ तना P लट् २.१)] (तू) करता है

कर्णः [१.८ सं(राम १.१)] कर्ण

कर्णम् [११.३४ सं(राम २.१)] कर्ण को

कर्तव्यम् [३.२२ सं(फल १.१)] करने योग्य,

कर्तव्यानि [१८.६ सं(फल १.३)] करने योग्य, अनिवार्य, अवश्य करणीय

कर्ता [३.२४, २७; १८.१४, १८.१९, २६, २७, २८ सं(धातृ १.१)] करने वाला, कर्ता

कर्तारम् [४.१३, १४.१९, १८.१६ सं(धातृ २.१)] कर्त्ता को, रचयिता, स्रष्टा, प्रवर्तक को

कर्तुम् [१.४५; २.१७, ३.२०; ९.२; १२.११, १६; १६.२४, १८.६० (अ) (√कृ तना P + तुमुन्)] करने, पूरा करने, सम्पन्न करने के लिए

कर्म [२.४९.... सं(कर्मन् १.१/२.१)] कर्म, काम

कर्तृत्वम् [५.१४ सं(फल २.१)] कर्तापन (को) कर्त्ता के भाव, कर्त्ता के धर्म, माध्यम (को)

कर्मचोदना [१८.१८ सं(विद्या १.१) (कर्मणः चोदना)] कर्म की प्रेरक, कर्म को प्रेरणा (प्रोत्साहन) देने वाली

कर्मजम् [२.५१ वि(फल १.१)] कर्म से उत्पन्न

कर्मजा [४.१२ वि(विद्या १.१)] कर्मजन्य, कर्म से उत्पन्न

कर्मजान् [४.३२ वि(राम २.३)] कर्म से उत्पन्न हुए (को), कर्मजन्य (को)

कर्मणः [३.१, ९ ४.१७; १४.१६; १८.७, १२ सं(कर्मन् ५.१/६.१)] कर्म से, कर्म की अपेक्षा, कर्म का, कर्म के

कर्मणा [३.२६, १८.६० सं(कर्मन् ३.१)] कर्म से, कर्म द्वारा

कर्मणाम् [३.४, ४.१२, ५.१, १४.१२, १८.२ सं(कर्मन् ६.३)] कर्मों का, की

कर्मणि [२.४७, ३.१, २२, २३, २५; ४.१८, २०; १४.९, १७.२६; १८.४५ सं(कर्मन् ७.१)] कर्म में

कर्मफलत्यागः [१२.१२ सं(राम १.१) (कर्मणां फलस्य त्यागः)] कर्मों के फल का त्याग

कर्मफलत्यागी [१८.११ वि(शशिन् १.१) (कर्मणां फलस्य त्यागी)] कर्म के फल का त्यागी

कर्मफलप्रेप्सुः [१८.२७ सं(गुरु १.१) (कर्मणां फलस्य प्रेप्सुः)] कर्म फल का इच्छुक

कर्मफलम् [५.१२, ६.१ सं(फल २.१) (कर्मणः फलम्)] कर्म फल (को)

कर्मफलसंयोगम् [५.१४ सं(राम २.१) (कर्मणः च फलस्य च संयोगम्)] कर्म के फल के संयोग (मेल, सन्धि) को

कर्मफलहेतुः [२.४७ सं(गुरु १.१) (कर्मणः फलं हेतुः यस्य सः)] वह जिसका अभिप्राय कर्म के फल में है, कर्म फल उद्देश्य है जिसका

कर्मफलासंगम् [४.२० सं(राम २.१) (कर्मणः फले आसंगम्)] कर्म के फल में आसक्ति

कर्मफले [४.१४ सं(फल ७.१) (कर्मणः फले)] कर्म के फल में

कर्मबन्धनः [३.९ सं(राम १.१) (कर्म बन्धनं यस्य सः)] वह जो कर्म से बँधा है, कर्म के बन्धन वाला

कर्मबन्धनैः [९.२८ सं(फल ३.३) (कर्मणां बन्धनैः)] कर्म के बन्धनों से

कर्मबन्धम् [२.३९ सं(राम २.१) (कर्मणः बन्धम्)] कर्म के बन्धन को

कर्मभिः [३.३१, ४.१४ सं(कर्मन् ३.३)] कर्मों से

कर्मयोगः [५.२ सं(राम १.१)] कर्म योग

कर्मयोगम् [३.७ सं(राम २.१)] कर्म योग को

कर्मयोगेन [३.३, १३.२४ सं(राम ३.१) (कर्मणः योगेन)] योग से , कर्म योग से, कर्म योग द्वारा

कर्मसंग्रहः [१८.१८ सं(राम १.१) (कर्मणः संग्रहः)] कर्म का संग्रह, संकलन, समुच्चय

कर्मसंज्ञितः [८.३ वि(राम १.१) (कर्म संज्ञा यस्य सः)] वह जिसका नाम कर्म है, कर्म कहलाता है

कर्मसंन्यासात् [५.२ सं(राम ५.१) (कर्मणः सन्यासात्)] कर्म संन्यास की अपेक्षा

कर्मसंगिनाम् [३.२६ वि(शशिन् ६.३) (कर्मणि संगः येषां तेषाम्)] उनको जिनकी कर्म में आसक्ति है

कर्मसंगिषु [१४.१५ सं(राम ७.३) (कर्मणि संगःयेषां तेषु)] उन के बीच जो कर्म में आसक्त (हैं) कर्म काण्डियों में

कर्मसंगेन [१४.७ सं(राम ३.१) (कर्मणः संगेन)] कर्म की आसक्ति से, कर्म के साथ

कर्मसमुद्भवः [३.१४ सं(राम १.१) (कर्मणः समुद्भवः यस्य सः)] वह जो कर्म से उत्पन्न होता है

कर्मसु [२.५०, ६.४, १७; ९.९ सं(कर्मन् ७.३)] कर्मों में

कर्माणि [२.४८, ३.२७, ३०; ४.१४, ४१, ५.१०, १४; ९.९; १२.६, १०, १३.२९; १८.६, ११.४१ सं(कर्मन् १.३/२.३)] कर्म (बहुवचन) कर्मों को

कर्मानुबन्धीनि [१५.२ वि(फल १.३) (कर्म अनुबन्धः येषां तानि)] वे जिनके कर्मबन्धन परिणाम हैं, कर्मों के बन्धन उत्पन्न करने वाली

कर्मिभ्यः [६.४६ वि(शशिन् ५.१)] कर्म काण्डियों की अपेक्षा, कर्म निष्ठ अथवा कर्मठ व्यक्तियों की अपेक्षा

कर्मेन्द्रियाणि [३.६ सं(फल २.३) (कर्मणाम् इन्द्रियाणि)] कर्म करने वाली इन्द्रियों को, कर्मेन्द्रियों को (देखें इन्द्रियाणि)

कर्मेन्द्रियैः [३.७ सं(फल ३.३)] कर्मेन्द्रियों द्वारा

कर्शयन्तः [१७.६ वि.(ध्यायत् १.३) (√ कृश् भ्वा P + णिच् + शतृ)] यातना देते हुए, उत्पीड़ित करते हुए, कष्ट देते हुए

कर्षति [१५.७ (√ कृष् भ्वा P लट् ३.१)] आकर्षित करता है, खींचता हैं

कलयताम् [१०.३० सं(ध्यायत् ६.३)] गणकों में, गणना करने वालों में, परिकलकों में

कलेवरम् [८.५, ६ सं(फल २.१)] शरीर, देह (को)

कल्पक्षये [९.७ सं(राम ७.१) (कल्पस्य क्षये)] कल्प के अन्त में

कल्पते [२.१५, १४.२६; १८.५३ (√ कल्प् भ्वा A लट् ३.१)] योग्य होता है, योग्य है

कल्पादौ [९.७ सं(हरि ७.१) (कल्पस्य आदौ)] कल्प के आदि में

कल्याणकृत् [६.४० वि(मरुत् १.१)] धर्म कर्म करने वाला, कल्याण मार्ग पर चलने वाला

कवयः [४.१६, १८.२ सं(हरि १.३)] कवि लोग, विद्वान् (ज्ञानी) पुरुष

कविः [१०.३७ सं(हरि १.१)] कवि

कविम् [८.९ सं(हरि २.१)] कवि को, सर्वज्ञ को

कवीनाम् [१०.३७ सं(हरि ६.३)] कवियों का

कश्चन [३.१८; ६.२, ७.२६, ८.२७ सर्व अनि (किम् पु.+ चन १.१)] कोई, कोई भी

कश्चित् [२.१७, २९;... सर्व.अनि. (किम् पु. १.१) + चित्] कोई

कश्मलम् [२.२ सं(फल १.१)] विषाद, उदासी

कस्मात् [११.३७ सर्व(किम् पु. नपु ५.१)] किस कारण, किस, लिए, क्यों

कस्यचित् [५.१५ (सर्व पु. किम् ६.१) (चित् अनि.)] किसी के

का [१.३६, २.२८, ५४, १७.१ सर्व(किम् स्त्री १.१)] क्या, कैसा

कांक्षति [५.३, १२.१७, १४.२२, १८.५४ (√ कांक्ष् भ्वा P लट् ३.१)] इच्छा करता है, लालसा (आकांक्षा) करता है

कांक्षन्तः [४.१२ वि.(ध्यायत् १.३) (√ कांक्ष् भ्वा P + शतृ)] चाहते हुए

कांक्षितम् [१.३३ वि(फल १.१) (√कांक्ष् + क्त)] इच्छित, वांछित, इष्ट

कांक्षे [१.३२ (√कांक्ष् भ्वा A लट् १.१)] चाहना, इच्छा, करना, अभिलाषा करना

काम् [६.३७ सर्व(किम् स्त्री २.१)] कौन सी, किस (को)

कामः [२.६२, ३.३७, ७.११, १६.२१ सं(राम १.१)] कामना, इच्छा

कामकामाः [९.२१ वि(राम १.३) (कामानां कामः येषां ते)] वे जो इच्छा करते हैं काम्य पदार्थों की, कामी लोग

कामकामी [२.७० वि(शशिन् १.१) (कामानां कामी)] विषयों की कामना करने वाला

कामकारतः [१६.२३] कामना के प्रोत्साहन से, (आवेग से)

कामकारेण [५.१२ वि(राम ३.१) (कामस्य कारेण)] कामना द्वारा प्रोत्साहित

कामक्रोधपरायणाः [१६.१२ सं(राम १.३) (कामः च क्रोधः च परम् अयनं येषां ते)] वे जिनके कामना और क्रोध उच्चतम आश्रय हैं, काम और क्रोध में लीन

कामक्रोधवियुक्तानाम् [५.२६ वि(राम ६.३) (कामात् च क्रोधात् च वियुक्तानाम्)] कामना और क्रोध से अलग हुए (हैं जो) उनका

कामक्रोधोद्भवम् [५.२३ वि(राम २.१) (कामात् च क्रोधात् च उद्भवः यस्य तम्)] वह जिसकी उत्पत्ति कामना और क्रोध से (है), काम और क्रोध से उत्पन्न

कामधुक् [१०.२८ सं(कामधुक् १.१) (कामान् दोग्धि इति)] इच्छाओं का दोहन करने वाला कामधेनु, गाय जो कामनाओं की पूर्त्ति करती है

कामभोगार्थम् [१६.१२ सं(राम २.१) (कामस्य भोगस्य अर्थम्)] विषय भोग के लिए, भोग की इच्छा के लिए

कामभोगेषु [१६.१६ सं(राम ७.३) (कामस्य भोगेषु)] काम के सुखों में, काम भोगों में, विषय भोगों में

कामम् [१६.१०, १८; १८.५३ सं(राम २.१)] लालसा, कामना को

कामरागबलान्विताः [१७.५ वि(राम १.३) (कामस्य च रागस्य च बलेन अन्विताः)] काम (इच्छा) और राग (मनोवेग) के बल से भरे हुए, विषयों की इच्छा और भावावेश से भरे हुए

कामरागविवर्जितम् [७.११ वि(फल १.१) (कामेन च रागेण च विवर्जितम्)] काम (इच्छा) और राग (मनोवेग) रहित, 'जो नहीं है, उसकी इच्छा "काम" है, जो है, उसकी आसक्ति राग है'-"शंकराचार्य"

कामरूपम् [३.४३ वि(राम २.१)] काम रूप को, कामना की मूर्ति को

कामरूपेण [३.३९ वि(राम ३.१) (कामः रूप" यस्य तेन)] उसके द्वारा जिसका शरीर काम (है); कामरूप से

कामसंकल्पवर्जिताः [४.१९ वि(राम १.३) (कामैः च संकल्पैः च वर्जिताः)] कामना से, और कल्पना से अप्रभावित, कामना और संकल्प से रहित

कामहैतुकम् [१६.८ वि(फल १.१) (कामः हेतुः यस्य तत्)] वह जिसका कारण कामुकता है, विषय भोग जिसका हेतु है

कामाः [२.७० सं(राम १.३)] कामनाएं

कामात् [२.६२ सं(राम ५.१)] कामना से

कामात्मानः [२.४३ वि (आत्मन् १.३) (कामः आत्मा येषां ते)] वे जिनकी आत्मा कामना (करती) है, कामना वाले पुरुष

कामान् [२.५५, ७१, ६.२४, ७.२२ सं(राम २.३)] कामनाएं

कामेप्सुना [१८.२४ वि(गुरु ३.१) (कामस्य ईप्सुना)] काम प्राप्ति की इच्छा वाले से, भोग की इच्छा वाले से

कामैः [७.२० सं(राम ३.३)] कामनाओं से

कामोपभोगपरमाः [१६.११ वि(राम १.३) (कामानाम् उपभोगः परमः येषां ते)] वे जिनका सर्वोच्च (ध्येय) भोग विलास की वस्तुएँ हैं, विषय भोगों को उत्तम वस्तु मानने वाले

काम्यानाम् [१८.२ वि(फल ६.३)] काम्य, कामना से प्रेरित हुए, किसी कामना से किये गए

कायक्लेशभयात् [१८.८ सं(फल ५.१) (कायस्य क्लेशस्य भयात्)] काया के कष्ट के भय से, शारीरिक क्लेश के भय से

कायम् [११.४४ सं(राम २.१)] शरीर (को)

कायशिरोग्रीवम् [६.१३ वि(राम २.१) (कायं च शिरः च ग्रीवा च)] सिर ग्रीवा और धड़ को

कायेन [५.११ सं(राम ३.१)] शरीर से

कारणम् [६.३, १३.२१ सं(फल २.१, १.१)] कारण

कारणानि [१८.१३ सं(फल २.३)] कारण (बहु)

कारयन् [५.१३ वि.)ध्यायत् १.१) (√ कृ तना A/P + णिच् + शतृ)] करवाता हुआ, कराता हुआ

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः [२.७ वि.(राम १.१) (कार्पण्यस्य दोषेण उपहतः स्वभावः यस्य सः)] वह जिसका स्वभाव सहानुभूति (अनुवेदना) के दोष से आक्रान्त है (पीड़ित है), निर्बलता ग्रस्त

कार्यकरणकर्तृत्वे [१३.२० सं(फल ७.१) (कार्याणां च करणानां च कर्तृत्वे)] कार्यों और करणों को उत्पन्न करने में, कार्य करण के कर्तापन में

कार्यते [३.५ (√ कृ + णिच् A लट् ३.१)] कराया जाता है

कार्यम् [३.१७, १९, ६.१, १८.५, ९.३१ सं(फल १.१/२.१)] कार्य करने

का, कर्तव्य, जो करना चाहिए

कार्याकार्यव्यवस्थितौ [१६.२४ सं(मति ७.१) (कार्यस्य च अकार्यस्य च व्यवस्थितौ)] कर्तव्य और अकर्तव्य के निर्णय करने में

कार्याकार्ये [१८.३० सं(फल २.२) (कार्यम् च अकार्यम् च)] कार्य और अकार्य, कर्तव्य और अकर्तव्य

कार्ये [१८.२२ सं(फल ७.१)] काम में, कार्य में

कालः [१०.३०, ३३, ११.३२ सं(राम १.१)] समय, काल

कालम् [८.२३ सं(राम २.१)] काल, समय

कालानलसंनिभानि [११.२५ सं(फल १.३) (कालस्य अनलस्य संनिभानि)] प्रलय काल की अग्नि के समान

काले [८.२३, १७.२० सं(राम ७.१)] काल में, समय में

कालेन [४.२, ३८ सं(राम ३.१)] काल से, समय पाकर

कालेषु [८.७, २७ सं(राम ७.३)] समय में

काशिराजः [१.५ सं(राम १.१) (काश्याः राजा)] काशी के राजा

काश्यः [१.१७ सं.(राम १.१)] काश्य, (काशी के राजा)

किंचन [३.२२ सर्व.अनि.(किम् नपु. + चन १.१)] कुछ भी

किंचित् [४.२०, ५.८, ६.२५, ७.७, १३.२६ सर्व.अनि.(किम् नपु + चित् १.१)] कुछ भी

किम् [१.१.. सर्व(किम् नपु २.१)] क्या, कैसे

किमाचारः [१४.२१ सं(राम १.१) (किम् + आचारः)] क्या आचरण है

किरीटिनम् [११.१७, ४६ वि(शशिन् २.१) (किरीटम् अस्य अस्ति इति तम्)] उसको इस प्रकार मुकुट है जिसका, मुकुट धारी को

किरीटी [११.३५ वि(शशिन् १.१)] मुकुट धारी, अर्जुन

किल्बिषम् [४.२१, १८.४७ सं(फल २.१)] पाप (को)

कीर्तयन्तः [९.१४ वि.(ध्यायत् १.३) (√ कृत्+ णिच् + शतृ)] प्रशंसा करते हुए, स्तुति करते हुए, कीर्तन करते हुए

कीर्त्तिः [१०.३४ सं(मति १.१)] कीर्ति, यश, ख्याति

कीर्तिम् [२.३३ सं(मति २.१)] नाम, यश, कीर्त्ति, ख्याति (को)

कुतः [२.२, ६६, ४.३१, ११.४३ (अ.)] कहां से

कुन्तिभोजः [१.५ सं(राम १.१)] कुन्ति भोज

कुन्तीपुत्रः [१.१६ सं(राम १.१) (कुन्त्याः पुत्रः)] कुन्ती का पुत्र

कुरु [२.४८, ३.८, ४.१५, ९.३४ १२.११, १८.६३, ६५ (√ कृ तना P लोट् २.१)] कर, करना, पूरा करना

कुरुक्षेत्रे [१.१ सं(फल) ७.१ (कुरोः क्षेत्रे)] कुरुक्षेत्र के (मैदान) में

कुरुते [३.२१, ४.३७ (√ कृ भ्वा A लट् ३.१)] करता है

कुरुनन्दन [२.४१, ६.४३, १४.१३ सं(राम ८.१) (कुरूणां नन्दन)] हे कुरु नन्दन (अर्जुन), कौरवों को प्रसन्न करने वाला

कुरुप्रवीर [११.४८ सं(राम ८.१) (कुरूणां प्रवीर)] हे कौरवों में श्रेष्ठ, (सर्व प्रथम, प्रधान, प्रमुख)

कुरुवृद्धः [१.१२ सं(राम १.१) (कुरुषु वृद्धः)] कौरवों में वृद्ध

कुरुश्रेष्ठ [१०.१९ सं(राम ८.१)] हे कुरु श्रेष्ठ

कुरुष्व [९.२७ (√ कृ तना A लोट २.१)] (तू) कर

कुरुसत्तम [४.३१ सं(राम ८.१) (कुरूणां सत्तम)] हे कुरु सत्तम (श्रेष्ठ)

कुरून् [१.२५ सं(गुरु २.३)] कौरवों को

कुर्यात् [३.२५ (√ कृ तना A/P विधि ३.१)] करना चाहिए

कुर्याम् [३.२४ (√ कृ भ्वा A/P विधि १.१)] यदि (मैं) करूँ

कुर्वन् [४.२१, ५.७, १३, १२.१०, १८.४७ वि.(ध्यायत् १.१) (√ कृ तना P + शतृ)] करते हुए, काम करते हुए

कुर्वन्ति [३.२५, ५.११ (√ कृ तना + A/P लट् ३.३)] (वे) करते हैं

कुर्वाणः [१८.५६ सं(राम १.१) (√ कृ तना + शानच)] करते हुए

कुलक्षयकृतम् [१.३८, ३९ सं(राम २.१) (कुलस्य क्षयेण कृतम्)] कुल के नाश से होने वाला

कुलक्षये [१.४० सं(राम ७.१) (कुलस्य क्षये)] कुल के नाश में

कुलघ्नानाम् [१.४२, ४३ वि(राम ६.३)] कुल के हत्यारों का

कुलधर्माः [१.४०, ४३ सं(राम १.३) (कुलस्य धर्माः)] कुल के धर्म, परम्पराएं

कुलम् [१.४० सं(फल २.१)] कुल, परिवार

कुलस्त्रियः [१.४१ सं(स्त्री १.३)] कुल की स्त्रियां

कुलस्य [१.४२ सं(फल ६.१)] कुल का

कुले [६.४२ सं(फल ७.१)] कुल में

कुशले [१८.१० सं(फल ७.१)] सुखकर, रुचिकर (में)

कुसुमाकरः [१०.३५ सं(राम १.१) (कुसुमानाम् आकरः)] फूलों की खदान, बसंत ऋतु

कूटस्थः [६.८, १५.१६ वि(राम १.१)] अचल,, दृढ स्थिर, निर्विकार, माया के भीतर स्थिर-स्थित, शिखर या चोटी पर अवस्थित या खड़ा हुआ, सर्वोपरि

कूटस्थम् [१२.३ वि(फल २.१)] दृढ़ स्थिर, पर्वत सा अचल

कूर्मः [२.५८ सं(राम १.१)] कछुआ

कृतकृत्यः [१५.२० सं(राम १.१) (कृतं कृत्यं येन सः)] वह जिसके द्वारा काम हुआ है, जिसका काम सिद्ध हो चुका है, कृतार्थ।

कृतनिश्चयः [२.३७ वि(राम १.१ (कृतः निश्चयः येन सः)] वह जिसने निश्चय किया है, निश्चय करके

कृतम् [४.१५, १७.२८, १८.२३ सं(फल १.१) (√कृ तना A/P + क्त)] किया (था)

कृतांजलिः [११.१४, ३५ सं(हरि १.१) (कृतः अंजलिः येन सः)] वह जिसके द्वारा हाथ जोड़ना हुआ है, हाथ जोड़कर

कृतान्ते [१८.१३ सं(राम ७.१) (कृतस्य अन्तः यत्र तस्मिन्)] उसमें जहां कर्म का अन्त है, जिसमें कर्म की समाप्ति है, कृत (सत) युग के अन्त में

कृतेन [३.१८ सं(राम ३.१) (√कृ तना. A/P + क्त)] कर्म से, कर्म करने से

कृत्वा [२.३८, ४.२२, ५.२७, ६.१२, २५, ११.३५, १८.८, ६८ (अ.) (√कृ. तना. P + क्त्वाच्)] करके

कृत्स्नकर्मकृत् [४.१८ वि(मरूत् १.१) (कृत्स्नं कर्म करोति यः सः)] वह जो सम्पूर्ण कर्म करता है।

कृत्स्नम् [१.४०, ७.२९ वि(फल २.१)] सम्पूर्ण

कृत्स्नवत् [१८.२२ (अ.)] पूर्ण के समान, पूर्ण जैसा, जैसे यही सब है

कृत्स्नवित् [३.२९ वि(मरुत् १.१)] सब जानने वाले, सर्वज्ञ

कृत्स्नस्य [७.६ वि(फल ६.१)] संपूर्ण (का)

कृपः [१.८ सं(राम १.१)] कृपाचार्य

कृपणाः [२.४९ वि(राम १.३)] दयनीय, दया पात्र

कृपया [१.२८, २.१ सं(विद्या ३.१)] करुणा से, अनुकम्पा से

कृषिगोरक्ष्यवाणिज्यम् [१८.४४ सं(फल १.१) (कृषिः च गोरक्ष्यं च वाणिज्यं च)] कृषि और गोरक्षा और व्यापार

कृष्ण [१.२८, ३२; ४१; ५.१, ६.३४, ३७, ३९; ११.४१, १७.१ सं(राम ८.१)] हे कृष्ण

कृष्णः [८.२५, १८.७८ सं(राम १.१)] कृष्णपक्ष, कृष्ण

कृष्णम् [११.३५ सं(राम २.१)] कृष्ण को

कृष्णात् [१८.७५ सं(राम ५.१)] कृष्ण से

के [१२.१ सर्व(किम् पु १.३)] कौन

केचित् [११.२१, २७, १३.२४ सर्व.अनि(किम् पुं. + चित् १.३)] कुछ लोग, कोई-कोई

केन [३.३६ सर्व(किम् पु/नपु ३.१)] किस से

केवलम् [४.२१, १८.१६ (अ.)] केवल, अकेले

केवलैः [५.११ वि(फल ३.३)] केवल

केशव [१.३१, २.५४, ३.१, १०.१४ सं(राम ८.१)] हे केशव

केशवस्य [११.३५ सं(राम ६.१)] केशव के

केशवार्जुनयोः [१८.७६ सं(राम ६.२) (केशवस्य च अर्जुनस्य च)] केशव और अर्जुन का

केशिनिषूदन [१८.१ सं(राम ८.१) (केशिनः निषूदनः)] हे केशि निषूदन, केशी दैत्य का नाश करने वाले

केषु [१०.१७ सर्व(किम् पु ७.३)] किन में,

कैः [१.२२, १४.२१ सर्व(किम् पु ३.३)] किनके साथ, कैसे, किन (चिन्हों के द्वारा)

कौन्तेय [२.१४, ३७... सं(राम ८.१)] हे कौन्तेय, हे कुन्ती पुत्र

कौन्तेयः [१.२७ सं(राम १.१)] कौन्तेय

कौमारम् [२.१३ सं(फल १.१)] बचपन, बाल्यावस्था, शैशव

कौशलम् [२.५० सं(फल २.१)] चतुराई, प्रवीणता, कुशलता

क्रतुः [९.१६ सं(गुरु १.१)] चढ़ावा, नैवेद्य, समर्पण, यज्ञ का संकल्प, श्रौतयज्ञ (जो वेद विधि से किया जाता है)

क्रियते [१७.१८, १९, १८.९, २४ (√कृ तना A/P - कर्मणि लट् ३.१)] किया जाता है

क्रियन्ते [१७.२५ (√ कृ तना P + कर्मणि A लट् ३.३)] की जाती हैं

क्रियमाणानि [३.२७, १३.२९ (√ कृ तना A/P + वि(फल १.३)] किए जाते हुए

क्रियाभिः [११.४८ सं(विद्या ३.३)] कर्मों द्वारा

क्रियाविशेषबहुलाम् [२.४३ वि(विद्या २.१) (क्रियाणां विशेषाः बहुलाः यस्यां ताम्)] वह जिनके कर्मों की अनेक विविधताएं है

क्रूरान् [१६.१९ वि(राम २.३)] क्रूर, निर्दय, निष्ठुर, निर्मम

क्रोधः [२.६२, ३.३७, १६.४, २१ सं(राम १.१)] क्रोध रोष, कोप

क्रोधम् [१६.१८, १८.५३ सं(राम २.१)] क्रोध, रोष (को)

क्रोधात् [२.६३ सं(राम ५.१)] क्रोध से

क्लेदयन्ति [२.२३ (√क्लिद् चुरा P लट् ३.३)] गीला करना, भिगोता है

क्लेशः [१२.५ सं(राम १.१)] कष्ट, दुःख

क्लैब्यम् [२.३ सं(फल २.१)] दुर्बलता को, असमर्थता को, नपुंसकता को

क्वचित् [१८.१२ (अ.)] कहीं भी, तनिक भी

क्षणम् [३.५ सं(फल २.१)] एक पल, क्षण भर (को)

क्षत्रियस्य [२.३१ सं(राम ६.१)] क्षत्रिय का, क्षत्रिय के लिए

क्षत्रियाः [२.३२ सं(राम १.३)] क्षत्रियजन

क्षमा [१०.४, ३४, १६.३ सं(विद्या १.१)] क्षमा

क्षमी [१२.१३ वि(शशिन् १.१)] क्षमावान्

क्षयम् [१८.२५ सं(राम २.१)] हानि

क्षयाय [१६.९ सं(राम ४.१)] विनाश के लिए

क्षरः [८.४, १५.१६ वि(राम १.१)] नाशवान्, ध्वंस्य

क्षरम् [१५.१८ वि(राम २.१)] नाशवान् , नष्ट होने वाले (को)

क्षात्रम् [१८.४३ (√क्षम् + णिच् भ्वा. A लट् १.१) वि(फल १.१)] क्षत्रिय के

क्षान्तिः [१३.७, १८.४२ सं(मति १.१)] क्षमा

क्षामये [११.४२ (√क्षम् + णिच् भ्वा. A लट् १.१)] (मैं) क्षमा के लिए विनती करता हूं

क्षिपामि [१६.१९ (√क्षिप् तुदा P लट् १.१)] (मैं) फेंकता हूं, भेजता हूं

क्षिप्रम् [४.१२, ९.३१ (अ.)] तुरंत, शीघ्र, झट

क्षीणकल्मषाः [५.२५ सं(राम १.३) (क्षीणनि कल्मषाणि येषां ते)] वे जिनके पाप कम होगए हैं (नष्ट हो गए, मिट गए हैं)

क्षीणे [९.२१ सं(फल ७.१)] क्षीण होने पर, समाप्त होने पर

क्षुद्रम् [२.३ वि(फल २.१)] नीच, तुच्छ, निकृष्ट

क्षेत्रज्ञः [१३.१ सं(राम १.१)] क्षेत्र को जानने वाला, शरीर, चैतन्य और आत्मा, को जानने वाला

क्षेत्रज्ञम् [१३.१, २ सं(राम २.१)] क्षेत्र को जानने वाले (को)

क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोः [१३.२, ३४ सं(राम ६.२) (क्षेत्रस्य च क्षेत्रज्ञस्य च)] क्षेत्र के, और क्षेत्रज्ञ के

क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात् [१३.२६ सं(राम ५.१) (क्षेत्रस्य च क्षेत्रज्ञस्य च संयोगात्)] क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ के संयोग से, प्रकृति और पुरुष के संयोग से

क्षेत्रम् [१३.१, ३, ६, १८, ३३ सं(फल २.१)] क्षेत्र, (चेतना का खेत, शरीर)

क्षेत्री [१३.३३ सं(शशिन् १.१)] क्षेत्र का स्वामी; क्षेत्र में रहने वाला, क्षेत्रज्ञ

क्षेमतरम् [१.४६ वि(फल १.१)] अधिक अच्छा, अधिक कल्याण कारक

ख

खम् [७.४ सं(फल १.१)] आकाश

खे [७.८ सं(फल ७.१)] आकाश में

ग

गच्छ [१८.६२ (√गम् भ्वा P लोट् २.१)] जाना, जा

गच्छति [६.३७, ४० (√गम् भ्वा P लट् ३.१)] (वह) जाता है

गच्छन् [५.८ वि(ध्यायत् १.१) (√गम् भ्वा P + शतृ)] जाते हुए, जाता हुआ

गच्छन्ति [२.५१; ५.१७; ८.२४ ; १५.५ (√गम् भ्वा P लट् ३.३)] (वे) जाते हैं, प्राप्त करते हैं

गजेन्द्राणाम् [१०.२७ सं(राम ६.३)] बडे हाथियों में

गतः [११.५१ सं(राम १.१) (गम् गच्छ भ्वा. P + क्त)] गया हुआ, पाया हुआ

गतरसम् [१७.१० वि(फल २.१) (गतः रसः यस्य तत्)] वह जिसका स्वाद चला गया है, रस हीन

गतव्यथः [१२.१६ सं(राम १.१) (गता व्यथा यस्य सः) वह जिसका दुःख चला गया है, पीड़ा हीन

गतसंदेहः [१८.७३ सं(राम १.१) (गतः संदेहः यस्य सः)] वह जिसका सन्देह दूर हो गया है, मिट गया है

गतसंगस्य [४.२३ वि(राम ६.१) (गतः संगः यस्य तस्य)] जिसकी आसक्ति चली गई है, उसका

गताः [८.१५, १४.१, १५.४ सं(राम १.३) (√ गम् भ्वा. P + क्त)] गए हुए, प्राप्त हुए

गतागतम् [९.२१ सं.(फल २.१) (गतंच आगतमंच)] जाना और आना, आवागमन को

गतासून् [२.११ सं(गुरु २.३) (गताः असवः येषां तान्)] वे जिनके जीवन श्वास चले गए हैं- (मृतकों को)

गतिः [४.१७, ९.१८, १२.५ सं(मति १.१)] मार्ग, पथ, अन्तिम ध्येय, लक्ष्य

गतिम् [६.३७; ४५; ७.१८; ८.१३, २१; ९.३२, १३.२८; १६.२०, २२, २३ सं(मति २.१)] गति को, अवस्था को, लक्ष्य, ध्येय

गती [८.२६ सं(मति १.२)] (दो) मार्ग, पथ

गत्वा [१४.१५, १५.६ (अ.) (√ गम् भ्वा P + क्त्वाच्)] जाकर, प्राप्त होकर

गदिनम् [११.१७, ४६ वि(शशिन् २.१)] गदाधारी

गन्तव्यम् [४.२४ वि(फल १.१) (√ गम् भ्वा. P + तव्य)] प्राप्त करने योग्य, प्राप्त करना चाहिए

गन्तासि [२.५२ (√ गम् भ्वा P लुट् + असि √ अस् लोट २.१)] (तू) जाएगा

गन्धः [७.९ सं(राम १.१)] गंध, वास

गन्धर्वयक्षासुरसिद्धसंघाः [११.२२ सं(राम १.३) (गन्धर्वाणां च यक्षाणां च असुराणां च सिद्धानां च संघाः)] गन्धर्व, यक्ष, असुर और सिद्ध लोगों के समूह-संघ

गन्धर्वाणाम् [१०.२६ सं(राम ६.३)] गन्धर्वों में

गन्धान् [१५.८ सं(राम २.३)] सुगन्धियां

गमः [२.३ (√ गम् P लुङ् लकार २.१)] (तू) गया (यद्यपि परस्मैपदी गम् धातु का लुङ् लकार (सामान्य भूत) मध्यम पुरुष एक वचन का रूप 'अगमः' है, परन्तु यहां 'मा स्म गमः' में निषेधात्मक होने से 'अ' का लोप है - पाणिनि। 'तू नहीं गया का 'लोट लकार' (आज्ञार्थक) में अर्थ होगा 'तू मत जा'

गम्यते [५.५ (√ गम् भ्वा A कर्म लट् ३.१)] पहुँचा जाता है

गरीयः [२.६ सं(मनस् १.१)] अधिक महत्त्व पूर्ण, अधिक श्रेष्ठ, आवश्यक

गरीयसे [११.३७ वि(गरीयस् ४.१)] अधिक महान् (को) अधिक बड़े को

गरीयान् [११.४३ गरीयस् (१.१)] अधिक महत्त्व के, अधिक बड़े, (से) बड़े है)

गर्भः [३.३८ सं(राम १.१)] गर्भ, भ्रूण

गर्भम् [१४.३ सं(राम २.१)] गर्भ को, अंकुर को

गवि [५.१८ सं(गो ७.१)] गाय में

गहना [४.१७ वि(विद्या १.१)] गूढ़, गहन

गाण्डीवम् [१.३० सं(फल १.१)] गाण्डीव (अर्जुन का धनुष)

गात्राणि [१.२९ सं(फल १.३] अंग

गाम् [१५.१३ सं(गो २.१)] पृथ्वी

गायत्री [१०.३५ सं(नदी १.१)] गायत्री मन्त्र, एक वैदिक छन्द

गिराम् [१०.२५ सं(गिर् ६.३)] वाणियों में

गीतम् [१३.४ (गै. + क्त कर्म)] गाया गया है

गुडाकेश [१०.२०, ११.७ सं(राम ८.१)] हे गुडाकेश

गुडाकेशः [२.९ सं(राम १.१)] निद्रा के स्वामी, निद्रा को जीतने वाला, अर्जुन

गुडाकेशेन [१.२४ सं(राम ३.१) (गुडा कायाः ईशेन)] निद्रा के स्वामी से

गुणकर्मविभागयोः [३.२८ सं(राम ६.२) (गुणानां च कर्मणां च विभागोः)] गुणों के और कर्मों के (दो) विभागों का, गुण तथा कर्म के विभाजन का

गुणकर्मविभागशः [४.१३ (अ.) (गुणानां च कर्मणां च विभागशः)] गुणों के और कर्मों के विभाजन से (विभाग के अनुसार)

गुणकर्मसु [३.२९ सं(कर्मन् ७.३) (गुणानां कर्मसु)] गुणों के कामों में

गुणतः [१८.२९ (अ.)] गुणों के अनुसार

गुणप्रवृद्धाः [१५.२ सं(विद्या १.३) (गुणैः प्रवृद्धाः)] गुणों द्वारा पोषित, गुणों से वृद्धि को प्राप्त

गुणभेदतः [१८.१९ (अ.) (गुणानां भेदतः)] गुणों के भेद से

गुणभोक्तृ [१३.१४ वि(कर्तृ १.१) (गुणानां भोक्तृ)] गुणों को भोगने वाला

गुणमयी [७.१४ वि(नदी १.१)] गुण युक्त, गुणोंवाली

गुणमयैः [७.१३ वि(राम ३.३)] गुणयुक्त, गुणोंवाली

गुणसंख्याने [१८.१९ सं(फल ७.१) (गुणानां संख्याने)] गुणों के वर्णन में, गुण संख्या के शास्त्र में, (गणना में)

गुणसंमूढाः [३.२९ वि(राम १.३) (गुणैः संमूढाः)] गुणों से मोहित, गुणों से धोखा खाए हुए

गुणसंगः [१३.२१ सं(राम १.१) (गुणेषु संगः)] गुणों में आसक्ति

गुणाः [३.२८, १४.५, २३ सं(राम १.३)] गुण (बहुवचन)

गुणातीतः [१४.२५ वि(राम १.१) (गुणान् अतीतः)] गुणों को पार करने वाला, गुणों से परे चले जाने वाला गुणातीत

गुणान् [१३.१९, २१, १४.२०, २१, २६ सं(राम २.३)] गुणों को

गुणान्वितम् [१५.१० वि(राम २.१)(गुणैः अन्वितम्)] गुणों से जुड़े हुए, गुणों के साथ-साथ रहते हुए

गुणेभ्यः [१४.१९ सं(राम ५.३)] गुणों से, (तीनों] गुणों के अतिरिक्त

गुणेषु [३.२८ सं(राम ७.३)] गुणों में

गुणैः [३.५, २७, १३.२३, १४.२३, १८.४०, ४१ सं(राम ३.३)] गुणों से, गुणों सहित (गुणातीत हैं)

गुरुः [११.४३ सं(गुरु १.१)] गुरु

गुरुणा [६.२२ वि(गुरु ३.१)] भारी से

गुरून् [२.५ सं(साधु २.३)] गुरुजनों को

गुह्यतमम् [९.१, १५.२० वि(फल २.१)] सबसे गुप्त, अति गोपनीय

गुह्यतरम् [१८.६३ वि(फल १.१)] अधिक गुप्त

गुह्यम् [११.१, १८.६८, ७५ वि(फल १.१)] गोपनीय, गुप्त, रहस्य

गुह्यात् [१८.६३ वि[फल ५.१)] गुप्त से

गुह्यानाम् [१०.३८ वि[फल ६.३)] गोपनीय बातों में

गृणन्ति [११.२१ (√गृ क्या P लट् ३.३)] उच्चारण करते हैं

गृहीत्वा [१५.८, १६.१० (अ) (√ग्रह् क्या P + क्त्वाच्)] कस कर पकड़ लेने पर

गृह्णान् [५.९ वि.(ध्यायत् १.१)] (√ग्रह् क्या A/P शतृ) पकड़ते हुए

गृह्णाति [२.२२ (√ ग्रह् क्या लट् ३.१)] लेता है, धारण करता है

गृह्यते [६.३५ (√ग्रह् क्या A लट् ३.१)] रोका जाता है, वश में किया जा सकता है

गेहे [६.४१ सं(राम ७.१)] घर में

गोविन्द [१.३२ सं(राम ८.१)] हे गोविन्द

गोविन्दम् [२.९ सं(राम २.१)] गोविन्द को

ग्रसमानः [११.३० वि(राम १.१)] कस कर पकड़ते हुए (ग्रसन = भक्षण, निगलना, ग्रास, ग्रहण, बुरी तरह पकड़ना)

ग्रसिष्णु [१३.१६ सं(बहु) १.१)] निगलते हुए, संहार करते हुए, संहार कर्त्ता, भक्षण कर्त्ता

ग्लानिः [४.७ सं(मति १.१)] क्षय, अवनति, ह्रास, पतन

घ

घातयति [२.२१ (√हन् अदा P + णिच् चुरा P लट् ३.१)] (वह) वधका कारण होता है, कैसे किसी को मरवाता है

घोरम् [११.४९, १७.५ वि(फल २.१)] भयंकर, घोर, विकराल

घोरे [३.१ वि(फल ७.१)] भयानक, भयंकर

घोषः [१.१९ सं(राम १.१)] कोलाहल

घ्नतः [१.३५ वि(राम १.१)] (√हन् अदा + क्त मारते हुए, मार डालते हुए

घ्राणम् [१५.९ सं(फल १.१)] नाक

च

च [१.१..(अ.)] और

चक्रम् [३.१६ सं(फल २.१)] चक्र, चक्कर, चाक

चक्रहस्तम् [११.४६ वि.(राम २.१) (चक्रम् हस्ते यस्य तम्)] उसको जिसके हाथ में चक्र है

चक्रिणम् [११.१७ वि(शशिन् २.१)] चक्र धारी

चक्षुः [५.२७, ११.८, १५.९ सं(धनुस् १.१)] दृष्टि को, नेत्र, आंख

चंचलत्वात् [६.३३ सं(फल ५.१)] चंचलता के कारण, अधीरता के कारण

चंचलम् [६.२६, ३४ वि(फल १.१)] चंचल, डाँवाडोल, अशान्त, बेचैन अधीर

चतुर्भुजेन [११.४६ सं(राम ३.१)] चतुर्भुज (से), चार हाथ वाले से

चतुर्विधम् [१५.१४ वि(फल २.१)] चार प्रकार का, (भोज्य- खाद्य = खाया जाने वाला, पेय = पीया जाने वाला, चोष्य = चूसा जाने वाला, लेह्य = चाटा जाने वाला

चतुर्विधाः [७.१६ वि(राम १.३)] चार प्रकार के

चत्वारः [१०.६ (संख्या वि पु प्रथमा)] चार

चन्द्रमसि [१५.१२ सं(चन्द्रमस् ७.१)] चन्द्रमा में

चमूम् [१.३ सं(चमू २.१)] सेना (को)

चरताम् [२.६७ वि(ध्यायत् ६.३) (√चर् भ्वा P + शतृ)] गतिमान्, चलता, भ्रमण करता

चरति [२.७१, ३.३६ (√चर् भ्वा P लट् ३.१)] विचरता है

चरन्ति [८.११ (√चर् भ्वा P लट् ३.३)] (वे) आचरण करते हैं

चरन् [२.७१, ३.३६ सं(ध्यायत् १.१) (√चर् भ्वा + शतृ)] पीछे चलते हुए

चरम् [१३.१५ सं(फल १.१)] चल,गतिमान, जंगम

चराचरम् [१०.३९ वि(फल १.१) (चरं च अचरं च)] चर और अचर, स्थावर-जंगम

चराचरस्य [११.४३ सं(राम ६.१)] चर और अचर का, जंगम और जड़(स्थावर) का

चलति [६.२१ (√चल् भ्वा P लट् ३.१)] चलता है, चलायमान होता है

चलम् [६.३५, १७.१८ वि(फल १.१)] चंचल, अस्थिर

चलितमानसः [६.३७ वि(राम १.१) (चलितं मानसं यस्य सः)] वह जिसका मन भटक गया है, चंचल मन वाला

चातुर्वर्ण्यम् [४.१३ सं(फल १.१)] चातुर्वर्ण, चारों जातियाँ

चान्द्रमसम् [८.२५ वि(फल २.१) (चन्द्रमसः इदम्)] यह चन्द्रमा की

चापम् [१.४७ सं(फल २.१)] धनुष

चिकीर्षुः [३.२५ वि.(गुरु १.१) (√कृ तना A/P + सन् + उ)] करने की इच्छा करता हुआ

चित्तम् [६.१८, २०, १२.९ सं(फल १.१)] मन, चित्त

चित्ररथः [१०.२६ सं(राम १.१)] चित्ररथ

चिन्तयन्तः [९.२२ सं(ध्यायत् १.३) (√चिन्त् चुरा P + शतृ)] चिन्तन (ध्यान) करते हुए

चिन्तयेत् [६.२५ (√चिन्त् चुरा P विधि ३.१)] उसे चिन्तन करना चाहिए

चिन्ताम् [१६.११ सं(विद्या २.१)] चिन्ता (को)

चिन्त्यः [१०.१७ वि(राम १.१) (√चिन्त् चुरा P + य + ण्यत्)] चिंतन करने योग्य

चिरात् [१२.७ (क्रि. वि. अ.)] देर से, (न चिरात् = शीघ्रता से, तुरन्त)

चिरेण [५.६ (क्रि. वि.अ.)] बहुत देर बाद, विलम्ब करके

चूर्णितैः [११.२७ वि(राम ३.३)] चूर चूर हुए

चेकितानः [१.५ सं(राम १.१)] चेकितान

चेत् [२.३३.. (अ.)] यदि, क्या, कि

चेतना [१०.२२, १३.६ सं(विद्या १.१)] चेतन, प्राण शक्ति, संज्ञा, सजीवता

चेतसा [८.८, १८.५७, ७२ सं(मनस् ३.१)] चित्त से, मन से

चेष्टते [३.३३ (√चेष्ट् भ्वा A लट् ३.१)] व्यवहार करता है, बर्तता है

चेष्टाः [१८.१४ सं(विद्या १.३)] संकल्प, क्रियाएं, प्रयत्न, अंग की वह गति जिससे मन के भाव प्रकट हों

चैलाजिनकुशोत्तरम् [६.११चैलं च अजिनं च कुशाः च उत्तरं यस्मिन् तत्)] वह जिसमें क्रमशः वस्त्र और चर्म और दर्भ (बिछा हो), कुशा मृगछाला और वस्त्र एक पर एक बिछाए

च्यवन्ति [९.२४ (√च्यु भ्वा P लट् ३.३)] गिरते हैं

छ

छन्दसाम् [१०.३५ सं(मनस् ६.३)] छन्दों में

छन्दांसि [१५.१ सं(मनस् १.३)] वेद, स्तोत्र (बहुवचन)

छन्दोभिः [१३.४ सं(मनस् ३.३)] छन्दों द्वारा

छलयताम् [१०.३६ वि(ध्यायत् ६.३)] छल कपटियों में, धोखेबाज, प्रवंचक

छित्वा [४.४२, १५.३ (अ.) (√छिद् रुधा P + क्त्वाच्)] चीर कर, काट कर, विदीर्ण करके

छिन्दन्ति [२.२३ (√छिद् रुधा P लट् ३.३)] चीरना, फाड़ना, काटना

छिन्नद्वैधाः [५.२५ वि(राम १.३) (छिन्नं द्वैधं येषां ते)] वे जिन के द्वंद्व मिट गए है, जिनकी द्विधावृत्ति नष्ट हो गई है (द्वित्व = दो का भाव, यह या वह)

छिन्नसंशयः [१८.१० वि(राम १.१) (छिन्नः संशयः यस्य सः)] वह जिसका संशय मिट गया है- नष्ट हो गया है

छिन्नाभ्रम् [६.३८ सं(फल २.१) (छिन्नम् अभ्रम्)] छिन्न भिन्न हुआ, बादल

छेत्ता [६.३९ वि(धातृ १.१)] दूर करने वाला, सुलझाने वाला

छेत्तुम् [६.३९ (√छिद् रुधा P तुमुन्)] दूर करना, खण्ड खण्ड करना

ज

जगत् [७.५, १३; ९.४, १०; १०.४२; ११.७, १३, ३०, ३६; १५.१२; १६.८ सं(जगत् १/२.१)] संसार

जगतः [७.६, ८.२६, ९.१७, १६.९ सं(जगत् ६.१)] संसार (का)

जगत्पते [१०.१५ सं(हरि ८.१) (जगतः पते)] हे जगत् के स्वामी

जगन्निवास [११.२५, ३७, ४५ सं(राम ८.१) (जगतः निवास)] हे जगत् के आश्रयरूप

जघन्यगुणवृत्तिस्थाः [१४.१८ सं(राम १.३) (जघन्यस्य गुणस्य वृत्तौ स्थिताः)] निकृष्ट गुणों की रीतियों में स्थित ओछे गुणवाले, नीच गुणावलम्बी

जनः [३.२१ सं(राम १.१)] लोग

जनकादयः [३.२० (जनकः आदिः येषां ते)] वे जिनका आरम्भ जनक से होता है, जनक इत्यादि

जनयेत् [३.२६ (√जन् दिवा A + णिच् चुरा P विधि ३.१)] उत्पन्न करना चाहिए

जनसंसदि [१३.१० (जनानां संसदि)] मनुष्यों की भीड़ में, जनसमूह में

जनाः [७.१६, ८.१७, २४; ९.२२; १६.७; १७.४, ५ सं(राम १.३)] लोग, मनुष्य

जनाधिपाः [२.१२ सं(राम १.३) (जनानाम् अधिपाः)] जनता के स्वामी लोग, राजा लोग

जनानाम् [७.२८ सं(राम ६.३)] मनुष्यों का, लोगों का

जनार्दन [१.३६, ३९ ४४, ३.१; १०.१८, ११.५१ सं(राम ८.१)] हे जनार्दन

जन्तवः [५.१५ सं(गुरु १.३)] प्राणी बहुवचन) लोग

जन्म [२.२७, ४.४, ९; ६.४२; ८.१५, १६ सं(जन्मन् १.१)] जन्म

जन्मकर्मफलप्रदाम् [२.४३ (जन्म एव कर्मणः फलम् (इव) प्रददाति ताम्)] वह जो देती है कर्मफल केवल (पुनर) जन्म, जन्म मरण रूपी कर्म फल देने वाली

जन्मनाम् [७.१९ सं(जन्मन् ६.३)] जन्मों के

जन्मनि [१६.२० सं(जन्मन् ७.१)] जन्म में

जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः [२.५१ वि(राम १.३) (जन्मनः बन्धात् विनिर्मुक्ताः)] जन्म बन्धन से मुक्त हुए, जन्म के बन्धन से छूटकर

जन्ममृत्युजरादुःखैः [१४.२० सं(राम ३.३) (जन्मनः च मृत्योः च जरायाः च दुःखैः)] जन्म के, मृत्यु के और वृद्धावस्था के दुःखों (से)

जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुद - र्शनम् [१३.८ सं(फल १.१) (जन्म च मृत्युः च जरा च व्याधिः च तेषां दुखस्य च दोषस्य च अनुदर्शनम्)] जन्म, मरण, जरा, व्याधि और उनके दुःख, दोष को देखना

जन्मानि [४.५ सं(जन्मन् १.३)] जन्म (बहुवचन)

जपयज्ञः [१०.२५ सं(राम १.१) (जपस्य यज्ञः)] जपयज्ञ, जपनामकयज्ञ

जयः [१०.३६ सं(राम १.१)] जय, विजय

जयद्रथम् [११.३४ सं(राम २.१)] जयद्रथ को

जयाजयौ [२.३८ सं(राम २.९) (जयः च अजयः च)] जय और पराजय, हार जीत

जयेम [२.६ (√जि भ्वा. P विधिलिङ् १.३)] (हम) जीतेंगे (हम) विजय प्राप्त करेंगे

जयेयुः [२.६ (√जि भ्वा. P विधिलिंग ३.३)] (वे) जीतेंगे; (वे) विजय प्राप्त करेंगे

जरा [२.१३ सं(विद्या १.१)] वृद्धावस्था

जरामरणमोक्षाय [७.२९ सं(राम ४.१) जरायाः च मरणात् च मोक्षाय)] वृद्धावस्था और मृत्यु से मुक्त होने के लिए

जहाति [२.५० (√हा जुहो. P लट् ३.१)] (वह) फेंक देता है, त्यागता है

जहि [३.४३, ११.३४ (√हा जुहो P लोट् २.१)] (तू) मार डाल

जागर्ति [२.६९ (√जागृ अदा P लट् ३.१)] जागता है

जाग्रतः [६.१६ वि.(ध्यायत् ६.१) (√जागृ अदा. P + शतृ)] जागने वाले की

जाग्रति [२.६९ (√जागृ अदा P लट् ३.३)] जागते हैं

जातस्य [२.२७ वि.(राम ६.१) (√जन् दिवा A + क्त)] जन्मे हुए का

जाताः [१०.६ (वि राम १.३)] (√जन् दिवा A + क्त उत्पन्न हुए

जातिधर्माः [१.४३ सं(राम १.३) (जातेः धर्माः)] जातिधर्म, जाति की रीतिप्रथाएं

जातु [२.१२, ३.५, २३ (अ.)] कभी भी, किसी भी समय

जानन् [८.२७ वि.(ध्यायत् १.१) (√ज्ञा क्या. P + शतृ)] जानता हुआ

जानाति [१५.१९ (√ज्ञा क्र्या P लट् ३.१)] जानता है

जाने [११.२५ (√ज्ञा क्या A लट् १.१)] (मैं) जानता हूं

जायते [१.२९, ४१, २.२०, १४.१५

(√जन् दि. A लट् ३.१)] उड़ता है, होता है, जन्म लेता है

जायन्ते [१४.१२, १३ (√(जन् दि. A लट् ३.३)] उतपन्न होते हैं, उदय होते हैं

जाह्नवी [१०.३१ सं(नदी १.१) (जा ह्नोः अपत्यं स्त्री)] जह्णु की पुत्री, गंगा

जिगीषताम् [१०.३८ सं(ध्यायत् ६.३) (√जि भ्वा P + सन् + शातृ)] विजय के जिज्ञासुओं में

जिघ्रन् [५.८ वि.(ध्यायत् १.१) (√घ्रा भ्वा P + शातृ)] सूंघता हुआ

जिजीविषामः [२.६ (√जीव् भ्वा P + सन् लट् १.३)] (हम) जीना चाहते हैं

जिज्ञासुः [६.४४, ७.१६ वि(गुरु १.१)] जानने की इच्छा वाला, ज्ञान चाहने वाला

जितः [५.१९, ६.६ वि.(राम १.१) (√जि भ्वा P + क्त) जीता हुआ

जितसंगदोषाः [१५.५ सं(राम १.३) (जिताः संगस्य दोषाः यैः ते)] वे जिनके द्वारा आसक्ति के दोष, विजित हैं जिन्होंने संग दोष जीत लिए हैं

जितात्मा [१८.४९ सं(आत्मन् १.१)] वह जिसने अपने को जीत लिया है

जितात्मनः [६.७ सं(आत्मन् ६.१) (जितः आत्मा यस्य तस्य)] जिसने अपने को जीत लिया हे, उसका

जितेन्द्रियः [५.७ वि(राम १.१) (जितानि इन्द्रियाणि येन सः)] वह जिसके द्वारा इन्द्रियाँ जीती गई हैं, जिसने इन्द्रिय को, जीता है, वह

जित्वा [२.३७, ११.३३ (अ.)] जीत कर

जीर्णानि [२.२२ वि(फल १.३)] जीर्ण, पुराने हुए

जीवति [३.१६ (√जीव् भ्वा P लट् ३.१)] जीता है, जीवित है

जीवनम् [७.९ सं(फल १.१)] जीवन, प्राण

जीवभूतः [१५.७ वि(राम १.१)] जीव होकर, जीव रूप में

जीवभूताम् [७.५ वि(विद्या २.१)] जीवन के मूल तत्त्व को, जीवात्मा को

जीवलोके [१५.७ सं(राम ७.१) (जीवानां लोके)] जीव लोक में, मनुष्य लोक में

जीवितेन [१.३२ सं(फल ३.१)] जीवन से

जुहोषि [९.२७ (√हु P लट् २.१)] (तू) अर्पण करता है, होम हवन करता है

जुह्वति [४.२६, २७, २९, ३० (√ हु जुहो P लट् ३.३)] यज्ञ करते हैं, हवन करते हैं, होम करते हैं

जेतासि [११.३४ (जि. भ्वा. P लुट् २.१)] (तू) विजयी होगा, जीतेगा

जोषयेत् [३.२६ (√ जुष् चुरा P विधि ३.१)] (दूसरों की) रुचि कराना चाहिए

ज्ञातव्यम् [७.२ सं(फल १.१)] जानने योग्य, जो जानना चाहिए

ज्ञातुम् [११.५४ (√ज्ञा क्या A/P + तुमुन्)] जानने के लिए

ज्ञातेन [१०.४२ वि(फल ३.१)] जानने से, जानकर

ज्ञात्वा [४.१५, १६, ३२, ३५; ५.२९; ७.२; ९.१, १३; १३.१२, १४.१; १६.२४; १८.५५ (अ.) (√ ज्ञा. A/P + क्त्वाच्)] जान कर, समझकर कर

ज्ञानगम्यम् [१३.१७ वि(फल १.१) (ज्ञानेन गम्यम्)] जो ज्ञान से जाना जाय, ज्ञान से प्राप्त किया जाय

ज्ञानचक्षुषः [१५.१० (वि. १.३) (ज्ञानम् चक्षुः येषां ते)] वे जिनकी आंख ज्ञान है, ज्ञान चक्षु वाले, ज्ञानी

ज्ञानचक्षुषा [१३.३४ सं(धनुस् ३.१) (ज्ञानस्य चक्षुषा)] ज्ञान चक्षुसे, ज्ञान की आंखों से

ज्ञानतपसा [४.१० सं(मनस् ३.१) (ज्ञानस्य तपसा)] ज्ञान की तपस्या से, ज्ञानाग्नि से

ज्ञानदीपिते [४.२७ वि(राम ७.१) (ज्ञानेन दीपिते)] ज्ञान से प्रकाशित हुए, ज्ञान से प्रकाश में (आए)

ज्ञानदीपेन [१०.११ सं(राम ३.१) (ज्ञानस्य दीपेन)] ज्ञान के प्रकाश से

ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः [५.७ वि(राम १.३) (ज्ञानेन निर्धूतानि कल्मषाणि येषां ते)] वे जिनके पाप धुल गए हैं, ज्ञान से

ज्ञानप्लवेन [४.३६ सं(फल ३.१) (ज्ञानस्य प्लवेन)] ज्ञान की नाव से

ज्ञानम् [३.३९, ४०; ४.३४, ३९; ५.१५, १६; ७.२; ९.१; १०.४, ३८; १२.१२; १३.१, २, ११, १७.१८; १४.१, २, ९, ११, १७; १५.१५; १८.१८, १९, २०, २१, ४२, ६३ सं(फल १.१/२.१)] ज्ञान, विद्या, बुद्धिमत्ता

ज्ञानयज्ञः [४.३३ सं(राम १.१) (ज्ञानस्य यज्ञः)] ज्ञान का यज्ञ

ज्ञानयज्ञेन [९.१५, १८.७० सं(राम ३.१) (ज्ञानस्य यज्ञेन)] ज्ञान के यज्ञ से, ज्ञान यज्ञ द्वारा

ज्ञानयोगव्यवस्थितिः [१६.१ सं(मति १.१) (ज्ञाने च योगे च व्यवस्थितिः)] ज्ञान में और योग में दृढ़ता-निष्ठा

ज्ञानयोगेन [३.३ सं(राम ३.१) (ज्ञानस्य योगेन)] ज्ञान योग से

ज्ञानवताम् [१०.३८ सं(धीमत् ६.३)] ज्ञानवानों में

ज्ञानवान् [३.३३, ७.१९ वि(भवत् १.१)] ज्ञानी

ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा [६.८ वि(आत्मन् १.१) (ज्ञानेन च विज्ञानेन च तृप्तः आत्मा यस्य सः)] वह जिसकी आत्मा संतुष्ट है ज्ञान से और विज्ञान से

ज्ञानविज्ञाननाशनम् [३.४१ वि(राम २.१) (ज्ञानस्य च विज्ञानस्य च नाशनम्)] ज्ञान और विज्ञान का नाश करने वाला (ध्वंसक)

ज्ञानसंछिन्नसंशयम् [४.४१ वि(राम २.१) (ज्ञानेन संछिन्नः संशयाः यस्य तम्)] उसको जिसने ज्ञान द्वारा संशय

काट दिया है, जिसका संशय नष्ट हो गया है।

ज्ञानसंगेन [१४.६ सं(राम ३.१ (ज्ञानस्य संगेन)] ज्ञान की आसक्ति से, ज्ञान के साथ

ज्ञानस्य [१८.५० सं(फल ६.१)] ज्ञान की

ज्ञानाग्निः [४.३७ सं(हरि १.१) (ज्ञानस्य अग्निः)] ज्ञान की अग्नि, ज्ञान रूपी अग्नि

ज्ञानाग्निदग्धकर्माणम् [४.१९ वि(राम २.१) (ज्ञानस्य अग्निना दग्धानि कर्माणि यस्य तम्)] जिसके कर्म ज्ञान रूपी अग्नि से जल गए हैं, उसको

ज्ञानात् [१२.१२ सं(फल ५.१)] ज्ञान की अपेक्षा, ज्ञान से

ज्ञानानाम् [१४.१ सं(फल ६.३)] ज्ञानों में

ज्ञानावस्थितचेतसः [४.२३ वि(चन्द्रमस् ६.१) ज्ञाने अवस्थितं चेतः यस्य तस्य)] जिसका मन ज्ञान में स्थित हैं, उसका

ज्ञानासिना [४.४२ सं(हरि ३.१) ज्ञानस्य असिना)] ज्ञान के कृपाण से (खड्ग से)

ज्ञानिनः [३.३९, ४.३४, ७.१७ सं(शशिन् ६.१) (१.३)] ज्ञानी पुरुष का, ज्ञानी का, ज्ञानी-लोग

ज्ञानिभ्यः [६.४६ वि(शशिन् ५.१)] ज्ञानियों की अपेक्षा, ज्ञानियों से

ज्ञानी [७.१६, १७, १८ सं(शशिन् १.१)] ज्ञानी, ज्ञानवान्

ज्ञाने [४.३३ सं(फल ७.१)] ज्ञान में

ज्ञानेन [४.३८, ५.१६ सं(फल ३.१)] ज्ञान से

ज्ञास्यसि [७.१ (√ ज्ञा क्र्या A/P लृट् २.१)] (तू) जानेगा

ज्ञेयः [५.३, ८.२ वि(राम १.१)] जानना चाहिए

ज्ञेयम् [१.३९; १३.१, १२, १६, १७, १८; १८.१८ वि(फल १.१) (√ ज्ञा क्र्या. + यत्)] जानने योग्य, ज्ञेय

ज्यायः [३.८ (वि. १.१)] अधिक अच्छा, श्रेष्ठ

ज्यायसी [३.१ वि(नदी १.१)] श्रेष्ठ उच्च, उत्कृष्ट, अधिक अच्छा

ज्योतिः [८.२४, २५, १३.१७ सं(हविस् १.१)] ज्योति, ज्वाला, प्रकाश

ज्योतिषाम् [१०.२१, १३.१७ सं(हविस् ६.३)] ज्योतियों में, प्रकाश करने वालों में

ज्वलद्भिः [११.३० वि.(ध्यायत् ३.३) (√ ज्वल् + शतृ भ्वा P)] जलता हुआ, अग्निमय, प्रज्वलित

ज्वलनम् [११.२९ सं(राम २.१)] ज्वाला, लौ, लपट, अग्निशिखा

झ

झषाणाम् [१०.३१ सं(राम ६.३)] मछलियों में, मत्स्यों में

त

तत् [१.१०.. सर्व(तद् नपु १.१)] वह, वह (जो भी)

ततः [१.१३.... (अ.)] तब, तत्पश्चात्, (उसके, उसकी अपेक्षा

ततम् [२.१७, ८.२२, ९.४, ११.३८, १८.४६ वि(फल १.१)] व्याप्त, फैलाया हुआ

तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम् [१३.११ सं(फल १.१) (तत्त्वस्य ज्ञानस्य अर्थस्य दर्शनम्)] तत्त्व ज्ञान के उद्देश्य के बोध (की अनुभूति, उपलब्धि)

तत्त्वतः [४.९, ६.२१, ७.३, १०.७, १८.५५ अ(तत्त्व + तस्)] वस्तुतः सचमुच, सार, तत्त्व, सारांश, यथार्थ स्वरूप, में से

तत्त्वदर्शिनः [४.३४ वि(शशिन् १.३)] तत्त्व को जानने वाले

तत्त्वदर्शिभिः [२.१६ सं(शशिन् ३.३)] तत्त्व ज्ञानियों (द्वारा) वास्तविकता (यथार्थता) जानने वालों (द्वारा)

तत्त्वम् [१८.१ सं(फल २.१)] तत्त्व, तत् का सार, सारांश

तत्त्ववित् [३.२८, ५.८ वि(तत्त्वविद् १.१)] तत्त्वज्ञ, सार की बात जानने वाला

तत्त्वेन [९.२४, ११. ५४ सं(फल ३.१)] तत्त्व से, मूल रूप से,

तत्परम् [११.३७ सं(फल १.१) (तत् + परम्)] उनसे परे, श्रेष्ठ

तत्परः [४.३९ (राम १.१)] एकाग्र, दत्त चित्त, विलीन, दृढ संकल्प

तत्परायणाः [५.१७ वि(राम १. ३) (तत् परम् अयनं येषां ते)] वे जिनका उच्चतम 'ध्येय' वह हैं, 'उसे' ही सर्वोच्च मानने वाले

तत्प्रसादात् [१८.६२ सं(राम ५.१)] उसकी कृपा दृष्टि से

तत्र [१.२६.. (अ.)] वहां, इस बात में, उसके संबन्ध में, उसमें

तथा [१.८.. (अ.)] उस प्रकार, उसी प्रकार, वैसे ही, भी

तदर्थम् [३.९ (अ.) (तस्य अर्थम्)] उसके लिए, इस कारण

तदर्थीयम् [१७.२७ वि.(फल १.१) (सः अर्थः यस्य तत्)] वह जिसका अर्थ 'तत्' हैं, 'तत्' के लिए किए हुए

तदा [१.८... (अ.)] तब

तदात्मानः [५.१७ वि(आत्मन् १.३] (तत् एव आत्मा येषां ते)] वे जिनकी आत्मा केवल वही है, तन्मय हुए

तद्बुद्धयः [५.१७ वि(हरि १.३) (तस्मिन् बुद्धिः येषां ते)] वे जिनकी बुद्धिः उसी में (लगी है)

तद्भावभावितः [८.६ वि(राम १.१) (तेन भावेन भावितः)] उस स्वभाव (स्वरूप) से प्रेरित, उस स्वरूप में एक रूप हुआ (चिंतन करता हुआ)

तद्वत् [२.७० (अ.)(तत् + वत्)] ऐसे, इस प्रकार

तद्विदः [१३.१] (सं. तत्त्वविद् १.३) उसके जानने वाले, (क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ को) जानने वाले

तनुम् [७.२१, ९.११ सं(गुरु २.१) (धेनु २.१)] स्वरूप (को) आकार

तन्निष्ठाः [५.१७ सं(राम १.३) (तस्मिन् निष्ठा येषां ते)] वे जो उसी में स्थित हैं (स्थिर हैं)

तपः [७.९; १०.५; १६.१; १७.५, ७, १४-१९, २८; १८.४२ सं(मनस् १.१)] तप

तपःसु [८.२८ सं(मनस् ७.३)] तप में (बहुवचन)

तपन्तम् [११.१९ सं(ध्यायत् २.१)] तपाते हुए (को)

तपसा [११.५३ सं(मनस् ३.१)] तप से, तप (करने) से

तपसि [१७.२७ सं(मनस् ७.१)] तप में

तपस्यसि [९.२७ (√तप् भ्वा P लट् २.१)] (तू) तपस्या करता हैं, तप करता है

तपस्विभ्यः [६.४६ वि(शशिन् ५.३)] तपस्वियों की अपेक्षा

तपस्विषु [७.९ वि.सं(शशिन् ७.३)] तपस्वियों में

तपामि [९.१९ (√ तप् भ्वा P लट् १.१)] (मैं) तपाता हूं, गर्मी देता हूं

तपोभिः [११.४२ सं(मनस् ३.३)] तप द्वारा

तपोयज्ञाः [४.२८ सं(राम १.३) (तपः यज्ञः येषां ते)] वे जिनका यज्ञ तप है, तप रूपी यज्ञ करने वाले

तप्तम् [१७.१७, २८ वि(फल १.१) (√तप् भ्वा P + क्त)] भुगता हुआ, झेला हुआ

तप्यन्ते [१७.५ (√तप् भ्वा A लट् ३.३)] सहना, झेलना, तपना

तम् [२.१... सर्व(तद् पु. २.१)] उसे, उसको, उस

तमः [१०.११, १४.५, ८-१०; १७.१ सं(मनस् १/२.१)] अन्धकार, जड़ता, अकर्मण्यता

तमसः [८.९, १३.१७, १४.१६, १७, सं(मनस् ६.१)] अंधकार से, अंधकार की अपेक्षा, तमोगुण का, तमोगुण से

तमसा [१८.३२ सं(मनस् ३.१)] अन्धकार से

तमसि [१४.१३, १५ सं(मनस् ७.१)] तमोगुण में

तमोद्वारैः [१६.२२ सं[फल ३.३) (तमसः द्वारैः)] अन्धकार के द्वारों से, नरक के द्वारों से

तया [२.४४, ७.२२ सर्व(तद् स्त्री ३.१)] जिससे, उससे, उसके द्वारा

तयोः [३.३४, ५.२ सर्व(तत् पु ७.२) (६.२)] इन (दोनों) में, के

तरन्ति [७.१४ (√ तृ भ्वा P लृट् ३.३)] पार करना, पार करते है

तरिष्यसि [१८.५८ (√ तृ भ्वा P लृट् २.१)] [तू) पार कर जाएगा, लांघ जाएगा

तव [१.३... सर्व(युष्मद् ६.१)] तेरा, आपके, आप का, तुझ को

तस्मात् [१.३७ (अ.)सर्व(तद् पु ५.१)] अतः; इसलिए, उसकी अपेक्षा, उनके लिए

तस्मिन् [१४.३ सर्व(तद् पु.नपु. ७.१)] उसमें

तस्य [१.१२.... सर्व(तद् पु.नपु. ६.१)] उसका, उसमें, उसके

तस्याः [७.२२ सर्व(तद् स्त्री ६.१)] उसका

तस्याम् [२.६९ सर्व(तद् स्त्री ७.१)] उसमें

तात [६.४० सं(राम ८.१)] हे मित्र

तान् [१.७.... सर्व(तत् पु. २.३)] वे, ये, उनको

तानि [२.६१, ४.५, ९.७, ९; १८.१९ सर्व(तद् नपु १.३/२.३)] उनको, वे, ये

ताम् [७.२१, ८.१७, १७.२ सर्व(तद् स्त्री २.१)] उस, इस (को)

तामसः [१८.७, २८ वि(राम १.१)] तामसिक

तामसप्रियम् [१७.१० वि(राम २.१) (तामसानां प्रियम्)] तामसी लोगों को प्रिय

तामसम् [१७.१३, १९.२२; १८.२२, २५, ३९ वि(फल १.१/राम २.१)] तामसिक

तामसाः [७.१२, १४.१८, १७.४ संवि(राम १.३)] तामसिक, अक्रिय अकर्मण्य, निष्क्रिय लोग

तामसी [१७.२, १८.३२, ३५ वि(नदी १.१)] तामसिक, तमोगुणात्मक

तावान् [२.४६ (अ.)] उतना ही

तासाम् [१४.४ सर्व(तद् स्त्री ६.३)] उनको, इनकी

तितिक्षस्व [२.१४ (√ तिज् भ्वा + सन् A लोट् २.१)] (तू) सहन कर, झेल

तिष्ठति [३.५, १३.१३, १८.६१ (√ स्था-तिष्ठ् भ्वा P लट् ३.१)] रहता है, खड़ा रहता है, बैठा रहता है

तिष्ठन्तम् [१३.२७ वि.(ध्यायत् २.१) (√ स्थ-तिष्ठ् + शतृ)] बैठा हुआ

तिष्ठन्ति [१४.१८ (√ स्था-तिष्ठ् भ्वा P लट् ३.३)] (वे) खड़े होते हैं, रहते हैं

तिष्ठसि [१०.१६ (√ स्था-तिष्ठ् भ्वा P लट् २.१)] (तू) खड़ा है, स्थित है, रहता है

तु [१.२, ७.. (अ.)] वास्तव में, सचमुच में, इत्यादि, फिर, एक पादपूरक

तुमुलः [१.१३, १९ वि.(राम १.१)] उग्र, उत्तेजित, प्रचंड, उत्कट

तुल्यः [१४.२५ वि(राम १.१)] समान, बराबर

तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः [१४.२४ सं(हरि १.१) (तुल्ये निन्दा च आत्मनः संस्तुतिः च यस्मै सः)] वह जिसके

लिए निन्दा और अपनी स्तुति एक समान है

तुल्यनिन्दास्तुतिः [१२.१९ वि(हरि १.१) (तुल्ये निन्दा च स्तुतिः च यस्य सः)] वह जिसको निन्दा और स्तुति, एक समान है

तुल्यप्रियाप्रियः [१४.२४ वि.(राम १.१) (तुल्यौ प्रियः च अप्रियः च यस्मै सः)] वह जिसके लिए प्रिय और अप्रिय एक समान है

तुष्टः [२.५५ वि.(राम १.१) (√तुष् दिवा. P + क्त)] संतुष्ट हुआ

तुष्टिः [१०.५ सं(मति १.१)] सन्तोष

तुष्यति [६.२० (√तुष् दिवा P लट् ३.१)] संतुष्ट है

तुष्यन्ति [१०.९ (√तुष् दिवा P लट् ३.३)] संतुष्ट हैं

तूष्णीम् [२.९ (अ.)] चुप, मौन

तृप्तिः [१०.१८ सं(मति १.१)] संतोष, तृप्ति

तृष्णासंगसमुद्भवम् [१४.७ वि.(फल २.१) (तृष्णा च आसंगः च तयोः समुद्भवः यस्य सः)] वह जो तृष्णा और आसक्ति के स्रोत हैं, तृष्णा (अप्राप्त की इच्छा) और आसंग (प्राप्त वस्तु में आसक्ति) उत्पन्न करने वाला।

ते [१.७, ३३... सर्व(युष्मद् ४.१), सर्व (युष ६.१); सर्व(तत् पु १.३)] तुझे, आप को; तेरा; वे

तेजः [७.९, १०, १०.३६, १५.१२, १६.३, १८.४३ सं(मनस् १.१)] तेज, ज्योति, प्रकाश

तेजस्विनाम् [७.१०, १०.३६ सं(शशिन् ६.३)] प्रतापवानों का, तेजस्वियों का

तेजोंऽशसंभवम् [१०.४१ वि(फल २.१) (तेजसः अंशात् संभवः यस्य तत्)] वह जिसकी उत्पत्ति है तेज के अंश से

तेजोभिः [११.३० सं(मनस् ३.३)] तेज से, भव्यता से, वैभव पूर्ण

तेजोमयम् [११.४७ वि.(फल १.१)] प्रकाशवान्, तेजोमय

तेजोराशिम् [११.१७ वि(हरि २.१) (तेजसः राशिम्)] तेज (प्रकाश, वैभव) के पुञ्ज (को)

तेन [३.३८... सर्व(तद् पु ३.१)] उस से, इस से, उस

तेषाम् [५.१६..... सर्व(तद् पु. ६.३)] उनके, उनका, उनमें

तेषु [२.६२, ५.२२ सर्व(तद् पु ७.३)] उन में

तैः [३.१२.५.१९, ७.२० सर्व(तद् पु ३.३)] उन से, उनके द्वारा

तोयम् [९.२६ सं(फल २.१)] जल

तौ [२.१९, ३.३४ सर्व[तद् पु १.२/२.२)] ये, वे (दो)

त्यक्तजीविताः [१.९ सं(राम १.३)] वे जिनके द्वारा जीवन त्यागा गया है, (दांव पर लगाया गया है)

त्यक्तसर्वपरिग्रहः [४.२१ वि.(राम १.१) (त्यक्तः सर्वः परिग्रहः येन सः] वह जिसके द्वारा सब प्रकार के संग्रह त्याग दिए गए हैं

त्यक्तुम् [१८.११ (अ.) (√ त्यज् भ्वा P + तुमुन)] त्यागना, छोड़ना

त्यक्त्वा [१.३३, २.३, ४८, ५१, ४.९, २०, ५.१०, ११, २२; ६.२४, १८.६, ९,५१ (अ.) (√ त्यज् भ्वा P + क्त्वाच् –)] तज कर, त्याग कर

त्यजति [८.६ (√ त्यज् भ्वा P लट् ३.१)] (वह) त्यागता है

त्यजन् [८.१३ सं(ध्यायत् १.१) (√ त्यज् भ्वा P + शतृ)] त्यागते हुए, तजते हुए

त्यजेत् [१६.२१, १८.८, ४८ (√ त्यज् भ्वा P विधिलिङ् ३.१)] त्याग करना चाहिए, (का) परित्याग किया जाय

त्यागः [१६.२, १८.४, ९ सं(राम १.१)] त्याग, परित्याग

त्यागफलम् [१८.८ सं(फल २.१) (त्यागस्य फलम्)] त्याग का फल

त्यागम् [१८.२, ८ सं(राम २.१)] त्याग

त्यागस्य [१८.१ सं(राम ६.१)] त्याग का

त्यागात् [१२.१२ सं(राम ५.१)] त्याग से

त्यागी [१८.१०, ११ वि(शशिन् १.१)] त्यागी

त्यागे [१८.४ सं(राम ७.१)] त्याग (के सम्बन्ध) में

त्याज्यम् [१८.३, ५ वि(फल १.१) (√ त्यज् P + ण्यत्)] त्यागना चाहिए, त्याग योग्य

त्रयम् [१६.२१ (आर्ष)] तीनों को

त्रयीधर्मम् [९.२१ सं.(राम २.१) (त्रय्याः धर्मम्)] तीनों (वेदों) में कहे हुए धर्म को

त्रायते [२.४० (√ त्रा भ्वा A लट् ३.१)] संरक्षण करता है, बचाता है

त्रिधा [१८.१९ वि(विद्या १.१)] तीन प्रकार के, त्रिविध

त्रिभिः [७.१३, १६.२२ संख्या वि(नपु. ३.१) (पु. ३.१)] तीन (से)

त्रिविधः [१७.७, २३, १८.४, १८ वि(राम १.१)] तीन प्रकार के, त्रिगुणात्मक

त्रिविधम् [१६.२१, १७.१७, १८.१२, २९.३६ वि(राम २.१/फल १/ २.१)] तीन प्रकार के, त्रिगुणात्मक

त्रिविधा [१७.२, १८.१८ वि(विद्या १.१)] तीन प्रकार की, त्रिगुणात्मक

त्रिषु [३.२२ संख्या वि(त्रि ७.३)] तीन में

त्रीन् [१४.२०, २१ वि(त्रि-पु. द्वितीया)] तीन

त्रैगुण्यविषयाः [२.४५ वि(राम १.३) (त्रैगुण्यं विषयः येषां ते)] वे, तीन गुण विषय हैं जिनके

त्रैलोक्यराज्यस्य [१.३५ सं(फल ६.१) (त्रैलोक्यस्य राज्यस्य)] तीन लोक के राज्य के लिए

त्रैविद्याः [९.२० (तिस्रः विद्याः येषां ते)] वे जिनकी तीन विद्याएं (हैं) तीनों वेद जानने वाले

त्वक् [१.३० सं(वाच् १.१)] त्वचा, चमड़ी

त्वत् [६.३९, ११.४७, ४८ सर्व(युष्मद् ५.१)] तेरी अपेक्षा, तुमसे

त्वत्तः [११.२ (त्वत् + तस्)] आप से

त्वत्प्रसादात् [१८.७३ सं(राम ५.१) (तव प्रसादात्)] तेरी कृपा से, आप की दया से

त्वत्समः [११.४३ वि(राम १.१) (तव समः)] आपके समान, बराबर

त्वदन्यः (त्वत् अन्यः) सर्व.पु. (सर्व१.१) आप के अतिरिक्त, दूसरा, तेरे सिवाय दूसरा

त्वम् [२.११, १२... सर्व(युष्मद् १.१)] तू, आपने

त्वया [६.३३, ११.१, २०, ३८, १८.७२ सर्व(युष्मद् ३.१)] आप से, तेरे द्वारा

त्वयि [२.३ सर्व(युष्मद् ७.१)] तुझ में

त्वरमाणाः [११.२७ वि(राम १.३)] उतावली करते हुए, शीघ्रता से

त्वा [२.२, १०.१७ सर्व(युष्मद् २.१)] तुझे

त्वाम् [२.७, ३५... सर्व(युष्मद् २.१)] आप को, तुझ को, आप की, तुझे

द

दंष्ट्राकरालानि [११.२५, २७ वि(फल १.३)] भयानक दन्तों सहित

दक्षः [१२.१६ वि(राम १.१)] कार्य कुशल, निपुण, कौशल पूर्ण

दक्षिणायनम् [८.२५ सं(फल १.१)] दक्षिणायन, छः महीने (श्रावण से पौष) का समय जिसमें सूर्य कर्क रेखा से चल कर बराबर दक्षिण की ओर मकर रेखा तक बढ़ता रहता है)

दण्डः [१०.३८ सं(राम १.१)] राजदंड, अधिकार दण्ड

दत्तम् [१७.२८ सं(फल१.१) (√दा जुहो P + क्त)] दिया गया

दत्तान् [३.१२ सं(राम २.३)] (√दा + क्त)] दिए गए को, दिए हुए को

ददामि [१०.१०, ११.८ (√दा जुहो P लट् १.१)] (मैं) देता हूं

ददासि [९.२७ (√दा जुहो P लट् २.१)] (तू) देता है, दान देता है

दधामि [१४.३ (√ धा जुहो A/P लट्, १.१)] (मै) रखता हूं

दध्मुः [१.१८ (√ ध्मा भ्वा P लिट् ३.३)] (शंख), बजाए

दध्मौ [१.१२, १५ (√ध्मा P भ्वा. लिट् ३.१)] बजाया

दमः [१०.४, १६.१, १८.४२ सं(राम १.१)] इन्द्रिय निग्रह, अपने को संयम में रखना

दमयताम् [१०.३८ वि(ध्यायत् ६.३)] शासकों में, दण्ड देने वालों में

दम्भः [१६.४ सं(राम १.१)] पाखण्ड, ढोंग, मिथ्याचार

दम्भमानमदान्विताः [१६.१० वि(राम १.३) (दम्भेन च मानेन च मदेन च अन्विताः)] ढोंग घमण्ड और उन्माद से भरा हुआ

दम्भार्थम् [१७.१२ सं(राम २.१) (दम्भस्य अर्थम्)] पाखण्ड ढोंग के लिए

दम्भाहंकारसंयुक्ताः [१७.५ सं(राम १.३) (दम्भेन च अहंकारेण च संयुक्ताः)] ढोंग और घमण्ड से युक्त, (के समर्थक)

दम्भेन [१६.१७, १७.१८ सं(राम ३.१)] पाखण्ड से, अभिमान पूर्वक, झूठी ठसक दिखाते हुए

दया [१६.२ सं(विद्या १.१)] दया

दर्पः [१६.४ सं(राम १.१)] हेकड़ी, घमण्ड, अहंकार, अक्खड़पन

दर्पम् [१६.१८, १८.५३ सं(राम २.१)] ढिठाई, अक्खड़पन, धृष्टता

दर्शनकाङ्क्षिणः [११.५२ वि(शशिन् १.३) (दर्शनं काङ्क्षन्ते इति)] इस प्रकार (वे) इच्छा करते हैं दर्शन (की) दर्शन की इच्छा वाले, दर्शन के उत्सुक, दर्शनार्थी

दर्शय [११.४, ४५ (√दृश् भ्वा P णिच् लोट् २.१)] दिखाओ, दिखालाइए

दर्शयामास [११.९, ५० (√दृश् भ्वा P + णिच् A लिट् ३.१)] दर्शन दिए, दिखलाया

दर्शितम् [११.४७ वि(फल २.१)] (√दृश् भ्वा P + णिच् + क्त)] दिखाया, देखा गया

दश [१३.५ वि.(संख्यावाचक)] दस

दशनान्तरेषु [११.२७ सं(फल ७.३) (दशनानाम् अन्तरेषु)] दन्तों के बीच में

दहति [२.२३ (√दह् भ्वा P लट् ३.१)] जलाता है

दाक्ष्यम् [१८.४३ सं(फल १.१)] दक्षता (कार्य) कौशल

दातव्यम् [१७.२० वि(फल १.१) (√दा जुहो. P + तव्य)] देना चाहिए, देने योग्य

दानक्रियाः [१७.२५ सं(विद्या १.३)] दान की क्रियाएं

दानम् [१०.५, १६.१; १७.७, २०-२२; १८.५, ४३ सं(फल १.१)] दान

दानवाः [१०.६ सं(राम १.३)] दानव गण

दाने [१७.२७ सं(फल ७.१)] दान में

दानेन [११.५३ सं(राम ३.१)] दान से, दान (देने) से

दानेषु [८.२८ सं(फल ७.३)] दान में (बहुवचन)

दानैः [११.४८ सं(राम ३.३)] दान द्वारा

दास्यन्ते [३.१२ (√दा जुहो A/P लृट् ३.३)] देंगे, (वे)

दास्यामि [१६.१५ (√दा जुहो A/P लृट् १.१)] (मैं) दूंगा, मैं (दान) दूंगा

दिवि [९.२०, ११.१२, १८.४० सं.(दिव् ७.१) स्वर्ग में, आकाश में

दिव्यगन्धानुलेपनम् [११.११ सं(फल १.१) (दिव्ये गन्धः च अनुलेपनं च यस्य तत्)] वह जिसके ईश्वरीय गन्ध और लेप (लगा है)

दिव्यम् [४.९, ८.८, १०, १०.१२, ११.८ वि(फल १.१) (२.१) वि(राम २.१)] ईश्वरीय, दिव्य, दैवी

दिव्यमाल्याम्बरधरम् [११.११ वि.(फल १.१) (दिव्यानि माल्यानि च अम्बराणि च धरति इति तत्)] वह (जो) इस प्रकार ईश्वरीय मालाएं और वस्त्र पहिने है

दिव्याः [१०.१६, १९ वि.(विद्या १.३)] ईश्वरीय, दिव्य

दिव्यान् [९.२०, ११.१५ वि.(राम २.३)] ईश्वरीय, दिव्य

दिव्यानाम् [१०.४० वि.(विद्या ६.३)] ईश्वरीय

दिव्यानि [११.५ वि(फल १.३)] ईश्वरीय

दिव्यानेकोद्यतायुधम् [११.१० वि.(फल २.१) (दिव्यानि, अनेकानि उद्यतानि आयुधानि यस्मिन् तत्)] वह जिसमें अनेक ईश्वरीय शस्त्र उठे हैं, अनेक दिव्य शस्त्र उठाने वाला

दिव्यौ [१.१४ वि(राम १.२)] (दो) दैवी, दिव्य, ईश्वर दत्त

दिशः [६.१३, ११.२०, २५, ३६ सं(दिश् १.३/२.३)] दिशाएं, इधर उधर

दीपः [६.१९ सं(राम १.१)] दीप, दीपक

दीप्तम् [११.२४ वि(राम २.१)] चमकते हुए को, जगमगाते हुए को

दीप्तविशालनेत्रम् [११.२४ वि.(राम २.१) (दीप्तानि विशालानि नेत्रानि यस्य तम्)] उसको जिस के बड़े बड़े चमकते नेत्र (हैं), बड़ी तेजस्वी आखों वाले को

दीप्तहुताशवक्त्रम् [११.१९ वि(राम २.१) (दीप्तः हुताशः इव वक्त्रं यस्य तम्)] उसको जिसका मुख यज्ञाग्नि सा प्रज्वलित है

दीप्तानलार्कद्युतिम् [११.१७ वि(हरि २.१) दीप्तयोः अनलार्कयोः (अनलस्य च अर्कस्य च) इवं द्युतिः यस्य तम्)] उसको जिसकी महिमा अग्नि और सूर्य के समान देदीप्यमान है, अग्नि और सूर्य के समा प्रकाश वाले (को)

दीप्तिमन्तम् [११.१७ वि(धीमत् २.१)] प्रकाशवान् (को) ज्वलन्त (को)

दीयते [१७.२०, २१.२२ (√दा जुहो P + कर्मणि A लट् ३.१)] दिया जाता है

दीर्घसूत्री [१८.२८ वि(शशिन् १.१)] विलम्बी

दुःखतरम् [२.३६ वि.(फल १.१)] अधिक दुःख दायी (दुःखकर)

दुःखम् [५.६, ६.३२, १०.४; १२.५, १३.६; १४.१६; १८.८ सं(फल १.१/२.१)] कठिन, दुःख को

दुःखयोनयः [५.२२ वि(हरि १.३)] दुःख की योनियां, दुःख के मूल

दुःखशोकामयप्रदाः [१७.९ वि(राम १.३) (दुःखं च शोकं च आमयं च प्रददति इति)] इस प्रकार दुःख शोक और रोग उत्पन्न करने वाले

दुःखसंयोगवियोगम् [६.२३ वि.(राम २.१) (दुःखैः संयोगेन वियोगम्)] दुःखों के संयोग से वियोग, दुःख के समागम का वियोग

दुःखहा [६.१७] वि.(१.१) दुःख नाशक

दुःखान्तम् [१८.३६ सं(राम २.१) दुःखस्य अन्तम्)] दुःख का अन्त, दुःख के अन्त को

दुःखालयम् [८.१५ सं(फल २.१) (दुःखानाम् आलयम्)] दुःख का घर, स्थान

दुःखेन [६.२२ सं(फल ३.१)] दुःख से

दुःखेषु [२.५६ सं(फल ७.१)] दुःखों में

दुरत्यया [७.१४ वि(विद्या १.१)] पार होने में कठिन, दुस्तर

दुरासदम् [३.४३ वि(राम २.१)] जिसकी पहुंच कठिन हो, दुर्जय को

दुर्गतिम् [६.४० सं(मति २.१)] बुरी अवस्था को, बुरी दशा को, दुर्गति

दुर्निग्रहम् [६.३५ वि(फल १.१)] कठिनता से वश में आने वाला

दुर्निरीक्ष्यम् [११.१७ वि(राम २.१) (दुःखेन निरीक्ष्यम्)] कठिनता से दिखने वाला, कठिनाई से देखे जा सकने वाले को

दुर्बुद्धेः [१.२३ वि(हरि ६.१)] खोटी बुद्धिवाले

दुर्मतिः [१८.१६ वि(हरि १.१)] दुष्ट मन वाला, खोटी बुद्धि वाला, मूर्ख

दुर्मेधाः [१८.३५ सं(चन्द्रमस् १.१)] दुष्ट बुद्धिवाला

दुर्योधनः [१.२ सं(राम १.१)] दुर्योधन

दुर्लभतरम् [६.४२ वि(फल १.१)] अधिक दुर्लभ, जिसका पाना अत्यन्त कठिन है

दुष्कृताम् [४.८ वि(राम ६.१)] दुष्टों का, बुरे काम करने वालों का

दुष्कृतिनः [७.१५ सं(शशिन् १.३)] कुकर्मी लोग, खोटा काम करने वाले, दुराचारी

दुष्टासु [१.४१ वि(विद्या ७.३)] दुष्ट होने पर

दुष्पूरम् [१६.१० वि(राम २.१)] पूर्ण न होने वाली, तृप्त न होने वाली

दुष्पूरेण [३.३९ वि(राम ३.१)] न भरे जाने वाले, पूर्ण न होने वाले, तृप्त न होने वाले (द्वारा) अतोषणीय, अतर्पणीय, अति लोभी

दुष्प्रापः [६.३६ वि(राम १.१)] कठिनता से प्राप्त होने वाला

दूरस्थम् [१३.१५ वि(फल १.१) (दूरे तिष्ठति इति)] इस प्रकार (जो) दूर रहता है, दूर स्थित

दूरेण [२.४९ (अ.)] कहीं अधिक

दृढनिश्चयः [१२.१४ वि.(राम १.१) (दृढः निश्चयः यस्य सः)] वह जिसका निश्चय दृढ है, कृत संकल्प, दृढप्रतिज्ञ

दृढम् [६.३४, १८.६४ वि(फल १.१)] कठोर, पूरी शक्ति से(हठीला), गहरा, प्रगाढ़

दृढव्रताः [७.२८; ९.१४ वि(राम १.३) (दृढम् व्रतं येषां ते)] वे जिनके प्रण दृढ़ हैं अडिगव्रत वाले, दृढ़ निश्चय वाले

दृढेन [१५.३ वि.(राम ३.१)] कठोर (से), दृढ़ (से)

दृष्टः [२.१६ (√ दृश् भ्वा P + क्त राम १.१)] देखा (गया है) जाना (गया है)

दृष्टपूर्वम् [११.४७ वि.(फल १.१)] पहले का देखा (गया)

दृष्टवान् [११.५२, ५३ वि(धीमत् (१.१) (दृश्-पश्य् भ्वा P + क्तवतु)] देखा गया, (तूने) देखा है

दृष्टिम् [१६.९ सं(मति २.१)] दृष्टिकोण, मत, विचार, अभिप्राय (को)

दृष्ट्वा [१.२, २०, २८, २.५९, ११.२०, २३.२५, ४५, ४९, ५१ (अ.) (दृश्-पश्य् भ्वा P + क्त्वा)] देखकर

देव [११.१५, ४४, ४५ सं(राम ८.१)] हे देव

देवताः [४.१२ सं(विद्या २.३)] देवताओं को

देवदत्तम् [१.१५ सं(राम २.१)] देवदत्त को

देवदेव [१०.१५ सं(राम ८.१) (देवानां देव)] देवताओं के देवता

देवदेवस्य [११.१३ सं(राम ६.१) (देवानां देवस्य)] देवताओं के, ईश्वर के

देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनम् [१७.१४ सं(फल १.१) (देवानां च द्विजानां च गुरूणां च प्राज्ञानां च पूजनम)] देवताओं की और ब्राह्मणों की और गुरुओं और बुद्धिमान् लोगों की पूजा; देव, ब्राह्मण गुरु और ज्ञानी की पूजा

देवभोगान् [९.२० सं(राम २.३) (देवानां भोगान)] देवताओं के भोग पदार्थों को

देवम् [११.११, १४ सं(राम २.१)] ईश्वर, देवता को

देवयजः [७.२३ (देवान् यजन्ते इति)] ऐसे पूजा करते हैं देवताओं की

देवर्षि [१०.१३ वि(हरि १.१)] देवर्षि

देवर्षीणाम् [१०.२६ सं(हरि ६.३)] देव ऋषियों (में) का

देवलः [१०.१३ सं(राम १.१)] देवल (ऋषि)

देववर [११.३१ सं(राम ८.१) (देवानां वर)] हे देवताओं में श्रेष्ठ, हे देववर

देवव्रताः [९.२५ सं(राम १.३) (देवेभ्यः व्रतं येषां ते)] वे जिनके व्रत देवताओं के लिए हैं, देवताओं का पूजन करने वाले

देवाः [३.११.१२, १०.१४, ११.५२ सं(राम १.३)] देवता लोग

देवान् [३.११, ७.२३, ९.२५, ११.१५, १७.४ सं(राम २.३)] देवता लोग, देवताओं को

देवानाम् [१०.२, २२ सं(राम ६.३)] देवताओं का, देवताओं में

देवेश [११.२५, ३७, ४५ सं(राम ८.१) (देवानाम् ईशः)] हे देवेश, हे देवेश्वर

देवेषु [१८.४० सं(राम ७.३)] देवताओं में

देशे [६.११, १७.२० सं(राम ७.१)] स्थान में

देहभृत् [१४.१४ वि(मरुत् १.१)] शरीर का आधार (पोषक) देह धारी

देहभृता [१८.११ वि.(मरुत् ३.१) (देहं बिभर्ति यः तेन)] जिसके द्वारा शरीर धारण किया जाता है, वह, देह धारी

देहभृताम् [८.४ वि(मरुत् ६.३) (देहं बिभ्रति इति तेषाम्)] उनका जो इस प्रकार देह धारण करते हैं, देह धारियों का

देहम् [४.९, ८.१३, १५.१४ सं(फल २.१)) (राम २.१)] शरीर

देहवद्भिः [१२.५ वि(ध्यायत् ३.३)] शरीर धारियों से, देह धारियों द्वारा

देहसमुद्भवान् [१४.२० वि(राम २.३) (देहात् समुद्भवः येषां तान्)] उनको जिनका उद्गम शरीर से (है), देह से उत्पन्न हुए

देहाः [२.१८ सं(राम १.३] देह (बहुवचन)

देहान्तरप्राप्तिः [२.१३ सं(मति १.१) (देहान्तरस्य प्राप्तिः)] दूसरी देह की प्राप्ति

देहिनः [२.१३, ५९ सं(शशिन् ६.१)] मूर्त रूप हुए का, देहधारी का- को

देहिनम् [३.४०, १४.५,७ सं(शशिन् २.१)] देह धारी, मूर्त रूप

देहिनाम् [१७.२ सं(शशिन् ६.३)] देहधारियों का

देही [२.२२, ३०, ५.१३, १४.२० सं(शशिन् १.१)] देह धारी, जीवात्मा

देहे [२.१३, ३०; ८.२, ४; ११.७, १५; १३.२२, ३२; १४.५, ११ सं(राम/फल ७.१)] देह में, शरीर में

दैत्यानाम् [१०.३० सं(राम ६.३)] दैत्यों में

दैवः [१६.६ वि(राम १.१)] दैवी, ईश्वरीय

दैवम् [४.२५, १८.१४ वि(राम २.१) सं(फल १.१)] ईश्वरीय, दैवी, देवताओं के निमित्त, दैव, ईश्वर

दैवी [७.१४.१६.५ वि(नदी १.१)] ईश्वरीय,

दैवीम् [९.१३, १६.३, ५ सं(नदी २.१)] ईश्वरीय, (को)

दोषम् [१.३८, ३९ सं(राम २.१)] दोष, अपराध

दोषवत् [१८.३ वि(जगत् १.१)] दुष्टता से भरे हुए के समान, दोष समान

दोषेण [१८.४८ सं(राम ३.१)] दोष से

दोषैः [१.४३ सं(राम ३.३)] दोषों से, दुष्कर्मों से

द्यावापृथिव्योः [११.२० सं(नदी ६.२) (दिवः च पृथिव्याः च)] आकाश और पृथ्वी का

द्यूतम् [१०.३६ सं(फल १.१)] जूआ

द्रक्ष्यसि [४.३५ (√दृश् भ्वा P लृट् २.१)] (तू) देखेगा

द्रवन्ति [११.२८, ३६ (√द्रु भ्वा P लट् ३.३)] भागते हैं, दौड़ते हैं, बढ़ते हैं

द्रव्यमयात् [४.३३ वि(राम ५.१)] द्रव्य वाले (यज्ञ) की अपेक्षा

द्रव्ययज्ञाः [४.२८ सं(राम १.३) (द्रव्येण यज्ञः येषां ते)] वे जिनका यज्ञ धन-सम्पत्ति द्वारा (है), द्रव्य से यज्ञ करने वाले,

द्रष्टा [१४.१९ सं(धातृ १.१)]] देखने वाला

द्रुपदः [१.४, १८ सं(राम १.१)] द्रुपद

द्रष्टुम् [११.३, ४, ७, ८, ४६, ४८, ५३, ५४ (अ.) (√दृश्-पश्य भ्वा P + तुमुन्) देखना

द्रुपदपुत्रेण [१.३ सं(राम ३.१) (द्रुपदस्य पुत्रेण)] द्रुपद के पुत्र (द्वारा)

द्रोणः [११.२६ सं(राम १.१)] द्रोणाचार्य्य

द्रोणम् [२.४, ११.३४ सं(राम २.१)] द्रोण को, द्रोणाचार्य्य को

द्रौपदेयाः [१.६, १८ सं(राम १.३)] द्रौपदी के पुत्र

द्वंद्वः [१०.३३ सं(राम १.१)] द्वन्द्व, द्वैत

द्वंद्वमोहनिर्मुक्ताः [७.२८ वि(राम १.३) (द्वंद्वस्य मोहात् निर्मुक्ताः)] द्वंद्वों के मोह से मुक्त, द्वन्द्व मोह से रहित

द्वंद्वमोहेन [७.२७ सं(राम ३.१) द्वंद्वस्य मोहेन)] द्वंद्वों के मोह से

द्वंद्वातीतः [४.२२ वि(राम १.१) (द्वंद्वम् अतीतः)] द्वंद्वों से परे चले गए, (द्वंद्व=सुख दुख, हानि लाभ इत्यादि)

द्वंद्वैः [१५.५ सं(राम ३.३)] द्वन्द्वों से

द्वारम् [१६.२१ सं(फल १.१)] द्वार, फाटक

द्विजोत्तम [१.७ सं(राम ८.१) (द्विजेषु उत्तम)] हे द्विजश्रेष्ठ

द्विविधा [३.३ वि(विद्या १.१)] द्वि–दो प्रकार

द्विषतः [१६.१९ सं(ध्यायत् ६.१) (√द्विष् अदा P + शतृ)] द्वेष करने वाले, घृणा करने वाले

द्वेषः [१३.६ सं(राम १.१)] घृणा, द्वेष

द्वेष्टि [२.५७, ५.३, १२.१७, १४.२२, १८.१० (√द्विष् अदा. P लट् ३.१)] द्वेष करता है, चित्त को अप्रिय लगता है

द्वेष्यः [९.२९ वि(राम १.१)] घृणित, द्वेषपात्र, बैरी

द्वौ [१५.१६, १६.६ संख्या वि(द्वि पु प्रथमा)] दो

ध

धनंजय [२.४८, ४९, ४.४१; ७.७; ९.९; १२.९, १८.२९, ७२ सं(राम ८.१)] हे धनंजय

धनंजयः [१.१५, १०.३७, ११.१४ सं(राम १.१)] धनंजय

धनम् [१६.१३ सं(फल २.१)] धन,

धनमानमदान्विताः [१६.१७ वि(राम १.३) (धनस्य मानेन च मदेन च अन्विताः)] धन और मान के नशे से भरे हुए, धन और मान के मद में मस्त

धनानि [सं(फल १.३)] धन सम्पत्ति

धनुः [१.२० सं(गुरु १.१)] धनुष

धनुर्धरः [१८.७८ वि(राम १.१)] धनुर्धारी, धनुषधारी

धर्मकामार्थान् [१८.३४ सं(राम २.३) (धर्मः च कामः च अर्थः च तान्)] धर्म, और काम और अर्थ और उनके (इच्छुक)

धर्मक्षेत्रे [१.१ वि[फल ७.१] (धर्मस्य क्षेत्रे)] धर्म के क्षेत्र (मैदान) (में)

धर्मम् [१८.३१, ३२ सं(राम २.१)] धर्म को, उचित

धर्मसंमूढचेताः [२.७ सं(वेधस् १.१) (धर्मे संमूढं चेतः यस्य सः)] वह जिसका मन धर्म के विषय में भ्रम में है (घबराया हुआ है)

धर्मसंस्थापनार्थाय [४.८ सं(राम ४.१) (धर्मस्य संस्थापनस्य अर्थाय)] धर्म की स्थापना के लिए, धर्म संस्थापन के लिए

धर्मस्य [२.४०, ४.७, ९.३, १४.२७ सं(राम ६.१)] धर्म का (पथ, विधि)

धर्मात्मा [९.३१ वि(आत्मन् १.१) (धर्मे आत्मा यस्य सः)] वह जिसकी आत्मा धर्म में है, धर्मात्मा

धर्माविरुद्धः [७.११ वि(राम १.१)] धर्म के विरुद्ध नहीं, (जो) धर्म से विरोध नहीं करता, धर्म से विपरीत नहीं, (प्रतिकूल नहीं)

धर्मे [१.४० सं(राम ७.१)] धर्म में, कर्तव्य पालन में

धर्म्यम् [२.३३, ९.२, १८.७० वि(राम २.१)] धार्मिक, धर्म परायण

धर्म्यात् [२.३१ वि(राम ५.१)] धार्मिक (से)

धर्म्यामृतम् [१२.२० सं(फल १.१) (धर्म्यं च तत् अमृतं च)] धर्म, और वही अमृत, धर्म रूपी अमृत को

धाता [९.१७, १०.३३ सं(धातृ १.१)] भरण पोषण करने वाला, पोषक, आधार

धातारम् [८.९ सं(धातृ २.१)] पोषक, आधार को

धाम [८.२१, १०.१२, ११.३८, १५.६ सं(जन्मन् १.१)] धाम, आवास, निवास स्थान

धारयते [१८.३३, ३४ (√धृ चुरा A/P लट् ३.१)] (वह) धारण करता है, उठाए रखता है, थाम रखता है

धारयन् [५.९, ६.१३ वि.(ध्यायत् १.१) (√ धृ P जुहो + शतृ)] मानता हुआ, धारण करता हुआ, रखता हुआ

धारयामि [१५.१३ (√ धृ चुरा P लट् १.१)] (मैं) धारण करता हूं, थाम रखता हूं

धार्तराष्ट्रस्य [१.२३ सं(राम ६.१)] धृतराष्ट्र के पुत्र का

धार्तराष्ट्राणाम् [१.१९ सं(राम ६.३) (धृतराष्ट्रस्य पुत्राणाम्)] धृतराष्ट्र के पुत्रों के

धार्तराष्ट्राः [१.४६, २.६ सं(राम १.३)] धृतराष्ट्र के पुत्र

धार्तराष्ट्रान् [१.२०, ३६, ३७ सं(राम २.३)] धृतराष्ट्र के पुत्रों (को)

धार्यते [७.५ (√ धृ चुरा P + कर्मणि A लट् ३.१)] थामा है, उठाया हुआ है

धीमता [१.३ वि(धीमत् ३.१)] बुद्धिमान् (द्वारा)

धीमताम् [६.४२ सं(धीमत् ६.३)] बुद्धिमानों का, ज्ञानवानों का

धीरः [२.१३, १४.२४ सं(राम १.१)] दृढ चित्तवाला, स्थिरबुद्धिवाला, जिसमें धैर्य हो, ज्ञानी

धीरम् [२.१५ सं(राम २.१)] दृढ चित्त वाले को, स्थिर बुद्धिवाले को, ज्ञानी को

धूमः [८.२५ सं(राम १.१)] धूंआ, धूम

धूमेन [३.३८, १८.४८ सं(राम ३.१)] धुएं से

धृतराष्ट्रः [१.१ सं(राम १.१)] धृतराष्ट्र

धृतराष्ट्रस्य [११.२६ सं(राम ६.१)] धृतराष्ट्र के

धृतिः [१०.३४, १३.६, १६.३, १८.३३, ३४.३५, ४३, सं(मति १.१)] धैर्य सहनशक्ति, मन की धारणा

धृतिगृहीतया [६.२५ वि(मति ३.१) (धृत्या गृहीतया)] दृढता से पकड़ी गई, स्थिरता से युक्त

धृतिम् [११.२४ सं(मति २.१)] धीरज, शक्ति

धृतेः [१८.२९ सं(मति ६.१)] धैर्य के, धीरज के

धृत्या [१८.३३, ३४, ५१ सं(मति ३.१)] धैर्य से, धीरज से, सहन शक्ति से

धृत्युत्साहसमन्वितः [१८.२६ वि(राम १.१) (धृत्या च उत्साहेन च समन्वितः)] दृढता से और विश्वास से सम्पन्न है, भरा हुआ है (जो)

धृष्टकेतुः [१.५ सं(गुरु १.१)] धृष्टकेतु

धृष्टद्युम्नः [१.१७ सं(राम १.१)] धृष्टद्युम्न राजा द्रुपद के पुत्र, द्रौपदी के भाई

धेनूनाम् [१०.२८ सं(धेनु ६.३)] गायों में

ध्यानम् [१२.१२ सं(फल १.१)] ध्यान, चिंतन

ध्यानयोगपरः [१८.५२ वि(राम १.१) (ध्यानं च योगः च (ध्यान योगौ) परौ यस्य सः)] वह जिसका ध्यान और योग श्रेष्ठ है, ध्यान योग में लीन

ध्यानात् [१२.१२ सं(फल ५.१)] ध्यान (चिंतन) की अपेक्षा

ध्यानेन [१३.२४ सं(फल ३.१)] ध्यान से, चिंतन द्वारा

ध्यायतः [२.६२ वि.(ध्यायत् ६.१) (√ ध्यै P भ्वा शतृ)] ध्यान करने वाले का, चिंतन करने वाले का

ध्यायन्तः [१२.६ वि.(ध्यायत् १.३) (√ ध्यै भ्वा P शतृ] ध्यान करते हुए, चिंतन करते हुए

ध्रुवः [२.२७ वि(राम १.१)] निश्चित, अवश्यंभावी

ध्रुवम् [२.२७, १२.३ वि(फल २.१)] निश्चित, पक्का, स्थिर

ध्रुवा [१८.७८ वि(विद्या १.१)] स्थिर, अचल

न

न [१.३०, ३१... (अ.)] न, नहीं

नः [१.३२, ३३, ३६, २.६ सर्व(अस्मद् २.३/४.३/६.३)] हम को, हमारे लिए हमारा/हमारी

नकुलः [१.१६ सं(राम १.१)] नकुल

नक्षत्राणाम् [१०.२१ सं(फल ६.३)] तारा पुंजों में, नक्षत्रों में

नदीनाम् [११.२८ सं(नदी ६.३)] नदियों का

नभः [१.१९ सं(राम १.१)] आकाश

नभःस्पृशम् [११.२४ सं(राम २.१) (नभः स्पृशति इति तम्)] उसको जो इस प्रकार आकाश को स्पर्श करता है, आकाश छूने वाले को

नमः [९.३४, ११.३१, ३५, ३९, ४०, १८.६५ सं(मनस् १.१)] नमस्कार, अभिवादन

नमस्कुरु [९.३४ (नमः + √कृ तना P लोट २.१)] नमस्कार कर

नमस्कृत्वा [११.३५ (नमः √कृ तना A/P + क्त्वाच्)] नमस्कार करके

नमस्यन्तः [९.१४ वि.((ध्यायत् १.३) (√नम् + लृट + शतृ)] नमस्कार करते हुए

नमस्यन्ति [११.३६ (√नम् भ्वा P ३.३)] दण्डवत् करते हैं, प्रणाम करते है

नमेरन् [११.३७ (√नम् भ्वा A + विधिलिङ् ३.३)] (वे) दण्डवत् प्रणाम करें

नयेत् [६.२६ (√नी भ्वा P विधि ३.१)] (उसे) लाना चाहिए

नरः [२.२२, ५.२३; १२.१९; १६.२२; १८.१५, ४५, ७१ सं(राम १.१)] मनुष्य

नरकस्य [१६.२१ सं(राम ६.१)] नरक का

नरकाय [१.४२ सं(राम ४.१)] नरक के लिए, नरक की ओर (लेजाता है)

नरके [१.४४, १६.१६ सं(राम ७.१)] नरक में

नरपुंगवः [१.५ सं(राम १.१) (नरेषु पुंगवः)] मनुष्यों में सांड़, नरश्रेष्ठ

नरलोकवीराः [११.२८ सं(राम १.३) (नराणां लोके वीराः)] मनुष्य लोक में वीर पुरुष, लोकनायक, (बहुवचन)

नराणाम् [१०.२७ सं(राम ६.३)] मनुष्यों में

नराधमाः [७.१५ सं(राम १.३) (नरेषु अधमाः)] मनुष्यों में अधम, निकृष्ट

नराधमान् [१६.१९ वि(राम २.३) (नरेषु अधमान्)] नीच मनुष्य, अधम नर

नराधिपम् [१०.२७ सं(राम २.१) (नराणां अधिपम्)] मनुष्यों में राजा, नरपति

नरैः [१७.१७ सं(राम ३.३)] मनुष्यों से, पुरुषों द्वारा

नवद्वारे [५.१३ वि(फल ७.१)] नव द्वारों वाले - (में) (दो कान, दो आँख, दो नासिकाएं, एक मुंह, एक गुदा और एक उपस्थ)

नवानि [२.२२ वि(फल १.३)] नए, नवीन

नश्यति [६.३८ (√नश दिवा P लट् ३.१)] नष्ट होता है

नश्यत्सु [८.२० (ध्यायत् ७.३) (√नश् दिवा P + शतृ)] नाश होते हुए भी, नष्ट होने पर भी, नष्ट होने में भी

नष्टः [४.२, १८.७३ (√नश् दिवा P + क्त वि(राम १.१)] नष्ट हुआ, विनाश हुआ

नष्टात्मानः [१६.९ सं(आत्मन् १.३) (नष्टः आत्मा येषां ते)] वे जिनकी आत्मा नष्ट हुई है, दुष्ट लोग

नष्टान् [३.३२ वि(राम २.३) (√नश् दिवा P + क्त)] नष्ट हुआ

नष्टे [१.४० वि(राम ७.१) (√नश् दिवा P + क्त)] नष्ट होने पर

नागानाम् [१०.२९ सं(राम ६.३)] नागों में

नातिनीचम् [६.११ वि(फल २.१) (न अतिनीचम्)] बहुत नीचा नहीं

नातिमानिता [१६.३ सं(विद्या १.१) (न अति मानिता)] अत्यन्त अभिमान का न होना, निरभिमानिता

नात्युच्छ्रितम् [६.११ वि(फल २.१) (न अत्युच्छ्रितम्)] बहुत ऊंचा नहीं

नानाभावान् [१८.२१ सं(राम २.३)] अनेक रूपों (को)

नानावर्णाकृतीनि [११.५ वि(वारि २.३) (नाना वर्णाः आकृतयः च येषां तानि)] उनको जिनके अनेक रंग और रूप (है)

नानाविधानि [११.५ वि(वारि २.३)] अनेक प्रकार के

नानाशस्त्रप्रहरणाः [१.९ सं(राम १.३)] वे जिनके प्रहार करने के अस्त्र नाना विधि के हैं

नान्यगामिना [८.८ वि(फल ३.१) (न अन्यं गच्छति इति तेन)] इस प्रकार इससे दूसरी ओर न जाते हुए

नामयज्ञैः [१६.१७ सं(राम ३.३)] नाम मात्र के यज्ञों द्वारा

नायकाः [१.७ सं(राम १.३)] नेतागण

नारदः [१०.१३, २६ सं(राम १.१)] नारद

नारीणाम् [१०.३४ सं(नदी ६.३)] स्त्रियों में, नारी –जाति के नामों (गुणों) में

नावम् [२.६७ सं(नौ २.१)] नाव को

नाशनम् [१६.२१ वि(फल १.१)] विनाशकारी, नाश करने वाला

नाशयामि [१०.११ (√नश् दिवा. P + णिच् लट् १.१)] (मैं) नष्ट करता हूं

नाशाय [११.२९ सं(राम ४.१)] नष्ट होने के लिए, नाश के लिए

नाशितम् [५.१६ वि.(फल १.१) (√नश् + णिच् + क्त)] नाश किया हुआ, नष्ट

नासाभ्यन्तरचारिणौ [५.२७ वि(शशिन् २.२)] (नासायाः अभ्यन्तरे चारिणौ)] नासाछिद्रों (नासारन्ध्रों) के भीतर चलते हुए (आते जाते)

नासिकाग्रम् [६.१३ वि(फल २.१) (नासिकायाः अग्रम्)] नाक की नोक को, नासिका के अग्रभाग को

नास्ति [२.६६ (न अस्ति)] नहीं है

निःश्रेयसकरौ [५.२ वि(राम २.१)] (दोनों) परम कल्याण कारक

निःस्पृहः [२.७१, ६.१८ वि(राम १.१)] इच्छा रहित

निगच्छति [९.३१, १८.३६ (नि + √गम् गच्छ् P लट् ३.१)] जाता है

निगृहीतानि [२.६८ वि(फल १.३)] रुकी हुई, नियंत्रित की हुई, खिंची हुई, हटी हुई (प्रत्याहार = योग के आठ अंगों में से एक अंग जिस में इंद्रियों को विषयों से हटा कर चित्त का निरोध किया जाता है)

निगृह्णामि [९.१९ नि + √ग्रह् क्र्या A/P लट् १.१)] (मैं) रोक रखता हूं, थाम रखता हूं)

निग्रहः [३.३३ सं(राम १.१)] रोक, प्रतिबन्ध, नियन्त्रण, संयम

निग्रहम् [६.३४ सं(राम २.१)] वश में करना, पकड़ में लाना

नित्यजातम् [२.२६ वि.(राम २.१) (नित्यं जातम्)] सदा (बराबर) (निरन्तर) जन्मता है

नित्यतृप्तः [४.२० वि(राम १.१)] सदा संतुष्ट

नित्यः [२.२०, २४ वि(राम १.१)] निरन्तर, सतत

नित्यम् [२.२१, २६, ३०; ३.१५, ३१; ९.६; १०.९; ११.५२; १३.९, १८.५२ वि.(राम २.१) (अ.)] अनन्त, नित्य, सदा, निरन्तर

नित्ययुक्तः [७.१७ वि(राम १.१) (नित्यं युक्तः)] सदैव सन्तुलित, निरन्तर लीन

नित्ययुक्तस्य [८.१४ वि(राम ६.१)] सदा सन्तुलित (का) सदालीन रहने वाले (का)

नित्ययुक्ताः [९.१४, १२.२ वि(राम १.३)] सदैव लीन, निरन्तर सन्तुलित,

नित्यवैरिणा [३.३९ वि(शशिन् ३.१)] नित्य के शत्रु द्वारा

नित्यशः [८.१४ (अ.)] नित्य, निरंतर

नित्यसंन्यासी [५.३ सं(शशिन् १.१)] सदा संन्यासी, निरन्तर संन्यासी

नित्यसत्त्वस्थः [२.४५ सं(राम १.१) (नित्यं सत्त्वे तिष्ठति इति)] नित्य सत्त्व (गुण) में (जो) निवास करता है, इस प्रकार

नित्यस्य [२.१८ वि(राम ६.१)] चिरस्थायी का

नित्याभियुक्तानाम् [९.२२ वि(राम ६.३)] सदैव लीन हुओं का, निरंतर समाहित चित्त वालों का

निद्रालस्यप्रमादोत्थम् [१८.३९ वि(फल १.१) (निद्रा च आलस्यं च प्रमादः च तेभ्यः उत्थितम्)] निद्रा, आलस्य और भ्रम से उदित हुआ

निधनम् [३.३५ सं(फल १.१)] मृत्यु

निधानम् [९.१८, ११.१८, ३८ सं(फल २.१)] भंडार, आधार, आश्रय स्थान

निन्दन्तः [२.३६ वि.(ध्यायत् १.३) (√निन्द् भ्वा शतृ)] निन्दा करते हुए

निबद्धः [१८.६० वि(राम १.१) (नि + √ बन्ध् क्र्या, P + क्त)] बंधा हुआ

निबध्नन्ति [४.४१, ९.९, १४.५ (नि + √ बन्ध् क्र्या. लट् P लट् ३.३)] (वे) बांधते हैं

निबध्नाति [१४.७, ८ (नि + √ बन्ध् क्र्या. P लट् ३.१)] (वह) बांधता है

निबध्यते [४.२२, ५.१२, १८.१७ (नि + √ बन्ध् क्र्या. P लट् ३.१)] (वह) बंधता है, बन्धन में पड़ता है, बंधा है

निबन्धाय [१६.५ सं(राम ४.१)] बन्धन के लिए, दासता के लिए

निबोध [१.७, १८.१३, ५० (नि + √ बुध् भ्वा. P लोट् २.१)] से परिचित होले, तू जानले, समझले

निमित्तमात्रम् [११.३३ (अव्यय)] हेतुमात्र, केवल कारण

निमित्तानि [१.३१ सं(फल २.३)] कारण (लक्षणों को)

निमिषन् [५.९ वि(ध्यायत् १.१) (नि + √ मिष् तुदा P + शतृ)] आंख बंद करते हुए, पलक बन्द करते हुए

नियतम् [१.४४, ३.८, १८.९, २३ क्रिवि/वि(फल २.१)] निश्चित, निर्धारित

नियतमानसः [६.१५ वि(राम १.१) (नियतं मानसं यस्य सः)] वह जिसका मन नियन्त्रित है, वह जिसने अपना मन नियम में रक्खा है

नियतस्य [१८.७ वि(फल ६.१)] निर्धारित, विधानानुकूल

नियताः [७.२० वि(राम १.३)] प्रेरित हुए, लगाये गए

नियतात्मभिः [८.२ (नियतः आत्मा येषां तैः)] जिन्हों ने अपने को वश में किया है, उनके द्वारा; संयमियों द्वारा

नियताहाराः [४.३० वि(राम १.३) (नियतः आहारः येषां ते] वे जिनका आहार नियमित है

नियमम् [७.२० सं(राम २.१)] नियम, विधि (को)

नियम्य [३.७, ४१, ६२६, १८.५१ (नि + √यम् भ्वा P + ल्यप्)] नियम में, वश में, नियन्त्रण में (रख कर)

नियोक्ष्यति [१८.५९ (नि + √युज् रुधा P लृट् ३.१)] विवश करेगी, लाचार कर देगी

नियोजयसि [३.१) (नि + √युज् + णिच् लोट् २.१)] (तू) लगाता है, प्रेरित करता है

नियोजितः [३.३६ वि(राम १.१) (नि + √युज् + णिच् + क्त)] विवश हुआ, लाचार हुआ

निरग्निः [६.१ वि.(हरि १.१)] अग्नि से रहित, अग्नि के बिना, जिसने अग्नि होत्र आदि कर्म छोड़ दिए है

निरहंकारः [२.७१, १२.१३ वि(राम १.१)] अहंकार रहित

निराशीः [३.३०, ४.२१, ६.१०] आशा न करते हुए, आशा रहित

निराश्रयः [४.२० वि(राम १.१)] आश्रय रहित, बिना परावलम्बन के

निराहारस्य [२.५९ वि(राम ६.१)] निराहारी का, मिताहारी संयमी (का)

निरीक्षे [१.२२ (निः √ ईक्ष् भ्वा A लट् १.१)] देखता हूँ

निरुद्धम् [६.२० वि(फल १.१)] वश में किया हुआ, अंकुश में आया हुआ

निरुद्ध्य [८.१२ (अ.) (नि + √रुध् तना P + ल्यप्)] रख कर, बन्द करके, अन्दर रख के, परिरोध करके

निर्गुणत्वात् [१३.३१ सं(फल ५.१)] निगुर्ण होने से

निर्गुणम् [१३.१४ वि(फल २.१)] बिना गुणों के, गुणों से रहित

निर्देशः [१७.२३ वि(फल २.१)] विशेष विवरण, नाम

निर्दोषम् [५.१९ वि(फल १.१)] दोषरहित, निष्कलंक, निर्मल

निर्द्वन्द्वः [२.४५, ५.३ वि(राम १.१)] द्वन्द्वों के बिना, सुखदुःखादि द्वन्द्वों से मुक्त

निर्ममः [२.७१, ३.३०, १२.१३, १८.५३ वि(राम १.१)] ममत्व रहित, ममता रहित

निर्मलत्वात् [१४.६ सं(फल ५.१)] निर्मलता के कारण, निर्मल होने के कारण, बिगा किसी दाग या कलंक के होने से

निर्मलम् [१४.१६ वि(फल २.१)] निर्मल, निष्कलंक

निर्मानमोहाः [१५.५ सं(राम १.३) (मानः च मोहः च निर्गतौ येभ्यः ते)] वे जिनसे मान और मोह चले गए हैं, अभिमान और भ्रम से रहित

निर्योगक्षेमः [२.४५ वि(राम १.१) (न अस्ति योगः च क्षेमः च यस्य सः)] वह जो (किसी भी वस्तु) के पाने और संभालने में नहीं है; प्राप्ति (उपलब्धि) और संरक्षण के ध्यान से निश्चिन्त; अप्राप्त की प्राप्ति (योग) और प्राप्त की रक्षा (क्षेम) से निश्चिन्त

निर्वाणपरमाम् [६.१५ वि(विद्या २.१) (निर्वाणं परमं यस्याः ताम्)] निर्वाण अन्त है जिसका, उसकी

निर्विकारः [१८.२६ वि(राम १.१)] अपरिवर्तित; जिसका परिवर्तन नही हुआ

निर्वेदम् [२.५२ सं(राम २.१)] उदासीनता, तटस्थता, (को)

निर्वैरः [११.५५ (निः + सं(राम १.१)] बिना वैर के, द्वेष रहित

निवर्तते [२.५९, ८.२५ (नि + √ वृत् भ्वा A लट् ३.१)] दूर होजाता है, छूट जाता है, निवृत्त होता है, लौट आता है

निवर्तन्ति [१५.४] लौटना लौटते हैं, वापिस आते हैं (आर्ष प्रयोग) (देखें निवर्तन्ते)

निवर्तन्ते [८.२१, ९.३, १५.६ (नि + √ वृत A लट् ३.३)] (वे) लौटते हैं, फिर जन्म लेते हैं

निवर्तितुम् [१.३९ (क्रिवि अ.) (नि + √ वृत् भ्वा A + तुमुन्)] बचने के लिए, पराङ्मुख होने के लिए

निवसिष्यसि [१२.८ (नि + √ वस् भ्वा P लृट् २.१)] (तू) रहेगा

निवातस्थः [६.१९ वि(राम १.१)] वायुरहित स्थान में स्थित

निवासः [९.१८ सं(राम १.१)] निवास, आवास (स्थान)

निवृत्तानि [१४.२२ वि(फल २.३) (नि + √वृत् भ्वा A + क्त)] प्राप्त न होने पर, चले जाने पर, चले गये हुओं को

निवृत्तिम् [१६.७, १८.३० सं(हरि २.१)] अक्रियता, अकर्तव्य, प्रत्यागमन (लौट आना, फिर से आना)

निवेशाय [१२.८ (नि + √विश तुदा P + णिच् लोट् २.१)] प्रवेश कराना, लगाना

निशा [२.६९ सं(विद्या १.१)] निशा, रात्रि

निश्चयम् [१८.४ सं(फल १.१)] निश्चय, निष्कर्ष

निश्चयेन [६.२३ वि(राम ३.१)] निश्चित रूप से, निश्चय ही

निश्चरति [६.२६ (निः + √ चर् भ्वा P लट् ३.१)] भागता है

निश्चला [२.५३ वि(विद्या १.१)] निश्चल, अचल, अटल, स्थिर

निश्चितम् [२.७, १८.६ वि(फल १.१)] निश्चय करके, निर्णायक रूप से

निश्चिताः [१६.११ वि(राम १.३)] आश्वासित, सुनिश्चित

निश्चित्य [३.२ (अ.) (निः + √चि भ्वा + ल्यप्)] निश्चय करके, निर्धारित

निष्ठा [३.३, १७.१, १८.५० सं(विद्या १.१)] धारणा, विश्वास, आस्था, अन्तिम अवस्था, गति

निस्त्रैगुण्यः [२.४५ वि(राम १.१)] तीनों गुणों से रहित (अलिप्त), तीनों गुणों के बिना

निहताः [११.३३ वि(राम १.३)] मारे हुए, हनन किए हुए, मारे गए

निहत्य [१.३६ (क्रिवि अ.) (नि + √ हन् अदा + ल्यप्)] मार कर

नीतिः [१०.३८, १८.७८ सं(मति १.१)] राजनीति, कूटनीति, धर्म परायणता

नु [१.३५, २.३६ (अ.)] तब, सचमुच, वास्तव में

नृलोके [११.४६ सं(राम ७.१) (नृणां लोके)] मनुष्य लोक में

नृषु [७.८ सं(धातृ ७.३)] पुरुषों में

नैष्कर्म्यम् [३.४ सं(फल २.१)] निष्कर्म भाव, कर्मों से मुक्ति, कर्म शून्यता ऐसी युक्ति से कर्म करने की स्थिति जिसमें कर्म बन्धन उत्पन्न नहीं होते-तिलक

नैष्कर्म्यसिद्धिम् [१८.४९ सं(मति २.१) (निर्गतानि कर्माणि यस्मात् सः (निष्कर्मा) तस्य भावः)] वह जिससे क्रियाएं चली गई हैं, ऐसे की पूर्णता (कर्म शून्यता) रूप सिद्धि को

नैष्कृतिकः [१८.२८ वि(राम १.१)] दुर्भाव पूर्ण, नीच

नैष्ठिकीम् [५.१२ वि(नदी २.१)] परम्, अन्तिम, भली प्रकार संस्थापित

नो [१७.२८ (अ.)] नहीं , न

न्याय्यम् [१८.१५ वि(फल १.१)] न्याय संगत, न्यायोचित

न्यासम् [१८.२ सं(राम २.१)] त्याग (को)

प

पक्षिणाम् [१०.३० सं(शशिन् ६.३)] पक्षियों में

पचन्ति [३.१३ (√पच् भ्वा P लट् ३.३)] पकाते हैं

पचामि [१५.१४ (√पच भ्वा P लट् १.१)] मैं पकाता हूं, मैं पचाता हूं

पञ्च [१३.५, १८.१३, १५ संवि(प्रथमा बहु. पु.)] पांच संख्या

पञ्चमम् [१८.१४ संख्या. क्रम.वि.(प्रथमा एक.नपु.)] पांचवां

पणवानकगोमुखाः [१.१३ सं(राम १.३) (पणवाः च आनकाः च गोमुखाः च)] तबले, और ढोल (मृदंग) और रण सिंगे

पण्डितम् [४.१९ वि(राम २.१)] पंडित, विद्वान्

पण्डिताः [२.११, ५.४, १८ सं(राम १.३)] पण्डित लोग, समझदार लोग

पतंगाः [११.२९ सं(राम १.३)] पतंग, शलभ (बहुवचन), कीड़े

पतन्ति [१.४२, १६.१६ (√पत् भ्वा P लट् ३.३)] गिरते हैं, अधोगति को प्राप्त होते हैं, पतन होता है

पत्रम् [९.२६ सं(फल २.१)] पत्ता, पत्र

पथि [६.३८ सं(पथिन् ७.१)] मार्ग में

पदम् [२.५१, ८.११, १५.४, ५, १८.५६ सं(फल २.१)] पद (निवास) स्थान, लक्ष्य, ध्येय

पद्मपत्रम् [५.१० सं(फल २.१) (पद्मस्य पत्रम्)] कमल पत्र

परंतप [२.३; ४.२, ५, ३३; ७.२७; ९.३; १०.४०; ११.५४; १८.४१ सं(राम ८.१) (परान् तपति)] हे परंतप

परंतपः [२.९ सं(राम १.१)] वह जो शत्रुओं को ताप देता है (नष्ट करता है), अर्जुन

परंपराप्राप्तम् [४.२ वि(राम २.१) (परंपरया प्राप्तम्)] परम्परा से प्राप्त हुआ

परः [४.४०, ८.२०, २२, १३.२२ सं(राम १.१)] (के) परे, पार; (और) ऊपर, सर्वोत्तम

परतः [३.४२ (अ.)(पर + तस्.)] अधिक महत्त्वपूर्ण, अधिक श्रेष्ठ, परे है

परतरम् [७.७ वि(फल १.१)] अधिक श्रेष्ठ, बढ़कर

परधर्मः [३.३५ सं(राम १.१)] दूसरे का धर्म

परधर्मात् [३.३५, १८.४७ सं(राम ५.१) (परस्य धर्मात्)] दूसरे के धर्म की अपेक्षा

परम् [२.१२, ५९; ३.११, १९; ४२, ४३; ४.४; ५.१६; ७.१३, २४; ८.१०, २८; ९.११; १०.१२; ११.१८,३७, ३८, ४७; १३.१२, १७, ३४; १४.१, १९, १८.७५ (अ.) वि(फल २.१)] पीछे, बाद में, परमात्मा को, सर्वोपरि को, उत्तम, श्रेष्ठ, पहले का, प्राचीन (के) परे, पार

परमः [६.३२ वि(राम १.१)] श्रेष्ठ, उत्तम

परमम् [८.३, ८, २१; १०.१, १२; ११.१, ९, १८; १५.६; १८.६४, ६८ वि(राम २.१) (फल २.१)] सर्वोच्च, सर्वोपरि

परमात्मा [६.७, १३.२२, ३१, १५.१७ सं(आत्मन् १.१)] परमात्मा, ईश्वर

परमाम् [८.१३, १५, २१; १८.४९ वि(विद्या २.१)] सर्वोच्च, सर्वोपरि

परमेश्वर [११.३ सं(राम ८.१)] हे परमेश्वर

परमेश्वरम् [१३.२७ सं(राम २.१)] परमेश्वर को

परमेष्वासः [१.१७ वि(राम १.१) (परमः इष्वासः यस्य सः)] वह जिसका धनुष श्रेष्ठ (है)

परया [१.२८, १२.२, १७.१७ वि(विद्या ३.१)] परम, अत्यधिक, अतिशाय

परस्तात् [८.९ अ.] परे, पार, उसपार

परस्परम् [३.११, १०.९ अ.(परः + परम्)] एक दूसरे को, आपस में

परस्य [१७.१९ सं(राम ६.१)] दूसरे के, पराये के

परा [३.४२, १८.५० वि(विद्या १.१)] वरिष्ठ, उच्च, उत्तम

पराणि [३.४२ वि(फल १.३)] श्रेष्ठ, प्रवर, वरिष्ठ

पराम् [४.३९, ६.४५; ७.५, ९.३२; १३.२८; १४.१; १६.२२, २३; १८.५४, ६२, ६८ वि(विद्या २.१)] परम, सर्वोच्च, श्रेष्ठ

परिकीर्तितः [१८.७, २७ (परि + √ कीर्त् चुरा. P + क्त)] कहा गया है, नामधारी है

परिक्लिष्टम् [१७.२१ (अ.) (परि + √ क्लिश् दिवा A + क्त)] दुखपूर्वक, अनिच्छा से

परिग्रहम् [१८.५३ सं(राम २.१)] लोलुपता, संचय

परिचक्षते [१७.१३, १७ (परि + √ चक्ष् अदा A लट् ३.३)] (वे) कहते हैं, घोषणा करते हैं

परिचर्यात्मकम् [१८.४४ वि(फल १.१) (परिचर्या आत्मा यस्य तत्)] वह जिसका स्वभाव सेवा है, सेवा स्वरूप

परिचिन्तयन् [१०.१७ वि.(ध्यायत् १.१) (परि + √ चिन्त् चुरा P + शतृ)] मनन करते हुए, चिन्तन करते हुए

परिज्ञाता [१८.१८ वि(धातृ १.१)] जानने वाला, ज्ञाता

परिणामे [१८.३७, ३८ सं(राम ७.१)] परिणाम में, अन्त में

परित्यज्य [१८.६६ (परि + √ त्यज् भ्वा P + ल्यप्)] त्याग कर, छोड़ कर

परित्यागः [१८.७ सं(राम १.१)] त्याग, परित्यक्तता

परित्राणाय [४.८ सं(फल ४.१)] रक्षा के लिए

परिदह्यते [१.३० (परि + √ दह् दिवा A लट् ३.१)] सर्वत्र जलती है

परिदेवना [२.२८ सं(विद्या १.१)] विलाप

परिपन्थिनौ [३.३४ वि(शशिन् १.२)] (दो) पथ की बाधांए, प्रतिरोध, शत्रु

परिप्रश्नेन [४.३४ सं(राम ३.१)] प्रश्न करके, पूछताछ करके, अनुसन्धान से, छान बीन द्वारा,

परिमार्गितव्यम् [१५.४ वि(फल १.१) (परि + √ मृग चुरा. A + णिच + तव्य,)] शोध करना चाहिए, भली प्रकार ढूंढ़ना चाहिए

परिशुष्यति [१.२९ (परि √ शुष् दिवा P ३.१)] सूखता है, शुष्क होता है

परिसमाप्यते [४.३३ (परि + सम् √ आप् + कर्मणि लट् ३.१)] पराकाष्ठा को पहुँचता हैं, का अन्त है, समाप्त होता है।

पर्जन्यः [३.१४ सं(राम १.१)] वर्षा, बादल

पर्जन्यात् [३.१४ सं(राम ५.१)] वर्षा से, बादल से

पर्णानि [१५.१ सं(फल १.३)] पत्ते

पर्यवतिष्ठते [२.६५ (परि + अव + √ स्था A लट् ३.१)] टिक जाता है, स्थिर होता है

पर्याप्तम् [१.१० वि(फल १.१)] यथेष्ट, जितना चाहिए उतना

पर्युपासते [४.२५, ९.२२, १२.१, ३, २० (परि + उप + √ आस् A लट् ३.३)] (वे) अभ्यास, उपासना, करते हैं

पर्युषितम् [१७.१० वि(फल २.१)] एक रात से अधिक देर का, बासी

पवताम् [१०.३१ सं (ध्यायत् ६.३) (√ पव् भ्वा A शतृ)] पवित्र करने वालों में, शोधकों (का), मे, (को)

पवनः [१०.३१ सं(राम १.१)] पवन, बयार

पवित्रम् [४.३८, ९.२, १७; १०.१२ वि(फल १ १/२)] पवित्र करने वाला, पवित्र

पश्य [१.३, २५, ९.५; ११.५, ६, ७, ८ (√ दृश् -पश्य् भ्वा P लोट् २.१)] देखना, देखिए

पश्यतः [२.६९ वि(ध्यायत् ६.१) (√ दृश्-पश्य् भ्वा P + शतृ)] देखने वाले (की)

पश्यति [२.२९;५.५, ६.३०, ३२; १३.२७, २९; १८.१६ (√दृश् - पश्य भ्वा P लट् ३.१)] (वह) देखता है

पश्यन् [५.८, ६.२०, १३.२८ वि.(ध्यायत् १.१)] (√दृश्-पश्य् भ्वा P + शतृ)] देखता हुआ

पश्यन्ति [१.३८, १३.२४, १५.१०, ११ (√ दृश्-पश्य् भ्वा P लट् ३.३)] (वे) देखते हैं

पश्यामि [१.३१, ६.३३, ११.१५, १६, १७, १९] (√दृश्-पश्य् भ्वा P लट् १.१)] (मैं) देखता हूं

पश्येत् [४.१८ (√दृश् भवा P विधि ३.१)] (वह) देख सके

पाञ्चजन्यम् [१.१५ सं(राम २.१)] पाञ्चजन्य को (श्रीकृष्ण के शंख का नाम)

पाण्डव [४.३५;६.२; ११.५५; १४.२२; १६.५ सं(राम ८.१)] (हे) पाण्डव

पाण्डवः [१.१४, २०, ११.१३ सं(राम १.१)] पाण्डव

पाण्डवाः [१.१ (पाण्डोः पुत्राः) (राम १.३)] पाण्डु के पुत्रों (ने)

पाण्डवानाम् [१०.३७ सं(राम ६.३)] पाण्डवों में

पाण्डवानीकम् [१.२ फल (२.१) (पाण्डवानाम् अनीकम्)] पाण्डवों की सेना (को)

पाण्डुपुत्राणाम् [१.३ (राम ६.३)] पाण्डु के पुत्रों (की)

पातकम् [१.३८ सं(फल १.१)] अपराध, पाप को

पात्रे [१७.२० सं(फल ७.१)] सत्पात्र को, योग्य पुरुष को

पापकृत्तमः [४.३६ वि(राम १.१)] सब से अधिक पाप करने वाला, सर्वाधिक पाप करने वाला

पापम् [१.३५, ४५, २.३३, ३८, ३.३६;५.१५; ७.२८ सं(फल १.१/२.१)] पाप, अघ, पाप को

पापयोनयः [९.३२ वि(हरि १.३) (पापा योनिः येषां ते)] वे जिनके गर्भ पापपूर्ण है, पाप योनि में जन्म पाये हुए

पापाः [३.१३ सं(राम १.३(] पापी लोग

पापात् [१.३९ सं(फल ५.१)] पाप से

पापेन [५.१० सं(फल ३.१)] पाप से,

पापेभ्यः [४.३६ सं(राम ५.३)] पापियों की अपेक्षा

पापेषु [६.९ वि(राम ७.३)] पापियों में

पाप्मानम् [३.४१ वि(आत्मन् २.१)] पाप, पापरूप को, पापी को

पारुष्यम् [१६.४ सं(फल १.१)] कठोरता, कर्कशता

पार्थ [१.२५... सं(राम ८.१)] हे पार्थ (अर्जुन)

पार्थः [१.२६, १८.७८ सं(राम १.१)] पार्थ

पार्थस्य [१८.७४ सं(राम ६.१)] पार्थ का

पार्थाय [११.९ सं(राम ४.१)] पार्थ के लिए

पावकः [२.२३, १०.२३, १५.६ सं(राम १.१)] अग्नि

पावनानि [१८.५ वि(फल १.३)] पवित्र करने वाले

पितरः [१.३४, ४२ सं(पितृ १.३)] पिता, (बहुवचन)

पिता [९.१७, ११.४३, ४४, १४.४ सं(पितृ १.१)] पिता

पितामहः [१.१२, ९.१७ सं(राम १.१)] दादा

पितामहाः [१.३४ सं(राम १.३)] दादा, पितामह (बहुवचन)

पितामहान् [१.२६ सं(राम २.३)] दादों को

पितृव्रताः [९.२५ सं(राम १.३) (पितृभ्यः व्रतं येषां ते)] वे जिनके व्रत पितरों के लिए हैं, पितरों का पूजन करने वाले

पितॄणाम् [१०.२९ सं(पितृ ६.३)] पितरों में

पितॄन् [१.२६, ९.२५ सं(पितृ २.३)] पितागण, पितरों को

पीडया [१७.१९ सं(विद्या ३.१)] पीडा देकर, सन्ताप से, अत्यन्त कष्ट सहकर

पुंसः [२.६२ सं(पुमस् ६.१)] पुरुष का

पुण्यः [७.९ वि(राम १.१)] पवित्र, विशुद्ध

पुण्यकर्मणाम् [७.२८, १८.७१ सं(कर्मन् ६.३) (पुण्यं कर्म येषां तेषाम्) सं(कर्मन् ६.३)] उनका जिनके कर्म पवित्र हैं, पुण्यवानों का

पुण्यकृताम् [६.४१ वि(मरुत् ६.३)] पुण्यवानों के

पुण्यफलम् [८.२८ सं(फल १.१) (पुण्यस्य फलम्)] पुण्य फल, सुकर्मों का फल

पुण्यम् [९.२०, १८.७६ वि(राम २.१)] पवित्र, विशुद्ध

पुण्याः [९.३३ सं/वि(राम १.३)] पुण्यवान्, पवित्र

पुण्ये [९.२१ सं(राम ७.१)] पुण्य (में)

पुत्रदारगृहादिषु [१३.९ सं (हरि ७.३) (पुत्रश्च दारश्च गृहञ्च गृहादयस्तेषु)] पुत्र पत्नी और घर आदि में

पुत्रस्य [११.४४ सं(राम ६.१)] पुत्रका

पुत्राः [१.३४, ११.२६ सं(राम १.३)] पुत्र (बहुवचन)

पुत्रान् [१.२६ सं(राम २.३)] पुत्रों को

पुनः [४.९...(अ.)] फिर, इसके अतिरिक्त, दूसरी ओर, और

पुनरावर्तिनः [८.१६ वि(शशिन् १.३) (पुनः आवर्तते यः तस्य)] फिर लौटते हुए का; उसका जो फिर लौटता है

पुनर्जन्म [४.९, ८.१५, १६ सं(जन्मन् १/२.१) पुनर्जन्म

पुमान् [२.७१ सं(पुमस् १.१)] पुरुष

पुरस्तात् [११.४० (अ.)] पहले से, सम्मुख

पुरा [३.३, १०, १७.२३ (अ.)] पहले, सृष्टि के आरम्भ में, प्राचीन काल में

पुराणः [२.२०, ११.३८ वि(राम १.१)] प्राचीन, पुरातन, चिरन्तन

पुराणम् [८.९ वि(राम २.१)] प्राचीन, पुरातन (को)

पुराणी [१५.४ वि(नदी १.१)] प्राचीन, सनातन

पुरातनः [४.३ वि(राम १.१)] पुरातन, प्राचीन

पुरुजित् [१.५ सं(मरुत् १.१)] पुरुजित्

पुरुषः [२.२१, ३.४, ८.४, २२; ११.१८, ३८; १३.२०, २१, २२; १५.१७, १७.३ सं(राम १.१)] पुरुष, मनुष्य, सचेतन अधिष्ठाता (मुखिया,प्रधान) चैतन्यात्मिका प्रकृति, परमात्मा

पुरुषम् [२.१५, ८.८, १०; १०. १२, १३.०, १९, २३, १५.४ सं(राम २.१)] पुरुष को, (देखिए पुरुषः)

पुरुषर्षभ [२.१५ सं(राम ८.१)] हे पुरुषों में श्रेष्ठ, हे पुरुषश्रेष्ठ

पुरुषव्याघ्र [१८.४ सं(राम ८.१)] हे पुरुषव्याघ्र, हे नरसिंह

पुरुषस्य [२.६० सं(राम ६.१)] पुरुष की

पुरुषाः [९.३ सं(राम १.३)] मनुष्य, लोग (बहुवचन)

पुरुषोत्तम [८.१, १०.१५, ११.३ सं(राम ८.१) (पुरुषेषु उत्तम)] हे सर्व श्रेष्ठ पुरुष, हे पुरुषोत्तम

पुरुषोत्तमः [१५.१८ सं(राम १.१)] पुरुषोत्तम, सर्वश्रेष्ठ पुरुषो

पुरुषोत्तमम् [१५.१९ सं(राम २.१)] पुरुषोत्तम को, सर्वश्रेष्ठ पुरुष को

पुरुषौ [१५.१६ सं(राम १.२)] (दो) पुरुष

पुरे [५.१३ सं(फल ७.१)] नगर में, पुरी में

पुरोधसाम् [१०.२४ सं(चन्द्रमस् ६.३)] पुरोहितों में

पुष्कलाभिः [११.२१ वि(विद्या ३.३)] गूंजते हुए स्वरों से, (भव्य, प्रतापी); प्रतिध्वनि करते (पुष्कल = एक प्रकार का ढोल)

पुष्णामि [१५.१३ (√पुष् क्र्या P लट् १.१)] (मैं) पोषण करता हूं, पुष्ट करता हूं

पुष्पम् [९.२६ सं(फल २.१)] फूल, पुष्प

पुष्पिताम् [२.४२ वि(विद्या २.१)] अलंकृत, आलंकारिक, लच्छेदार

पूजार्हौ [२.४ वि(राम २.२) (पूजायाः अर्हौ)] (दोनों) पूजा के योग्य (हैं), (दोनों) पूजनीय हैं

पूज्यः [११.४३] पूजा करने योग्य, पूज्य

पूतपापाः [९.२० वि(राम १.३) (पूतं पापं येषां ते)] वे जिनके पाप शुद्ध हुए (है) , पाप से मुक्त हुए

पूताः [४.१० वि(राम १.३)] पवित्र हुए, शुद्ध हुए

पूति [१७.१० वि(वारि १.१)] सड़ाहुआ, दुर्गन्धयुक्त

पूरुषः [३.१९, ३६ सं(राम १.१)] मनुष्य, पुरुष

पूर्वतरम् [४.१५ वि(फल १.१)] पूर्व काल (में), प्राचीन समय (में)

पूर्वम् [११.३३ वि(राम २.१)] पहले

पूर्वाभ्यासेन [६.४४ सं(राम ३.१) (पूर्वेण अभ्यासेन)] पूर्व (जन्म) के अभ्यास से, पहले के अभ्यास से

पूर्वे [१०.६ वि(राम ७.१)] प्राचीन, पूर्व (के) पहले के

पूर्वैः [४.१५ वि(राम ३.३)] पूर्वजों द्वारा

पृच्छामि [२.७ (√प्रच्छ् तुदा P लट् १.१)] (मैं) पूछता हूं, (मैं) निवेदन करता हूं

पृथक् [१.१८, ५.४, १३.४, १८.१, १४ (अ.)] अलग-अलग

पृथक्त्वेन [९.१५, १८.२१, २९ सं(फल ३.१)] बहुविध रूप से, नाना रूप से, अलग-अलग

पृथग्विधम् [१८.१४ वि(राम २.१)] अलग अलग, भिन्न-भिन्न प्रकार की

पृथग्विधाः [१०.५ वि(राम १.३) (पृथक् विधाः येषां ते)] वे जिनके वर्ग भिन्न हैं, नाना प्रकार के

पृथग्विधान् [१८.२१ वि(राम २.३)] नाना भांति के, विविध प्रकार के

पृथिवीपते [१.१८ सं(हरि ८.१) (पृथिव्याः पते)] हे पृथिवी के स्वामी

पृथिवीम् [१.१९ सं(नदी २.१)] पृथ्वी

पृथिव्याम् [७.९, १८.४० सं(नदी ७.१)] पृथ्वी में

पृष्ठतः [११.४० (अ.)] पीछे से, पीठ, पीछे

पौण्ड्रम् [१.१५ सं(राम २.१)] पौण्ड्र

पौत्राः [१.३४ सं(राम १.३)] पौत्र पोते (बहुवचन)

पौत्रान् [१.२६ सं(राम २.३)] पौत्र, पोते (बहुवचन)

पौरुषम् [७.८, १८.२५ सं(फल १/२.१)] पुरुषत्व, पराक्रम, शक्ति योग्यता

पौर्वदेहिकम् [६.४३ वि(राम २.१)] पिछले शरीर के, पूर्व जन्म के

प्रकाशः [७.२५, १४.११ सं(राम १.१)] ज्ञात हुआ, प्रगट हुआ, प्रकाश, ज्योति

प्रकाशकम् [१४.६ वि(फल १.१)] प्रकाशित करने वाला

प्रकाशम् [१४.२२ सं(राम २.१)] प्रकाश को, ज्ञान को

प्रकाशयति [५.१६, १३.३३ (प्र + √काश् भ्वा A + णिच् P लट् ३.१)] ज्योतित करता है, प्रदीप्त करता है

प्रकीर्त्या [११.३६ सं(मति ३.१)] (तेरा) कीर्तन करने से, गुणगान करने से

प्रकृतिः [७.४, ९.१०, १३.२०, १८.५९ सं(मति १.१)] प्रकृति, स्वभाव, जड़ वस्तु, भौतिक-तत्त्व

प्रकृतिजान् [१३.२१ वि(राम २.३) (प्रकृतेः जातान्)] प्रकृति से उत्पन्न

प्रकृतिजैः [३.५, १८.४० वि(राम ३.३)] प्रकृति से उत्पन्न

प्रकृतिम् [३.३३, ४.६, ७.५; ९.७, ८, १२, १३; ११.५१, १३.१, २३ सं(मति २.१)] प्रकृति को, स्वभाव को, प्रकृति

प्रकृतिसंभवाः [१४.५ सं(राम १.३) (प्रकृतेः संभवः येषां ते)] वे जिन की उत्पति प्रकृति से हैं, प्रकृति से उत्पन्न होने वाले

प्रकृतिसंभवान् [१३.१९ सं(राम २.३) (प्रकृतेः संभवो येषां तान्)] उनको जिनकी उत्पत्ति प्रकृति से है, प्रकृति से उत्पन्न

प्रकृतिस्थः [१३.२१ वि(राम १.१) (प्रकृतौ तिष्ठति इति)] ऐसे प्रकृति में स्थित, (बैठता है)

प्रकृतिस्थानि [१५.७ वि.(फल १.३) (प्रकृतौ स्थितानि)] प्रकृति में स्थित

प्रकृतेः [३.२७, २९, ३३, ९.८ सं(मति ६.१)] प्रकृति का, स्वभाव का

प्रकृत्या [७.२०, १३.२९ सं(मति ३.१)] प्रकृति द्वारा, स्वभाव से

प्रजनः [१०.२८ सं(राम १.१)] संतति उत्पन्न करने वाला, प्रजोत्पत्ति करने वाला

प्रजहाति [२.५५ (प्र + √ हा जुहो P लट् ३.१)] (वह) फेंकता है, त्यागता है

प्रजहि [३.४१ (प्र + √ हा जुहो P लोट् २.१)] मार डाल, बध करदे

प्रजाः [३.१०, २४, १०.६ सं(विद्या १.३)] प्रजा, लोग, जन साधारण

प्रजानाति [१८.३१ (प्र + √ ज्ञा क्र्या. P लट् ३.१)] (वह) जानता है, समझता है

प्रजानामि [११.३१ (प्र + √ ज्ञा क्र्या P लट् १.१)] (मैं) जानता हूं

प्रजापतिः [३.१०, ११.३९ सं(हरि १.१)] प्रजापति, ब्रह्मा

प्रज्ञा [२.५७, ५८, ६१.६८ सं(विद्या १.१)] बुद्धि, समझ

प्रज्ञाम् [२.६७ सं(विद्या २.१)] बुद्धि, समझ

प्रज्ञावादान् [२.११ (राम २.३) (प्रज्ञायाः वादान्)] ज्ञान के शब्द

प्रणम्य [११.१४, ३५.४४ (अ.) (प्र + √ नम् भ्वा P + ल्यप्)] प्रणाम करके, साष्टांग, दण्डवत् प्रणाम करके

प्रणयेन [११.४१ सं(राम ३.१)] अनुराग, स्नेह (से)

प्रणवः [७.८ सं(राम १.१)] ओंकार, ॐ

प्रणश्यति [२.६३; ६.३०; ९.३१ (प्र + √ नश् दिवा. P लट् ३.१)] (वह) नष्ट होता है

प्रणश्यन्ति [१.४० (प्र + √ नश् दिवा P लट् ३.३)] नष्ट होते हैं

प्रणश्यामि [६.३० (प्र + √ नश् दिवा P लट् १.१)] नष्ट हो जाना, खो जाना, लुप्त हो जाना (मेरा)

प्रणिधाय [११.४४ (अ.) (प्र + नि + √ धा जुहो P + ल्यप्)] झुकाकर, नमितकर

प्रणिपातेन [४.३४ सं(राम ३.१)] आदर सत्कार से, विनय पूर्वक, नम्रतापूर्वक

प्रतपन्ति [११.३० (प्र + √ तप् भ्वा P लट् ३.३)] जलते हुए, तपाते हुए

प्रतापवान् [१.१२ सं(धीमत् १.१)] यशस्वी, प्रतापी, तेजस्वी

प्रति [२.४३ (अ.)] के लिए

प्रतिजानीहि [९.३१ (प्रति + √ ज्ञा क्र्या P लोट् २.१)] (तू) निश्चय पूर्वक जान

प्रतिजाने [१८.६५ (प्रति + √ ज्ञा क्र्या A/P लट् १.१)] (मैं) वचन देता हूं

प्रतिपद्यते [१४.१४ (प्रति + √ पद् भ्वा A लट् ३.१)] जाता है

प्रतियोत्स्यामि [२.४ (प्रति + √ युध् + सन् दिवा P लट् १.१)] मैं आक्रमण करूंगा, मैं लडूंगा, युद्ध करूंगा

प्रतिष्ठा [१४.२७ सं(विद्या १.१)] आवास निवास-स्थान

प्रतिष्ठाप्य [६.११ (अ.) (प्र + √ स्था भ्वा P ल्यप्)] स्थापना करके, स्थापित करके

प्रतिष्ठितम् [३.१५ सं(फल १.१) (प्र + √ स्थाभ्वा P + क्त)] स्थापित है, रहता है

प्रतिष्ठिता [२.५७, ५८, ६१, ६८ वि(विद्या १.१) (प्र + √ स्था भ्वा P + क्त)] स्थित है, स्थिर है

प्रत्यक्षावगमम् [९.२ (फल १.१) (प्रत्यक्षेण अवगमः यस्य तत्)] वह जिसका अनुभव सीधे से हो, स्पष्ट बोध हो जिसका-वह

प्रत्यनीकेषु [११.३२ सं(फल ७.३)] प्रति-द्वंद्वी सेनाओं में, विरोधी सेनाओं में

प्रत्यवायः [२.४० सं(राम १.१)] उल्लंघन, अपराध, विघ्न अड़चन

प्रत्युपकारार्थम् [१७.२१ (अ.) (प्रत्युपकारस्य अर्थम्)] बदले में, लाभ के लिए

प्रथितः [१५.१८ वि(राम १.१) (√ प्रथ् भ्वा A अथवा चुरा P + क्त)] घोषित किया हुआ, कहा हुआ

प्रदध्मतुः [१.१४ (प्र + √ ध्मा भ्वा. P लिट् ३.२)] (दोनों ने) बजाए

प्रदिष्टम् [८.२८ वि.(फल १.१) (प्र + √ दिश् तुदा P + क्त)] निर्दिष्ट, निर्धारित हुआ

प्रदीप्तम् [११.२९ वि(राम २.१)] जलता हुआ, धधकता हुआ

प्रदुष्यन्ति [१.४१ (प्र + √ दुष् दिवा P लट् ३.३)] दुश्चरित्र, चरित्रहीन, हो जाती हैं

प्रद्विषन्तः [१६.१८ वि.(ध्यायत् १.३) (प्र + √ द्विष् अदा P + शतृ)] अत्यन्त द्वेष रखते हुए, घृणा करते हुए

प्रनष्टः [१८.७२ वि.(राम १.१) (प्र + √ नश् दिवा P + क्त.)] नष्ट हुआ

प्रपद्यते [७.१९ (प्र + √ पद् दिवा A ३.१)] पास आता है, समीप आता है, पा लेता है

प्रपद्यन्ते [४.११, ७.१४, १५, २० (प्र + √ पद् दिवा. लट् A ३.३)] पास आते हैं, आश्रय लेते हैं, भजते हैं, समीप आते हैं

प्रपद्ये [१५.४ (प्र + √ पद् दिवा. A लट् १.१)] (मैं) शरण में जाता हूं

प्रपन्नम् [२.७ सं(राम २.१) प्र + √ पद् दिवा A + क्त)] प्रार्थी, शरण में आए हुए को

प्रपश्य [११.४९ (प्र + √ दृश्-पश्य् भ्वा P लोट् २.१)] देख, देखना

प्रपश्यद्भिः [१.३९ वि(ध्यायत् ३.३) (प्र + √ दृश्-पश्य + शतृ)] देखने वालों द्वारा

प्रपश्यामि [२.८ (प्र + √ + दृश्-पश्य भ्वा P लट् १.१)] (मैं) देखता हूं

प्रपितामहः [११.३९ (प्र + पितामह (राम १.१)] परदादा, पितामह, ब्रह्मा के पिता

प्रभवः [७.६, ९.१८, १०.८ सं(राम १.१)] उत्पत्ति का स्रोत, (उद्गम)

प्रभवति [८.१९ (प्र + √ भू-भ्वा P लट् ३.१)] उमड़ पड़ता है, प्रकट होता है

प्रभवन्ति [८.१८, १६.९ (प्र + √ भू-भ्वा P लट् ३.३)] उमड़ निकलते हैं, प्रकट होते हैं, उत्पन्न होते है

प्रभवम् [१०.२ सं(राम २.१)] उत्पत्ति को, उद्गम, मूल को

प्रभविष्णु [१३.१६ सं(गुरु १.१)] प्रजनन करता हुआ, उत्पन्न करता हुआ, कर्त्ता

प्रभा [७.८ सं(विद्या १.१.)] दीप्ति, चमक

प्रभाषेत [२.५४ (प्र + √ भाष् भ्वा A विधि ३.१)] (वह) बोले, बोलना चाहिए

प्रभुः [५.१४, ९.१८.२४ सं(गुरु १.१)] प्रभु, ईश्वर

प्रभो [११.४, १४.२१ सं(गुरु ८.१)] हे प्रभु, हे ईश्वर !

प्रमाणम् [३.२१, १६.२४ सं(फल २.१)] प्रमाण, सत्ता, प्रामाणिक

प्रमाथि [६.३४ वि(वारि १.१)] उतावला, अविवेकी, तीव्र

प्रमाथीनि [२.६० वि(फल १.३)] प्रचण्ड, प्रबल, उग्र, मंथन करने वाली

प्रमादः [१४.१३ सं(राम १.१)] असावधानी, भ्रम, भ्रांति

प्रमादमोहौ [१४.१७ सं(राम १.२) (प्रमादः च मोहः च)] असावधानी और भ्रम

प्रमादात् [११.४१ सं(राम ५.१)] असावधानी से

प्रमादालस्यनिद्राभिः [१४.८ सं(विद्या ३.३) (प्रमादेन च आलस्येन च निद्रया च)] प्रमाद (असावधानी), आलस और निद्रा से (के साथ)

प्रमादे [१४.९ सं(राम ७.१)] असावधानी में, भूल चूक में

प्रमुखे [२.६ (अ.)] सामने, सम्मुख

प्रमुच्यते [५.३, १०.३ (प्र + √ मुच् तुदा A + कर्म. A लट् ३.१)] मुक्त होता है, छूटता है

प्रयच्छति [९.२६ (प्र + √ दा भ्वा P लट् ३.१)] अर्पण करता है, भेंट करता है

प्रयतात्मनः [९.२६ वि(आत्मन् ६.१) (प्रयतः आत्मा यस्य तस्य)] उसका जिसकी आत्मा प्रयत्न करती हुई है, प्रयत्नशील मनुष्य, ऐसे व्यक्ति का जिसका हृदय शुद्ध (स्वच्छ) है

प्रयत्नात् [६.४५ सं(राम ५.१)] प्रयत्न से, दृढ़ता के साथ

प्रयाणकाले [७.३०, ८.२, १० सं(राम ७.१) (प्रयाणस्य काले)] आगे जाने के समय में, मृत्यु के समय में, प्रस्थान के समय में

प्रयाताः [८.२३, २४ (वि(राम १.३) (प्र + √या अदा. P + क्त)] प्रस्थान किये हुए, आगे गये हुए

प्रयाति [८.५, १३ (प्र + √या अदा. P लट् ३.१)] प्रस्थान करता है, आगे जाता है

प्रयुक्तः [३.३६ वि.(राम १.१) (प्र + √युज् + क्त)] प्रेरित किया हुआ, उकसाया हुआ, ठेला हुआ

प्रयुज्यते [१७.२६ कर्म. A ३.१) (प्र + √युज् रुधा. P + कर्म A ३.१)] बोला जाता है, प्रयुक्त होता है, (का) प्रयोग होता है

प्रलपन् [५.९ वि(ध्यायत् १.१) (प्र + √लप् भ्वा P शतृ)] बोलते हुए

प्रलयः [७.६ ९.१८ सं(राम १.१)] प्रलय, नाश का कारण

प्रलयम् [१४.१४, १५ सं(राम २.१)] प्रलय को, विघटन को, मृत्यु

प्रलयान्ताम् [१६.११ सं(विद्या २.१) (प्रलयः अन्तः यस्याः ताम्)] वह जिसका अन्त प्रलय है, मृत्यु के साथ अन्त होने वाली

प्रलये [१४.२ सं(राम ७.१)] प्रलय में

प्रलीनः [१४.१५ वि(राम १.१) (प्र. + √ली + क्त.)] लय हुआ, विघटित हुआ

प्रलीयते [८.१९] (प्र.√ली दिवा. A लट् ३.१)] (वह) विलीन हो जाता है, लुप्त हो जाता है

प्रलीयन्ते [८.१८ (प्र + √ली दिवा. A लट् ३.३)] (वे) लुप्त हो जाते हैं, विलीन हो जाते हैं

प्रवक्ष्यामि [४.१६, ९.१, १३.१२, १४.१ (प्र + √ब्रू अदा. P लृट् १.१)] (मैं) बतलाऊंगा, कहूंगा, घोषित करूंगा

प्रवक्ष्ये [८.११ (प्र + √ब्रू अदा. A लृट १.१)] (मैं) बलाऊंगा, कहूंगा, वर्णन करूंगा

प्रवदताम् [१०.३२ सं(ध्यायत् ६.३) (प्र + √वद् भ्वा P + शतृ)] वाद विवाद करने वालों की, वक्ताओं की

प्रवदन्ति [२.४२, ५.४ (प्र + √वद् भ्वा P लट् ३.३)] बोलते हैं, कहते हैं, व्यक्त करते है

प्रवर्तते [५.१४, १०.८ (प्र + √वृत् भ्वा A लट् ३.१)] (वह) चलता है, होता है, रहता है, विकसित होता है, उत्पन्न होता है

प्रवर्तन्ते [१६.१०, १७.२४ (प्र + √वृत् भ्वा. A लट् ३.३)] लगे रहते हैं, (वे) चलते हैं, आरम्भ होते हैं

प्रवर्तितम् [३.१६ वि(फल २.१) (प्र + √वृत् चुरा/भ्वा A/P)] चलाए हुए, घूमते हुए

प्रविभक्तम् [११.१३ वि(फल १.१)] भाग किये हुए, विभाजित

प्रविभक्तानि [१८.४१ वि.(फल १.३) (प्र + वि √भज् भ्वा P + क्त)] विभक्त हुए हैं, बांटे हुए है, अलग-अलग किए हुए हैं

प्रविलीयते [४.२३ (प्र + वि + √ली दिवा A लट् ३.१)] विलीन हो जाता है, नष्ट हो जाता है

प्रविशन्ति [२.७० (प्र + √विश् P तुदा लट् ३.३)] (वे) प्रवेश करते हैं

प्रवृत्तः [११.३२ सं(राम १.१) (प्र + वृत् भ्वा A + क्त)] प्रकट हुआ, आरम्भ किया हुआ

प्रवृत्तिः [१४.१२, १५.४, १८.४६ सं(मति १.१) (प्र + √वृत् भ्वा A क्तिन्)] मन का लगाव, झुकाव, निवृत्ति का उलटा, व्यवहार, सक्रियता

प्रवृत्तिम् [११.३१, १४.२२, १६.७, १८.३० सं(मति २.१) प्र + √वृत् भ्वा A + क्तिन्)] चेष्टा, व्यापार, मन के लगाव (को), बढ़कर काम करने की इच्छा

प्रवृत्ते [१.२० वि(राम ७.१) प्र + √वृत् भ्वा A + क्त)] आरम्भ होने पर, आरम्भ होते ही

प्रवृद्धः [११.३२ वि(राम १.१)] वृद्धि पाया हुआ, सुविस्तृत, विशाल

प्रवृद्धे [१४.१४ वि(राम ७.१) (प्र + √वृध् + क्त)] बढ़े हुए में, वृद्धि पाए हुए में

प्रवेष्टुम् [११.५४ (अ.) (प्र + √विश् + णिच् + तुमुन्)] प्रवेश करने के लिए

प्रव्यथितम् [११.२० वि(फल १.१)] व्याकुल हुआ, त्रस्त हुआ, उत्पीड़ित

प्रव्यथिताः [११.२३ सं(राम १.३)] त्रस्त हुए (हैं), दुःखित हैं, व्याकुल हैं

प्रव्यथितान्तरात्मा [११.२४ सं(आत्मन् १.१) (प्रव्यथितः अन्तरात्मा यस्य सः)] वह जिसकी आत्मा (भय से) कांप रही (हैं), व्याकुल चित्त वाला

प्रशस्ते [१७.२६ वि(फल ७.१)] प्रशंसनीय, श्लाघ्य स्तुत्य

प्रशान्तमनसम् [६.२७ वि(चन्द्रमस् २.१) (प्रशान्तं मनः यस्य तम्)] उसको जिसका मन शान्तिमय है, शान्त चित्त वाले को

प्रशान्तस्य [६.७ वि(राम ६.१)] शान्तिपूर्ण का, शान्ति मय का, शान्ति प्रिय का

प्रशान्तात्मा [६.१४ वि(आत्मन् १.१) (प्रशान्तः आत्मा यस्य सः)] वह जिसकी आत्मा पूर्ण शान्त हुई है, पूर्ण शान्ति वाला

प्रसक्ताः [१६.१६ वि(राम १.३) (प्र + √ सद् + क्त)] अनुरक्त हुए, आसक्त हुए, मस्त हुए,

प्रसंगेन [१८.३४ सं.(राम ३.१) (प्र + संज् + घञ्)] अनुरक्ति से, आसक्ति से

प्रसन्नचेतसः [२.६५ वि(चन्द्रमस् ६.१) (प्रसन्नं चेतः यस्य तस्य)] उसका जिसका मन शान्त है, प्रसन्न चित्तवाले की

प्रसन्नात्मा [१८.५४ सं(आत्मन् १.१) (प्रसन्नः आत्मा यस्य सः)] वह जिसकी आत्मा शान्त है-प्रसन्न है

प्रसन्नेन [११.४७ वि.(राम ३.१) (प्र- √सद् + क्त.)] प्रसन्न हुए (द्वारा)

प्रसभम् [२.६०, ११.४१ (अ.)] तीव्रता से, दुराग्रह से, हठसे

प्रसविष्यध्वम् [३.१० (प्र + √ सू अदा A लृट् २.३)] (तुम) फलो फूलो, वृद्धि को प्राप्त होओ, प्रजनित होओ

प्रसादम् [२.६४ सं(राम २.१)] शान्ति (को), प्रसन्नता (को)

प्रसादये [११.४४ (प्र + √सद् + णिच् लट् १.१)] प्रसन्न होने की प्रार्थना करता हूं

प्रसादे [२.६५ सं(राम ७.१)] शान्ति में, चित्त प्रसन्न होने पर

प्रसिध्येत् [३.८ (प्र + √सिध् + विधि ३.१)] सफल हो

प्रसीद [११.२५, ३१, ४५ (प्र + √सद् भ्वा P लोट् २.१)] प्रसन्न हो प्रसन्न होइए

प्रसृता [१५.४ वि(विद्या १.१) (प्र + √सृ भ्वा लट् + क्त)] प्रसार की हुई, उत्पन्न की हुई

प्रसृताः [१५.२ वि(विद्या १.३) (प्र + √सृ भ्वा A + क्त)] फैली हैं

प्रहसन् [२.१० वि.(ध्यायत् १.१) (प्र + √हस् भ्वा. P शतृ)] मुस्कराते हुए

प्रहास्यसि [२.३९ प्र + √ हा जुहो P लृट २.१)] (तू) छोड़ देगा, फेंक देगा

प्रहृष्यति [११.३६ (प्र + √हृष् दिवा P लट् ३.१)] (वह) प्रसन्न होता है, हर्षित होता है

प्रहृष्येत् [५.२० (प्र + √हृष् दिवा P विधि३.१)] (वह) आनन्द मनाता है, प्रसन्न होता है

प्रह्लादः [१० ३० सं(राम १.१)] प्रह्लाद

प्राक् [५.२३ (अ.)] पहले

प्राकृतः [१८.२८ वि(राम १.१)] अभद्र, अशिष्ट, असभ्य

प्राञ्जलयः [११.२१ वि(हरि १.३)] हाथ जोड़े हुए

प्राणकर्माणि [४.२७ सं(कर्मन् २.३) (प्राणस्य कर्माणि)] प्राणों के कर्मों को

प्राणम् [४.२९, ८.१०, १२ सं(राम २.१)] बाहर जाने वाली श्वास को, श्वासों को

प्राणान् [१.३३, ४.३० सं(राम २.३)] प्राणों को

प्राणापानगती [४.२९ सं(मति २.२) (प्राणस्य च अपानस्य च गती)] प्राण की और अपान की गतियों को

प्राणापानसमायुक्तः [१५.१४ वि.(राम १.१) (प्राणेन च अपानेन च समायुक्तः)] जाने और आने वाली श्वासों से मिलकर, बाहर जाने वाली और भीतर आने वाली श्वासों से युक्त (होकर)

प्राणापानौ [५.२७ सं(राम २.२) (प्राणः च अपानः च)] बाहर जानेवाले श्वास और भीतर आने वाले श्वास, प्राण और अपान

प्राणायामपरायणाः [४.२९ वि(राम १.३) (प्राणायामः परायणं येषां ते)] वे जिनका अन्तिम आश्रय प्राणायाम है, प्राणायाम में तत्पर रहने वाले

प्राणिनाम् [१५.१४ सं(शशिन् ६.३)] प्राणियों के

प्राणे [४.२९ सं(राम ७.१)] बाहर जाने वाली श्वास में

प्राणेषु [४.३० सं(राम ७.३)] प्राणों में

प्राधान्यतः [१०.१९ (अ) (प्राधन्य + तस्)] मुख्य-मुख्य, प्रमुख, विशिष्ट, लब्ध प्रतिष्ठ

प्राप्तः [१८.५० वि.(राम १.१) (प्र + √ आप् स्वा. P + क्त)] प्राप्त (हुआ) पहुंचा हुआ

प्राप्नुयात् [१८.७१ (प्र + √ आप् स्वा P विधि ३.१)] प्राप्त होता है

प्राप्नुवन्ति [१२.४ (प्र + √ आप् स्वा P लट् ३.३)] (वे) प्राप्त करते हैं

प्राप्य [२.५७. ७२, ५.२०, ६.४१, ८.२१, २५; ९.३३ (अ) (प्र + √ आप् स्वा P + ल्यप्)] प्राप्त करके, पाकर

प्राप्यते [५.५ (प्र + √ आप् स्वा A (कर्म) लट् ३.१)] पाया जाता है, प्राप्त किया जाता है

प्राप्स्यसि [२.३७, १८.६२ (प्र + √ आप् स्वा P लृट् २.१)] (तू) प्राप्त करेगा, पाएगा

प्राप्स्ये [१६.१३ (आर्ष प्रयोग) (प्र + आप् स्वा. P लृट् १.१)] (मैं) प्राप्त करूंगा, पाऊंगा

प्रारभते [१८.१५ (प्र-आ- √ रभ् भ्वा A लट् ३.१)] प्रारम्भ करता है, करने का उत्तरदायित्व लेता है

प्रार्थयन्ते [९.२० (√ प्र-√ अर्थ चुरा A लट् ३.३)] प्रार्थना करते हैं, मांगते हैं

प्राह [४.१ (प्र + ब्रू अदा P लिट् ३.१)] कहा

प्राहुः [६.२, १३.१, १५.१, १८.२, ३ (प्र + √ ब्रू अदा. P लिट् ३.३)] (वे) कहते हैं, कहा है

प्रियः [७.१७, ९.२९, ११.४४, १२.१४, १५, १६, १७, १९, १७.७; १८.६५ वि(राम १.१)] प्रिय, इष्ट

प्रियकृत्तमः [१८.६९ वि(राम १.१)] अति प्रिय करने वाला

प्रियचिकीर्षवः [१.२३ सं(गुरु १.३) (प्रियस्य चिकीर्षवः)] प्रिय करने के इच्छुक

प्रियतरः [१८.६९ वि(राम १.१)] अधिक प्रिय

प्रियम् [५.२० वि(राम २.१/फल २.१)] प्रिय वस्तु, सुखद

प्रियहितम् [१७.१५ सं(फल २.१) (प्रियं च हितं च)] सुखद और हितकर

प्रियाः [१२.२० वि.(राम १.३)] प्रिय

प्रियायाः [११.४४ वि(विद्या ६.१)] परम प्रिय, को, के लिए

प्रीतमनाः [११.४९ वि(चन्द्रमस् १.१) (प्रीतं मनः यस्य सः)] वह जिसका मन संतुष्ट है, शांतचित्त

प्रीतिः [१.३६ सं(मति १.१)] आनन्द

प्रीतिपूर्वकम् [१०.१० (प्रीतिः पूर्वं यथा स्यात् तथा)] प्रेम पूर्वक

प्रीयमाणाय [१०.१ सं(राम ४.१) (√ प्री क्र्या A/P + कर्मणि य् + शानच्)] प्रियजन के लिए, उसके लिए, जिससे प्रेम करते है

प्रेतान् [१७.४ सं(राम २.३)] प्रेत हुओं को, पिशाचों को

प्रेत्य [१७.२८, १८.१२ (प्र + √ इ अदा P + ल्यप्)] जाने के बाद, यहां के बाद, परलोक में

प्रोक्तः [४.३, ६.३३, १०.१०, १६.६ सं(राम १.१) (प्र + √ वच् अदा. P + क्त)] कहा गया, घोषित हुआ (है)

प्रोक्तम् [८.१, १३.११, १७.१५, १८.३७ (फल १.१) (प्र + √ वच् अदा. P + क्त)] कहाता है, पुकारा जाता है, कहते हैं

प्रोक्तवान् [४.१, ४.४ (धीमत् १.१) (प्र + √ वच् + क्तवतु)] कहा था, कहा

प्रोक्ता [३.३ - (प्र + वच् + क्त + टाप्)] कहा है, कही गई है

प्रोक्तानि [१८.१३ वि.(फल २.३) (प्र. + √ वच् अदा P + क्त)] कहे गये हैं

प्रोच्यन्ते [१८.१९ (प्र + √ वच् अदा A/P A लट् ३.३)] कहे जाते हैं

प्रोच्यमानम् [१८.२९ वि(राम २.१) (प्र + √ वच् + शानच्)] कहे हुए को, कहे गए को

प्रोतम् [७.७ वि(फल १.१)] पिरोया हुआ, गूंथा हुआ

फ

फलम् [२.५१, ५.४, ७.२३, ९.२६, १४.१६, १७.१२, २१.२५, १८.९, १२ सं(फल १/२.१)] फल को, फल

फलहेतवः [२.४९ वि(गुरु १.३) (फलं हेतुः येषां ते)] वे जिनका उद्देश्य फल है, फलाकांक्षी

फलाकांक्षी [१८.३४ वि(शशिन् १.१) (फलस्य आकांक्षी)] फल के इच्छुक

फलानि [१८.६ सं(फल १/२.३)] फलों (को)

फले [५.१२ सं(फल ७.१)] फल में

फलेषु [२.४७ सं(फल ७.३)] फलों में

ब

बत् [१.४५ (अ)] हाय

बद्धाः [१६.१२] वि(राम १.३) (√ बन्ध् + क्त .)] बँधे हुए

बध्नाति [१४.६ (√ बन्ध् क्र्या P लट् ३.१)] बांधता है, जकड़ता है

बध्यते [४.१४ (√ बन्ध क्या P कर्मणि A लट् ३.१)] (वह) बंधा है, बंधता है

बन्धम् [१८.३० सं(राम २.१)] बन्धन (को)

बन्धात् [५.३ सं(राम ५.१)] बन्धन से

बन्धुः [६.५, ६ सं(गुरु १.१)] सम्बन्धी

बन्धून् [१.२७] सम्बन्धियों को

बभूव [२.९ (भू भ्वा P लिट् ३.१)] हो गया

बलम् [१.१०, ७.११, १६.१८, १८.५३ सं(फल) १/२.१)] बल, शक्ति

बलवत् [६.३४ वि (जगत् १.१)] बल

बलवताम् [७.११ सं(धीमत् ६.३)] बलवानों का

बलवान् [१६.१४ वि(धीमत् १.१)] बलवान्

बलात् [३.३६ (अ)] बल से

बहवः [१.९, ४.१०, ११.२८ वि(गुरु १.३)] बहुत से, अनेक

बहिः [५.२७, १३.१५ (अ.)] बाहरी, बाहूय, बाहर, के बाहर, अलग

बहुदंष्ट्राकरालम् [११.२३ वि(राम २.१) (बहूवीभिः दंष्ट्राभिः करालम्)] अनेक भयंकर दन्तों सहित

बहुधा [९.१५, १३.४ (अ.)] अनेक प्रकार से

बहुना [१०.४२ सं(गुरु ३.१)] बहुत से, अनेक

बहुबाहूरुपादम् [११.२३ सं(फल २.१)] बहवः बाहवः च ऊरवः च पादाः च यस्मिन् तत्)] वह जिसमें अनेक भुजाएं और जंघाएं और पैर हैं

बहुमतः [२.३५ वि(राम १.१) (बहु मतः)] बहु सम्मानित, बहुत मान्यता पाये हुए, बहुमान्य

बहुलायासाम् [१८.२४ वि(फल १.१) (बहुलः आयासः यस्मिन् तत्)] वह जिसमें बहुत परिश्रम है, क्लेश है

बहुवक्त्रनेत्रम् [११.२३ सं(फल २.१) (बहूनि वक्त्राणि च नेत्राणि च यस्मिन् तत्)] वह जिसमें अनेक मुख और नेत्र (हैं)

बहुविधाः [४.३२ वि(राम १.३)] विविध, नाना रूप, बहुत प्रकार के

बहुशाखाः [२.४१ सं(विद्या १.३) (बह्व्यः शाखाः यासां ताः)] वे जिनकी बहुत शाखाएं हैं

बहूदरम् [११.२३ सं(फल २.१) (बहूनि उदराणि यस्मिन् तत्)] वह जिसमें अनेक उदर हैं

बहून् [२.३६ वि(बहु २.३)] बहुतों (को) अनेक को

बहूनि [४.५, ११.६ वि(बहु १/२.३)] अनेक, बहुत से

बहूनाम् [७.१९ वि(बहु ६.३)] बहुतों का, अनेक का

बालाः [५.४ सं(राम १.३)] बालक गण, अज्ञानी लोग

बाह्यस्पर्शेषु [५.२१ सं(राम ७.३) (बाह्येषु स्पर्शेषु)] बाह्य (बाहरी) सम्पर्कों, संस्पर्शों (में)

बाह्यान् [५.२७ वि(राम २.३)] बाहरी, बाह्य

बिभर्ति [१५.१७ (√ भृ जुहो, P लट् ३.१)] संभालकर रखता है, भरण-पोषण करता है

बीजप्रदः [१४.४ सं(राम १.१) (बीजं प्रददाति इति)] बीज देता है, बीज रोपने वाला, बीज स्थापन करने वाला

बीजम् [७.१०, ९.१८, १०.३९ सं(फल २.१/१.१)] बीज, मूल कारण

बुद्धयः [२.४१ सं(मति १.३)] बुद्धियां

बुद्धिः [२.३९, ४१, ४४, ५२, ५३, ६५, ६६, ३.१, ४०, ४२, ७. ४.१०, १०.४, १३.५, १८. १७, ३०, ३१, ३२ सं(मति १.१)] ज्ञान, विचार, बुद्धि

बुद्धिग्राह्यम् [६.२१ वि(फल १.१) (बुद्ध्या ग्राह्यम्)] बुद्धि से समझने योग्य

बुद्धिनाशः [२.६३ सं(राम १.१) (बुद्धेः नाशः)] बुद्धि का नाश

बुद्धिनाशात् [२.६३ सं(राम ५.१)] बुद्धि के नाश से

बुद्धिभेदम् [३.२६ सं(राम २.१) (बुद्धेः भेदम्)] बुद्धि भेद, बुद्धि को विसर्जित करना (तितर बितर करना)

बुद्धिम् [३.२, १२.८ सं(मति २.१)] बुद्धि, समझ (को)

बुद्धिमताम् [७.१० वि(धीमत् ६.३)] बुद्धिमानों की, ज्ञानियों की

बुद्धिमान् [४.१४, १५.२० वि.(धीमत् १.१)] बुद्धि मान्, विवेक वाला

बुद्धियुक्तः [२.५० वि(राम १.१) (बुद्ध्या युक्तः)] बुद्धि से सम्पन्न, बुद्धि से युक्त, बुद्धिवाला

बुद्धियुक्ताः [२.५१ वि(राम १.३)] बुद्धि वाले

बुद्धियोगम् [१०.१०, १८.५७ सं(राम २.१) (बुद्धिः योगम्)) बुद्धि का योग, विवेक बुद्धि

बुद्धियोगात् [२.४९ सं(राम २.१) (बुद्धेः योगात्) बुद्धि योग से

बुद्धिसंयोगम् [६.४३ सं(राम २.१) (बुद्धे : संयोगम्)] बुद्धि संयोग को, बुद्धि की विशिष्टताओं को

बुद्धेः [३.४२, ४३, १८.२९ सं(मति ५.१; ६.१)] बुद्धि की अपेक्षा, बुद्धि के

बुद्धौ [२.४९ सं(मति ७.१)] बुद्धि में, शुद्ध विवेक बुद्धि में

बुद्ध्या [२.३९, ५.११, ६.२५, १८.५१ सं(मति ३.१)] बुद्धि से, तर्क के द्वारा

बुद्ध्वा [३.४३, १५.२० (अ.)(√ बुध् दिवा P + क्त्वाच्)] जान कर

बुधः [५.२२ सं(राम १.१)] बुद्धिमान्, ज्ञानवान् मनुष्य

बुधाः [४.१९, १०.८ सं(राम १.३)] बुद्धिमान् लोग, ज्ञानी लोग

बृहत्साम [१०.३५] इन्द्र की स्तुति का साममन्त्र, बृहत्साम

बृहस्पतिम् [१०.२४ सं(हरि २.१)] बृहस्पति

बोद्धव्यम् [४.१७ वि(फल १.१) (बुध् दिवा P + तव्य)] जानना चाहिए, जानने योग्य

बोधयन्तः [१०.९ वि.(ध्यायत् १.३) (√ बुध् दिवा A/P + णिच् P + शतृ)] प्रकाश डालते हुए, प्रबुद्ध करते हुए, समझाते हुए

ब्रवीमि [१.७ (√ ब्रू अदा P लट् १.१)] (मैं) कहता हूं, बतलाता हूं

ब्रवीषि [१०.१३ (√ ब्रू अदा P लट् २.१)] (आप) बतलाते हैं, कहते हैं

ब्रह्म [३.१५, ४.२४.३१, ५.६. १९ ७.२९, ८.१, ३,१३, २४, १०.१२, १३.१२.३०, १४.३,४; १८.५० सं(आत्मन्/कर्मन् २.१)] ब्रह्म, वेद, परम तत्त्व, ब्रह्मा, ब्राह्मण आदि अनन्त; (अव्यक्त) प्रकृति (१४.३,४) (देखें महद् ब्रह्म)

ब्रह्मकर्म [१८.४२ सं(कर्मन् १.१) (ब्रह्मणः- कर्म)] ब्राह्मण के कर्म

ब्रह्मकर्मसमाधिना [४.२४ सं(हरि ३.१) (ब्रह्म एव कर्म तस्मिन् समाधिः यस्य तेन)] जिसके कर्म और समाधि में केवल ब्रह्म है, उससे

ब्रह्मचर्यम् [८.११, १७.१४ सं(फल १/२.१)] ब्रह्मचर्य

ब्रह्मचारिव्रते [६.१४ सं(फल ७.१) (ब्रह्मचारिणः व्रते)] ब्रह्मचारी के व्रत में

ब्रह्मणः [४.३२, ६.३८, ८.१७, ११.३७, १४.२७, १७.२३ सं(आत्मन्/कर्मन् ५/६.१)] ब्रह्म के, वेद के, ब्रह्मा के

ब्रह्मणा [४.२४ सं(कर्मन् ३.१)] ब्रह्म के द्वारा

ब्रह्मणि [५.१०, १९, २० सं(कर्मन् ७.१)] ब्रह्म में

ब्रह्मनिर्वाणम् [२.७२, ५.२४, २५, २६ सं(फल १/२.१) (ब्रह्मणः निर्वाणम्)] ब्रह्म के निर्वाण को, ब्रह्मनिर्वाण को, ईश्वरीय आनन्द को

ब्रह्मभुवनात् [८.१६ सं(फल ५.१) (ब्रह्मणः भुवनात्)] ब्रह्म लोक से

ब्रह्मभूतः [५.२४, १८.५४ वि(राम १.१)] ब्रह्म हुआ, ब्रह्म रूप हुआ

ब्रह्मभूतम् [६.२७ वि(फल २.१)] ब्रह्म हुए (को) ब्रह्म रूप हुए (को)

ब्रह्मभूयाय [१४.२६, १८.५३ सं(फल ४.१) ब्रह्मणः भूयाय)] ब्रह्म होने के लिए, ब्रह्म भाव के प्राप्त करने के लिए, ब्रह्म रूप होने के लिए

ब्रह्मयोगयुक्तात्मा [५.२१ (आत्मन् १.१) (ब्रह्मणि योगेन युक्तः आत्मा यस्य सः)] वह जिसकी आत्मा योग द्वारा ब्रह्म में युक्त है

ब्रह्मवादिनाम् [१७.२४ वि(शशिन् ६.३)] ब्रह्म की व्याख्या करने वालों को, ब्रह्म के प्रतिपादक-ठीक प्रकार से कहने या समझाने वालों का

ब्रह्मवित् [५.२० वि(मरुत् १.१)] ब्रह्म को जानने वाला

ब्रह्मविदः [८.२४ वि(तत्त्वविद् १.३)] ब्रह्म वेत्ता, ब्रह्म को जानने वाले

ब्रह्मसंस्पर्शम् [६.२८ वि(राम २.१) (ब्रह्मणा संस्पर्शः यस्य तत्)] ब्रह्म के स्पर्श को, ब्रह्म के योग से होने वाले (सुख को)

ब्रह्मसूत्रपदैः [१३.४ सं(फल ३.३)] ब्रह्म सूत्र के पदों द्वारा (वचनों में)

ब्रह्माग्नौ [४.२४.२५ सं(हरि ७.१) (ब्रह्मणः अग्नौ)] ब्रह्म की अग्नि में, ब्रह्म रूपी अग्नि में

ब्रह्माणम् [११.१५ सं(आत्मन् २.१)] ब्रह्मा को

ब्रह्मोद्भवम् [३.१५ वि(फल २.१) (ब्रह्मणः उद्भवः यस्य तत्)] वह जिसकी उत्पत्ति, ब्रह्म (वेद) से है

ब्राह्मणक्षत्रियविशाम् [१८.४१ सं(विश् ६.३) (ब्राह्मणानां च क्षत्रियाणां च विशां च)] ब्राह्मणों के और क्षत्रियों के और वैश्यों के

ब्राह्मणस्य [२.४६ सं(राम ६.१)] ब्राह्मण का

ब्राह्मणाः [९.३३, १७.२३ सं(राम १.३)] ब्राह्मण लोग

ब्राह्मणे [५.१८ सं(राम ७.१)] ब्राह्मण में

ब्राह्मी [२.७२ वि.(नदी १.१)] ब्रह्म की, ईश्वरीय, दैवी

ब्रूहि [२.७, ५.१ (√ ब्रू अदा P लोट् २.१)] कहिए बतलाइए

भ

भक्तः [४.३, ७.२१, ९.३१, १२.१४ सं(राम १.१)] भक्त, उपासक

भक्ताः [९.३३, १२.१, २० सं(राम १.३)] निष्ठावान्, भक्तगण

भक्तिः [१३.१० सं(मति १.१)] भक्ति, श्रद्धा, उपासना

भक्तिम् [१८.६८ सं(मति २.१)] भक्ति को

भक्तिमान् [१२.१७, १९ वि(धीमत् १.१)] श्रद्धालु, भक्त

भक्तियोगेन [१४.२६ सं(राम ३.१) (भक्त्याः योगेन)] भक्ति के योग से, भक्ति योग द्वारा

भक्त्या [८.१०, २२, ९. १४, २६, २९, १०.५४, १८.५५ सं(मति ३.१)] भक्ति से, श्रद्धा से

भक्त्युपहृतम् [९.२६ वि(फल २.१) (भक्त्या उपहृतम्)] भक्ति से अर्पण किया हुआ

भगवन् [१०.१४, १७ सं(ध्यायत् ८.१)] हे भगवन्

भजताम् [१०.१० वि.(ध्यायत् ६.३) (√ भज् भ्वा A/P + शतृ)] पूजा करते हुओं को, भजन करने वालों को

भजति [६.३१, १५.१९ (√ भज् भ्वा P लट् ३.१)] भजता है, पूजा करता है

भजते [६.४७, ९.३० (√ भज् भ्वा A लट् ३.१)) भजता है

भजन्ति [९.१३, २९ (√ भज् भ्वा P लट् ३.३)] (वे) भजते हैं

भजन्ते [७.१६, २८. १०.८ (√ भज् भ्वा A लट् ३.३)] भजते हैं, पूजा करते हैं

भजस्व [९.३३ (√ भज् भ्वा A लोट् २.१)] भज, भजन कर (तू)

भजामि [९.११ (√ भज् भ्वा P लट् १.१)] (मैं) भजता हूं, पूजा करता हूं

भयम् [१०.४, १८.३५ सं(फल १.१/२.१)] भय

भयात् [२.३५, ४० सं(फल ५.१)] भय से

भयानकानि [११.२७ वि(फल २.३)] भयंकर, विकराल

भयाभये [१८.३० सं(फल २.२) (भयं च अभयं च)] भय और अभय, डर और निडरता

भयावहः [३.३५ वि(राम १.१)] भय लाने वाला, संकट में डालने वाला

भयेन [११.४५ सं(फल ३.१)] भय से

भरतर्षभ [३.४१, ७,११.१६, ८.२३, १३.२६, १४.१२, १८.३६ सं(राम ८.१) (भरतानाम् ऋषभ)] भरत वंश में श्रेष्ठ (हे), हे भरतश्रेष्ठ

भरतश्रेष्ठ [१७.१२ सं(राम ८.१)] (हे) भरतश्रेष्ठ

भरतसत्तम [१८.४ सं(राम ८.१)] हे भरतश्रेष्ठ, हे भरतसत्तम

भर्ता [९.१८, १३.२२ सं(धातृ १.१)] पोषक (पति)

भव [२.४५, ६.४६, ८.२७, ९.३४, ११.३३,४६, १२.१०, १८.५७,६५ (√ भू-भव् भ्वा P लोट् २.१)] हो, हो जा, जीवित हो, घटित हो

भवः [१०.४ सं(राम १.१)] अस्तित्व

भवतः [४.४, १४.१७ सर्व(भवत् ६.१) (√ भू भ्वा P लट् ३.२)] आप का, तेरा, होते हैं (दोनो)

भवति [१.४४, २.६३; ३.१४; ४.७, १२; ६.२, १७, ४२; ७.२३, ९.३१; १४.३, १०, २१; १७.२, ३, ७; १८.१२ (√ भ्वा P लट् ३.१)] है, होता है, अभिभावी होता है

भवन्तः [१.११ सर्व(भवत् पु १.३)] आप, आप सब

भवन्तम् [११.३१ सर्व(भवत् २.१)] आप को

भवन्ति [३.१४, १०.५, १६.३ (√ भू भ्वा P लट् ३.३)] हो जाते हैं, पैदा होते हैं

भवान् [१.८, १०.१२, ११.३१ सर्व(भवत् १.१)] आप

भवाप्ययौ [११.२ सं(राम १.२) (भवः च अप्ययः च)] होना और विलय, उत्पत्ति और प्रलय

भवामि [१२.७ (भू-भव्-भ्वा P लट् १.१)] होता हूं (मैं)

भविता [२.२०, १८.६९ (√ भू भव् भ्वा P लुट् ३.१)] होगा, होनेवाला

भविष्यताम् [१०.३४ सं(ध्यायत् ६.३)] भविष्य में होने वालों का

भविष्यति [१६.१३ (√ भू-भव् भ्वा P लृट् ३.१)] (वह) होगे

भविष्यन्ति [११.३२ (√ भू-भव् भ्वा P लृट् ३.३)] (वे) होंगे

भविष्याणि [७.२६ वि(फल २.३)] जो होने वाले हैं, जो भविष्य काल में होंगे

भविष्यामः [२.१२ (√ भू-भव् भ्वा P लृट् १.३)] (हम) होंगे

भवेत् [१.४६, ११.१२ (√ भू-भव् भ्वा P विधि ३.१)] होगा, हो जाए

भस्मसात् [४.३७ (अ.)] भस्मीभूत, भस्मरूप, राख

भाः [११.१२ सं(भास् १.१)] वैभव, चमक

भारत [१.२४,२.१०.१४.१८.२८.३०, ३.२५, ४.७.४२, ७.२७, ११.६ १३.२.३३, १४.३.८.९, १०, १५.१९.२०, १६.३, १७.३, १८.६२ सं(राम ८.१)] हे भारत

भावः [२.१६, ८.४२०, १८.१७ सं(राम १.१)] अस्तित्व, हस्ती, अवस्था, मनोदशा

भावना [२.६६ सं(विद्या १.१)] मनन, चिन्तन, ध्यान, विचार

भावम् [७.१५, २४, ८.६, ९.११, १८.२० सं(राम २.१)] स्वभाव को, स्वरूप को

भावयत [३.११ (√ भू भ्वा + णिच् लोट् २.३)] (तुमलोग) पोषण करो, प्रोत्साहित करो

भावयन्तः [३.११ सं(ध्यायत् १.३) (√ भू भ्वा णिच् + शतृ)] प्रोत्साहित करते हुए

भावयन्तु [३.११ (√ भू भ्वा + णिच् लोट् ३.३)] पोषण करें, विकसित करें

भावसंशुद्धिः [१७.१६ सं(मति १.१) (भावस्य संशुद्धिः)] भावना की शुद्धता, शुद्ध संवेदनशीलता

भावसमन्विताः [१०.८ वि(राम १.३) भावेन समन्विताः)] भावना से सम्पन्न, प्रेम पूर्वक

भावाः [७.१२, १०.५ सं(राम १.३)] गुण, (बहुवचन) मनोदशाएं, चित्त वृत्तियां, मनः स्थितियाँ

भावेषु [१०.७ सं(राम ७.३)] मनोदशाओं में, भावों में, अवस्थाओं में

भावैः [७.१३ सं(राम ३.३)] स्वभावों (से) मनोदशाओं (से)

भाषसे [२.११ (√ भाष् भ्वा A लट् २.१)] कहता है, बोलता है (तू)

भाषा [२.५४ सं(विद्या १.१)] परिभाषा, वर्णन, लक्षण, व्याख्या

भासः [११.१२, ३० सं(भास् ६.१; १.३)] महिमा के, प्रताप के, महिमा, गौरव

भासयते [१५.६, १२ (√ भास् चुरा A लट् ३.१)] प्रकाशित करता है

भास्वता [१०.११ वि(धीमत् ३.१)] प्रकाशमय, चमकते हुए, जगमगाता

भिन्ना [७.४ वि(विद्या १.१)] विभाजित

भीतभीतः [११.३५ वि(राम १.१) (भीतः भीतः)] भय भीत हुआ

भीतम् [११.५० वि(राम २.१)] भय भीत (को)

भीताः [११.२१ वि(राम १.३)] भयभीत हुए

भीतानि [११.३६ वि(फल १.३)] भयभीत हुए, आतंकित हुए

भीमकर्मा [१.१५ वि(आत्मन् १.१) (भीमं कर्म यस्य सः)] वह जिसके काम भयंकर (हैं)

भीमाभिरक्षितम् [१.१० वि(फल १.१) (भीमेन अभिरक्षितम्)] भीम द्वारा नियन्त्रित (या) संरक्षित

भीमार्जुनसमाः [१.४ सं(राम १.३) (भीमस्य अर्जुनस्य च समाः)] भीम और अर्जुन के तुल्य

भीष्मः [१.८, ११.२६ सं(राम १.१)] भीष्म

भीष्मद्रोणप्रमुखतः [१.२५ (भीष्मस्य च द्रोणस्य च प्रमुखतः)] भीष्म और द्रोण के सम्मुख, भीष्म और द्रोण की उपस्थिति (में)खख

भीष्मम् [१.११, २.४, ११.३४ सं(राम २.१)] भीष्म (को) भीष्म पितामह को

भीष्माभिरक्षितम् [१.१० वि(फल १.१) (भीष्मेण अभिरक्षितम्)] भीष्म द्वारा नियन्त्रित (या संरक्षित)

भुक्त्वा [९.२१ (अ.) (√ भुज् रुधा P + क्त्वाच्)] भोग कर

भुङ्क्ते [३.१२; १२.२१ (√भुज् रुधा A लट् ३.१)) भोगता है, रस लेता है

भुङ्क्ष्व [११.३३ (√ भुज् रुधा A लोट् २.१)] भोग, आनन्द ले

भुञ्जते [३.१३ (√ भुज् रुधा A लट् ३.३)] भोगते हैं, आनन्द मनाते हैं

भुञ्जानम् [१५.१० वि(राम २.१)] भोगते हुए (को)

भुञ्जीय [२.५ (√भुज् रुधा A विधि १.१)] मैं खाऊंगा, मैं भोगूंगा

भुवि [१८.६९ सं(भू ७.१)] पृथ्वी पर (में)

भूः [२.४७ सं(भू १.१) हो

भूत [सं(नपु.)] कोई वस्तु, चाहे वह मानवी हो चाहे दैवी, और चाहे निर्जीव; जड़-चेतनादि

भूतगणान् [१७.४ सं(राम २.३) (भूतानां गणान्)] भूतों के समुदाय को, भूतगणों को (देखिए 'भूत')

भूतग्रामः [८.१९ सं(राम १.१) (भूतानां ग्रामः)] प्राणियों का समुदाय, भूतसमूह (देखिए 'भूत')

भूतग्रामम् [९.८, १७.६ सं(राम २.१) (भूतानां ग्रामम्)] प्राणियों के समुदाय को, (पंच) महाभूतों को (देखिए 'भूत')

भूतपृथग्भावम् [१३.३० सं(राम २.१) (भूतानां पृथक् भावम्)] प्राणियों के भिन्नभिन्न अस्तित्वों को, प्राणियों के अनेकत्व को (देखिए 'भूत')

भूतप्रकृतिमोक्षम् [१३.३४ सं(राम २.१) (भूतानां प्रकृतेः मोक्षम्)] प्राणियों की प्रकृति से मुक्ति

भूतभर्तृ [१३.१६ वि.(कर्तृ १.१) (भूतानां भर्तृ)] प्राणियों का भरण पोषण करने वाला (देखिए 'भूत')

भूतभावन [१०.१५ वि(राम ८.१) (भूतानि भावयति इति)] हे ! इस प्रकार प्राणियों को उत्पन्न करने वाले (देखिए 'भूत')

भूतभावनः [९.५ वि(राम १.१) (भूतानि भावयति इति)] इस प्रकार विकसित करता है प्राणियों को, (पोषित करता है) (देखिए 'भूत')

भूतभावोद्भवकरः [८.३ वि.(राम १.१) (भूतानां भावस्य उद्भवं करोति इति सः)] जो इस प्रकार उत्पन्न करता है प्राणियों के स्वभाव को, प्राणिमात्र को उत्पन्न करने वाला, सृष्टि उत्पन्न करने वाला (देखिए 'भूत')

भूतभृत [९.५ वि(मरुत्१.१) (भूतानि बिभर्ति इति)] इस प्रकार धारण करता है भूतों को जो (देखिए 'भूत')

भूतम् [१०.३९ सं(फल १.१)] प्राणी (देखिए 'भूत')

भूतमहेश्वरम् [९.११ सं(राम २.१) (भूतानां महेश्वरम्)] प्राणियों (भूतों) के महेश्वर (महाईश्वर), को (देखिए 'भूत')

भूतविशेषसंघान् [११.१५ सं(राम २.३) (भूतानां विशेषाणां संघान्)] नाना प्रकार के प्राणियों के समुदायों को (देखिए 'भूत')

भूतसर्गौ [१६.६ सं(राम १.२) (भूतानां सर्गौ)] प्राणियों का सर्जन, उत्पत्ति, निर्गम (देखिए 'भूत')

भूतस्थः [९.५ वि(राम १.१) (भूतेषु तिष्ठति इति)] इस प्रकार स्थित है प्राणियों में, जीवों में स्थित हुआ (देखिए 'भूत')

भूतादिम् [९.१३ सं(हरि २.१) (भूतानां आदिम्)] प्राणियों के आदि (आरम्भ) को (देखिए 'भूत')

भूतानि [२.२८.३०.३४.६९, ३.१४.३३, ४.३५, ७.६.२६, ८.२२, ९.५.६.२५, १०.१३.१६ सं(फल १.३/२.३)] प्राणी, मनुष्य, सबलोग, भूतों (को) (देखिए 'भूत')

भूतानाम् [४.६, १०.५२०.२२, ११.२, १३.१५, १८.४६ सं(फल ६.३)] भूतमात्र का, संपूर्ण प्राणियों का (देखिए 'भूत')

भूतिः [१८.७८ सं(मति १.१)] वैभव, ऐश्वर्य, उत्तरोत्तर ऐश्वर्य की वृद्धि

भूतेज्याः [९.२५ (भूतेभ्यः इज्या येषां ते)] वे जिनका व्रत भूतों के लिए है, भूतों का पूजन करने वाले (देखिए 'भूत')

भूतेश [१०.१५ सं(राम ८.१) (भूतानाम् ईश)] हे प्राणियों के ईश्वर (देखिए 'भूत')

भूतेषु [७.११, ७.२०, १३.१६.२७, १६.२, १८.२१.५४ सं(फल ७.३)] प्राणियों में (देखिए 'भूत')

भूत्वा [२.२०, ३५, ४८; ३.३६; ८.१९; ११.५०; १५.१३, १४ (अ.) (√भू- भ्व P + क्तवाच्)] होकर, उत्पन्न होकर (देखिए 'भूत')

भूमिः [७.४ सं(मति १.१)] पृथ्वी

भूमौ [२.८ सं(मति ७.१)] पृथ्वी में, पृथ्वी पर

भूयः [२.२०, ६.४३ (अ.)] फिर, दुबारा

भृगुः [२.२५ सं(गुरु १.१)] भृगु

भेदम् [१७.७, १८.२९ सं(राम २.१)] भेदभाव, पृथक्करण, प्रभेद

भेर्यः [१.१३ सं(नदी १.३)] ताशे, नक्कारे, नगाड़े

भैक्ष्यम् [२.५ सं(फल २.१)] भिक्षा

भोक्ता [९.२४, १३.२२ वि(धातृ १.१) (√भुज् रुधा P + तृच्)] भोगने वाला

भोक्तारम् [५.२९ वि(धातृ २.१)] भोक्ता, भोगनेवाला (को)

भोक्तुम् [२.५ (अ.) (√ भुज् रुधा P + तुमुन्)] खाना

भोक्तृत्वे [१३.२० सं(फल ७.१)] भोगने की क्रिया में

भोक्ष्यसे [२.३७ (√ भुज् रुधा लृट् २.१)] (तू) भोगेगा

भोगाः [१.३३, ५.२२ सं(राम १.३)] सुख आनन्द

भोगान् [२.५, ३.१२ सं(राम २.३)] भोगों को, रस आनन्द को

भोगी [१६.१४ सं(शशिन् १.१)] भोग करने वाला,

भोगैः [१.३२ (राम ३.३)] भोगों से, भोगों सहित

भोगैश्वर्यगतिम् [२.४३ सं(मति २.१) (भोगस्य च ऐश्वर्यस्य च गतिम्)] भोग और ऐश्वर्य की प्राप्ति

भोगैश्वर्यप्रसक्तानाम् [२.४४ वि(राम ६.३) (भोगे च ऐश्वर्ये च प्रसक्तानाम्)] भोग और ऐश्वर्य में आसक्त हुओं का

भोजनम् [१७.१० सं(फल २.१)] भोजन, आहार

भ्रमति [१.३० (√ भ्रम भ्वा P लट् ३.१)] घूमता है

भ्रातॄन् [१.२६ सं(भ्रातृ २.३)] भाईयों को

भ्रामयन् [१८.६१ वि.(ध्यायत् १.१) (√ भ्रम भ्वा P + णिच् + शतृ)] घुमाता हुआ, चक्कर खिलाता हुआ

भ्रुवोः [५.२७, ८.१० सं.(भ्रू ६.२)] (दो) भृकुटियों के (बीच), भौंहों के बीच

म

मंस्यन्ते [२.३५ (√ मन् दिवा A लृट् ३.३)] सोचेंगे, विचार करेंगे

मकरः [१०.३१ सं(राम १.१)] मकर, घड़ियाल

मच्चित्तः [६.१४, १८.५७.५८ वि(राम १.१) (मयि चित्तं यस्य सः)] वह जिसका मन मुझ में है, मुझ में लीन

मच्चित्ताः [१०.९ वि(राम १.३) (मयि चित्तं येषां ते)] वे जिनका मन मुझ में हैं, मुझ में लीन

मणिगणाः [७.७ सं(राम १.१) (मणीनां गणाः)] मणियों की पंक्तियाँ (लड़ियां) मणियों की माला

मतः [६.३२, ४६, ४७, ११.१८, १८.९ वि.(राम १.१)] माना हुआ, विचारा हुआ,

मतम् [३.३१, ३२, ७.१८, १३.२, १८.६ सं(फल १.१)] मत, विचार, सम्मति

मता [३.१, १६.५, १८.३५ वि.(विद्या १.१) (√ मन् दिवा A क्त)] विचार, सोची जाती है, मानी जाती है, मानी हुई

मताः [१२.२ सं(राम १.३) (√ मन् दिवा A क्त)] विचार, विचारे हुए

मतिः [६.३६, १८.७०, ७८ सं(मति १.१)] मत, विचार

मते [८.२६ वि(फल १.२)] (दो) विचार हैं

मत्कर्मकृत् [११.५५ वि.(मरुत् १.१) (मम कर्म करोति इति)] इस प्रकार मेरा काम करते, मेरे लिए काम करने वाला

मत्कर्मपरमः [१२.१० सं(राम १.१) (मम कर्म परमं यस्य सः)] वह जिसका सर्वोच्च-मेरा काम है

मत्तः [७.७, १२, १०.५, ८; १५.१५ सर्व (अस्मद्-मत् + तस् ५.१)] मुझ से, मेरी अपेक्षा

मत्परः [२.६१, ६.१४, १८.५७ वि(राम १.१) (अहं परः यस्य सः)] वह जिसका सर्वोच्च ध्येय मैं हूं, मुझ में तन्मय

मत्परमः [११.५५ वि(राम १.३) (अहं परमः यस्य सः)] विश्वास करता हुआ मुझ में, मुझे सर्वश्रेष्ठ सर्वोपरि मानता हुआ

मत्परमाः [१२.२० वि(राम १.३)] वह जिसका सर्व श्रेष्ठ में हूं

मत्पराः [१२.६ वि(राम १.३)] मुझ में एकाग्र (दत्तचित्त), मुझ में परायण (लगे हुए)

मत्परायणः [९.३४ वि(राम १.१) (अहं परायणं यस्य सः)] वह जिसका सर्वोच्च ध्येय मैं हूं, मुझ में प्रवृत्त, लगा हुआ, मुझ में लीन

मत्प्रसादात् [१८.५६, ५८ सं(राम ५.१) (मम प्रसादात्)] मेरे प्रसाद से, मेरी कृपा से

मत्वा [३.२८, १०.८.११.४ अ (√ मन् दिवा A + क्त्वाच्)] मान कर, विचार कर

मत्संस्थाम् [६.१५. वि(विद्या २.१) (मयि संस्था यस्याः ताम्)] मुझ में नींव है जिसकी उसको, मुझ में स्थित, मुझ में टिकी हुई

मत्स्थानि [९.५, ६ वि(फल १.३) (मयि तिष्ठन्ति इति तानि)] वे ऐसे मुझ में स्थित हैं

मदनुग्रहाय [११.१ सं(राम ४.१) (मम अनुग्रहाय)] मुझपर कृपा करके, मुझपर दया करने के लिए

मदम् [१८.३५ सं(राम २.१)] मद् उन्माद

मदर्थम् [१२.१० (अ)] मेरे लिए

मदर्थे [१.९ सं(राम ७.१) (मम अर्थे)] मेरे लिए, मेरे कारण

मदर्पणम् [९.२७ सं(फल २.१) (मयि अर्पणम्)] मुझे, मेरे अर्पण

मदाश्रयः [७.१ वि(राम १.१) (अहम् आश्रयः यस्य सः)] वह जिसका आश्रय मैं (हूं), मेरे सहारे

मद्गतप्राणाः [१०.९ सं(राम १.३) (मां गताः प्राणाः येषां ते) वे जिनके प्राण मुझ को गए हैं, (मुझमें हैं)

मद्गतेन [६.४७ वि(राम ३.१) मां गतेन)] मुझ में लीन

मद्भक्तः [९.३४, ११.५५, १२.१६, १३.१८, १८.६५ सं(राम १.१) (मम भक्तः)] मेरा भक्त

मद्भक्ताः [७.२३ सं(राम १.३) (मम भक्ताः)] मेरे भक्तगण

मद्भक्तिम् [१८.५४ सं(मति २.१) (मयि भक्तिम्)] मुझ में भक्ति, मेरी भक्ति को

मद्भक्तेषु [१८.६८ सं(राम ६.३) (मम भक्तेषु)] मेरे भक्तों में

मद्भावम् [४.१०, ८.५, १४.१९ सं(राम २.१) (मम भावम्)] मेरे भाव को, मेरे स्वरूप को, मेरे अस्तित्व (सत्ता) को

मद्भावाः [१०.६ सं(राम १.३) (मयि भावः येषां ते अथवा (मम भावाः)] वे जिनका अस्तित्व मुझ में है मुझ में मनोदशा रखने वाले, जिनकी मनः स्थिति मुझ में है

मद्भावाय [१३.१८ सं(राम ४.१) (मम भावाय)] मेरी स्थिति को, मेरी सत्ताको, मेरी हस्ती को

मद्याजिनः [९.२५ सं(शशिन् १.३) (मां यजन्ते इति)] इस प्रकार मेरे लिए यज्ञ करने वाले, मेरी पूजा करने वाले,

मद्याजी सं.(शशिन् १.१) [९.३४, १८.६५ वि(शशिन् १.१) (मां यजते इति)] ऐसे मेरे लिए यज्ञ करता है, मेरे निमित्त यज्ञ करने वाला

मद्योगम् [१२.११ सं(राम २.१) (मम योगम्)] मेरा योग

मद्व्यपाश्रयः [१८.५६ वि(राम १.१) (अहं व्यपाश्रयः यस्य सः)] वह जिसका आश्रय मैं (हूं), मेरा शरणागत, मेरा आश्रय लेने वाला

मधुसूदन [१.३५, २.४, ६.३३, ८.२ सं(राम ८.१)] हे मधुसूदन

मधुसूदनः [२.१ सं(राम १.१)] मधुसूदन

मध्यम् [१०.२०, ३२, ११.१६ सं(फल १.१)] मध्य भाग , बीच का भाग

मध्ये [१.२१.२४, २.१०, ८.१०, १४.१८, वि(फल ७.१) बीच में

मनः [१.३०, २.६०, ६७; ३.४०, ४२; ५.१९, ६.१२, १४, २५, २६, ३४, ३५; ७.४, ८.१२; १०.२२, ११.४५; १२.२, ८ १५.९; १७.११ सं(मनस् १.१;२.१)] मन

मनःप्रसादः [१७.१६ सं(राम १.१) (मनसः प्रसादः)] मन की शान्तिप्रियता, चित्त की प्रसन्नता

मनःप्राणेन्द्रियक्रियाः [१८.३३ सं(विद्या १.३) (मनसः च प्राणानां च इन्द्रियाणां च क्रियाः)] मन की, प्राण की और इन्द्रियों की क्रियाएं

मनःषष्ठानि [१५.७ सं(मनस् २.३) (मनः षष्ठं येषां तानि)] मन छठा है, उनको जिन के साथ छठवां मन है, (छठी इंद्रिय मन हैं)

मनवः [१०.६ सं(गुरु १.३)] मनु (बहुवचन)

मनवे [४.१) सं(गुरु ४.१)] मनु (सूर्य पुत्र) को

मनसा [३.६, ७, ४२, ५.११, १३; ६.२४, ८.१० सं(मनस् ३.१)] मन से, मन द्वारा

मनसः [३.४२ सं(मनस् ५.१)] मन की अपेक्षा, मनसे

मनीषिणः [२.५१, १८.३ वि(शशिन् १.३)] बुद्धिमान् लोग, विवेकी पुरुष

मनीषिणाम् [१८.५ सं(राम ६.३)] बुद्धिमान् पुरुषों का, विवेकियों का पंडित लोगों का (में)

मनुः [४.१ सं(गुरु १.१)] मनु (ने)

मनुष्यलोके [१५.२ सं(राम ७.१) (मनुष्याणां लोके)] मनुष्य लोक में

मनुष्याः [३.२३, ४.११ सं(राम १.३)] मनुष्य लोग

मनुष्याणाम् [१.४४, ७.३ सं(राम ६.३)] पुरुषों का, पुरुषों में

मनुष्येषु [४.१८.१८.६९ सं(राम ६.३)] मनुष्यों में

मनोगतान् [२.५५ वि(राम २.३) (मनः गतान्)] मन में आए हुओं को

मनोरथम् [१६.१३ सं(राम २.१)] इच्छा, अभिलाषा (को)

मन्तव्यः [९.३० वि(राम १.१) (√मन् दिवा A + तव्य)] विचारना चाहिए, मानने योग्य

मन्त्रः [९.१६ सं(राम १.१)] मन्त्र

मन्त्रहीनम् [१७.१३ वि(राम २.१) (मन्त्रेण हीनम्)] बिना मन्त्र के

मन्दान् [३.२९ वि(राम २.३)] मन्द बुद्धियों को, मन्द बुद्धि वालों को

मन्मनाः [९.३४, १८.६५ सं(चन्द्रमस् १.१) (मयि मनः यस्य सः)] वह जिसका मन मुझ में है, मुझ में मन लगाने वाला

मन्मयाः [४.१० वि(राम १.३)] मुझ में लीन, तल्लीन, निमग्न

मन्यते [२.१९, ३.२७, ६.२२, १८.३२ (√मन् दिवा A लट् ३.१)] विचारता है, मानता है

मन्यन्ते [७.२४ (√मन् दिवा A लट् ३.३)] विचार करते हैं, मानते हैं, समझते हैं

मन्यसे [२.२६, ११.४, १८.५९ (√मन् दिवा A लट् २.१)] (तू) सोचता है

मन्ये [६.३४, १०.१४ (√मन् दिवा A लट् १.१)] मैं मानता हूं, मेरे विचार में

मन्येत [५.८ (√मन् दिवा A विधि ३.१)] विचार करना चाहिए

मम सर्व(अस्मद् ६.१)] मेरा, मेरे

मया सर्व(अस्मद् ३.१)] मुझ से मेरे द्वारा

मयि सर्व(अस्मद् ७.१)] मुझ में

मरणात् [२.३४ सं(फल ५.१)] मृत्यु की अपेक्षा, मरण से

मरीचिः [१०.२१ सं(हरि १.१)] मरीचि, एक मरुत का नाम, वायु देव

मरुतः [११.६,२२ सं(मरुत् १.३)] मरुत (बहुवचन), देवताओं का एक गण, ये ४९ हैं

मरुताम् [१०.२१ सं(मरुत् ६.३)] मरुतों में

मर्त्यलोकम् [९.२१ सं(राम २.१) (मर्त्यानां लोकम्)] मृत्युलोक, मनुष्य लोक

मर्त्येषु [१०.३ सं(राम ७.३)] मनुष्यों में, मृत्यु लोक में

मलेन [३.३८ सं(फल ३.१)] धूल से

महत् [१.४५, ११.२३ वि(महत् नपु. २.१/ १.१)] बड़ा, विशाल

महतः [२.४० वि(महत् नपु. ५.१)] बड़ा, महा, बड़े से

महता [४.२ वि(महत् ३.१)] बहुत, अधिक [से)

महति [१.१४ वि(महत् ७.१)] बड़े (में)

महतीम् [१.३ वि(नदी २.१)] महान् शक्तिशाली, विशाल, बड़ी

महद्ब्रह्म [१४.३ सं(कर्मन १.१) (महत् ब्रह्म)] विशाल (अव्यक्त) प्रकृति, प्रकृति का प्रथम विकार

महद्योनिः [१४.४ सं(मति १.१) (महत् योनि)] विशाल उत्पत्ति स्थान

महर्षयः [१०.२, ६ सं(हरि १.३) (महान्त ऋषयः)] महर्षिजन, बड़े ऋषिलोग

महर्षिसिद्धसंघाः [११.२१ सं(राम १.३) (महर्षीणां च सिद्धानां च संघाः)] महर्षियों के, और सिद्धों के, समुदाय

महर्षीणाम् [१०.२, २५ सं(हरि ६.३)] महर्षियों का, महर्षियों में

महात्मन् [११.२०, ३७ सं(अत्तमन् ८.१)] हे महात्मा, हे महापुरुष

महात्मनः [११.१२, १८.७४ सं(आत्मन् ६.१)] महात्मा के, बड़ी आत्मा वाले के

महात्मा [७.१९.११.५० सं(आत्मन् १.१) (महान् आत्मा यस्य सः)] वह जिसकी आत्मा महान् है, महात्मा

महात्मानः [८.१५, ९.३ वि(आत्मन् १.३)] महात्मा लोग

महान् [९.६, १८.७७ सं(महत् १.१)] महान् महा

महानुभावान् [२.५ सं(राम २.३) (महान् अनुभावो येषां तान्)] उनको जिनका वैभव महान् है, महानुभावों को

महापाप्मा [३.३७ वि(आत्मन् १.१)] महापापी, महा दुःखदायी, अतिदूषित करने वाला

महाबाहुः [१.१८ सं(गुरु १.१) (महान्तौ बाहू यस्य सः)] वह जिसकी (दो) विशाल भुजाएं (हैं)

महाबाहो [२.२६.६८, ३.२८, ४३, ५.३.६, ६.३५.३८, ७.५, १०.१, ११.२३, १४.५, १८.१.१३ सं(गुरु ८.१) (महान्तौ बाहू यस्य (त्वम्)] अरे (तू) जिसकी (दो) भुजाएं बड़ी बड़ी हैं , हे महाबाहो

महाभूतानि [१३.५ सं(फल १.३) (महान्ति भूतानि)] (पंच) महाभूत–"क्षिति जल पावक गगन समीरा"

महायोगेश्वरः [११.९ सं(राम १.१) (महान् योगेश्वरः)] महान् योगेश्वर

महारथः [१.४, १७ वि(राम १.१) (महान् रथः यस्य सः)] वह जिसका रथ विशाल (है)

महारथाः [१.६, २.३५ सं(राम १.३)] महारथी लोग

महाशंखम् [१.१५ सं(राम २.१)] महान् शंख (को)

महाशनः [३.३७ वि(राम १.१)] वह जो बहुत खाने वाला (है), बड़ा पेटू (है) निगलने वाला (है)

महिमानम् [११.४१ सं(महिमन् २.१)] महिमा को

महीकृते [१.३५ (मह्याः कृते)] पृथ्वी के लिए

महीक्षिताम् [१.२५ (महीं क्षियन्ति इति महीक्षितः तेषाम्)] उनका जो पृथ्वी के ऐसे रक्षक हैं, शासकों का

महीपते [१.२१ सं(हरि ८.१) (मह्याः पते)] पृथ्वी के स्वामी, राजा

महीम् [२.३७ सं(नदी २.१)] पृथ्वी को

महेश्वरः [१३.२२ सं(राम १.१)] महेश्वर, महा ईश्वर

महेष्वासाः [१.४ सं(राम १.३) (महान्तः इष्वासाः येषां ते)] वे जिनके धनुष विशाल हैं

मा [२.३, ४७, ११.३४, ४९, १६.५, १८.६६ (अ.)] न, मत

माता [९.१७ सं(मातृ १.१)] माता

मातुलाः [१.३४ सं(राम १.३)] मामा (बहुवचन)

मातुलान् [१.२६ सं(राम २.३)] मामा (बहुत से)

मात्रास्पर्शाः [२.[illegible] सं(राम १.३) (मात्राणां स्पर्शाः)] पदार्थों के स्पर्श, (संसर्ग, संयोग)

माधव [१.३७ सं(राम [illegible].१)] हे माधव

माधवः [१.१४ सं(राम १.१)] माधव

मानवः [३.१७, १८.४६ सं(राम १.१)] मनुष्य

मानवाः [३.३१ सं(राम १.३)] मनुष्य (बहुवचन)

मानसम् [१७.१६ वि(फल १.१)] मानसिक, मन का

मानसाः [१०.६] वि(राम १.३ मानसिक, मन से

मानापमानयोः [६.७, १२.१८, १४.२५ सं(राम ७.२) (माने च अपमाने च)] मान में, अपमान में; ख्याति में कुख्याति में

मानुषम् [११.५१ वि(फल २.१)] मानुष को, मानवीय

मानुषीम् [९.११ वि(नदी २.१)] मानवीय

मानुषे [४.१२ वि(राम ७.१)] मनुष्यों के, में

माम् [सर्व(अस्मद् २.१)] मुझे, मुझ को

मामकम् [१५.१२ सार्व. वि(राम २.१)] मेरा

मामकाः [१.१ सार्व. वि(राम १.३)] मेरे

मामिकाम् [९.७ सार्व.वि(विद्या २.१)] मेरी

मायया [७.१५, १८.६१ सं(विद्या ३.१)] माया से, माया द्वारा

माया [७.१४ सं(विद्या १.१)] माया

मायाम् [७.१४ सं(विद्या २.१)] माया को

मारुतः [२.२३ सं(राम १.१)] पवन, वायु

मार्गशीर्षः [१०.३५ सं(राम १.१)] मार्गशीर्ष, अगहन मास

मार्दवम् [१६.२ सं(फल १.१)] कोमलता, मृदुता

मासानाम् [१०.३५ सं(राम ६.३)] महीनों में

महात्म्यम् [११.२ सं(फल २.१)] बड़प्पन, महत्ता, महिमा

मित्रद्रोहे [१.३८ सं(राम ७.१) (मित्राणां द्रोहे)] मित्रों की शत्रुता में, मित्र द्रोह (वैर) में

मित्रारिपक्षयोः [१४.२५ सं(राम ६.२) (मित्रस्य च अरेः च पक्षयोः)] मित्र के, और शत्रु के पक्षों में, मित्र और शत्रु दल में

मित्रे [१२.१८ सं(फल ७.१)] मित्र में

मिथ्या [१८.५९ अ.(क्रिवि.)] व्यर्थ

मिथ्याचारः [३.६ सं(राम १.१) (मिथ्या आचारः यस्य सः)] वह जिसका आचारण झूठा (कृत्रिम) हैं, मिथ्यावादी, ढोंगी

मिश्रम् [१८.१२ वि(फल १.१)] मिश्र मिश्रित, मिले जुले

मुक्तः [५.२८, १२.१५, १८.७१ वि(राम १.१)] मुक्त, उन्मुक्त, अबाध (हुआ)

मुक्तम् [१८.४० सं फल १.१)] (√ मुच् तुदा P + क्तः) मुक्त हुआ, स्वतन्त्र

मुक्तसंगः [३.९, १८.२६ सं(राम १.१) (मुक्तः संगः येन सः)] वह जो आसक्ति से मुक्त है, आसक्ति रहित

मुक्तस्य [४.२३ वि(राम ६.१)] जो मुक्त है उसका, मुक्तजन का

मुक्त्वा [८.५ (अ.) (√ मुच् तुदा A/P + क्त्वाच्)] त्याग करते हुए

मुखम् [१.२९ सं(फल १.१)] मुख

मुखानि [११.२५ सं(फल १.१)] मुख (बहुवचन)

मुखे [४.३२ सं(फल ७.१)] सम्मुख

मुख्यम् [१०.२४ वि(राम २.१)] मुख्य

मुच्यन्ते [३.१३, ३१ (√मुच् तुदा कर्म A लट् ३.३)] मुक्त होते है

मुनयः [१४.१ सं(हरि १.३)] मुनि लोग

मुनि [२.५६, ५.६, २८, १०.२६ सं(हरि १.१)] मुनि

मुनीनाम् [१०.३७ सं(हरि ६.३)] मुनियों का, में

मुनेः [२.६९, ६.३ सं(हरि ६.१)] मुनि की

मुमुक्षुभिः [४.१५ वि(गुरु ३.३)] मोक्ष के इच्छुकों (द्वारा)

मुहुः [१८.७६ (अ.)] पुनः, फिर-फिर, बार-बार

मुह्यति [२.१३; ८.२७ (√ मुह् दिवा P लट् ३.१)] शोक मनाता है, मोहित होता है, व्याकुल होता है

मुह्यन्ति [५.१५ (√ मुह् दिवा. P लट् ३.३)] (वे) धोखा खाजाते हैं, मोहित हो जाते हैं

मूढः [७.२५ सं(राम १.१)] मूर्ख, धोखे में आया हुआ

मूढग्राहेण [१७.१९ सं(राम १.३) (मूढेन ग्राहेण)] मूर्खता द्वारा (कस कर) पकड़े हुए, दुराग्रह से, हठपूर्वक

मूढयोनिषु [१४.१५ सं(मति ७.३) मूढानां योनिषु)] मूर्खों की योनियों में, भ्रम में आए हुओं की योनियों में

मूढाः [७.१५, ९.११, १६.२० वि(राम १.३)] मूर्ख, धोखे में आए हुए, मोह ग्रस्त

मूर्तयः [१४.४ सं(मति १.३)] मूर्तियां आकृतियां

मूर्ध्नि [८.१२ सं(महिमन् ७.१)] मस्तक में

मूलानि [१५.२ सं(फल १.३)] जड़ें

मृगाणाम् [१०.३० सं(राम ६.३)] वन जीवियों में, पशुओं में

मृगेन्द्रः [१०.३० सं(राम १.१) (मृगाणाम् इन्द्रः)] वनजीवियों का राजा, सिंह

मृतम् [२.२६ वि.(राम २.१) (√ मृ तुदा A + क्त)] मरने वाला, मृतक

मृतस्य [२.२७ वि(राम ६.१)] (√ मृ तुदा A + क्त) मृत्यु हुई है जिसकी, (उसका), मरे हुए का

मृत्युः [२.२७, ९.१९, १०.३४ सं(गुरु १.१)] मृत्यु

मृत्युम् [१३.२५ सं(गुरु २.१)] मृत्यु को

मृत्युसंसारवर्त्मनि [९.३ सं(कर्मन् ७.१) (मृत्योः संसारस्य च वर्त्मनि)] मृत्युमय संसार के मार्ग में

मृत्युसंसारसागरात् [१२.७ सं(राम ५.१) (मृत्योः च संसारस्य च सागरात्)] मृत्यु के संसार सागर, (से) मृत्युमय संसार सागर से

मे [सर्व(अस्मद् ४/६.१)] मेरा, मेरे, मुझे, मुझको, मुझ से

मेधा [१०.३४ सं(विद्या १.१)] बुद्धि

मेधावी [१८.१० वि(शशिन् १.१)] बुद्धिमान, धारणा बुद्धि जिसकी तीव्र है

मेरुः [१०.२३ सं(गुरु १.१)] मेरु

मैत्रः [१२.१३ वि.(राम १.१)] हितैषी स्नेही

मोक्षकांक्षिभिः [१७.२५ वि(शशिन् ३.३) (मोक्षस्य कांक्षिभिः)] मोक्ष की इच्छा वालों द्वारा

मोक्षपरायणः [५.२८ वि(राम १.१) (मोक्षः परायणं यस्य सः)] वह जिसका ध्येय मुक्ति है, जो मोक्ष के लिए दत्तचित्त है

मोक्षम् [१८.३० सं(राम २.१)] मोक्ष

मोक्षयिष्यामि [१८.६६ (नाम √मोक्ष् चुरा P लृट् १.१] (मैं) मुक्त करूंगा

मोक्ष्यसे [४.१६, ९.१, २८ (√मुच् तुदा A लृट २.१)] (तू) मुक्त हो जाएगा

मोघकर्माणः [९.१२ सं(शर्मन् १.३) (मोघं कर्माणि येषां ते)] वे जिनके कर्म व्यर्थ (निष्फल) हैं

मोघज्ञानाः [९.१२ वि.(राम १.३) (मोघं ज्ञानं येषां ते)] वे जिनका ज्ञान निरर्थक है

मोघम् [३.१६ (अ.)] व्यर्थ, बेकार

मोघाशाः [९.१२ वि(राम १.३) (मोघा आशाः येषां ते)] वे जिनकी आशाएं व्यर्थ (हैं)

मोदिष्ये [१६.१५ (√मुद् भ्वा A लृट् १.१)] (मैं) आनन्द मनाऊंगा, आमोद प्रमोद मनाऊंगा रंगरलियां मनाऊंगा

मोहः [११.१, १४.१३, १८.७३ सं(राम १.१)] भ्रम, मोह

मोहकलिलम् [२.५२ सं(फल २.१)] मोह की संभ्रान्ति, मोह का गँदलापन, मोह की दलदल

मोहजालसमावृताः [१६.१६ वि(राम १.३) (मोहस्य जालेन समावृताः)] मोह के जाल में लिपटे हुए, मोह जाल में फंसे हुए

मोहनम् [१४.८, १८.३९ वि(फल १.१) (२.१)] मोहित करने वाला, मोह में डालने वाला

मोहयसि [३.२ (√मुह् णिच् लट् २.१)] (तू) भ्रम में डालता है, शंकाशील बनाता है

मोहम् [४.३५; १४.२२ सं(राम २.१)] मोह, भ्रम, शंकाशील होना

मोहात् [१६.१०, १८.७, २५,६० सं(राम ५.१)] मोह से, भ्रम से

मोहितम् [७.१३ वि(फल १.१)] मोह ग्रस्त, धोखे में आया हुआ, धोखा खाया हुआ

मोहिताः [४.१६ वि(राम १.३) (√मुह् दिवा P क्त)] चकराये हुए अर्थात् चकरा जाते हैं, हतबुद्धि हो जाते हैं, घबरा जाते है

मोहिनीम् [९.१२ वि(नदी २.१)] कपट पूर्ण, मोह में रखने वाली

मौनम् [१०.३८, १७.१६ सं(फल १.१)] मौन, निःशब्दता

मौनी [१२.१९ सं(शशिन् १.१)] मूक, मौन चुप रहने वाला

म्रियते [२.२० (√मृ तुदा A लट् ३.१)] मरता है

य

यः [सर्व(यत् पु १.१)] वह, जो,

यक्षरक्षसाम् [१०.२३ सं(मनस् ६.३) (यक्षाणां च रक्षसां च)] यक्षों में और राक्षसों में

यक्षरक्षांसि [१७.४ सं(मनस् २.३) (यक्षान् च रक्षांसि च)] यक्षों और राक्षसों को

यक्ष्ये [१६.१५ (√यज् A भ्वा. लृट् १.१)] (मैं) यज्ञ करूंगा

यच्छ्रद्धः [१७.३ वि(राम १.१) (या श्रद्धा यस्य सः)] वह जिसकी जो भी श्रद्धा हो, जैसी श्रद्धावाला

यजन्तः [९.१५ वि(ध्यायत् १.३) (√यज् भ्वा A/P शतृ)] यज्ञ करते हुए

यजन्ति [९.२३ (√यज् भ्वा P लट् ३.३)] पूजा करते है

यजन्ते [४.१२, ९.२३, १६.१७, १७.१, ४ (√ यज् भ्वा A लट् ३.३)] (वे) यज्ञ करते हैं, बलिदान देते हैं, उपासना करते है

यजुः [९.१७ सं(धनुस् १.१)] यजुर्वेद

यज्ञः [३.१४, ९.१६, १६.१, १७.७, ११; १८.५ सं(राम १.१)] यज्ञ, स्मार्त यज्ञ (जो पुराणों की विधि से किया जाता है)

यज्ञक्षपितकल्मषाः [४.३० वि.(राम १.३) (यज्ञेन क्षपितानि कल्मषाणि येषां ते)] वे जिनके पाप, यज्ञ द्वारा दूर हो गए हैं

यज्ञतपःक्रियाः [१७.२५ सं(विद्या १.३)] यज्ञ और तप की क्रियाएं

यज्ञतपसाम् [५.२९ सं(मनस् ६.३) (यज्ञानां च तपसां च)] यज्ञों का और तपों का

यज्ञदानतपःकर्म [१८.३, ५ सं(कर्मन् १.१)] यज्ञ, दान और तप के कर्म

यज्ञदानतपःक्रियाः [१७.२४ सं(विधा १.३) (यज्ञस्य च दानस्य च तपसः च क्रियाः)] यज्ञ की और दान की और तप की क्रियाएं

यज्ञभाविताः [३.१२ सं(राम (१.३) (यज्ञेन भाविताः)] यज्ञ से पोषित हुए

यज्ञम् [४.२५, १७.१२.१३ सं(राम २.१)] यज्ञ को, (४.२५ के उत्तरार्ध में शंकर मतानुसार 'यज्ञ' का अर्थ आत्मा है)

यज्ञविदः [४.३० वि(तत्त्वविद् १.३)] यज्ञ के जानने वाले

यज्ञशिष्टामृतभुजः [४.३१ सं(ऋत्विज् १.३) (यज्ञस्य शिष्टम् अमृत भुञ्जन्ति ये ते)] वे जो खाते है, यज्ञ का बचा हुआ अमृत जानकर

यज्ञशिष्टाशिनः [३.१३ वि(शाशिन् १.३) (यज्ञस्य शिष्टम् अश्नन्ति ते)] वे (जो) खाते हैं यज्ञ के बचे हुए को

यज्ञाः [४.३२, १७.२३ सं(राम १.३)] यज्ञ (बहुवचन)

यज्ञात् [३.१४, ४.३३ सं(राम ५.१)] यज्ञ से

यज्ञानाम् [१०.२५ सं(राम ६.३)] यज्ञों में, यज्ञों का

यज्ञाय [४.२३ सं(राम ४.१)] यज्ञ के लिए

यज्ञार्थात् [३.९ सं(राम ५.१) (यज्ञस्य अर्थात्)] यज्ञ के लिए, यज्ञ के कारण

यज्ञे [३.१५, १७.२७ सं(राम ७.१)] यज्ञ में

यज्ञेन [४.२५ सं(राम ३.१)] यज्ञ से, यज्ञ द्वारा

यज्ञेषु [८.२८ सं(राम ७.३)] यज्ञों में

यज्ञैः [९.२० सं(राम ३.३)] यज्ञों से, यज्ञों द्वारा

यत् [सर्व(यत् नपु १.१)] (तब से) अबतक, जिससे, वह, जो, जिसे

यतः [६.२६, १३.३, १५.४, १८.४६ १.(अ.) २.सर्व(यत् पु १.१)] जहां से, जिससे

यतचित्तस्य [६.१९ वि(राम ६.१) (यतं चित्तं यस्य तस्य)] उसका जिसका मन नियन्त्रित है (स्थिर है)

यतचित्तात्मा [४.२१, ६.१० वि(आत्मन् १.१) (यतौ (चित्तात्मानौ) चित्तं च आत्माच यस्य सः)] वह जिसका मन और आत्मा नियन्त्रित है, वह जिसका मन अपने वश में है

यतचित्तेन्द्रियक्रियः [६.१२ वि(राम १.१) (यताः चित्तस्य च इन्द्रियाणां च क्रियाः यस्य सः)] वह जिसके मन की और इन्द्रियों की क्रियाएं नियन्त्रित हैं (वश में हैं)

यतचेतसाम् [५.२६ वि(चन्द्रमस् ६.३) (यतं चेतः येषां तेषाम्)] जिनका मन नियन्त्रित है, उनका, जिन्होंने अपना मन वश में किया है

यततः [२.६० सं(ध्यायत् ६.१) (√ यत् भ्वा P + शतृ)] प्रयत्न करने वाले की

यतता [६.३६ सं(ध्यायत् ३.१) (√ यत् + शतृ)] यत्नवान् से, प्रयत्न करने वाले के द्वारा

यतताम् [७.३ सं(राम ६.३) (√ यत् + शतृ)] प्रयत्न करने वालों में

यतति [७.३ (√ यत् भ्वा P लट् ३.१)] प्रयत्न करता है

यतते [६.४३ (√ यत् भ्वा A लट् ३.१)] प्रयत्न करता है

यतन्तः [९.१४, १५.११ वि(ध्यायत् १.३) (√ यत् भ्वा P + शतृ) (यतमानाः)] प्रयत्न करते हैं, करते हुए, करने वाले

यतन्ति [७.२९ (√ यत् भ्वा P लट् ३.३)] प्रयत्न करते हैं

यतमानः [६.४५ वि(राम १.१)] यत्न करता हुआ, प्रयास करता हुआ

यतयः [४.२८, ८.११ सं(हरि १.३)] यति लोग, संयमी जन, एकान्तवासी

यतवाक्कायमानसः [१८.५२ वि(राम १.१) (यतानि वाक् च कायः य मानसं च यस्य सः)] वह जिसका वाक्य (वाणी) शरीर और मन नियन्त्रित है, वाणी शरीर और मन को वश में रखने वाला

यतात्मवान् [१२.११ वि(धीमत् १.१) (यतः आत्मा यस्य सः)] वह जिसकी आत्मा नियन्त्रण में हैं, वह जिसने अपने को वश में किया है

यतात्मा [१२.१४ वि(आत्मन् १.१)] जिसने अपने को वश में किया है

यतात्मानः [५.२५ वि(आत्मन् १.३) (यतः आत्मा येषां ते)] वे जिनकी आत्मा नियन्त्रित है, वे जिन्होंने ने अपने को वश में कर लिया है

यतीनाम् [५.२६ सं(हरि ६.३)] यतियों का

यतेन्द्रियमनोबुद्धिः [५.२८ वि.(हरि १.१) (यताः इन्द्रियमनोबुद्धयः (यतानि इन्द्रियाणि च मनः च बुद्धिः च यस्य सः)] वह जिसकी इन्द्रियाँ और मन और बुद्धि नियन्त्रित (वश में) हैं, मन बुद्धि और इन्द्रियों को वश में करने वाला

यत्प्रभावः [१३.३ वि(राम १.१) (यः प्रभावः यस्य सः)] वह जिसकी जैसी शक्ति (प्रभाव) है, कैसे प्रभाव वाला

यत्र [(अ.)] जहां, जिस स्थान पर

यथा [(अ.)] जैसा, जिस प्रकार, जिस रीति से

यथाभागम् [१.११ (अव्य. समास)] विभाजन के अनुसार, अपने-अपने स्थान पर

यथावत् [१८.१९ (अ.)]. तथ्यतः, ठीक ठीक, जैसे (बताए गए) हैं वैसे

यदा [(अ.)] जब

यदि [१.३८.४६, २.६, ३.२३, ६.३२, १.४.१२ (अ.)] यदि, अगर

यदृच्छया [२.३२ सं(विद्या ३.१)] संयोग से, दैव योग से

यदृच्छालाभसंतुष्टः [४.२२ वि(राम १.१) (यदृच्छया लाभेन संतुष्टः)] संयोग से हुए लाभ में संतुष्ट, दैव योग से जो प्राप्त हो उससे ही संतुष्ट

यद्वत् [२.७० (अ.) (यत् + वत्)] जैसे, जिस प्रकार

यद्विकारि [१३.३ वि(वारि १.१) (यः विकारः यस्य तत्)] वह जिसके कौन से रूपांतर (हैं) कैसे कैसे विकार वाला

यन्त्रारूढानि [१८.६१ वि(फल १.३) (यन्त्रे आरूढानि)] यन्त्रपर बैठे हुए, यन्त्र (चाक), पर चढ़े हुए

यम् [२.१५, ७०, ६.२, २२, ८.६, २१ सर्व(यत् पु २.१)] जिसको, जिसे, जिसमें, जिस

यमः [१०.२९, ११.३९ सं(राम १.१)] यम

यया [२.३९, ७.५, १८.३१, ३३, ३४.३५ सर्व(यत् स्त्री ३.१)] जिस से, जिसके साथ, जिसके द्वारा

यशः [१०.५, ११.३३ सं(मनस् १.१)] यश, कीर्ति, ख्याति

यष्टव्यम् [१७.११ वि (फल १.१) (√ यज् भ्वा A/P + तव्य)] अर्पण करना चाहिए, यज्ञ करना चहिए

यस्मात् [१२.१५, १५.१८ सर्व(यत् पु ५.१)] जिस से, क्यों कि

यस्मिन [६.२२, १५.४ सर्व(यत् पु./नपु. ७.१)] जिसमें

यस्य [२.६१, ६८, ४.१९, ७.२२, १५.१, १८.१७ सर्व(यत् पु ६.१)] जिसका, जिसके

यस्याम् [२.६९ सर्व(यत् स्त्री ७.१)] जिसमें

या [२.६९, १८.३०, ३२, ५० सर्व(यत् स्त्री १.१)] जो

याः [१४.४ सर्व(यत् स्त्री १.३)] जो जितनी

यातयामम् [१७.१० वि(फल २.१) (यातः यामः यस्य तत्)] वह जिसे एक पहर (तीन घन्टे का समय) चला गया है, पहर तक पड़ा हुआ, बासी, अनपका, मन्दपका

याति [६.४५, ८.५, ८, १३, २६, १३.२८, १४.१४, १६.२२ (√ या अदा P लट् ३.१)] (वह) जाता है

यादव [११.४१ सं(राम ८.१)] हे यादव

यादसाम् [१०.२९ सं(चन्द्रमस् ६.३)] जल जन्तुओं में

याद्दक् [१३.३ (सार्व.१.३)] जिस सा, जिस प्रकार का

यान् [२.६ सर्व(यत् पु २.३)] जिन्हें

यान्ति [३.३३, ४.३१, ७.२३, २७, ८.२३, ९.७.२५, ३२, १३.३४, १६.२० (√ या अदा P लट् ३.३)] (वे) जाते हैं, गमन करते है

याभिः [१०.१६ सर्व(यत् स्त्री ३.३)] जिन से

याम् [२.४२, ७.२१ सर्व(यत् स्त्री २.१)] जिसे, जो, कौन

यावत् [१.२२, १३.२६ (अ.)] जबतक, जिससे, जो कुछ

यावान् [२.४६, १८.५५ (अ.)] जितना,

यास्यसि [२.३५, ४.३५ (√ या अदा P लृट् २.१)] तू जाएगा, प्राप्त होगा

युक्तः [२.३९.६१.३.२६, ४.१८, ५.८.१२, २३, ६.८.१४.१८, ७.२२, ८.१०, १८.५१ वि(राम १.१)] जुड़ा हुआ, युक्त, सन्तुलित योगी

युक्तचेतसः [७.३० वि(चन्द्रमस् १.३) (युक्तं चेतः येषां ते)] वे जिनका मन सन्तुलित है, सुमेलित है, मुझ में लीन

युक्तचेष्टस्य [६.१७ वि(राम ६.१) (युक्ता चेष्टा यस्य तस्य)] उसका जिसका व्यवहार (आचरण) नियन्त्रित है

युक्ततमः [६.४७ वि(राम १.१)] उत्तम योगी

युक्ततमाः [१२.२ वि(राम १.३)] योग में उत्तम (लोग)

युक्तस्वप्नावबोधस्य [६.१७ वि(राम ६.१) (युक्तौ स्वप्नावबोधौ (स्वप्नः च अवबोधः च) यस्य तस्य)] उसका जिसकी निद्रा और जागरण वश में है, जिसका सोना जागना नियमित है

युक्तात्मा [७.१८ (युक्तः आत्मा यस्य सः)] वह जिसकी आत्मा सन्तुलित है, लीन है

युक्ताहारविहारस्य [६.१७ वि(राम ६.१) (युक्तौ आहारविहारौ (आहारः च विहारः च) यस्य तस्य)] उसका जिसका आहार विहार नियन्त्रित है, जिसका खाना पीना, घूमना फिरना वश में है

युक्ते [१.१४ वि(राम ७.१) (√ युज् रुधा. P + क्त] जुते हुए (में)

युक्तैः [१७.१७ वि(राम ३.३)] संतुलित (चित्त) से, समभावी (पुरुषों) द्वारा, लीन हुओं (से)

युक्त्वा [९.३४ (अ.) (√ युज् चुरा P क्त्वाच्)] जुड़कर, लीन होकर, संतुलित होकर

युगपत् [११.१२ (अ.)] एक साथ, एक ही समय में

युगसहस्रान्ताम् [८.१७ वि(विद्या २.१) (युगानां सहस्रे अन्तः यस्या ताम्)] वह जिसका अन्त सहस्र युग का होता है, सहस्र युगकी अवधिवाली

युगे [४.८ सं(राम ७.१)] युग में, काल में

युज्यते [१०.७, १७.२६ (√ युज् रुधा + कर्मणिय् A लट् ३.१)] संतुलित होता है, लीन होता है, प्रयोग में आता है

युज्यस्व [२.३८.५० (√ युज् रुधा A लोट् २.१)] (तू) लगजा, तत्पर होजा, प्रयत्न कर, प्रवृत्त हो

युञ्जतः [६.१९ वि(ध्यायत् ६.१)] अभ्यास (साधन) करते हुए (का)

युञ्जन् [६.१५.२८, ७.१ वि.(ध्यायत् १.१) (√ युज् रुधा A/P शतृ)] साधता हुआ, योगाभ्यास करता हुआ, जोड़ता हुआ, अनुसंधान करता हुआ

युञ्जीत [६.१० (√ युज् रुधा P विधि ३.१)] (वह) संतुलित करे , के साथ जोडे , स्थिर करे

युञ्ज्यात् [६.१२ (√ युज् रुधा P विधि३.१)] (उसे) साधना करने दो, (उसे) अभ्यास करना चाहिए

युद्धम् [२.३२ सं(फल २.१)] युद्ध को

युद्धविशारदाः [१.९ सं(राम १.३) (युद्धे विशारदाः)] युद्ध में कुशल

युद्धात् [२.३१ (सं(फल ५.१)] युद्ध की अपेक्षा, युद्ध से

युद्धाय [२.३७, ३८ सं(फल ४.१)] युद्ध के लिए

युद्धे [१.२३, ३३, १८.४३ सं(फल ७.१)] युद्ध में

युधामन्युः [१.६ सं(गुरु १.१)] युधामन्यु

युधि [१.४ सं(फल ७.१)] युद्ध में

युधिष्ठिरः [१.१६ सं(राम १.१)] युधिष्ठिर

युध्य [८.७ (√ युध् दिवा P लोट् २.१)] युद्ध कर (तू)

युध्यस्व [२.१८, ३.३०, ११.३४ (√ युध् दिवा A लोट् २.१)] (तू) युद्ध कर

युयुत्सवः [१.१ वि(गुरु १.३)] लड़ने की इच्छा वाले

युयुत्सुम् [१.२८ सं(गुरु २.१) (√ युध् + सन् + उ)] लड़ने की इच्छा वाले (को)

युयुधानः [१.४ सं(राम १.१)] युयुधान, एक यादव जो महाभारत के युद्ध में पाण्डवों की ओर से लड़ा था

ये [सर्व(यत् पु १.३)] कौन, जो, चाहे जो, जो कोई

येन [२.१७, ३.२, ४.३५, ८.२२; १०.१०; १८.२० सर्व(यत् पु./नपु ३.१)] जिससे, जिसके द्वारा

येनकेनचित् [१२.१९ अनि. सर्व(किम् ३.१)] कुछ भी से, जिस किसी से भी, जो कुछ भी हो उसी से

येषाम् [१.३३, २.३५, ५.१६, १९; ८.२८; १०.६ सर्व(यत् पु ६.३)] जिनके, जिनमें

योक्तव्यः [६.२३ वि.(राम १.१) (√युज् रुधा P + णिच् + तव्य)] अभ्यास करना चाहिए, साधन करना चाहिए

योगः [२.४८.५०, ४.२, ३, ६.१६, १७.२३.३३.३६ सं(राम १.१)] योग, ईश्वर के साथ जुड़ना । १. गीता में योग की परिभाषा के लिए देखिए श्लोक २.४८ और २.५०, "समत्वं योग उच्यते" और "योगः कर्मसु कौशलम्," । श्लोक ५.४ में योग का अर्थ है "कर्म योग, और अध्याय छः में बतलाया है "योग" कैसे प्राप्त किया जा सकता है । २ गीता के हर अध्याय के शीर्षक में "योग" शब्द आता है । यहां इसका अर्थ साधारणतया "विवरण" या "प्रसंग" जानना चाहिए

योगक्षेमम् [९.२२ सं(राम २.१) (फल २.१)] सुरक्षा, अभय, निश्चिन्तता, सांसारिक नित्य निर्वाह

योगधारणाम् [८.१२ सं(विद्या ६.३) (योगस्य धारणाम्)] योग की एकाग्रता को, केन्द्रीकरण को

योगबलेन [८.१० सं(फल ३.१) (योगस्य बलेन)] योग के बल से, योग के सामर्थ्य से

योगभ्रष्टः [६.४१ वि(राम १.१) (योगात् भ्रष्टः)] योग से भ्रष्ट (गिरा हुआ) योग से विचलित

योगम् [२.५३, ४.१, ४२, ५.१, ५, ६.२, ३; १२, १९, ७.१, ९.५, १०.७, १८; ११.८, १८.७५ सं(राम २.१)] योग (को)

योगमायासमावृतः [७.२५ (योगमायया समावृतः)] योग माया से ढका हुआ

योगयज्ञाः [४.२८ सं(राम १.३) (योगः यज्ञः येषां ते)] वे जिनका यज्ञ योग है, योग रूपी यज्ञ करने वाले

योगयुक्तः [५.६, ७, ८.२७ वि(राम १.१) (योगेन युक्तः)] योग से युक्त, योग सहित, योग में रमा हुआ

योगयुक्तात्मा [६.२९ वि(आत्मन् १.१) (योगेन युक्तः आत्मा यस्य सः)] वह जिसकी आत्मा योग से (युक्त है), संतुलित है; योगी

योगवित्तमाः [१२.१ वि(राम १.३)] योग के उत्तम ज्ञानी, अधिक योग जानने वाले

योगसंज्ञितम् [६.२३ वि.(राम २.१)] योग नाम की, योग नामक

योगसंन्यस्तकर्माणम् [४.४१ वि(आत्मन् २.१) (योगेन संन्यस्तं कर्म येन तम्)] उसको जिसने योग द्वारा कर्म त्याग दिया है

योगसंसिद्धिः [४.३८ वि(राम १.१) (योगे संसिद्धः)] योग में प्राप्त की गई सिद्धि, पूर्णता

योगसंसिद्धिम् [६.३७ सं(मति २.१) (योगस्य संसिद्धिम्)] योग की सिद्धि, (पूर्णता) को

योगसेवया [६.२० सं(विद्या ३.१)] योग की सेवा से

योगस्थः [२.४८ वि(राम १.१)] योगस्थ, योग में स्थिर हुआ

योगस्य [६.४४ सं(राम ६.१)] योग का

योगात् [६.३७ सं(राम ५.१)] योग से

योगाय [२.५० सं(राम ४.१)] योग के लिए

योगारूढः [६.४ सं(राम १.१) (योगम् आरूढः)] योग में आरूढ़ (स्थिर, दृढ़)

योगारूढस्य [६.३ वि(राम ६.१) (योगम् आरूढस्य)] जिसने योग साध लिया है (उसका), जो योग में स्थिर है, दृढ़ है, (उसका),

योगिन् [१०.१७ सं(शशिन् ८.१)] हे योगिन्

योगिनः [४.२५, ५.११ ६.१९, ८.१४; २३, १५.११ सं(शशिन् १.३/६.१)] योगी (बहुवचन), योगी का (से, को)

योगिनम् [६.२७ सं(शशिन् २.१)] योगी को

योगिनाम् [३.३, ६.४२, ४७ सं(शशिन् ६.३)] योगियों का

योगी [५.२४ ६.१.२.८.१०.१५.२८.३१.३२.४५.४६, ८.२५.२७.२८, १२.१४ सं(शशिन् १.१)] योगी

योगे [२.३९ सं(राम ७.१)] योग में

योगेन [१०.७, १२.६, १३.२४, १८.३३ सं(राम ३.१)] योग द्वारा

योगेश्वर [११.४ सं(राम ८.१) (योगस्य ईश्वर)] हे योगेश्वर

योगेश्वरः [१८.७८ सं(राम १.१)] योगेश्वर

योगेश्वरात् [१८.७५ सं(राम ५.१) (योगस्य ईश्वरात्)] योग के स्वामी से, योग के ईश्वर से

योगैः [५.५ सं(राम ३.३)] योगियों द्वारा

योत्स्यमानान् [१.२३ वि(राम २.३) (√ युध् + सन् + शानच्)] इन युद्ध करने वालों (को)

योत्स्ये [२.९, १८.५९ (√ युध् दिवा A + सन् लट् १.१)] (मैं) युद्ध करूंगा

योद्धव्यम् [१.२२ वि(फल १.१) (युध् + त्व्य)] युद्ध करना ही है, लड़ना है, युद्ध करने योग्य

योद्धुकामान् [१.२२ वि(राम २.३) (योद्धुं कामो येषां तान्)] उन्हें जिनकी युद्ध करने की इच्छा है

योधमुख्यैः [११.२६ वि(राम ३.३) (योधानां मुख्यैः)] मुख्य योद्धाओं सहित

योधवीरान् [११.३४ सं(राम २.३) (योधानां वीरान्)] वीर योद्धाओं को

योधाः [११.३२ सं(राम १.३)] योद्धा लोग

योनिः [१४.३ सं(मति १.१)] योनि, गर्भ, कोई भी उद्भव स्थान, कारण

योनिम् [१६.२० सं(मति २.१)] योनि को

योनिषु [१६.१९ सं(मति ७.३)] योनि में, गर्भ में

यौवनम् [२.१३ सं(फल १.१)] यौवन, युवावस्था

र

रक्षांसि [११.३६ सं(मनस् १.३)] राक्षस गण

रजः [१४.५, ७, ९.१०, १७.१ सं(मनस् १.१)] रजोगुण, रजस्, चंचलता

रजसः [१४.१६, १७ सं(मनस् ६.१)] रजो गुण (को), रजोगुण से

रजसि [१४.१२, १५ सं(मनस् ७.१)] रजो गुण में, चंचलता में

रजोगुणसमुद्भवः [३.३७ वि(राम १.१) (रजसः गुणात् समुद्भवः यस्य सः)] रजोगुण से उत्पन्न, वह जिसका जन्म रजो गुण से (है)

रणसमुद्यमे [१.२२ सं(राम ७.१) (रणस्य समुद्यमे)] रण, संग्राम में

रणात् [२.३५ सं(फल ५.१)] रण से, युद्ध से

रणे [१.४६, ११.३४ सं(राम ७.१)] युद्ध में

रताः [५.२५, १२.४ वि(राम १.३)] प्रसन्न हुए हुए, आनन्दित हुए हुए

रथम् [१.२१ सं(राम २.१)] रथ

रथोत्तमम् [१.२४ सं(राम २.१) (रथानाम् उत्तमम्)] रथों में उत्तम

रथोपस्थे [१.४७ सं(राम ७.१) (रथस्य उपस्थे)] रथ के पिछले भाग (में)

रमते [५.२२, १८.३६ (√ रम् भ्वा A लट् ३.१)] आनन्द मनाता है, आनन्दित होता है, रीझाता है, रमता है

रमन्ति [१०.९ (√ रम् भ्वा P लट् ३.३)] आनन्द मनाते हैं, आनन्दित होते हैं

रविः [१०.२१, १३.३३ सं(हरि १.१)] सूर्य

रसः [२.५९, ७.८ सं(राम १.१)] रस, स्वाद

रसनम् [१५.९ सं(फल १.१)] जिह्वा, स्वादेन्द्रिय

रसवर्जम् [२.५९ (रसं वर्जयित्वा) (अ)] रस को छोड़कर

रसात्मकः [१५.१३ वि.(राम १.१) (रसः आत्मा यस्य सः)] वह जिसका स्वभाव रस है, रसवाला, रसरूपी

रस्याः [१७.८ वि(राम १.३)] रुचिर, रसदार, आर्द्र

रहसि [६.१० सं(मनस् ७.१)] एकांत में

रहस्यम् [४.३ सं(फल २.१)] रहस्य, गुप्त, गोपनीय, सार, मर्म की बात

राक्षसीम् [९.१२ वि(नदी २.१)] राक्षसी

रागद्वेषवियुक्तैः [२.६४ वि(राम ३.३) (रागेण च द्वेषेण च वियुक्तैः)] राग द्वेष रहित (द्वारा), रुचि और अरुचि से अलग

रागद्वेषौ [३.३४, १८.५१ सं(राम १.२) (रागः च द्वेषः च)] रुचि और अरुचि, राग और द्वेष, प्रेम और बैर (दोनों)

रागात्मकम् [१४.७ वि.(फल २.१) (रागः आत्मा यस्य तत्)] वह जिसकी आत्मा भावावेश (भावातिरेक) है, भाव (उत्साह क्रोध इत्यादि) उत्पन्न करने वाला, अनुराग, काम वासना का उत्पादक

रागी [१८.२७ वि(शशिन् १.१)] कामुक, वासनामय, भावप्रवण

राजगुह्यम् [९.२१ सं.(फल १.१) (गुह्यानां राजा अथवा राज्ञां गुह्यम्.)] गुप्त बातों का राजा, राजाओं का रहस्य; गूढ़ वस्तुओं में गुप्त, श्रेष्ठ

राजन् [११.९, १८.७६, ७७ सं(राजन् ८.१)] हे राजन् !

राजर्षयः [४.२, ९.३३ सं(हरि १.३)] राजर्षियों ने

राजविद्या [९.२ सं(विद्या ६.३) (विद्यानां राजा)] विद्याओं में राजा, श्रेष्ठ विद्या, राजाओं की विद्या

राजसः [१८.२७ वि(राम १.१)] राजसिक

राजसम् [१७.१२, १८, २१; १८.८, २१, २४, ३८ वि(राम २.१) (फल १/२/१)] राजसिक

राजसस्य [१७.९ वि(राम ६.१)] राजसी लोगों का

राजसाः [७.१२, १४.१८, १७.४ वि(राम १.३)] राजसी, रजो गुणात्मक, सक्रिय, क्रियाशील, क्रियात्मक

राजसी [१७.२, १८.३१.३४ वि(नदी १.१)] राजसी, रजोगुणात्मक

राजा [१.२, १६ सं(राजन् १.१)] राजा

राज्यम् [१.३२, ३३,२.८ ११.३३ सं(फल २.१)] राज्य को

राज्यसुखलोभेन [१.४५ सं(राम ३.१) (राज्यस्य सुखस्य लोभेन)] राज्य के सुख के लालच से, राज्य सुख के लोभ से

राज्येन [१.३२ सं(फल ३.१)] राज्य से

रात्रिः [८.२५ सं(मति १.१)] रात, रात्रि

रात्रिम् [८.१७ सं(मति २.१)] रात्रि को

रात्र्यागमे [८.१८, १९ सं(राम ७.१) (रात्र्याः आगमे)] रात्रि के आगमन में, रात होने पर

राधनम् [७.२२ सं(फल २.१)] पूजा, आराधना

रामः [१०.३१ सं(राम १.१)] राम

रिपुः [६.५ सं(गुरु १.१)] शत्रु

रुद्राणाम् [१०.२३ सं(राम ६.३)] रुद्रों में

रुद्रादित्याः [११.२२ सं(राम १.३) (रुद्राः च आदित्याः च)] रुद्र और आदित्य गण

रुद्रान् [११.६ सं(राम २.३)] रुद्र (बहुवचन), एक प्रकार के गण देवता जो ग्यारह हैं

रुद्ध्वा [४.२९ (अ.)(√ रुध् रुधा P क्त्वाच्)] रोककर, नियंत्रित करके

रुधिरप्रदिग्धान् [२.५ सं(राम २.३) (रुधिरेण प्रदिग्धान्)] लहू से सने हुए, लहू से लिपे हुए

रूपम् [११.३.९.२०.२३.४५.४७. ४९.५०.५१.५२; १५.३, १८.७७ सं(फल १.१/२.१)] स्वरूप को, आकार को

रूपस्य [११.५२ सं(फल ६.१)] स्वरूप का

रूपाणि [११.५ सं(फल १.३)] स्वरूप (बहुवचन)

रूपेण [११.४६ सं)फल ३.१)] रूप से

रोमहर्षः [१.२९ सं(राम १.१) (रोम्णां हर्षः)] रोंगटे खड़े होना, रोमाञ्च होना

रोमहर्षणम् [१८.७४ सं(राम २.१) (रोम्णां हर्षणं यस्मात् तत्)] वह जिससे रोमाञ्च होता है

ल

लघ्वाशी [१८.५२ वि(शशिन् १.१) (लघु अश्नाति यः)] जो कम खाता है, अल्पाहारी

लब्धम् [१६.१३ (फल २.१)] प्राप्त किया. पा लिया, हस्तगत किया

लब्धा [१८.७३ (√ लभ् भ्वा A + क्त.)] प्राप्त की गई, पाई गई

लब्ध्वा [४.३९, ६.२२, १८.७३ (अ.) (√ लभ् भ्वा A + क्त्वाच्)] प्राप्त करके, पाकर

लभते [४.३९, ६.४३, ७.२२, १८.४५, ५४ (√ लभ् भ्वा A लट् ३.१)] (वह) पाता है, प्राप्त करता है

लभन्ते [२.३२, ५.२५, ९.२१ (√ लभ् भ्वा A लट् ३.३)] पाना, प्राप्त करना, (वे) प्राप्त करते हैं

लभस्व [११.३३ (√ लभ् भ्वा A लोट् २.१)] पा, प्राप्त कर

लभे [११.२५ (√ लभ् भ्वा A लट् १.१)] (मैं) पाता हूं

लभेत्(लभेत) [१८.८ (√ लभ् भ्वा. A विधि. ३.१)] प्राप्त करता है, पासकता है

लभ्यः [८.२२ वि(राम १.१)] प्राप्य, जो प्राप्त करने योग्य है

लाघवम् [२.३५ सं(फल २.१)] लघुता को, हलकापन, तुच्छता

लाभम् [६.२२ सं(राम २.१)] लाभ को

लाभालाभौ [२.३८ सं(राम २.२) (लाभः च अलाभः च)] लाभ और हानि

लिङ्गैः [१४.२१ सं(राम ३.३)] चिन्हों से, लक्षणों द्वारा

लिप्यते [५.७, १०, १३.३१, १८.१७ (√ लिप् तुदा A लट् ३.१)] लिप्त होता है,- के ऊपर प्रभाव पड़ता है

लिम्पन्ति [४.१४ (√ लिप् तुदा A लट् ३.३)] असर करते हैं, प्रभावित करते हैं, स्पर्श करते हैं

लुप्तपिण्डोदकक्रियाः [१.४२ वि.(राम १.३) (लुप्ता पिण्डस्य च उदकस्य च क्रिया येषां ते)] वे जिनकी लुप्त हो गई हैं पिण्ड और जल की क्रियाएं

लुब्धः [१८.२७ वि(राम १.१)] लालची

लेलिह्यसे [११.३० (√ लिह् दिवा + यङ् A लट् २.१)] (तू) चाटता है, निगल जाता है, लील जाता है

लोकः [३.९, २१, ४.३१, ४०, ७.२५, १०.६, १२.१५ सं(राम १.१)] संसार, लोक

लोकक्षयकृत् [११.३२ वि(१.१) (लोकानां क्षयम् करोति इति)] इस प्रकार लोकों को नष्ट करता (है), लोकों का नाश करने वाला

लोकत्रयम् [११.२०, १५.१७ सं(फल १.१) (लोकानां त्रयम्)] तीनों लोक,

लोकत्रये [११.४३ सं(फल ७.१)] तीनों लोकों में

लोकम् [९.३३, १३.३३ सं(राम २.१)] लोक, संसार

लोकमहेश्वरम् [१०.३ सं(राम २.१) (लोकस्य महेश्वरम्)] संसार के महेश्वर, को

लोकसंग्रहम् [३.२०, २५ सं(राम २.१) (लोकस्य संग्रहम्)] लोक कल्याण, लोक रक्षा, लोकोन्नति

लोकस्य [५.१४, ११.४३ सं(राम ६.१)] लोक का, जगत् का

लोकाः [३.२४, ८.१६, ११.२३, २९ सं(राम १.३)] लोक (बहुवचन) सब लोक, सब लोग

लोकात् [१२.१५ सं(राम ५.१)] संसार से

लोकान् [६.४१, १०.१६, ११.३०, ३२, १४.१४, १८.१७.७१ सं(राम २.३)] लोकों में, लोकों को, लोगों को

लोके [२.५, ३.३, ४.१२, ६.४२, १३.१३, १५.१६.१८, १६.६ सं(राम ७.१)] संसार में, लोक में, जगत् में

लोकेषु [३.२२ सं(राम ७.३)] लोकों में

लोभः [१४.१२, १७, १६.२१ सं(राम १.१)] लोभ, लालच, धन लिप्सा

लोभोपहतचेतसः [१.३८ सं(चन्द्रमस् १.३) (लोभेन उपहतं चेतः येषां ते)] वे जिनके मन लोभ से प्रभावित हैं (उत्तेजित हैं)

व

वः [३.१०, ११ सर्व(युष्मद् ६/२.३)] तुम्हारा, तुम को

वक्तुम् [१०.१६ (अ.) (√ ब्रू-वच् + तुमुन्)] कहना, बतलाना, कहिए, समझाइए

वक्त्राणि [११.२७, २८.२९ सं(फल १.३)] मुख (बहुवचन)

वक्ष्यामि [७.२, ८.२३, १०.१, १८.६४ (√ ब्रू अदा P लृट् १.१)] (मैं) कहूंगा, बतलाऊंगा

वचः [२.१०, १०.१, ११.१, १८.६४ सं(मनस् १.१/२.१)] शब्द, वचन

वचनम् [१.२, ११.३५, १८.७३ सं(फल २.१)] वचन, शब्द

वज्रम् [१०.२८ सं(फल १.१/२.१)] वज्र, वज्रपात

वद [३.२ (√ वद् भ्वा P लोट् २.१)] कहो, बोलो, (तू) कह

वदति [२.२९ (√ वद् भ्वा P लट् ३.१)] (वह) कहता है, बोलता है

वदनैः [११.३० सं(फल ३.३)] मुखों द्वारा, (कई) मुखों से

वदन्ति [८.११ (√ वद् भ्वा P लट् ३.३)] (वे) कहते हैं, घोषित करते हैं

वदसि [१०.१४ (√ वद् भ्वा P लट् २.१)] (आप) कहते हैं

वदिष्यन्ति [२.३६ (√ वद् भ्वा P लृट् ३.३)] कहेंगे

वयम् [१.३७, ४५, २.१२ सर्व(अस्मद् १.३)] हम

वर [८.४ सं(राम ८.१)] हे श्रेष्ठ

वरुणः [१०.२९, ११.३९ सं(राम १.१)] वरुण (जलदेवता)

वर्णसंकरः [१.४१ सं(राम १.१) (वर्णस्य संकरः)] वर्णसंकर, दोगला, वहव्यक्ति जो भिन्न भिन्न जातियों के स्त्री पुरुष के संयोग से उत्पन्न हो, जाति भ्रष्ट

वर्णसंकरकारकैः [१.४३ वि(राम ३.३) (वर्णस्य संकरस्य कारकैः)] वर्णों की गड़बड़ी करने वालों के द्वारा, वर्ण संकरों के द्वारा

वर्तते [५.२६, ६.३१, १६.२३ (√ वृत् भ्वा A लट् ३.१)] रहता है, होता है, (का) कार्य करना, व्यवहार करना

वर्तन्ते [३.२८, ५.९, १४.२३ (√ वृत् भ्वा A लट् ३.३)] अस्तित्व में हैं, रहते हैं

वर्तमानः [६.३१, १३.२३ वि(राम १.१)] विद्यमान होते हुए, रहते हुए, व्यवहार करते हुए (वर्त्मन् = मार्ग, रास्ता, चलन, रस्म)

वर्तमानानि [७.२६ वि(फल २.३)] जो हैं, जो वर्तमान काल में हैं, उनको

वर्ते [३.२२ (√वृत् भ्वा A लट् १.१)] (मैं) बना रहता हूं, प्रवृत्त रहता हूं लगा रहता हूं

वर्तेत [६.६ (√वृत भ्वा A विधि३.१)] हो सकता है, होगा, करता है

वर्तेयं [३.२३ (√ वृत् भ्वा A विधि१.१)] (मैं) लगा रहूं, प्रवृत्त रहूं

वर्त्म [३.२३, ४.११ सं(जन्मन् १.१)] मार्ग, पथ

वर्षम् [९.१९ सं(फल १.१)] वर्षा

वशम् [३.३४, ६.२६ सं(राम २.१)] वश में, (को)

वशात् [९.८ सं(राम ५.१)] बल से, बलात्, हठ से, बरबस

वशी [५.१३ वि(शशिन् १.१)] अपने को वश में रखने वाला, अपना स्वामी

वशे [२.६१ सं(राम ७.१)] वश में

वश्यात्मना [६.३६ वि(आत्मन् (१.१) (वश्यः आत्मा यस्य तेन)] उससे जिसकी आत्मा वश में है, संयमी द्वारा

वसवः [११.२२ सं(गुरु १.३)] वसु गण

वसून् [११.६ सं(गुरु २.३)] वसु, देवताओं का एक गण जिसके अन्तर्गत आठ देवता हैं, उनको

वसूनाम् [१०.२३ सं(गुरु ६.३)] वसुओं में (का)

वहामि [९.२२ (√ वह् भ्वा P लट् १.१)] (मैं) लाता हूं, प्रस्तुत करता हूं

वह्निः [३.३८ सं(हरि १.१)] अग्नि

वा [१.३२, २.६.२०.२६.३७; ६.३२, ८.६, १०.४१, १५.१०, १७.१९.२१, १८.१५.२४.४० (अ.)] अथवा, या, और

वाक् [१०.३४ सं(वाच् १.१)] वाणी

वाक्यम् [१.२१, २.१, १७.१५ सं(फल २.१)] वाक्य, बात

वाक्येन [३.२ सं(फल ३.१)] वचन से, वाक्य से

वाङ्मयम् [१७.१५ वि(फल १.१)] वाणी का

वाचम् [२.४२ सं(वाच् २.१)] वाणी, बोली, कथन (को)

वाच्यम् [१८.६७ वि(फल १.१) (√ ब्रू अदा वच् + ण्यत्)] कहना चाहिए, कहा जाए

वादः [१०.३२ सं(राम १.१)] वाणी, बोली, वाक् , भाषा

वादिनः [२.४२ वि(शशिन् १.३)] कहते हुए, बोलने वाले

वायुः [२.६७, ७.४, ९.६, ११.३९, १५.८ सं(गुरु १.१)] वायु, पवन

वायोः [६.३४ सं(गुरु ६.१)] वायु का

वार्ष्णेय [१.४१, ३.३६ सं(राम ८.१)] हे वार्ष्णेय, हे कृष्ण, हेवृष्णि वंशिन्, (भगवान् कृष्ण का जन्म वृष्णि (यादव) वंश में हुआ था,)

वासः [१.४४ सं(राम १.१)] निवास, घर

वासवः [१०.२२ सं(राम १.१)] वासव, इन्द्र

वासांसि [२.२२ सं(मनस् १.३)] वस्त्र

वासुकिः [१०.२८ सं(हरि १.१)] वासुकि, कश्यप पुत्र सर्पराज वासुकि

वासुदेवः [७.१९, १०.३७, ११.५० सं(राम १.१)] वासुदेव

वासुदेवस्य [१८.७४ सं(राम ६.१)] वासुदेव का

विकम्पितुम् [२.३१ (वि + √कम्प् भ्वा A + तुमुन्)] (भय से) कांपना, थरथराना, डगमगाना

विकर्णः [१.८ सं(राम १.१)] विकर्ण, एक कौरव

विकर्मणः [४.१७ सं(कर्मन् ६.१)] दोष पूर्ण कर्म का, विपरीत कर्म का

विकारान् [१३.१९ सं(राम २.३)] विकारों, रूपान्तरों (को)

विक्रान्तः [१.६ वि(राम १.१)] बलवान्

विगतः [११.१ वि(राम १.१) (वि + √ गम् भ्वा P + क्त)] चला गया, दूर हो गया हुआ

विगतकल्मषः [६.२८ वि(राम १.१) (विगतः कल्मषः यस्य सः)] जिसके पाप चले गए हैं, वह; पाप रहित

विगतज्वरः [३.३० वि(राम १.१) (विगतः ज्वरः यस्य सः)] वह जिसका ज्वर दूर हो गया है, जिसे कोई व्यग्रता नहीं, शोक संताप रहित

विगतभीः [६.१४ वि.(सुधी १.१) (विगता भीः यस्य सः)] वह जिसका भय चला गया है, भयरहित, निर्भय

विगतस्पृहः [२.५६, १८.४९ वि(राम १.१) (विगता स्पृहा यस्य सः)] वह जिसकी कामनाएं चली गई हैं (वह जिससे कामनाएं चली गई हैं) स्पृहा (इच्छा) रहित

विगतेच्छाभयक्रोधः [५.२८ वि(राम १.१) (विगताः इच्छा च भयं च क्रोधः च यस्य सः)] वह जिसकी कामना भय और क्रोध चले गए हैं; इच्छा, भय और क्रोध से रहित

विगुणः [३.३५, १८.४७ वि(राम १.१)] गुण रहित, बिना विशेषता के

विचक्षणाः [१८.२ सं(राम १.३)] बुद्धिमान् लोग

विचालयेत् [३.२९ (वि + √ चल् भ्वा P + णिच् + विधि. ३.१)] अस्थिर करना चाहिए, डाँवा डोल करना चाहिए

विचाल्यते [६.२२, १४.२३ (वि + √ चल् भ्वा P + णिच् + कर्म + लट् ३.१)] डगमगाता है, चलायमान होता है

विचेतसः [९.१२ वि(चन्द्रमस् १.३)] बुद्धिहीन

विजयः [१८.७८ सं(राम १.१)] विजय

विजयम् [१.३२ सं(राम २.१)] विजय को

विजानतः [२.४६ सं(ध्यायत् ६.१) (वि √ ज्ञा P + शतृ)] विद्वान्, (का), जानने वाले (का) ज्ञानी का

विजानीतः [२.१९ (वि + √ज्ञा क्र्या P लट् ३.२)] (दो) जानते हैं

विजानीयाम् [४.४ (वि + √ ज्ञा क्र्या P विधि १.१)] (मैं) समझलू, मानलूं

विजितात्मा [५.७ वि(आत्मन् १.१) (विजितः आत्मा येन सः)] वह जिसके द्वारा आत्मा जीती गई है, वह जिसने अपने पर विजय प्राप्त की है

विजितेन्द्रियः [६.८ सं(राम १.१) (विजितानि इन्द्रियाणि यस्य सः)] वह जिसकी इन्द्रियां विजित हैं, जिसने इन्द्रियों को जीता है

विज्ञातुम् [११.३१ (अ.) (वि + √ ज्ञा + तुमुन्)] जानना

विज्ञानम् [१८.४२ सं(फल १.१)] विज्ञान, ज्ञान

विज्ञानसहितम् [९.१ वि(फल १.१) (विज्ञानेन सहितम्)] अनुभव सहित, अनुभव के साथ

विज्ञाय [१३.१८ (अ.) (वि √ ज्ञा क्र्या P + ल्यप्)] जान कर

वितताः [४.३२ वि(राम १.३)] फैले हुए, विस्तारित

वित्तेशः [१०.२३ सं(राम १.१)] कुबेर

विदधामि [७.२१ (वि + √ धा जुहो P लट् १.१)] (मैं) बनाता हूं, करता हूं, बना देता हूं

विदितात्मनाम् [५.२६ (आत्मन् ६.३) (विदितः आत्मा येषां तेषाम्)] जिन्होंने अपने को जान लिया है, (उनके)

विदित्वा [२.२५, ८.२८ (अ.) (√ विद् अदा P + क्त्वाच्)] जान कर

विदुः [४.२, ७.२९.३०, ८.१७, १०.२.१४, १३.३४, १६.७, १८.२ (√ विद् अदा P लिट् ३.३)] जानना, जानते हैं

विद्धि [२.१७, ३.३२.३७, ४.१३.३२.३४, ७.१०, १२, १०.२४.२७, १३.१९.२६, १४.७.८, १५.१२, १७.१२, १८.२०.२१ (√ विद् अदा P लोट् २.१)] (तू) जान, समझ

विद्मः [२.६ (√ विद् अदा P लट् १.३)] (हम) जानते हैं, समझते हैं

विद्यते [२.१६.३१.४०, ३.१७, ४.३८, ६.४०, ८.१६, १६.७ (√ विद् दिवा A लट् ३.१)] है

विद्यात् [६.२३, १४.११ (√ विद् अदा. P विधि ३.१)] (उसे) जानना चाहिए

विद्यानाम् [१०.३२ सं(विद्या ६.३)] विद्याओं में (का)

विद्याम् [१०.१७ (√ विद् दिवा A विधि १.१)] (मैं) जानूं

विद्याविनयसंपन्ने [५.१८ वि(राम ७.१) (विद्यया च विनयेन च संपन्ने)] विद्या और नम्रता से परिपूर्ण (भरा हुआ)

विद्वान् [३.२५, २६ सं(विद्वस् १.१)] ज्ञानी, विवेकी

विधानोक्ताः [१७.२४ वि(राम १.१) (विधानेन उक्ताः)] विधान द्वारा निर्देशित, विधि में कही हुई

विधिदृष्टः [१७.११ वि(राम १.१) (विधौ दृष्टः)] विधि पूर्वक, शास्त्र निर्धारित

विधिहीनम् [१७.१३ वि(राम २.१) (विधिना हीनम्)] विधि हीन, बिना (शास्त्रोक्त) प्रणाली के

विधीयते [२.४४ (वि √धा जुहो P + कर्म A लट् ३.१)] स्थिर है, नियत है

विधेयात्मा [२.६४ वि(आत्मन् १.१) (विधेयः आत्मा यस्य सः)] वह जिसकी आत्मा दमित है, जिसका मन अपने वश में है, वह

विनङ्क्ष्यसि [१८.५८ (वि + √ नश् दिवा. लृट् २.१)] (तेरा) नाश कर दिया जाएगा, (तू) नष्ट हो जाएगा

विनद्य [१.१२ (वि + नद् + ल्यप्)] गुंजायमान करते हुए

विनश्यति [४.४०, ८.२० (वि + √ नश् दिवा P लट् ३.१)] नष्ट हो जाता हैं

विनश्यत्सु [१३.२७ वि(ध्यायत् ७.३) (वि + √ नश् दिवा + शतृ)] नष्ट होते हुओं में, नाशवान् (पदार्थों) में

विना [१०.३९ (अ.)] के बाहर, से रहित, बिना

विनाशः [६.४० सं(राम १.१)] नाश

विनाशम् [२.१७ सं(राम २.१)] विनाश

विनाशाय [४.८ सं(राम ४.१)] नाश के लिए, विनाश के लिए

विनियतम् [६.१८ वि(फल १.१)] विजित, दमित, भली प्रकार नियमबद्ध किया हुआ

विनियम्य [६.२४ (वि + नि + √यम् + ल्यप्)] नियंत्रित करके, भली प्रकार नियमबद्ध कर के

विनिवर्तन्ते [२.५९ (वि + नि + √ वृत् भ्वा A लट् ३.३)] दूर हो जाते हैं, छूट जाते हैं, विरत (निवृत्त) होते हैं

विनिवृत्तकामाः [१५.५ सं(राम १.३) (विनिवृत्ताः कामाः येषां ते)] वे जिनकी इच्छाएं दूर हो गई हैं, जिनकी कामनाएं शांत हो गई हैं

विनिश्चितैः [१३.४ वि(राम ३.३)] निश्चित, निश्चय (करने) वालों (द्वारा)

विन्दति [४.३८, ५.२१, १८.४५.४६ (√ विद् तुदा P लट् ३.१)] (वह) प्राप्त करता है, (उसे) मिलता है

विन्दते [५.४ (√ विद् तुदा A लट् ३.१)] प्राप्त करता है, पाता है

विन्दामि [११.२४ (√ विद् तुदा P लट् १.१)] (मैं) प्राप्त करता हूं, पाता हूं

विपरिवर्तते [९.१० (वि + परि + √ वृत् भ्वा A लट् ३.१)] घूमता है, चक्कर खाता है

विपरीतम् [१८.१५ वि(फल १.१)] विपरीत, उल्टा

विपरीतान् [१८.३२ वि(राम २.३)] विकृत हुआ, उल्टा

विपरीतानि [१.३१ वि(फल २.३)] उल्टा, विपरीत

विपश्चितः [२.६० सं(मरुत् ६.१)] ज्ञानी बुद्धिमान, (का)

विभक्तम् [१३.१६ वि(फल १.१)] विभाजित, खंडित, बांटा हुआ

विभक्तेषु [१८.२० वि(राम ७.३)] अलग अलग में, विभाजित हुओं में

विभावसौ [७.९ सं(गुरु ७.१)] अग्नि में

विभुः [५.१५ सं(गुरु १.१)] परमेश्वर, ईश्वर

विभुम् [१०.१२ सं(गुरु २.१)] (सर्व व्यापी) ईश्वर (को)

विभूतिभिः [१०.१६ सं(मति ३.३)] विभूतिओं से

विभूतिम् [१०.७, १८ सं(मति २.१)] सर्व सत्ता, महिमा, गौरव

विभूतिमत् [१०.४१ वि(जगत् १.१)] यशस्कर, तेजस्वी, चमत्कार पूर्ण

विभूतीनाम् [१०.४० सं(मति ६.३)] गरिमाओं का, विभूतियों का

विभूतेः [१०.४० सं(मति ५.१)] गौरव प्रताप (का) विभूति का

विमत्सरः [४.२२ वि(राम १.१)] ईर्ष्या-रहित

विमुक्तः [९.२८, १४.२०, १६.२२ वि(राम १.१)] मुक्त हुआ

विमुक्ताः [१५.५ सं/वि(राम १.३) (वि + √ मुच तुदा + क्त)] मुक्त हुए

विमुच्य [१८.५३ (अ.) (वि √ मुच् तुदा P + ल्यप्)] त्याग कर

विमुञ्चति [१८.३५ (वि + √ मुच् मुञ्च् तुदा P लट् ३.१)] तजता है, छोड़ता है

विमुह्यति [२.७२ (वि + √ मुद् दिवा P लट् ३.१)] सम्भ्रान्त होता है, किंकर्तव्य विमूढ होता है, भ्रम में पड़ता है

विमूढः [६.३८ वि(राम १.१)] मूढ, धोखा खाया हुआ, भूल में पड़ा हुआ

विमूढभावः [११.४९ सं(राम १.१) (विमूढस्य भावः)] सम्भ्रान्त अवस्था, मूढ़ जैसी स्थिति

विमूढाः [१५.१० सं(राम १.३)] मोहित हुए, भ्रम में आए, मूर्ख (लोग)

विमूढात्मा [३.६ सं(आत्मन् १.१) (विमूढः आत्मा यस्य सः)] वह जिसका मन भ्रमित है, मूढ़ पुरुष

विमृश्य [१८.६३ (अ.) (वि + √ मृश् तुदा P + ल्यप्)] विचार, चिन्तन कर के, भली प्रकार से सोचकर

विमोक्षाय [१६.५ सं(राम ४.१)] मुक्ति के लिए, मोक्ष के लिए

विमोक्ष्यसे [४.३२ (वि + √ मुच् तुदा A लृट् २.१)] (तू) मुक्त होगा, मोक्ष प्राप्त करेगा

विमोहयति [३.४० (वि + √ मुह् दिवा P + णिच् लट् ३.१)] घबरा देता है, सम्भ्रान्त करता है

विराटः [१.४, १७ सं(राम १.१)] विराट, मत्स्य देश के राजा जिनके यहां पाण्डवों ने अज्ञातवास किया था

विलग्नाः [११.२७ वि(राम १.३)] चिपके हुए, लिपटे हुए, अटके हुए

विवस्वतः [४.४ सं(धीमत् ६.१)] सूर्य का, विवस्वान् का

विवस्वते [४.१ सं(धीमत् ४.१)] सूर्य को, विवस्वान् के लिए

विवस्वान् [४.१ सं(धीमत् १.१)] सूर्य, विवस्वान् (ने)

विविक्तदेशसेवित्वम् [१३.१० सं(फल १.१) (विविक्तस्य देशस्य सेवित्वम्)] एकान्त स्थान का सेवन, (आश्रय)

विविक्तसेवी [१८.५२ वि(शशिन् १.१) (विविक्तं सेवते यः)] जो एकान्त की सेवा करता है, एकान्त सेवी

विविधाः [१७.२५, १८.१४ वि(विद्या १.३)] भिन्न-भिन्न

विधैः [१३.४ वि(राम ३.३)] नाना विधि से, भांति-भांति से

विवृद्धम् [१४.११ वि(फल २.१)] बढ़ा, वृद्धि की हुई

विवृद्धे [१४.१२, १३ वि(फल ७.१)] वृद्धि पाये हुए (में) बढ़े हुए (में)

विशते [१८.५५ (√ विश् भ्वा P/A लट् ३.१)] प्रवेश करता है

विशन्ति [८.११, ९.२१, ११.२१, २७.२८, २९ (√ विश् तुदा P लट् ३.३)] (वे) प्रवेश करते हैं

विशालम् [९.२१ वि(राम २.१)] सुविस्तृत, अपार

विशिष्टाः [१.७ वि(राम १.३)] श्रेष्ठ, प्रतिष्ठित

विशिष्यते [३.७, ५.२, ६.९, ७.१७, १२.१२ (वि + √ शिष् रुधा A लट् ३.१)] से श्रेष्ठ या उत्कृष्ट है, विशेष है

विशुद्धया [१८.५१ वि(विद्या ३.१)] शुद्ध (–से)

विशुद्धात्मा [५.७ वि(आत्मन् १.१) (विशुद्धः आत्मा यस्य सः)] वह जिसकी आत्मा शुद्ध (पवित्र) है

विश्वतोमुखः [१०.३३ वि(राम १.१)] हर दिशा में मुख रखते हुए, चारों ओर मुख वाला

विश्वतोमुखम् [९.१५, ११.११ वि(राम २.१) (विश्वतः मुखं यस्य तम्)] उसको जिसका मुख सब ओर है, विश्व व्यापक को

विश्वम् [११.१९, ३८, ४७ सं(फल १.१/२.१)] विश्व (को)

विश्वमूर्ते [११.४६ सं(हरि ८.१) (विश्वं मूर्तिः यस्य सः)] (हे) वह जिसका स्वरूप विश्व है, हे विश्वमूर्ते !

विश्वरूपम् [११.१६ सं(राम २.१) (विश्वं रुपम् यस्य तम्)] उसको जिसका स्वरूप जगत् (है)

विश्वस्य [११.१८, ३८ सं(फल ६.१)] ब्रह्माण्ड का, जगत् का

विश्वे [११.२२ (देवः) सं(राम १.१)] विश्वेदेव, अग्नि

विश्वेश्वर [११.१६ सं(राम ८.१) (विश्वस्य ईश्वर)] हे जगत् प्रभो !

विषम् [१८.३७, ३८ सं(फल १.१)] विष

विषमे [२.२ वि(फल ७.१)] आपत्ति में

विषयप्रवालाः [१५.२ वि(विद्या १.३) (विषयाः प्रवालाः यासां ताः)] जिनके इन्द्रिय विषय अंकुर (कोपलें) हैं, वे

विषयाः [२.५९ सं(राम १.३)] विषय, इन्द्रियों के विषय

विषयान् [२.६२, ६४, ४.२६, १५.९, १८.५१ सं(राम २.३)] (इन्द्रियों के) विषयों (पर) विषयों को

विषयेन्द्रियसंयोगात् [१८.३८ सं(राम ५.१) (विषयैः इन्द्रियाणां संयोगात्)] विषयों के साथ, इन्द्रियों के संयोग से

विषादम् [१८.३५ सं(राम २.१)] उदासी, निराशा, हतोत्साह, खिन्नता को

विषादी [१८.२८ वि(शशिन् १.१)] निराश, जो झट उदास हो जाए, शोकातुर

विषीदन् [१.२८ वि(महत् १.१) (वि + सीद P + शतृ)] उदास, दुःखी होता हुआ

विषीदन्तम् [२.१, १० वि(ध्यायत् २.१)] निराश, उदास (हुए को)

विष्टभ्य [१०.४२ (अ) (वि √स्तम्भ् + ल्यप्)] स्थापित कर के, व्याप्त करके

विष्ठितम् [१३.१७ वि.(फल १.१) (वि. √स्था + क्त)] बैठा, स्थित

विष्णुः [१०.२१ सं(गुरु १.१)] विष्णु

विष्णो [११.२४, ३० सं(गुरु ८.१)] हे विष्णो

विसर्गः [८.३ सं(राम १.१)] निर्गम (निकास, निकला हुआ) प्रसर्जन, क्रिया, व्यापार

विसृजन् [५.९ वि(ध्यायत् १.१) (वि + √ सृज् तुदा P + शतृ)] देता हुआ, छोड़ता हुआ

विसृजामि [९.७, ८ (वि + √ सृज् तुदा P लट् १.१)] (मैं) उत्पन्न करता हूं, सर्जन करता हूं, प्रकट करता हूं

विसृज्य [१.४७ (अ.) (वि + सृज् तुदा P + ल्यप्)] फेंक कर, छोड़कर

विस्तरः [१०.४० वि(राम १.१)] विस्तार, प्रसार, फैलाव

विस्तरशः [११.२, १६.६ अ. (विस्तार + शस्)] विस्तार से, विस्तार पूर्वक

विस्तरस्य [१०.१९] विस्तार का, विस्तृत वर्णन या विवरण का

विस्तरेण [१०.१८ वि(राम ३.१)] विस्तार से, विस्तृत रूप से

विस्तारम् [१३.३० वि(फल २.१)] विस्तार को, प्रसार, प्रसारण को

विस्मयः [१८.७७ सं(राम १.१)] विस्मय, आश्चर्य

विस्मयाविष्टः [११.१४ वि(राम १.१) (विस्मयेन आविष्टः)] आश्चर्य से व्याप्त (भरा हुआ) (लीन)

विस्मिताः [११.२२ वि(राम १.३)] आश्चर्य चकित हुए, विस्मित हुए

विहाय [२.२२, ७१ (अ.) (वि + √ हा जुहो P + ल्यप्)] फेंक कर, छोड़कर

विहारशय्यासनभोजनेषु [११.४२ सं.(फल ७.३) (विहारे च शय्यायां च आसने च भोजने च)] आमोद प्रमोद करते, विश्राम करते, बैठते और भोजन करते

विहिताः [१७.२३ वि(राम १.३) (वि + √ धा जुहो P + क्त)] निश्चय किए हुए, ठहराए हुए, विधान किये हुए है

विहितान् [७.२२ वि(राम २.३ (वि + √ धा जुहो P + क्त)] आदेशित, निर्णय किए हुए, निर्धारित, निर्मित, को

वीक्षन्ते [११.२२ (√ वीक्ष् भ्वा A लट् ३.३)] (वे) देखते हैं, निरीक्षण करते हैं

वीतरागभयक्रोधः [२.५६ वि(राम १.१) (वीतः रागः च भयं च क्रोधः च यस्य सः)] वह जिसका राग, भय और क्रोध चला गया है

वीतरागभयक्रोधाः [४.१० वि.(राम १.३) (वीताः रागः च भयं च क्रोधः च येषां ते)] वे जिनके राग भय और क्रोध चले गए हैं, प्रीति, भय और क्रोध से रहित

वीतरागाः [८.११ वि(राम १.३) (वीतः रागः येषां ते)] वे जिनका राग (आसक्ति) चला गया हैं, रागरहित

वीर्यवान् [१.५, ६ वि(धीमत् १.१)] पराक्रमी, बहादुर

वृकोदरः [१.१५ सं(राम १.१) (वृकस्य इव उदरं यस्य सः)] वह जिसका पेट भेड़िए सा है (भीमसेन)

वृजिनम् [४.३६ सं(फल २.१)] पापों को

वृष्णीनाम् [१०.३७ सं(हरि ६.३)] यादवों में, वृष्णि कुल में (देखो वार्ष्णेय)

वेगम् [५.२३ सं(राम २.१)] वेग को, प्रचण्डता को

वेत्ता [११.३८ वि(धातृ १.१)] जानने वाला, ज्ञाता

वेत्ति [२.१९, ४.९, ६.२१ (√ विद् अदा P लट् ३.१)] जानता है

वेत्थ [४.५, १०.१५ (√ विद् अदा P लट् २.१)] (तू)

वेद [२.२१, २९, ४.५, ७.२६, १५.१ (√ विद् अदा P लट् ३.१)] जानता है, जानना,

वेदयज्ञाध्ययनैः [११.४८ सं(राम ३.३) (वेदैः च यज्ञैः च अध्ययनैः च)] वेदों द्वारा, यज्ञों द्वारा और अध्ययन द्वारा

वेदवादरताः [२.४२ वि(राम १.३) (वेदस्य वादे रताः)] वेद वाक्य में रत (आनन्दित) हुए

वेदवित् [१५.१, १५ वि(तत्त्वविद् १.१)] वेद जानने वाला

वेदविदः [८.११ वि.(तत्त्वविद् १.३)] वेद जानने वाले

वेदाः [२.४५, १७.२३ सं(राम १.३)] वेद (बहुवचन)]

वेदानाम् [१०.२२ सं(राम ६.३)] वेदों में

वेदान्तकृत् [१५.१५ वि(मरुत् १.१)] वेदान्त का कर्त्ता, वेदान्त का रहस्य प्रकट करने वाला

वेदितव्यम् [११.१८ वि(फल २.१)] जानने योग्य, ज्ञेय

वेदितुम् [१८.१ (√ विद् अदा P + तुमुन्)] जानना

वेदे [१५.१८ (अ.) सं(राम ७.१)] वेद में

वेदेषु [२.४६, ८.२८ सं(राम ७.३)] वेदों में

वेदैः [११.५३, १५.१५ सं(राम ३.३)] वेदों द्वारा, वेद (पढ़ने) से

वेद्यः [१५.१५ वि(राम १.१)] जानने योग्य

वेद्यम् [९.१७, ११.३८ वि(फल १.१)] जानने योग्य

वेपथुः [१.२९ सं(गुरु १.१)] कम्पन, कँपकंपी लगे हुए

वेपमानः [११.३५ वि(राम १.१)] कांपते हुए

वैनतेयः [१०.३० सं(राम १.१) (विनतायाः अपत्यं पुमान्)] विनता का पुत्र, गरुड़

वैराग्यम् [१३.८, १८.५२ सं(फल १.१/२.१)] अनासक्ति, विरक्ति, तटस्थता, वैराग्य

वैराग्येण [६.३५ सं(फल ३.१)] वैराग्य से, विरक्ति, तटस्थता अनासक्ति (से)

वैरिणम् [३.३७ वि(शशिन् २.१)] शत्रु को, वैरी को

वैश्यकर्म [१८.४४ सं(कर्मन् १.१) (वैश्यानां कर्म)] वैश्यों का कर्म

वैश्याः [९.३२ सं(राम १.३)] वैश्य लोग

वैश्वानरः [१५.१४ सं(राम १.१)] अग्नि, जठराग्नि, वह अग्नि जो अन्न पचाती है, अग्नि की एक उपाधि

व्यक्तमध्यानि [२.२८ वि.(फल १.३) (व्यक्तं मध्यं येषां तानि)] वे जिनकी मध्यावस्था प्रत्यक्ष है, जिनकी बीच की स्थिति प्रकट है

व्यक्तयः [८.१८ सं(मति १.३)] प्रत्यक्ष, प्रकट, व्यक्त (हुई वस्तुएं)

व्यक्तिम् [७.२४, १०.१४ सं(मति २.१)] अभिव्यक्ति को, प्राकट्य को

व्यतितरिष्यति [२.५२ (वि + अति + √ तृ भ्वा P लृट् ३.१)] (तू) पार उतर जाएगा

व्यतीतानि [४.५ वि(फल १.३)] बीत गए (हैं), हो चुके (हैं)

व्यथन्ति [१४.२ (√ व्यथ् भ्वा. P लट् ३.३)] दुःख झेलते, कष्ट पाते

व्यथयन्ति [२.१५ (√ व्यथ् भ्वा. णिच् P लट् ३.३)] यातना देते हैं, उत्पीड़ित करते हैं, दुःखी करते है

व्यथा [११.४९ सं(विद्या १.१)] क्लेश, वेदना, पीड़ा

व्यथिष्ठाः [११.३४ (√ व्यथ् भ्वा A विधि २.१)] व्यथित हो, दुःखित हो

व्यदारयत् [१.१९ (वि + √ दृ चुरा लङ् ३.१)] चीर दिया, विदीर्ण कर दिया

व्यनुनादयन् [१.१९ (वि + अनु √ नद् भ्वा P + णिच् लङ् ३.३)] गुंजाता हुआ

व्यपाश्रित्य [९.३२ (अ.) (वि + अप् + आ + √ श्र भ्वा P + ल्यप्)] शरण लेकर, आश्रय लेकर

व्यपेतभीः [११.४९ वि.(सुधी १.१) (व्यपेता भीः यस्य सः)] वह जिसका भय दूर हो गया है, भय रहित, निडर

व्यवसायः [१०.३६, १८.५९ सं(राम १.१)] दृढ निश्चय, संकल्प

व्यवसायात्मिका [२.४१, ४४ वि(विद्या १.१) (व्यवसायः आत्मा यस्याः सा)] वह जिसकी आत्मा दृढसंकल्प है, स्थिर, सुस्थिर

व्यवसितः [९.३० वि(राम १.१) (वि + अव √सो दिवा P + क्त)] कृतसंकल्प, दृढ निश्चय वाला

व्यवसिताः [१.४५ वि(राम १.३) (वि + अव √ सो दिवा P + क्त)] तय्यार हुए (हैं) तत्पर हुए

व्यवस्थितान् [१.२० वि(राम २.३) (वि + अव √स्था भ्वा P + क्त)] पंक्तिबद्ध अथवा क्रम से खड़े हुए

व्यवस्थितौ [३.३४ वि.(राम १/२.२) (वि + अव् + √स्था भ्वा P क्त)] (दो) बैठे हुए (हैं), रहते हैं, टिके हुए (हैं), (किसी प्रकार के नियम से) रक्खे हुए

व्यात्ताननम् [११.२४ सं(राम २.१) (व्यात्तानि आननानि यस्य तम्)] उसको जिसका मुख खुला हुआ (है), खुले हुए मुखवाले को

व्याप्तम् [११.२० वि(राम २.१)] व्याप्त, फैला हुआ (है)

व्याप्य [१०.१६ (अ.) (वि + √ आप् स्वा. P + ल्यप्)] व्याप्त हुआ, (होकर, करके) फैला हुआ

व्यामिश्रेण [३.२ वि(फल ३.१)] जटिल, उलझे हुए, सन्दिग्ध (से)

व्यासः [१०.१३, ३७ सं(राम १.१)] व्यास

व्यासप्रसादात् [१८.७५ सं(राम ५.१) (व्यासस्य प्रसादात्)] व्यास की कृपा से

व्याहरन् [८.१३ वि.(ध्यायत् १.१) (वि + आ √ हृ भ्वा P + शतृ)] पाठ करता हुआ, जपता हुआ

व्युदस्य [१८.५१ (अ.) (वि-उत्-अस् + ल्यप्)] तजकर, छोड़कर

व्यूढम् [१.२ वि(विद्या २.१)] तैनात, व्यूह-रचना की हुई

व्यूढाम् [१.३ वि(विद्या २.१)] व्यूह-रचना की गई, तैनात, संघटित (को)

व्रज [१८.६६ (√ व्रज् भ्वा P लोट् २.१)] आना, आ

व्रजेत [२.५४ (√व्रज् भ्वा A विधि ३.१)] (वह) चले, चलना चाहिए

श

शंकरः [१०.२३ सं(राम १.१)] शंकर

शंससि [५.१ (√ शंस् भ्वा P लोट् २.१)] (आप) प्रशंसा करते हैं, सराहना करते हैं, बड़ाई करते हैं

शक्नोति [५.२३ (√ शक् स्वा P लट् ३.१)] (वह) सकता है, समर्थ है

शक्नोमि [१.३० (√ शक् स्वा P लट् १.१)] (मैं) समर्थ हूं, सकता हूं

शक्नोषि [१२.९ (√ शक् स्वा P लट् २.१)] (तू) नहीं सकता, (तेरे लिए) सम्भव नहीं

शक्यः [६.३६, ११.४८, ५३, ५४ सं/वि(राम १.१)] सम्भव

शक्यम् [११.४, १८.११ सं(राम २.१)] सम्भव

शक्यसे [११.८ ((√ शक् स्वा A/P लट् २.१)] (तू) नहीं सकता, (तेरे लिए) सम्भव नहीं ('शक्नोषि' का आर्ष प्रयोग)

शंखम् [१.१२ सं(राम २.१)] शंख को

शंखाः [१.१३ सं(राम १.३)] शंख (बहुवचन)

शंखान् [१.१८ सं(राम २.३)] शंखों को

शंखौ [१.१४ सं(राम २.२)] (दो) शंख

शठः [१८.२८ वि(राम १.१)] छली, कपटी, दुष्ट

शतशः [११.५ (अ.)] सैकड़ों, सौ गुना

शत्रुः [१६.१४ सं(गुरु १.१)] शत्रु, वैरी

शत्रुत्वे [६.६ सं(फल ७.१)] शत्रुतामें, वैर-विरोध में

शत्रुम् [३.४३ सं(गुरु २.१)] शत्रु को

शत्रुवत् [६.६ (अ.) (शत्रु + वतुप्)] शत्रु के समान, शत्रु जैसा

शत्रून् [११.३३ सं(गुरु २.३)] शत्रुओं को

शत्रौ [१२.१८ सं(गुरु ७.१)] शत्रु में

शनैः [६.२५ (अ.)] क्रमशः, धीरे-धीरे

शब्दः [१.१३, ७.८ सं(राम १.१)] ध्वनि, नाद

शब्दब्रह्म [६.४४ सं(कर्मन् १.१)] वेद, वेदोक्त कर्म का फल

शब्दादीन् [४.२६, १८.५१ वि(हरि २.३) (शब्दः आदिः येषां तान्)] शब्दों आदि को

शमः [६.३, १०.४, १८.४२ सं(राम १.१)] शान्ति, अन्तःकरण तथा बाह्य इन्द्रियों का निग्रह

शमम् [११.२४ सं(राम २.१)] शान्ति, निग्रह

शरणम् [२.४९, ९.१८, १८.६२, ६६ सं(फल २.१)] आश्रय, शरण

शरीरम् [१३.१, १५.८ सं(फल १/२.१)] शरीर, शरीर को

शरीरयात्रा [३.८ सं(विद्या १.१) (शरीरस्य यात्रा)] शरीर की यात्रा, शरीर का निर्वाह, रख रखाव (भरण पोषण)

शरीरवाङ्मनोभिः [१८.१५ सं(मनस् ३.३) (शरीरेण च वाचा च मनसा च)] शरीर से, वाणी से और मन से

शरीरविमोक्षणात् [५.२३ सं(फल ५.१) (शरीरात् विमोक्षणात्)] शरीर के छूटने से

शरीरस्थः [१३.३१ वि(राम १.१)] शरीर में स्थित

शरीरस्थम् [१७.६ वि.(राम २.१) (शरीरे स्थितम्)] शरीर में स्थित, बैठे हुए (को)

शरीराणि [२.२२ सं(फल २.३)] शरीरों को

शरीरिणः [२.१८ सं(शशिन् ६.१)] देहधारी का

शरीरे [१.२९, २.२०, ११.१३ सं(फल ७.१)] शरीर में

शर्म [११.२५ सं(जन्मन् २.१)] सुख, शान्ति, आश्रय को

शशांकः [११.३९, १५.६ सं(राम १.१)] चन्द्रमा

शशिसूर्यनेत्रम् [११.१९ वि.(राम २.१) (शशी च सूर्यः च नेत्रे यस्य तम्)] उसको जिसके नेत्र शशि और सूर्य हैं

शशिसूर्ययोः [७.८ सं(राम ६.२) (शशिनः च सूर्यस्य च)] चन्द्र और सूर्य का

शशी [१०.२१ सं(शशिन् १.१)] चन्द्रमा

शश्वत् [९.३१ वि.(अ.)] सनातन, शाश्वत, निरन्तर नित्य

शस्त्रपाणयः [१.४६ वि(हरि १.३) (शस्त्राणि पाणिषु येषां ते)] वे जिनके हाथ में शस्त्र हैं

शस्त्रभृताम् [१०.३१ सं(मरुत् ६.३) (शस्त्राणि बिभ्रति इति तेषाम्)] उनका जो इस प्रकार शस्त्र वहन करते हैं, शस्त्रधारियों में

शस्त्रसंपाते [१.२० सं(राम ७.१) (शस्त्राणां संपाते)] शस्त्रों के प्रहार, में

शस्त्राणि [२.२३ सं(फल १.३)] शस्त्र, हथियार

शाखाः [१५.२ सं(विद्या १.३)] शाखाएं, डालियां

शाधि [२.७ (√ शास् अदा. P लोट् २.१)] सिखलाएं, शिक्षा दें

शान्तः [१८.५३ वि.(राम १.१)] शान्तिमय, शान्त हुआ

शान्तरजसम् [६.२७ वि(चन्द्रमस् २.१) (शान्तं रजः यस्य तम्)] उसको जिसका रजोगुण शान्त हो गया है, जिसके विकार शान्त हो गए हैं

शान्तिः [२.६६, १२.१२, १६.२ सं.(मति १.१)] शान्ति

शान्तिम् [२.७०.७१, ४.३९, ५.१२.२९, ६.१५, ९.३१, १८.६२ सं(मति २.१)] शान्ति, शान्ति को

शारीरम् [४.२१, १७.१४ वि(फल १.१/२.१)] शरीर से, शारीरिक

शाश्वतः [२.२० वि(राम १.१)] अनादि अनन्त

शाश्वतधर्मगोप्ता [११.१८ वि(धातृ १.१)] शाश्वत (नित्य निरन्तर) धर्म का रक्षक (संरक्षक)

शाश्वतम् [१०.१२, १८.५६.६२ वि(राम २.१) (फल २.१)] सदैव रहने वाला, अनन्त

शाश्वतस्य [१४.२७ वि(राम ६.१)] अनन्त का, सदैव रहने वाले का

शाश्वताः [१.४३ वि(राम १.३)] चिरस्थायी, अनन्त, सनातन, नित्य

शाश्वतीः [६.४१ वि(नदी २.३)] चिरस्थायी, अनन्त, सनातन

शाश्वते [८.२६ वि(फल १.२)] (दो) चिरस्थायी, अनन्त, सनातन, नित्य

शास्त्रम् [१५.२०, १६.२४ सं(फल १.१/२.१)] शास्त्र

शास्त्रविधानोक्तम् [१६.२४ सं(फल १.१) (शास्त्रस्य विधानेन उक्तम्)] शास्त्र के कहे आदेश (को)

शास्त्रविधिम् [१६.२३, १७.१ सं(मति २.१) (शास्त्राणां विधिम्)] शास्त्रों के आदेश (को), शास्त्र में बताई गई क्रिया को, शास्त्र विधि को

शिखण्डी [१.१७ सं(शशिन् १.१)] शिखण्डी, द्रुपदराज की एक कन्या जो पीछे पुरुष के रूप में होकर कुरुक्षेत्र के युद्ध में लड़ी थी

शिखरिणाम् [१०.२३ वि(शशिन्) (शिखराणि एषां सन्ति इति तेषाम्)] शिखरवालों में, पर्वतों में

शिरसा [११.१४ सं(मनस् ३.१)] शिर से

शिष्यः [२.७ सं(राम १.१)] शिष्य, अनुयायी

शिष्येण [१.३ सं(राम ३.१)] शिष्य (द्वारा)

शीतोष्णसुखदुःखदाः [२.१४ वि.(राम १.३) (शीतं च उष्णं च सुखं च दुःखं च ददति इति)] ठण्डक, गरमी सुख दुःख देते हैं, ऐसे

शीतोष्णसुखदुःखेषु [६.७, १२.१८ सं(फल ७.३) (शीते च उष्णे च सुखे च दुःखे च)] सर्दी में गर्मी में, सुख में और दुःख में

शुक्लः [८.२४ वि(राम १.१)] शुक्ल पक्ष

शुक्लकृष्णे [८.२६ वि(विद्या १.२) शुक्ला च कृष्णा च)] शुक्ल और कृष्ण, प्रकाश और अन्धकार

शुचः [१६.५, १८.६६ (√शुच् भ्वा P लुङ् २.१)] शोक मनाना, दुःखी होना

शुचिः [१२.१६ वि(हरि १.१)] पवित्र

शुचीनाम् [६.४१ वि(हरि ६.३)] पवित्र (लोगों) का

शुचौ [६.११ वि(हरि ७.१)] शुद्ध पवित्र, स्वच्छ, निर्मल (में)

शुनि [५.१८ सं(श्वन् ७.१)] श्वान में

शुभान् [१८.७१ वि(राम २.३)] शुभ, कान्तिमय, प्रफुल्ल

शुभाशुभपरित्यागी [१२.१७ वि(शशिन् १.१) (शुभस्य च अशुभस्य च परित्यागी)] शुभ और अशुभ का त्यागने वाला

शुभाशुभफलैः [९.२८ वि.(फल ३.३) (शुभं च अशुभं च फलं येषां तैः)] उनके द्वारा जिनका फल शुभ और अशुभ है, अच्छे बुरे फलवालों के द्वारा

शुभाशुभम् [२.५७ सं(फल २.१) (शुभं च अशुभं च)] शुभ और अशुभ को

शूद्रस्य [१८.४४ सं(राम ६.१)] शूद्र का

शूद्राः [९.३२ सं(राम १.३)] शूद्र लोग

शूद्राणाम् [१८.४१ सं(राम ६.३)] शूद्रों के

शूराः [१.४, ९ सं(राम १.३)] वीर गण, शूरवीर (लोग)

शृणु [२.३९, ७.१, १०.१, १३.३, १६.६, १७.२.७, १८.४.१९.२९.३६.४५.६४ (√ श्रु स्वा P लोट् २.१)] सुनना, सुन

शृणुयात् [१८.७१ (√ श्रु स्वा P विधि ३.१) (वह) सुने

शृणोति [२.२९ (√ श्रु स्वा P लट् ३.१)] (वह) सुनता है ध्यान देता है

शृण्वतः [१०.१८ वि.(ध्यायत् ६.१) (√ श्रु स्वा P + शतृ)] सुनते हुए (का)

शृण्वन् [५.८ वि(ध्यायत् १.१) (√ श्रु भ्वा P + शतृ)] सुनते हुए

शैब्यः [१.५ सं(राम १.१)] (राजा) शैब्य

शोकम् [२.८, १८.३५ सं(राम २.१)] शोक, विषाद, दुःख, संताप

शोकसंविग्नमानसः [१.४७ वि.(राम १.१) (शोकेन संविग्नं मानसम् यस्य सः)] वह जिसका मन दु.ख से व्याकुल है, व्यग्रचित्त

शोचति [१२.१७, १८.५४ (√ शुच् भ्वा P लट् ३.१)] शोक मनाता है, दुःखी होता है

शोचितुम् [२.२६,२७, ३० (अ.) (√ शुच् भ्वा तुमुन्)] शोक मनाना, दुःख करना

शोषयति [२.२३ (√ शुष् दिवा + णिच् लट् ३.१)] सुखाता है

शौचम् [१३.७, १६.३, ७, १७.१४, १८.४२ सं(फल १.१)] पवित्रता, शौच, शुद्धि , शुचिता

शौर्यम् [१८.४३ सं(फल १.१)] पराक्रम, शौर्य

श्यालाः [१.३४ सं(राम १.३)] साले

श्रद्धानाः [१२.२० वि(राम १.३)] श्रद्धा से परिपूर्ण

श्रद्धया [६.३७, ७.२१.२२, ९.२३, १२.२, १७.१.१७ सं(विद्या ३.१)] श्रद्धा से, श्रद्धा द्वारा

श्रद्धा [१७.२, ३ सं(विद्या १.१)] श्रद्धा, विश्वास, निष्ठा, आकांक्षा, अभिलाषा

श्रद्धाम् [७.२१ सं(विद्या २.१)] श्रद्धा (को)

श्रद्धामयः [१७.३ वि(राम १.१)] श्रद्धावाला, प्रचुर श्रद्धा बन गई है, जिसकी, श्रद्धामय

श्रद्धावन्तः [३.३१ वि(धीमत् १.३)] श्रद्धावाले, निष्ठावान्

श्रद्धावान् [४.३९, ६.४७, १८.७१ वि(धीमत् १.१)] श्रद्धावाला, निष्ठावान्

श्रद्धाविरहितम् [१७.१३ वि(राम २.१) (श्रद्धया विरहितम्)] विना श्रद्धा के, श्रद्धा रहित

श्रिताः [९.१२ वि(राम १.३)] आश्रित, आश्रय लिए हुए

श्रीः [१०.३४, १८.७८ सं(श्री १.१)] समृद्धि, वैभव, शोभा, लक्ष्मी

श्रीभगवान् [२.२ सं(धीमत् १.१)] श्री भगवान्

श्रीमत् [१०.४१ वि(जगत् १.१)] सफलता, वैभवमय समृद्धिपूर्ण

श्रीमताम् [६.४१ वि(धीमत् ६.३)] श्रीमंतों का, साधन संपन्नों का

श्रुतम् [१८.७२ वि.(फल १.१) (√श्रु स्वा P क्त)] सुना

श्रुतवान् [१८.७५ वि(महत् १.१) (√ श्रु स्वा P + क्तवतु)] सुना

श्रुतस्य [२.५२ वि(राम ६.१) (√ श्रु स्वा P + क्त] उसका जो सुना गया है, सुने हुए का

श्रुतिपरायणाः [१३.२५ सं(राम १.३) (श्रुतिः परम् अयनं येषां ते)] वे जिनका परम आश्रय श्रुति (वेद) है, सुने हुए (वेद) पर भरोसा करने वाले

श्रुतिमत् [१३.१३ वि(जगत् १.१)] कान रखते हुए

श्रुतिविप्रतिपन्ना [२.५३ वि(विद्या १.१) (श्रुतिभिः विप्रतिपन्ना)] श्रुतियों (वेदों) से व्याकुल (विचलित) हुई

श्रुतौ [११.२ वि(राम १.२)] (दो द्वारा) सुना हुआ

श्रुत्वा [२.२९, ११.३५, १३.२५ (अ.) (√ श्रु स्वा P + क्त्वाच्)] सुनकर

श्रेयः [१.३१ २.५.७.३१, ३.२.११.३५, ५.१, १२.१२, १६.२२ सं(मनस् १.१/२.१)] कल्याण, हित, भलाई, अधिक अच्छा

श्रेयान् [३.३५, ४.३३, १८.४७ वि(श्रेयस् १.१)] अधिक अच्छा, श्रेष्ठ

श्रेष्ठः [३.२१ वि(राम १.१)] उत्तम, श्रेष्ठ पुरुष

श्रोतव्यस्य [२.५२ वि(फल १.६) (√श्रु P + तव्यत्)] सुनने योग्य (का) जो सुना जाना चाहिए (उसका)

श्रोत्रम् [१५.९ सं(फल १.१)] कान

श्रोत्रादीनि [४.२६ सं(फल २.३) (श्रोत्रम् आदिः येषां तानि)] कान आदि इन्द्रियों को

श्रोष्यसि [१८.५८ (√श्रु स्वा P लृट् २.१)] सुनेगा, कान देगा, ध्यान देगा

श्वपाके [५.१८ सं(राम ७.१)] चांडाल में, कुत्तों को पकाके खाने वालों में

श्वशुराः [१.३४ सं(राम १.३)] श्वसुर (बहुवचन)

श्वशुरान् [१.२७ सं(राम २.३)] श्वसुरों को

श्वसन् [५.८ वि(ध्यायत् १.१) (√श्वस् अदा P + शतृ)] श्वास लेता हुआ

श्वेतैः [१.१४ वि(राम ३.३)] सफेद

ष

षण्मासाः [८.२४, २५ सं(राम १.३) (षट् मासाः)] छः महीने

स

संकरः [१.४२ सं(राम १.१)] (वर्णों का) मिश्रण, भ्रम, घपला

संकरस्य [३.२४ सं(राम ६.१)] (वर्णों के) मिश्रणका, भ्रमका, घपले का, अव्यवस्था का

संकल्पप्रभवान् [६.२४ वि(राम २.३)] कल्पना से उत्पादित, प्रस्तुत, संकल्प (कार्य करने की इच्छा) से उत्पन्न हुओं (को)

संख्ये [१.४७, २.४ सं(फल ७.१)] युद्ध में, रण क्षेत्र में

संग्रहेण [८.११ सं(राम ३.१)] संक्षेप से (में)

संग्रामम् [२.३३ सं(राम २.१)] युद्ध (को)

संघातः [१३.६ सं(राम १.१)] समूह, समुच्चय, संघटित शरीर रचना, शरीर

संजनयन् [१.१२ वि.(ध्यायत् १.१ (सम् + जन् + णिच् चुरा P + शतृ)] उत्पन्न करता हुआ

संजय [१.१ सं(राम ८.१)] हे संजय

संजयः [१.२.. सं(राम १.१)] संजय

संजयति [१४.९ (सम् + √जि. जय् P लट् ३.१)] संलग्न रहता है, जुड़ा रहता है

संजायते [२.६२, १३.२६, १४.१७ सम् + √ जन्-जा दिवा A लट् ३.१)] उठता है, उदय होता है, उत्पन्न होता है

संज्ञार्थम् [१.७ सं(राम २.१) (संज्ञायाः अर्थम्)] जानकारी के लिए

संतरिष्यसि [४.३६ (सम् + √ तृ भ्वा P लृट् २.१)] (तू) पार कर जाएगा

संतुष्टः [३.१७, १२.१४, १९ सं(राम १.१) (सम् √तुष् दिवा P + क्त)] संतुष्ट हुआ, संतोष पाया हुआ

संदृश्यन्ते [११.२७ (सम् √दृश् + कर्मणि A लट् ३.३)] दिखते हैं, दिखाई देते हैं

संनियम्य [१२.४ (अ.) (सम् + नि + √ यम् + ल्यप्)] संयम करके, वश में रखकर

संनिविष्टः [१५.१५ वि(राम १.१) (सम् + नि + √ विश् भ्वा P + क्त)] बैठा हुआ, ठहरा हुआ

संन्यसनात् [३.४ सं(फल ५.१)] त्याग से

संन्यस्य [३.३०, ५.१३, १२.६, १८.५७ (अ.) (सम् + नि + √ अस् दिवा A/P + ल्यप्)] त्याग कर, अर्पण करके, छोड़कर

संन्यासः [५.२, ६, १८.७ सं(राम १.१)] संन्यास, (सं = सम् एक अव्यय जिसका व्यवहार शोभा समानता, उत्कृष्टता आदि सूचित करता है, न्यास = त्याग, गीता के अनुसार कामना से प्रेरित कर्मों का त्याग, (देखिए श्लोक १८.२)

संन्यासम् [५.१, ६.२, १८.२ सं(राम २.१)] संन्यास को

संन्यासयोगयुक्तात्मा [९.२८ सं(आत्मन् १.१) (संन्यासस्य योगेन युक्तः आत्मा यस्य सः)] वह जिसकी आत्मा संन्यास के योग से संतुलित है, वह जिसने अपने आप को संन्यास योग से संतुलित किया है

संन्यासस्य [१८.१ सं(राम ६.१)] संन्यास का

संन्यासिनाम् [१८.१२ सं(शशिन् ६.३)] संन्यासियों का, त्यागियों का

संन्यासी [६.१ सं(शशिन् १.१)] संन्यासी

संन्यासेन [१८.४९ सं(राम ३.१)] संन्यास से

संपत् [१६.५ सं(सम्पद् १.१)] सम्पन्नता, स्थायी निधि, संपत्ति

संपदम् [१६.३.४.५ सं(सम्पद् २.१)] स्थायी निधि को

संपद्यते [१३.३० (सम् + √ पद् A लट् ३.१)] हो जाता है, होता है

संपश्यन् [३.२० वि.(ध्यायत् १.१) (सम् + √ दृश् भ्वा P शतृ)] देखते हुए, विचार करते हुए

संप्रकीर्तितः [१८.४ वि(राम १.१) (सम् + प्र + √ कीर्त् चुरा + क्त)] वर्णन किया गया (है), कहा गया (है)

संप्रतिष्ठा [१५.३ सं(विद्या १.१)] नींव, आधार

संप्रवृत्तानि [१४.२२ वि(फल २.३) (सं + प्र + √ वृत् भ्वा A + क्त)] प्राप्त होने पर, प्राप्त हुओं को

संप्रेक्ष्य [६.१३ (अ.) (सम् + प्र + √ ईक्ष् A भ्वा + ल्यप्)] दृष्टि डालकर, दृष्टि जमा कर

संप्लुतोदके [२.४६ सं(फल ७.१) (संप्लुते उदके)] जलमग्न (स्थान में)

संबन्धिनः [१. ३४ सं(शशिन् १.३)] सम्बंधी लोग

संभवः [१४.३ सं(राम १.१)] जन्म, उत्पत्ति

संभवन्ति [१४.४ (सम् + √ भू-भव् भ्वा P लट् ३.३)] उत्पन्न होते हैं

संभवामि [४.६, ८ (सम् + √ भू-भव् भ्वा P लट् १.१)] (मैं) होता हूं, (मैं) जन्म लेता हूं

संभावितस्य [२.३४ वि(राम ६.१)] मान पाए हुए का, प्रतिष्ठित का

संमोहः [२.६३ सं(राम १.१)] मोह, भ्रम, भ्रान्ति, विभ्रम, अविवेक

संमोहम् [७.२७ सं(राम २.१)] मोह को, भ्रम को

संमोहात् [२.६३ सं(राम ५.१)] सम्भ्रम से, अविवेक से, भ्रान्ति से

संयतेन्द्रियः [४.३९ वि(राम १.१) (संयतानि इन्द्रियाणि यस्य सः)] वह जिसकी इन्द्रियां नियन्त्रित हैं, जिसकी इन्द्रियां वश में हैं, जितेंद्रिय

संयमताम् [१०.२९ सं(ध्यायत् ६.३)] शासकों का, शासन करते हुओं का

संयमाग्निषु [४.२६ सं(हरि ७.३) (संयमस्य अग्निषु)] संयम की आग में

संयमी [२.३९ सं(शशिन् १.१)] संयमी, जो अनुशासित है, आत्मनिग्रह वाला स्थिर बुद्धिवाला

संयम्य [२.६१, ३.६, ६.१४, ८.१२ (अ.), (सम् + √ यम् भ्वा P + ल्यप्)] संयम में रख कर, वश में करके, नियंत्रित करके

संयाति [२.२२, १५.८ (सम् + √ या अदा P लट् ३.१)] जाता है

संवादम् [१८.७०, ७४.७६ सं(राम २.१)] संवाद, सम्भाषण

संवृत्तः [११.५१ वि(राम १.१)] हो जाना, हो गया (हूं)

संशयः [८.५, १०.७, १२.८ सं(राम १.१)] संशय, सन्देह

संशयम् [४.४२, ६.३९ सं(राम २.१)] संशय को, सन्देह को

संशयस्य [६.३९ सं(राम ६.१)] संशय का, सन्देह का

संशयात्मनः [४.४० सं(आत्मन् ६.१)] शंका करने वाले का

संशयात्मा [४.४० वि(आत्मन् १.१) (संशयः आत्मा यस्य सः)] वह जिसकी आत्मा संशय (में) है, शंकाशील पुरुष

संशितव्रताः [४.२८ वि(राम १.३) (संशितानि व्रतानि येषां ते)] वे जिनके व्रत तीक्ष्ण (कठिन) हैं, कठिन व्रतधारी

संशुद्धकिल्विषः [६.४५ वि(राम १.१) (संशुद्धं किल्विषं यस्य सः)] वह जिसके पाप पूर्ण रूप से धुल गए हैं

संश्रिताः [१६.१८ वि(राम १.३) (सम √श्रि भ्वा A/P क्त)] (में) आश्रय लिए, के सहारे

संसारेषु [१६.१९ सं(राम ७.३)] संसार में

संसिद्धिम् [३.२०, ८.१५, १८.४५ सं(मति २.१)] पूर्णता, पराकाष्ठा, परम सिद्धि को

संसिद्धौ [६.४३ सं(मति ७.१)] परम सिद्धि के लिए, पूर्णता में

संस्तभ्य [३.४३ (अ.) (सम् + स्तम्भ + ल्यप्)] स्थिर करके, सन्तुलित करके

संस्पर्शजाः [५.२२ वि(राम १.३)] सम्पर्क से उत्पन्न, विषयजन्य

संस्मृत्य [१८.७६, ७७ (अ.) (सम् + √ स्मृ भ्वा P + ल्यप्)] स्मरण करके

संहरते [२.५८ (सम् + √हृ A लट् ३.१)] समेट लेता है, सिकोड़ लेता है

सः [१.१३ सर्व (तद् पुं. १.१)] वह,

सक्तः [५.१२ वि(राम १.१)] आसक्त, अनुरक्त

सक्तम् [१८.२२ वि.(फल १.१)] आसक्त

सक्ताः [३.२५ वि(राम १.३)] आसक्त, अनुरक्त

सखा [४.३, ११.४१, ४४ सं(सखि १.१)] सखा, मित्र

सखीन् [१.२६ सं(सखि २.३)] मित्रों को

सखे [११.४१ सं(सखि ८.१)] हे सखा

सख्युः [११.४४ सं(सखि ६.१)] सखा का

सगद्गदम् [११.३५ (क्रि. वि. अ.) (गद्गदेन सह)] हिचकिचाते हुए, लड़खड़ाती वाणी से, हक्लाते हुए

संगः [२.४७, ६२ सं(राम १.१)] आसक्ति, मोह, आसंग

संगम् [२.४८, ५.१०, ११, १८.६, ९ सं(राम २.१)] आसक्ति मोह, (को)

संगरहितम् [१८.२३ वि.(फल २.१) (संगेन रहितम्)] विना आसक्ति के

संगवर्जितः [११.५५ सं(राम १.१) (संगेन् वर्जितः)] आसक्ति से रहित

संगविवर्जितः [१२.१८ सं(राम १.१) (संगात् विवर्जितः)] आसक्ति से मुक्त, अनुरक्ति से रहित

संगात् [२.६२ सं(राम ५.१)] आसक्ति से, संग से

सचराचरम् [९.१०, ११.७ सं(फल २.१) (चरेण च अचरेण च सह)] चर और अचर के सहित, चराचर, स्थावर जंगम पदार्थों के साथ

सचेताः [११.५१ वि(चन्द्रमस् १.१)] सजग, सतर्क, सावधान

सच्छब्दः [१७.२६ सं(राम १.१) (सत् इति शब्दः)] सत् ऐसा शब्द

सज्जते [३.२८ (√ सज्ज् भ्वा A लट् ३.१)] आसक्त होता है, अनुरक्त रहता है

सज्जन्ते [३.२९ (√ सज्ज् भ्वा A लट् ३.३)] आसक्त होते हैं, अनुरक्त रहते हैं

सत् [९.१९, ११.३७, १३.१२, १७.२३, २६, २७ सं/वि(ध्यायत् १.१)] सत्, अस्तित्व

सतः [२.१६ सं(ध्यायत् ६.१) (√ अस् अदा. P + शतृ)] सत् का, विद्यमान का

सततम् [३.१९, ६.१०, ८.१४, ९.१४, १२.१४, १७.२४, १८.५७ (अ.)] सदा, सर्वदा, निरन्तर

सततयुक्ताः [१२.१ वि(राम १.३)] निरन्तर सन्तुलित, सदैव लीन, हरदम जुड़ा हुआ

सततयुक्तानाम् [१०.१० सं(राम ६.३) (सततं युक्तानाम्)] सदैव संतुलित रहने वालों का, निरन्तर लीन रहने वालो का

सति [१८.१६ वि.(ध्यायत् ७.१) (√ अस् अदा P + शतृ)] होने पर (में)

सत्कारमानपूजार्थम् [१७.१८ सं(राम २.१) (सत्कारः च मानः च पूजा च तासाम् अर्थम्)] आदर और सम्मान और पूजा और इनके निमित्त; सत्कार, मान और पूजा के लिए,

सत्त्वम् [१०.३६.४१, १३.२६, १४.५.६.९.१०.११, १७.१, १८.४० सं(फल १.१)] सत्यता, सत्य, वस्तु, पदार्थ, प्राणी, सत्त्वगुण समन्वय, सामंजस्य, सुव्यवस्था, अस्तित्व

सत्त्ववताम् [१०.३६ सं./वि(भवत् ६.३)] सत्यवादियों में, सत्यनिष्ठावानों में

सत्त्वसंशुद्धिः [१६.१ सं(मति १.१) (सत्त्वस्य संशुद्धिः)] प्राणी की शुद्धता, अन्तःकरण की निर्मलता, निर्मलतवृत्ति

सत्त्वसमाविष्टः [१८.१० वि(राम १.१)] सत्त्वगुण से व्याप्त, सत्त्वशील

सत्त्वस्थाः [१४.१८ सं(राम १.३) (सत्त्वे स्थिताः)] सत्त्वगुण में स्थित, सात्त्विक (वृत्तिवाले)

सत्त्वात् [१४.१७ सं(फल ५.१)] सत्त्वगुण से

सत्त्वानुरूपा [१७.३ वि(विद्या १.१) (सत्त्वस्य अनुरूपा)] मनुष्य के रूप के अनुसार, व्यक्तिगत स्वभावानुसार

सत्त्वे [१४.१४ सं(फल ७.१)] सत्त्व गुण में

सत्यम् [१०.४, १६.२.७, १७.१५, १७.६५ सं(फल १.१/२.१)] सत्य

सदसद्योनिजन्मसु [१३.२१ सं(जन्मन् ७.३) (सतीषु च असतीषु च योनिषु जन्मानि तेषु)] अच्छी और बुरी योनियों में जन्म लेने में

सदा [५.२८, ६.१५.२८, ८.६,१०.१७, १८.५६ (अ.)] सदा, सर्वदा, निरन्तर

सदृशः [१६.१५ वि(राम १.१)] समान

सदृशम् [३.३३, ४.३८ (अ.)] (के) जैसा, अनुरूप

सदृशी [११.१२] वि. (नदी १.१) समान

सदोषम् [१८.४८ वि(राम २.१)] दोष सहित, दूषित, दोषपूर्ण

सद्भावे [१७.२६ सं(राम ७.१)] यथार्थता के संदर्भ में

सन् [४.६ वि(ध्यायत् १.१) (√अस् अदा P शतृ)] होता हुआ

सनातनः [२.२४, ८.२०, ११.१८, १५.७ वि(राम १.१)] प्राचीन, पुरातन

सनातनम् [४.३१, ७.१० वि(फल २.१)] सनातन, शाश्वत, अनादि – अनन्त

सनातनाः [१.४० वि(राम १.३)] प्राचीन, चिरन्तन

सन्तः [३.१३ सं(ध्यायत् १.३) (√ अस् A + शतृ)] सत्पुरुष

सपत्नान् [११.३४ सं(राम २.३)] प्रतिद्वन्द्वी, शत्रु (बहुवचन)

सप्त [१०.६ (संख्या. वि पु प्रथमा)] सात, सप्त

समः [२.४८, ४.२२, ९.२९, १२.१८, १८.५४ वि(रामः १.१)] समरूप, बराबर

समक्षम् [११.४२ (अ.)] किसी के सामने दल, में टोली, में; संगति में

समग्रम् [४.२३, ७.१, ११.३० वि(फल २.१)] सब, सर्व, सम्पूर्ण

समग्रान् [११.३० वि(राम २.३)] सम्पूर्ण, सब को, सब मिलकर

समचित्तत्वम् [१३.९ सं(फल १.१)] समभाव, समानचित्तता एक चित्तता

समता [१०.५ सं(विद्या १.१)] समचित्तता, समबुद्धि

समतीतानि [७.२६ वि(फल २.३)] बीते हुए (को), जो हो चुके हैं, जो भूतकाल में थे

समतीत्य [१४.२६ (अ.) (सम् + अति + √ ई अदा P + ल्यप्)] पार करके, लांघ कर

समत्वम् [२.४८ सं(फल १.१)] समानता, समता, बराबरी, साम्य

समदर्शनः [६.२९ वि(राम १.१)] समान देखने वाला, एक बराबर देखने वाला

समदर्शिनः [५.१८ वि(शशिन् १.३)] समदर्शी, समान रूप से देखने वाले

समदुःखसुखः [१२.१३, १४.२४ वि(राम १.१) (समे दुःखं च सुखं च यस्य सः)] (वह जो) दुःख और सुख में समान है, सुख दुख में एकसा रहने वाला

समदुःखसुखम् [२.१५ वि(राम २.१) (समं दुःखं च सुखं च यस्य तम्)] उसको जिसके सुख और दुःख समान है, सुख दुःख में समान रहने वाले (को)

समधिगच्छति [३.४ (सम् + अधि + √ गम्-गच्छ् भ्वा P लट् ३.१)] प्राप्त करता है, पाता है

समन्ततः [६.२४ (अ.)] सब ओर से

समन्तात् [११.१७, ३० (अ.)] चारों ओर से, सब दिशाओं में

समबुद्धयः [१२.४ वि.(हरि १.३) (समा बुद्धिः येषां ते)] वे जिनकी बुद्धि एक समान है, सम स्वभाव वाले

समबुद्धिः [६.९ वि(हरि १.१) (समा बुद्धिः यस्य सः)] वह जिसका मन एकसा है, समान भाव रखने वाला

समम् [५.२९, ६.१३, ३२, १३.२७, २८ वि(राम २.१)] सीधा, सरल समरेखा में, समान, के बराबर, समभावी, एकसमान

समलोष्टाश्मकाञ्चनः [६.८, १४.२४ सं(राम १.१) (समानि लोष्टाश्म काञ्चनानि (समं लोष्टं च अश्मा च काञ्चनं च) यस्मै सः)] वह जिसके लिए एक समान है मिट्टी, पत्थर और स्वर्ण

समवस्थितम् [१३.२८ वि(राम २.१)] एक समान रहते हुए, समभाव से रहने वाले को, एकभाव से स्थित

समवेताः [१.१ वि(राम १.३)] एकत्र हुए

समवेतान् [१.२५ वि(राम २.३)] एकत्र हुओं (को)

समाः [६.४१ सं(विद्या २.३)] वर्ष, संवत्सर

समागताः [१.२३ वि(राम १.३) (सम् + आ + √ गम् भ्वा. + क्त)] एकत्र हुए

समाचर [३.९, १९ (सम् + आ + √ चर् भ्वा P लोट् २.१)] पूरा करना, सम्पन्न करना, अच्छी तरह पूरा करना

समाचरन् [३.२६ वि.(ध्यायत् १.१) (सम् + आ + √ चर् भ्वा + शतृ)] करते हुए

समाधातुम् [१२.९ (अ.) (सम् + आ + √ धा जुहो A/P + तुमुन्)] स्थिर करना, लगाना

समाधाय [१७.११ (अ.) (सम् + आ + √ धा जुहो P ल्यप्)] निश्चित करके, स्थिर करके

समाधिस्थस्य [२.५४ वि(राम ६.१)] समाधि में बैठे हुए की

समाधौ [२.४४, ५३ सं(मति ७.१)] समाधिमें, चिन्तन मनन में

समाप्नोषि [११.४० (सम् + √ आप् स्वा P लट् २.१)] (तू) व्याप्त है

समारम्भाः [४.१९ सं(राम १.३)] (हर काम का) आरम्भ, प्रारम्भ

समासतः [१३.१८ (अ.) (समास + तसिल्)] संक्षेप में, थोड़े में

समासेन [१३.३, ६, १८.५० सं(राम ३.१)] एकीकरण (राशीकरण) से, संक्षेप में, सारांश में

समाहर्तुम् [११.३२ (अ.) (सम् + आ + √ हृ भ्वा P + तुमुन्)] सत्यानाश करने के लिए, संहार करने के लिए

समाहितः [६.७ वि(राम १.१)] सन्तुलित, एक समान रहता हुआ

समितिंजयः [१.८ सं(राम १.१) (समितिं जयति)] लड़ाई जीतने वाला , संग्रह, संकलन जमाव, जीतता है, (जो)

समिद्धः [४.३७ वि(राम १.१)] सुलगा हुआ, प्रदीप्त हुआ

समीक्ष्य [१.२७ (अ.) (सम् + √ ईक्ष् भ्वा A + ल्यप्)] देखकर

समुद्रम् [२.७०, ११.२८ सं(राम २.१)] समुद्र में (को)

समुद्धर्ता [१२.७ वि.(धातृ १.१)] उद्धार करने वाला, (से) मुक्ति दिलाने वाला, छुटकारा कराने वाला, मुक्तिदाता, परित्राता

समुपस्थितम् [१.२८, २.२ वि(फल १.१) (सम् + उप् + √ स्था भ्वा. P + क्त)] एक साथ खड़े हुए , उपस्थित, उत्पन्न हुआ

समुपाश्रितः [१८.५२ वि.(राम १.१) (सम + उप + आ √ श्रि भ्वा + क्त)] शरण लेते हुए, लेता हुआ, आश्रित

समृद्धम् [११.३३ वि(फल २.१)] वैभव पूर्ण, विस्तृत

समृद्धवेगाः [११.२९ वि(राम १.३)] द्रुत गति से, बढ़ते हुए वेग से

समे [२.३८ वि(फल २.२)] समान, (दो) बराबर, तुल्य (दो)

समौ [५.२७ वि(राम २.२)] समान, बराबर, तुल्य, एक समान (दो)

सम्यक् [५.४, ८.१०, ९.३० (अ.)] यथाविधि विधिवत् , भली प्रकार से, एक साथ

सरसाम् [१०.२४ सं(मनस् ६.३)] सरोवरों में

सर्गः [५.१९ सं(राम १.१)] पुनर्जन्म, सृष्टि

सर्गाणाम् [१०.३२ सं(राम ६.३)] सृष्टियों में (का)

सर्गे [७.२७, १४.२ सं(राम ७.१)] सृष्टि में, संसार में, उत्पत्तिकाल में

सर्पाणाम् [१०.२८ सं(राम ६.३)] सर्पों में

सर्व [११.४०] हे सर्वरूप

सर्वः [३.५, ११.४०] सब, सबकुछ

सर्वकर्मणाम् [१८.१३ सं(कर्मन् ६.३) (सर्वेषां कर्मणाम्)] सब कर्मों की

सर्वकर्मफलत्यागम् [१२.११, १८.२ सं(राम २.१) (सर्वेषां कर्मणां फलस्य त्यागम्)] समस्त कर्मों के फल के त्याग (को)

सर्वकर्माणि [३.२६, ४.३७, ५.१३, १८.५६, ५७ सं(कर्मन् २.३) (सर्वाणि कर्माणि)] सब कर्म, सर्व कर्मों को

सर्वकामेभ्यः [६.१८ सं(राम ४.३) (सर्वेभ्यः कामेभ्यः)] सर्व वस्तुओं की इच्छाओं के लिए

सर्वकिल्बिषैः [३.१३ सं(फल ३.३) (सर्वैः किल्बिषैः)] सब पापों से

सर्वक्षेत्रेषु [१३.२ सं(फल ७.३) (सर्वेषु क्षेत्रेषु)] सब क्षेत्रों में

सर्वगतः [२.२४ वि(राम १.१) (सर्वस्मिन् गतः)] सर्व व्यापी

सर्वगतम् [३.१५, १३.३२ वि(फल १.१)] सब में व्याप्त, सर्वव्यापी

सर्वगुह्यतमम् [१८.६४ सं(फल २.१) (सर्वेभ्यः गुह्यतमम्)] सब गोपनीय (रहस्यों) में, सबसे अधिक गोपनीय

सर्वज्ञानविमूढान् [३.३२ वि.(राम २.३) (सर्वस्मिन् ज्ञाने विमूढान्)] सम्पूर्ण ज्ञान में विमूढ (भ्रम में पड़े हुए) मूर्खों को

सर्वतः [२.४६, ११.१६, १७.४०.१३.१३ (अ.)] सर्वत्र, सब जगह, सब ओर से, हर प्रकार से

सर्वतःपाणिपादम् [१३.१३ सं(फल १.१) (सर्वतः पाणयः च पादाः च यस्य तत्)] वह जिसके हाथ पैर हर कहीं हैं, सर्वत्र हाथ पैर वाला

सर्वतःश्रुतिमत् [१३.१३ वि.(जगत् १.१)] सब कहीं कान रखते हुए, जिसके कान हरस्थान में हैं

सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् [१३.१३ वि(राम २.१) (सर्वतः अक्षीणि च शिरांसि च मुखानि च यस्य तत्)] वह जिसके नेत्र सिर और मुख सर्वत्र हैं

सर्वत्र [२.५७, ६.२९.३०.३२, १२.४, १३.२८.३२, १८.४९ (अ.)] सर्वत्र, सब स्थान में, हर कहीं , सब प्रकार से

सर्वत्रगः [९.६ वि(राम १.१) (सर्वत्र गच्छति इति)] सब कहीं जाता है, सब कहीं विचरण करने वाला

सर्वत्रगम् [१२.३ वि(फल २.१)] सब कहीं विचरण करने वाला, सर्वव्यापी

सर्वथा [६.३१, १३.२३ (अ.)] हर कहीं, सब प्रकार से

सर्वदुःखानाम् [२.६५ सं(फल ६.३) (सर्वेषां दुःखानाम्)] सब दुःखों का, सम्पूर्ण पीड़ाओं का

सर्वदुर्गाणि [१८.५८ सं(फल २.३) (सर्वाणि दुर्गाणि)] सब विघ्न बाधाएं

सर्वदेहिनाम् [१४.८ सं(शशिन् ६.३) (सर्वेषां देहिनाम्)] सब देहधारियों का, सब प्राणियों का

सर्वद्वाराणि [८.१२ सं(फल २.३) (सर्वाणि द्वाराणि)] सब द्वारों को, इन्द्रियों को

सर्वद्वारेषु [१४.११ सं(फल ६.३) (सर्वेषु द्वारेषु)] सब द्वारों में

सर्वधर्मान् [१८.६६ सं(राम २.३) (सर्वान् धर्मान्)] सब धर्मों, कार्यों , कामों (को)

सर्वपापेभ्यः [१८.६६ सं(राम ५.३) (सर्वेभ्यः पापेभ्यः)] सब पापों से

सर्वपापैः [१०.३ सं(राम ३.३) (सर्वैः पापैः)] सब पापों से

सर्वभावेन [१५.१९, १८.६२ सं(राम ३.१) (सर्वेण भावेन)] पूर्णभाव से, सम्पूर्ण रूप से

सर्वभूतस्थम् [६.२९ वि(राम २.१) (सर्वेषु भूतेषु तिष्ठति तम्)] उसको (जो) सब प्राणियों में स्थित (है), टिका है

सर्वभूतस्थितम् [६.३१ वि(राम २.१) (सर्वेषु भूतेषु स्थितम्)] सब भूतों में स्थित (को)

सर्वभूतहिते [५.२५, १२.४ सं(फल ७.१) (सर्वेषां भूतानां हिते)] सब प्राणियों के कल्याण (हित) में

सर्वभूतात्मभूतात्मा [५.७ वि(आत्मन् १.१) (सर्वेषां भूतानाम् आत्मभूतः आत्मा यस्य सः)] वह जो सब प्राणियों की आत्मा को अपनी आत्मा बनाता है, सब प्राणियों को अपने जैसा मानने वाला

सर्वभूतानाम् [२.६९, ५.२९, ७.१०, १०.३९.१२.१३, १४.३, १८.६१ सं(फल ६.३) (सर्वेषां भूतानाम्)] सब प्राणियों का, भूतमात्र का

सर्वभूतानि [६.२९, ७.२७, ९.४, ७.१८.६१ सं(फल २.३/१.३) (सर्वाणि भूतानि)] सब सृष्टि (प्राणी)

सर्वभूताशयस्थितः [१०.२० (सर्वेषां भूतानाम् आशये स्थितः)] सब प्राणियों के हृदय में स्थित, (बैठा हुआ)

सर्वभूतेषु [३.१८, ७.९, ९.२९, ११.५५, १८.२० सं(फल ७.३) (सर्वेषु भूतेषु)] सब प्राणियों में, भूतमात्र में

सर्वभृत् [१३.१४ वि./सं(जगत् २.१) (सर्वं बिभर्ति इति)] सब का पोषण करता है (जो)

सर्वम् [२.१७, ४.३३.३६, ६.३० ७.७.१३.१९, ८.२२.२८, ९.४, १०.८.१४, ११.४०, १३.१३, १८.४६ सर्व(सर्व नपु १.१/२.१)] सब, सबको

सर्वयज्ञानाम् [९.२४ सं(राम ६.३) (सर्वेषां यज्ञानाम्)] सब यज्ञों का

सर्वयोनिषु [१४.४ सं(मति ७.३)] सब योनियों में, सब गर्भों में

सर्वलोकमहेश्वरम् [५.९ सं(राम २.१) (सर्वेषां लोकानां महेश्वरम्)] सब लोकों का महान् ईश्वर (को)

सर्ववित् [१५.१९ वि(तत्त्वविद् १.१)] सर्वज्ञ, सब कुछ जानने वाला

सर्ववृक्षाणाम् [१०.२६ सं(राम ६.३) (सर्वेषां वृक्षाणाम्)] सब वृक्षों में, पेड़ो में

सर्ववेदषु [७.८ सं(राम ७.३) (सर्वेषु वेदेषु)] सब वेदों में

सर्वशः [१.१८, २.५८. ६८, ३.२३.२७, ४.११, १०.२, १३, १३.२९](अ.)] सब ओर से, सर्व प्रकार से, सर्वत्र

सर्वसंकल्पसंन्यासी [६.४ सं(शशिन् १.१) (सर्वेषां संकल्पानां संन्यासी)] सम्पूर्ण इच्छाओं को त्यागने वाला

सर्वस्य [२.३०, ७.२५, ८.९, १०.८, १३.१७, १५.१५, १७.३.७ सर्व(सर्व पु ६.१, नपु ६.१)] सब का, प्रत्येक का

सर्वहरः [१०.३४ वि(राम १.१) (सर्वं हरति इति)] सब का संहार कर्ता, सबका क्षय करने वाला

सर्वाः [८.१८, ११.२०, १५.१३ सर्व(सर्व स्त्री १.३/२.३)] सब, सभी, समस्त

सर्वाणि [२.३०.६१, ३.३०, ४.५.२७, ७.६, ९.६, १२.६, १५.१६ सर्व(सर्व नपु १.३/२.३)] सब, सब को

सर्वान् [१.२७, २.५५.७१, ४.३२, ६.२४, ११.१५ सर्व(सर्व पुं २.३)] सब (को)

सर्वारम्भपरित्यागी [१२.१६, १४.२५ वि(शशिन् १.१) (सर्वेषाम् आरम्भाणां परित्यागी)] सब (उपक्रमणों), कार्यों (का) त्यागी, (उपक्रमण = कार्यारंभ, सकाम कार्यों का आरम्भ)

सर्वारम्भाः [१८.४८ सं(राम १.३) (सर्वे आरम्भाः)] सब उद्यम, कार्य, व्यवसाय

सर्वार्थान् [१८.३२ सं(राम २.३) (सर्वान् अर्थान्)] सब वस्तुओं को

सर्वाश्चर्यमयम् [११.११ वि(राम २.१)] सब चमत्कारों से भरा

सर्वे [१.६.९.११, २.१२.७०, ४.१९.३०, ७.१८, १०.१३, ११.२२.२६.३२ ३६, १४.१ सर्व(सर्व पु १.३)] सब, सभी

सर्वेन्द्रियगुणाभासम् [१३.१४ वि(फल १.१) (सर्वेषाम् इन्द्रियाणां गुणेषु आभासः यस्य तत्)] वह जिसका वैभव सब इन्द्रियों के गुणों में है, जिसमें सब इन्द्रियों के गुणों का आभास होता है

सर्वेन्द्रियविवर्जितम् [१३.१४ वि(फल १.१) सर्वैः इन्द्रियैः विवर्जितम्)] सब इन्द्रियों को त्यागा हुआ है, सब इन्द्रियों से रहित है (जो)

सर्वेभ्यः [४.३६ सर्व(सर्व पु ५.३)] सब, (की अपेक्षा)

सर्वेषाम् [१.२५, ६.४७ सर्व(सर्व पु/नपु ६.३)] सब के

सर्वेषु [१.११, २.४६, ८.७.२०.२७, १३.२७, १८.२१.४४ सर्व(सर्व पु/नपु ७.३)] सब (में)

सर्वैः [१५.१५ सार्व.वि(सर्व पु ३.३)] सभी (के द्वारा)

सविकारम् [१३.६ वि(फल १.१)] विकारों सहित, रूपान्तरों सहित

सविज्ञानम् [७.२ वि(फल २.१) (विज्ञानेन सह)] विज्ञान सहित

सव्यसाचिन् [११.३३ सं(शशिन् ८.१) (सव्येन सचितुं शीलं यस्य सः)] वह जिसका स्वभाव है बाएँ हाथ से लक्ष्य करना, हे सव्यसाचिन्

सशरम् [१.४७ वि(राम २.१)] बाण के साथ-साथ

सह [१.२२, ११.२६, १३.२३ (अ.)] साथ, सहित

सहजम् [१८.४८ वि(फल १.१)] सहज, जन्मजात

सहदेवः [१.१६ सं(राम १.१)] सहदेव

सहयज्ञाः [३.१० वि.(विद्या २.३)] यज्ञ सहित, यज्ञ के साथ-साथ

सहसा [१.१३ (अ.)] अचानक, एकाएक

सहस्रकृत्वः [११.३९ (अ.)] सहस्रों बार

सहस्रबाहो [११.४६ सं(गुरु ८.१) (सहस्रं बाहवः यस्य सः)] वह जिसकी सहस्र भुजाएं हैं, हे सहस्रबाहो

सहस्रयुगपर्यन्तम् [८.१७ वि.(फल २.१) (सहस्रं युगानि पर्यन्तः यस्य तत्)] वह जिसकी सीमा सहस्र युग (है), सहस्रं युग तक का

सहस्रशः [११.५ (अ.)] सहस्रगुण, सहस्रधा, सहस्र प्रकार,

सहस्रेषु [७.३ वि(राम ७.३)] सहस्रों में , हजारों में

सा [२.६९ सर्व(तद् स्त्री १.१)] वह (स्त्रीलिंग)

सांख्यम् [५.५ सं(फल २.१)] १. संख्या सम्बन्धी, छः दर्शनों में से एक - महर्षि कपिल कृत सांख्य दर्शन । इसमें सृष्टि की उत्पत्ति का क्रम वर्णित है । मूल में प्रकृति और पुरुष, प्रकृति से उत्पन्न बुद्धि अहंकार, पांच महाभूत, और मन सहित ग्यारह इंद्रियां और उनके पांच विषय । सांख्य शास्त्र में ये २५ तत्त्वमाने गए हैं । इसमें ईश्वर की सत्ता नहीं है । त्रिगुणात्मिका प्रकृति ही सृष्टि का विधान करती है । २. ज्ञान (श्लोक २.३९) ३. ज्ञान द्वारा कर्म संन्यास (श्लोक ५.४)] जैसा

सांख्ययोगौ [५.४ सं(राम १.२) (सांख्यः च योगः च)] सांख्य और योग

सांख्यानाम् [३.३ सं(राम ६.३)] सांख्यों का

सांख्ये [२.३९, १८.१३ सं(राम ७.१)] सांख्य सिद्धान्त में , सांख्य शास्त्र में , वेदांत में

सांख्येन [१३.२४ सं(फल ३.१)] ज्ञान, द्वारा, सांख्य सिद्धान्त से

सांख्यैः [५.५ सं(राम ३.३)] सांख्य योगियों द्वारा

साक्षात् [१८.७५ (अ.)] प्रत्यक्ष रीति से

साक्षी [९.१८ सं(शशिन् १.१)] दर्शक, साक्षी, जो तटस्थ हुआ सब के भावाभाव को देखता है

सागरः [१०.२४ सं(राम १.१)] सागर

सात्त्विकः [१७.११, १८.९, २६ वि(राम १.१)] सात्त्विक

सात्त्विकप्रियाः [१७.८ वि(राम १.३) (सात्त्विकानां प्रियाः)] सात्त्विक लोगों को प्रिय

सात्त्विकम् [१४.१६, १७.१७.२०, १८.२०.२३.३७ वि(फल १.१/२.१)] सात्त्विक, सत्त्वगुण युक्त

सात्त्विकाः [७.१२, १७.४ सं/वि(राम १.३)] पवित्र, शुद्ध, सात्त्विक, सत्त्व गुणात्मक

सात्त्विकी [१७.२, १८.३०, ३३ वि(नदी १.१)] सात्त्विक, सत्त्वगुणात्मक

सात्यकिः [१.१७ सं(हरि १.१)] सात्यकि, एक यादव जिसने महाभारत के युद्ध में पाण्डवों का पक्ष लिया था, युयुधान (देखें श्लोक १.४)

साधर्म्यम् [१४.२ सं(फल २.१)] समान भाव को, समरूपता को, समानता को

साधिभूताधिदैवम् [७.३० वि(राम २.१) (अधिभूतेन च अधिदैवेन च सह)] अधिभूत (मूल तत्त्व – आकाश पृथ्वी जल अग्नि वायु से संबन्धित) और अधिदैव (देवताओं से संबन्धित) के साथ-साथ

साधियज्ञम् [७.३० सं(राम २.१) (अधियज्ञेन सह)] अधियज्ञ के सहित

साधुः [९.३० सं(गुरु १.१)] साधु, धर्मात्मा, सदाचारी

साधुभावे [१७.२६ सं(राम ७.१)] साधुता के संदर्भ में

साधुषु [६.९ सं(गुरु ७.३)] साधुओं में

साधूनाम् [४.८ सं(गुरु ६.३)] साधुजन की, भले लोगों की

साध्याः [११.२२ वि(राम १.३)] साध्य लोग

साम [९.१७ सं(राम १.१)] सामवेद

सामर्थ्यम् [२.३६ सं(फल २.१)] शक्ति, बल

सामवेदः [१०.२२ सं(राम १.१)] सामवेद

सामासिकस्य [१०.३३ सं(राम ६.१) समासानां समूहः तस्य)] समासों के समूह, का (देखें गीता व्याकरण)

साम्नाम् [१०.३५ सं(नामन् ६.३)] साम अर्थात् गाने के योग्य वैदिक स्तोत्रों (में) स्तोत्र = किसी देवता का छंदोबद्ध स्वरूप कथन, वंदना या गुण कीर्तन, स्तुति

साम्ये [५.१९ सं(फल ७.१)] समता में, समत्व में, समान भाव में

साम्येन [६.३३ सं(फल ३.१)] समता से, साम्य से, साम्य बुद्धि से

साहंकारेण [१८.२४ सं(राम ३.१)(अहंकारः यस्य अस्ति तेन)] उससे जिसे अहंकार है, अहंकार के साथ

सिंहनादम् [१.१२ सं(राम २.१) (सिंहस्य नादम्)] सिंह की गरज, दहाड़, गर्जन

सिद्धः [१६.१४ वि(राम १.१)] सिद्ध, सर्वसम्पन्न , सिद्धियुक्त

सिद्धये [७.३, १८.१३ सं(मति ४.१)] पूर्णता के लिए, सिद्धिके लिए

सिद्धसंघाः [११.३६ सं(राम १.३)] सिद्धों के समुदाय

सिद्धानाम् [७.३, १०.२६ सं(राम ६.३)] सिद्धों में, पूर्णाता को जो प्राप्त हो चुके हैं, उनमें

सिद्धिः [४.१२ सं(मति १.१)] पूर्णता

सिद्धिम् [३.४, ४.१२, १२.१०, १४.१, १६.२३, १८.४५.४६.५० सं(मति २.१)] पूर्णत्व, सिद्धि सफलता, सम्पन्नता (को)

सिद्धौ [४.२२ सं(मति ७.१)] सफलता में,

सिद्ध्यसिद्ध्योः [२.४८.१८.२६ सं(मति ७.२) (सिद्धौ च असिद्धौ च)] सफलता और असफलता में, प्राप्ति और अप्राप्ति में

सीदन्ति [१.२९ (√ सद् भ्वा लट् P ३.३)] अशक्त होते, शिथल होते, ढीले हो रहे हैं

सुकृतदुष्कृते [२.५० सं(फल १.२) (सुकृतं च दुष्कृतं च)] अच्छे और बुरे कर्म

सुकृतम् [५.१५ सं(फल २.१)] सद्गुण

सुकृतस्य [१४.१६ वि(फल ६.१)] सत्कर्म का, अच्छे प्रकार से किए हुए का

सुकृतिनः [७.१६ वि(शशिन् १.३)] सदाचारी, अच्छे काम करने वाले, सुकर्मी

सुखदुःखसंज्ञैः [१५.५ सं(फल ३.३) (सुखं च दुःखं च संज्ञा येषां ते)] उनसे जिनके सुख दुःख नाम हैं, सुख दुःख नाम से पहचाने जाने वाले

सुखदुःखानाम् [१३.२० सं(फल ६.३) (सुखानां च दुःखानां च)] सुखों का और दुःखों का, सुख-दुःखों का

सुखदुःखे [२.३८ सं(फल २.२) (सुखं च दुःखं च)] सुख और दुःख

सुखम् [२.६६, ४.४०, ५.३.१३.२१, ६.२१.२७.२८.३२, १०.४, १३.६, १६.२३, १८.३६.३७.३८.३९ सं(फल १.१/२.१) (अ.)] सुख, सुख को, सरलता से

सुखसंगेन [१४.६ सं(राम ३.१) (सुखस्य संगेन)] सुख की आसक्ति से, सुख के साथ से

सुखस्य [१४.२७ सं(फल ६.१)] सुख का

सुखानि [१.३२, ३३ वि(फल १.३/२.३)] सुखों को, सुख आराम

सुखिनः [१.३७, २.३२ वि(शशिन् १.३)] प्रसन्न, सौभाग्यशाली

सुखी [५.२३, १६.१४ वि(शशिन् १.१)] सुखी

सुखे [१४.९ सं(फल ७.१)] सुख में

सुखेन [६.२८ सं(फल ३.१)] सरलता से, सुख से

सुखेषु [२.५६ सं(फल ७.३)] सुखों में

सुघोषमणिपुष्पकौ [१.१६ सं(राम २.२) (सुघोषं च मणिपुष्पकं च)] सुघोष और मणि पुष्पक को

सुदुराचारः [९.३० वि(राम १.१)] अत्यन्त दुष्ट, महापापी

सुदुर्दर्शम् [११.५२ वि(फल २.१)] दुर्लभ दर्शन वाले, (को); बहुत कठिनता से देखा जासके ऐसा

सुदुर्लभः [७.१९ वि(राम १.१)] बहुत कठिनता से मिलनेवाला, अत्यन्त दुर्लभ

सुदुष्करम् [६.३४ वि(फल २.१)] अत्यन्त कठिनाई से किया जाने वाला, अत्यन्त दुष्कर

सुनिश्चितम् [५.१ वि(फल २.१)] ठीक प्रकार से निश्चय कर के, निर्धारित करके

सुरगणाः [१०.२ सं(राम १.३) (सुराणां गुणाः)] देवता लोग, देवताओं के समूह

सुरसंघाः [११.२१ सं(राम १.३) (सुराणां संघाः)] देवताओं के समूह, झुण्ड, समुदाय

सुराणाम् [२.८ सं(राम ६.१)] देवताओं के

सुरेन्द्रलोकम् [९.२० सं(राम २.१) सुराणाम् इन्द्रस्य लोकम्)] देवताओं के राजा (इन्द्र) के लोक को

सुलभः [८.१४ वि(राम १.१)] सहज मिलने वाला, सरलता से प्राप्त होने वाला

सुविरूढमूलम् [१५.३ वि(फल २.१) (सुविरूढानि मूलानि यस्य तम्)] वह जिसकी जड़ें भली प्रकार विकसित हैं-बढ़ी हुई हैं, गहराई तक गई हुई जड़ों वाले

सुसुखम् [९.२ वि(राम २.१)] अति सुख देने वाला, अति सरल

सुहृत् [९.१८ सं(तत्त्वविद् १.१)] मित्र, प्रेमी

सुहृदः [१.२७ सं(तत्त्वविद् २.३)] स्नेहियों को, मित्रों को

सुहृदम् [५.२९ सं(मरुत् २.१)] प्रेमी, स्नेही, मित्र (को)

सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थद्वेष्यबन्धुषु [६.९ सं.(गुरु ७.३) सुहृत्सु च

मित्रेषु च अरिषु च उदासीनेषु च मध्यस्थेषु च द्वेष्येषु च बन्धुषु च)] प्रिय मित्रों में, और सखाओं में, और शत्रुओं में और तटस्थजनों में, और मध्यस्थों में, और द्वेषियों में और बंधुओं में

सूक्ष्मत्वात् [१३.१५ सं(फल ५.१)] सूक्ष्मता से, सूक्ष्मता के कारण, बहुत वारीक या महीन होने से

सूतपुत्रः [११.२६ सं(राम १.१) (सूतस्य पुत्रः)] सूत (सारथि) पुत्र (कर्ण)

सूत्रे [७.७ सं(फल ७.१)] डोरी में, धागे में

सूयते [९.१० (√सू दिवा A लट् ३.१)] (वह) रचता है, उत्पन्न करता है

सर्यः [१५.६ सं(रामः १.१)] सूर्य

सूर्यसहस्रस्य [११.१२ सं(राम ६.१) (सूर्याणां सहस्रस्य)] सहस्र सूर्यों का

सृजति [५.१४ (√सृज् तुदा P लट् ३.१)] (वह) रचता है, उत्पन्न करता है

सृजामि [४.७ (√ सृज् तुदा P लट् १.१)] प्रसारित करता हूं, उत्पन्न करता हूं

सृती [८.२७ सं(मति २.२)] (दो) मार्गों को

सृष्टम् [४.१३ सं(फल १.१) (√सृज् तुदा P + क्त)] प्रकट हुए, निकला, उत्पन्न हुआ

सृष्ट्वा [३.१० (अ.) (√सृज् तुदा P + क्त्वाच्)] उत्पन्न करके

सेनयोः [१.२१, २४, २७, २.१० सं(विद्या ६.२/७.२)] (दो) सेनाओं के, (दो) सेनाओं में

सेनानीनाम् [१०.२४ सं(शशिन् ६.३) (सेनां नयन्ति इति तेषाम्)] सेना पतियों में

सेवते [१४.२६ (√सेव् भ्वा A लट् ३.१)] सेवा करता है, आराधना करता हैं

सेवया [४.३४ सं(विद्या ३.१)] सेवा से, सेवा द्वारा

सैन्यस्य [१.७ सं(फल ६.१)] सेना के

सोढुम् [५.२३, ११.४४ (अ.) (√सह् भ्वा A + तुमुन्)] सहन करना

सोमः [१५.१३ सं(राम १.१)] सोम, चन्द्र

सोमपाः [९.२० (सोमं पिबन्ति इति)] जो सोमरस पीते (हैं), सोमरस पीने वाले

सौक्ष्म्यात् [१३.३२ सं(फल ५.१)] सूक्ष्मता के कारण

सौभद्रः [१.६.१८ सं(राम १.१)] सौभद्र, सुभद्रा का पुत्र (अभिमन्यु)

सौमदत्तिः [१.८ सं(हरि १.१)] सोमदत्ति, सोमदत्त का पुत्र, भूरिश्रवा

सौम्यत्वम् [१७.१६ सं(फल १.१)] भद्रता, कोमलता, शान्त भाव

सौम्यम् [११.५१ सं(फल २.१)] शान्त, शीतल

सौम्यवपुः [११.५० वि(साधु १.१) (सौम्यं वपुः यस्य सः)] वह जिसका स्वरूप शीतल (शान्त, सौम्य) है, शान्ति मूर्ति

स्कन्दः [१०.२४ सं(राम १.१)] स्कन्द, कार्तिकेय

स्तब्धः [१८.२८ वि(राम १.१)] हठी, अक्खड़

स्तब्धाः [१६.१७ वि(राम १.३)] हठधर्मी, हठीले, हठी, अक्खड़

स्तुतिभिः [११.२१ सं(मति ३.३)] स्तोत्रों द्वारा, गीतों से, (स्तोत्र = किसी देवता का छंदोबद्ध गुण कीर्तन)

स्तुवन्ति [११.२१ (√ स्तु अदा P लट् ३.३)] (वे) स्तुति करते हैं, यशगान करते हैं

स्तेनः [३.१२ सं(राम १.१)] चोर, तस्कर

स्त्रियः [९.३२ सं(स्त्री १.३)] स्त्रियां

स्त्रीषु [१.४१ सं(स्त्री ७.३)] स्त्रियों में

स्थाणुः [२.२४ वि(गुरु १.१)] स्थिर, अचल, अटल

स्थानम् [५.५, ८.२८, ९.१८, १८.६२ सं(फल २.१)] स्थान, पद, स्थिति, नींव, आधार

स्थाने [११.३६ सं(फल ७.१)] ठीक है, (उचित) स्थान में

स्थापय [१.२१ (√ स्था भ्वा + णिच् लोट्२.१)] रोकिए, ठहराइए

स्थापयित्वा [१.२४ (अ.) (√ स्था भ्वा + णिच् + क्त्वाच्)] खड़ा करके, रोक कर

स्थावरजंगमम् [१३.२६ सं(राम २.१) (स्थावरं च जंगमं च)] अचर और चर, जड़ और जंगम

स्थावराणाम् [१०.२५ वि(राम ६.३)] स्थिर रहने वालों में, स्थिर पदार्थों में

स्थास्यति [२.५३ (√ स्था भ्वा P लृट् ३.१)] (तू) स्थिर होगा

स्थितः [५.२०, ६.१०.१४.२१.२२, १०.४२, १८.७३ वि(राम १.१)] स्थिर हुआ, स्थापित हुआ, स्थिर, जो डाँवाडोल न हो

स्थितधीः [२.५४.५६ वि(सुधी १.१) (स्थिता धीः यस्य सः)] वह जिसका मन स्थिर है, स्थिर बुद्धिवाला

स्थितप्रज्ञः [२.५५ सं(राम १.१)] स्थिर बुद्धि वाला

स्थितप्रज्ञस्य [२.५४ सं(राम ६.१) (स्थिता प्रज्ञा यस्य तस्य)] उसकी जिसकी बुद्धि स्थिर है, स्थिर बुद्धि वाले की

स्थितम् [५.१९, १३.१६.१५.१० वि(राम २.१) (फल २.१)] स्थित हुआ, स्थिर हुआ, ठहरा हुआ

स्थिताः [५.१९ वि(राम १.३)] स्थिर हुए, स्थापित हुए

स्थितान् [१.२६ वि(राम २.३) (√ स्था भ्वा P + क्त)] खडे हुओं को

स्थितिः [२.७२, १७.२७ सं(मति १.१)] अवस्था, स्थिति, निष्ठा, दृढ़ता, दृढ़निश्चयता

स्थितिम् [६.३३ सं(मति २.१)] स्थिरता, स्थैर्य, अचलता, अटलता

स्थितौ [१.१४ वि.(राम १.२) (√स्था भ्वा. P + क्त)] (दो) खड़े हुए, ठहरे हुए

स्थित्वा [२.७२ (अ.) (√स्था भ्वा P + क्त्वाच्)] स्थिर होकर, स्थित होकर

स्थिरः [६.१३ वि(राम १.१)] स्थिर, स्थायी, एक समान

स्थिरबुद्धिः [५.२० वि(हरि १.१) (स्थिरा बुद्धिः यस्य सः)] वह जिसकी बुद्धि स्थिर है

स्थिरम् [६.११, १२.९ वि(फल २.१)] दृढ़ता से, स्थिर, अचल

स्थिरमतिः [१२.१९ वि.(हरि १.१) (स्थिरा मतिः यस्य सः)] वह जिसकी बुद्धि स्थिर है

स्थिराः [१७.८ वि(राम १.३)] पौष्टिक, सारवान्

स्थिराम् [६.३३ वि(विद्या २.१)] दृढ, सुदृढ

स्थैर्यम् [१३.७ सं(फल १.१)] स्थिरता, अटलता

स्निग्धाः [१७.८ वि(राम १.३)] चिकने, स्निग्ध स्नेहयुक्त

स्पर्शनम् [१५.९ सं(फल १.१)] स्पर्श इन्द्रिय, त्वचा

स्पर्शान् [५.२७ सं(राम २.३)] सम्पर्कों को

स्पृशन् [५.८ वि(ध्यायत् १.१) (√स्पृश् तुदा P शतृ)] स्पर्श करते हुए, छूते हुए

स्पृहा [४.१४, १४.१२ सं(विद्या १.१)] लालसा, इच्छा

स्म [२.३] पुनरुक्तात्मक उपपद जो 'मा' के साथ निषेध वाचक अर्थ में आता है जैसे मा स्म गमः

स्मरति [८.१४ (√स्मृ भ्वा P लट् ३.१)] स्मरण करता है

स्मरन् [३.६, ८.५.६ वि.(ध्यायत् १.१) (√स्मृ भ्वा + शतृ)] चिन्तन करता हुआ, स्मरण करता हुआ

स्मृतः [१७.२३ वि(राम १.१) (स्मृ भ्वा P + क्त)] स्मरण किया हुआ, स्मृति में कहा हुआ

स्मृतम् [१७.२०.२१, १८.३८ वि.(फल १.१) (√स्मृ भ्वा P + क्त)] स्मरण किया जाता है, माना जाता है, जाता है

स्मृता [६.१९ वि(विद्या १.१)] स्मरण की जाती है,

स्मृतिः [१०.३४, १५.१५, १८.७३ सं(मति १.१)] स्मरण शक्ति, ज्ञान, अभिज्ञान

स्मृतिभ्रंशात् [२.६३सं(राम ५.१) (स्मृतेः भ्रंशात्)] स्मृति के भ्रष्ट होने से

स्मृतिविभ्रमः [२.६३ सं(राम १.१) (स्मृतेः विभ्रमः)] स्मृति की भ्रान्ति (किंकर्तव्य विमूढ़ता, उलझन)

स्यन्दने [१.१४ सं(राम ७.१)] रथ (में)

स्यात् [१.३६; २.७, ३.१७, १०.३९, ११.१२, १५.२०, १८.४० (√ अस् अदा P विधि ३.१)] संम्भवतः हो सकता है, हो

स्याम् [३.२४, १८.७० (√ अस् अदा P विधि १.१)] (मैं) होऊं, संभवतः

स्याम [१.३७ (अस्. अदा. P विधि. १.३)] हम होवें, हों

स्युः [९.३२ (√ अस् अदा P विधिलिङ् ३.३)] (चाहे) होवें

स्रंसते [१.३० (सम् + √ सृ भ्वा A ३.१)] खिसकता है

स्रोतसाम् [१०.३१ सं(मनस् ६.३)] नदियों में, सरिताओं में

स्वकम् [११.५० वि(राम २.१)] अपना, निजी

स्वकर्मणा [१८.४६ सं(कर्मन् ३.१)] अपने कर्म से

स्वकर्मनिरतः [१८.४५ वि(राम १.१) (स्वस्य कर्मणि निरतः)] अपने काम में लगा हुआ, अपने काम में व्यस्त

स्वचक्षुषा [११.८ सं(धनुस् ३.१)] अपनी आंखों से, निजी नेत्रों से

स्वजनम् [१.२८, ३१, ३७, ४५ सं(राम २.१) (स्वस्य जनम्)] निजके लोगों (को)

स्वतेजसा [११.१९ सं(मनस् ३.१)] अपने प्रकाश से

स्वधर्मः [३.३५, १८.४७ सं(राम १.१)] अपना धर्म

स्वधर्मम् [२.३१.३३ सं(राम २.१) (स्वस्य धर्मम्)] निजकर्तव्य को, स्वधर्म को

स्वधर्मे [३.३५ सं(राम ७.१)] अपने धर्म में

स्वधा [९.१६ सं(विद्या १.१)] पितरों को चढ़ाया जाने वाला अन्न, पितरों को प्रदान की जाने वाली बलि

स्वनुष्ठितात् [३.३५, १८.४७ वि(राम ५.१)] सकुशल कार्यान्वित की अपेक्षा, ठीक तरह किये हुए से

स्वपन् [५.८ वि(ध्यायत् १.१) (√ स्वप् अदा P शतृ)] सोता हुआ

स्वप्नम् [१८.३५ सं(राम २.१)] निद्रा (को)

स्वबान्धवान् [१.३७ सं(राम २.३)] अपने संबन्धियों को

स्वभावः [५.१४, ८.३ सं(राम १.१)] अपना स्वभाव, (आत्मा का) मूलस्वरूप, प्रकृति, मूलभाव

स्वभावजम् [१८.४२, ४३.४४ सं(फल १.१) (स्वभावात् जातम्)] स्वभाव से उत्पन्न, सहज, स्वाभाविक

स्वभावजा [१७.२ वि(राम १.३) (स्वभावात् जाता)] अपने स्वभाव से उत्पन्न, स्वभावतः उत्पन्न हुई

स्वभावजेन [१८.६० वि(फल ३.१)] (अपने) स्वभाव से उत्पन्न, स्वभाव जन्य

स्वभावनियतम् [१८.४७ वि(फल २.१) (स्वभावेन नियतम्)] अपने स्वभाव द्वारा निर्धारित

स्वभावप्रभवैः [१८.४१ वि(राम ३.३) (स्वभावात् प्रभवः येषां तैः)] उनसे जिनका उद्‌गम अपने स्वभाव से (है), स्वभाव जन्य, स्वभाव से उत्पन्न

स्वम् [६.१३ वि(फल २.१)] (उसका) अपना

स्वयम् [४.३८, १०.१३.१५, १८.७५ सर्व(स्व पु २.१)] अपने आप, स्वयं

स्वया [७.२० वि(विद्या ३.१)] अपने से, अपनी प्रकृति द्वारा

स्वर्गतिम् [९.२० सं(मति २.१)] स्वर्ग-मार्ग, स्वर्ग की ओर जाने को, स्वर्ग प्राप्ति को

स्वर्गद्वारम् [२.३२ सं(फल १.१) (स्वर्गस्य द्वारम्)] स्वर्ग के द्वार (को)

स्वर्गपराः [२.४३ वि(राम १.३) (स्वर्गः परः येषां ते)] वे जिनका उच्चतम (लक्ष्य) है स्वर्ग

स्वर्गम् [२.३७ सं(राम २.१)] स्वर्ग (को)

स्वर्गलोकम् [९.२१ सं(राम २.१)] स्वर्ग लोक (को)

स्वल्पम् [२.४० वि(फल १.१)] थोड़ा, अल्प, कुछ ही, किंचित्

स्वस्ति [११.२१ (अ.) (√ अस् अदा P ल[illegible] ३.१) (सु + अस्ति)] भला हो, कल्याण हो

स्वस्थः [१४.२४ वि(राम १.१) (स्वात्मनि स्थितः)] आत्मस्थ, अपने आप में स्थित, स्वस्थ

स्वस्याः [३.३३ सार्व वि.(स्व. स्त्री. ६.१)] अपनी

स्वाध्यायः [१६.१ सं(राम १.१)] स्वाध्याय, अपने आप का अध्ययन वेदाध्ययन

स्वाध्यायज्ञानयज्ञाः [४.२८ वि(राम १.३) (स्वाध्यायः च ज्ञानं च यज्ञः येषां ते)] वे जिनका यज्ञ स्वाध्याय और ज्ञान है, स्वाध्याय और ज्ञान यज्ञ करने वाले

स्वाध्यायाभ्यसनम् [१७.१५ सं(फल १.१) (स्वाध्यायस्य अभ्यसनम्)] स्वाध्याय का अभ्यास धर्म ग्रन्थों का अभ्यास

स्वाम् [४.६, ९.८ वि(विद्या २.१)] मेरी, अपनी

स्वे [१८.४५ सर्व(सर्व ७.१)] अपने (में)

स्वेन [१८.६० सर्व(सर्व ३.१)] अपने से, अपने द्वारा

ह

ह [२.९ (अ.)] एक उपपद, अपने से पूर्वगत शब्द पर बल देने वाला अव्यय, सचमुच, निश्चय

हतः [२.३७, १६.१४ वि.(राम १.१)
हतम् [२.१९ वि.(राम २.१) (√हन् अदा P + क्त)] मारे हुए (को)
हतान् [११.३४ वि(राम २.३)] मारे हुओं को
हत्वा [१.३१.३६.३७, २.६, १८.१७ क्रि वि (अ.) (√हन् अदा P + क्त्वाच्)] मार कर
हनिष्ये [१६.१४ (√हन् अदा A लृट् १.१)] (मैं) बध करूंगा, मारूंगा
हन्त [१०.१९ (अ.)] अच्छा, ठीक है, तेरा कल्याण हो, यही सही
हन्तारम् [२.१९ वि(धातृ २.१)] मारने वाले को, वधिक को
हन्ति [२.१९, २१, १८.१७ (√ हन् अदा P लट् ३.१)] मारता है, हनन करता है
हन्तुम् [१.३५.३७.४५ क्रि वि (अ.) (√ हन् अदा + तुमुन्)] मारना, हत्या करना (के लिए)
हन्यते [२.१९.२० (√हन् अदा कर्मवाच्य A लट् ३.१)] मारा जाता है
हन्यमाने [२.२० वि.(राम ७.१) (√ हन् + शानच्)] हनन होने (में), मारे जने (में)
हन्युः [१.४६ (√हन् विधि ३.३)] चाहे मार डालें
हयैः [१.१४ सं(राम ३.३)] घोड़ों के साथ, द्वारा
हरति [२.६७ (√ हृ भ्वा P लट् ३.१)] (वह) हर लेता है, भगा ले जाता है
हरन्ति [२.६० (√हृ भ्वा P लट् ३.३)] (वे) हर लेती हैं
हरिः [११.९ सं(हरि १.१)] हरि
हरेः [१८.७७ सं(हरि ६.१)] हरि का
हर्षम् [१.१२ सं(राम २.१)] आनन्द आह्लाद
हर्षशोकान्वितः [१८.२७ वि(राम १.१) (हर्षेण च शोकेन च अन्वितः)] हर्ष और शोक से युक्त, घिरा हुआ
हर्षामर्षभयोद्वेगैः [१२.१५ सं(राम ३.३) (हर्षस्य च अमर्षस्य च भयस्य च उद्वेगैः)] हर्ष, अमर्ष (क्रोध), भय, और उत्तेजना (अशान्ति) से
हविः [४.२४ सं(हविस् १.१)] हवन की वस्तु, बलि
हस्तात् [१.३० सं(राम ५.१)] हाथ से
हस्तिनि [५.१८ सं(शशिन् ७.१)] हाथी में
हानिः [२.६५ सं(मति १.१)] विनाश, ध्वंस
हि [१.११(अ.)] सचमुच, एक पाद पूरक उपपद, निश्चय, ही
हिंसात्मकः [१८.२७ वि(राम १.१) (हिंसा आत्मनि यस्य सः)] वह जिसकी आत्मा में निर्दयता (निष्ठुरता) है, क्रूर, निर्दय, निष्ठुर
हिंसाम् [१८.२५ सं(विद्या २.१)] क्षति, चोट
हितकाम्यया [१०.१ सं(विद्या ३.१) (हितस्य काम्यया)] भलाई की इच्छा से, हितेच्छा से

हितम् [१८.६४ सं(फल २.१)] लाभ भलाई
हितान् [७.२२ वि(राम २.३)] लाभ, फल
हित्वा [२.३३ (अ) (√ हा जुहो P + क्त्वाच्)] फेंक कर, गवां कर
हिनस्ति [१३.२८ (√ हिंस् रुधा P लट् ३.१)] मार डालता है, वध करता है
हिमालयः [१०.२५ सं(राम १.१)] हिमालय
हुतम् [४.२४, ९.१६.१७.२८ वि(फल १.१)] होम हवन किया हुआ
हृतज्ञानाः [७.२० संवि(राम १.३) (हृतं ज्ञानं येषां ते)] वे जिनका ज्ञान हर लिया गया है, नष्ट हुए ज्ञान वाले
हृत्स्थम् [४.४२ वि(फल २.१)] हृदय में स्थित, मन में बैठे हुए
हृदयदौर्बल्यम् [२.३ सं(फल २.१) (हृदयस्य दौर्बल्यम्)] हृदय की दुर्बलता, असमर्थता
हृदयानि [१.१९ सं(फल २.३)] हृदयों (को)
हृदि [८.१२, १३.१७, १५.१५ सं(तत्त्वविद् ७.१)] हृदय में
हृद्देशे [१८.६१ सं(राम ७.१) (हृदः देशे)] हृदय स्थान में
हृद्याः [१७.८ वि(राम १.३)] शक्तिवर्धक, रुचिकर
हृषितः [११.४५ वि(राम १.१)] आनन्दित, प्रसन्न हुआ
हृषीकेश [११.३६, १८.१ सं(राम ८.१)] हे हृषीकेश
हृषीकेशः [१.१५.२४, २.१० सं(राम १.१) (हृषीकाणाम् ईशः)] हृषीकेश, इन्द्रियों के स्वामी
हृषीकेशम् [१.२१, २.९ सं(राम २.१)] हृषीकेश को
हृष्टरोमा [११.१४ वि(१.१) (हृष्टानि रोमाणि यस्य सः)] वह जिसका रोमांच हुआ है, रोमांचित, पुलकित
हृष्यति [१२.१७ (√ हृष् दिवा P लट् ३.१)] आनन्द मनाता है, रंगरलियां करता है
हृष्यामि [१८.७६.७७ (√ हृष् दिवा P लट् १.१)] (मैं) प्रसन्न होता हूं, आह्लादित होता हूं, आनन्द मनाता हूं, आनन्दित होता हूं
हे [११.४१ (अ.)] हे, अरे
हेतवः [१८.१५ सं(गुरु १.३)] कारण, हेतु
हेतुः [१३.२० सं(गुरु १.१)] कारण, हेतु
हेतुना [९.१० सं(गुरु ३.१)] कारण से, हेतु से
हेतुमद्भिः [१३.४ वि(धीमत् ३.३)] तर्क या युक्ति का आश्रय लेने वालों द्वारा
हेतोः [१.३५ सं(गुरु ५.१)] के लिए
ह्रियते [६.४४ (√ हृ भ्वा A कर्मणि लट् ३.१)] बहा जाता है, उड़ाया जाता है, खींचा जाता है
ह्रीः [१६.२ सं(श्री १.१)] शील संकोच, विनय, सलज्जता